अरुण संहिता (लाल किताब)

हस्त

रेखा

विज्ञान

अरुण संहिता (लाल किताब) हस्त रेखा विज्ञान
हरे कृष्ण ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित।
पी0 ओ0 बाक्स 123
सैक्टर 17 चण्डीगढ़। 160 017
✆ 702378, 567009
पेजर : 9612 – 486

सर्वाधिकार हरे कृष्ण ट्रस्ट द्वारा सुरक्षित।

रु 475 /- (केवल चार सो पच्चतर रुपये)

इस पुस्तक में
चानकय फाण्ट का प्रयोग किया गया,
इस के अतिरिक्त इसमें रेखा चित्र को
फोटो फिनिश एवं स्केनर द्वारा निकाला गया।

समर्पण

जगत् नियन्ता भगवान श्रीहरि

एवं

त्रिकालदर्शी

ऋषि समाज को

प्रस्तावना

प्रस्तुत ग्रन्थ अरुण संहिता (लाल किताब) ''हस्त रेखा विज्ञान '' में वर्णित हस्त रेखा ज्ञान का देवनागरी लिपि में एक छोटा सा उपहार है।

हस्त–रेखा ज्ञान को हस्त–सामुद्रिक शास्त्र के नाम से भी जाना जाता है। इस का कारण हाथ में उपलब्ध ज्ञान की तुलना धरती पर व्याप्त जल–राशि अर्थात् समुद्र से करने पर अनायास ही ज्ञात हो जाता है। जैसे धरती पर नदियाँ पर्वत शिखरों के हिम–खण्डों अथवा जल स्त्रोतों से आरम्भ हो कर समतल मैदानों से होती हुई (पर्वतों व मैदानों के लवणों व खारों को) अन्त में समुद्र में ला डालती है, वैसे ही अँगुलियों की जड़ों में स्थित व हथेली की अन्य उचाईयों पर स्थित पर्वतों से उठती रेखायें हथेली के भिन्न भागों से होती हुई हाथ के समुद्र में लीन हो जाती है। समुद्र के मंथन से जैसे अनेक रत्नों की उपलब्धि होती है, वैसे ही हथेली में लक्षित ज्ञान के अवलोकन व मन्थन से भव–सागर में फंसी जीवात्मा की जीवन गाथा को भी जान जा सकता है।

जो सामने प्रत्यक्ष नहीं है, ओट में है, ऑख से ओझल है, उसे जानने की चाह–जिज्ञासा–मानव चित्त में हमेशा से बनी रही है। इसी ने दर्शन–शास्त्र, विज्ञान , ज्योतिष, हस्त रेखा विज्ञान, अंक विद्या आदि आदि को जन्म दिया है।

ज्योतिष को ज्योति के प्रभाव, उद्गम एवं प्रसार का विज्ञान कहा जा सकता है। मानव जीवन के भिन्न अंगों पर ज्योति का प्रभाव मुख्यता: सूर्य ओर चन्द्र ज्योतियों के प्रभाव से जाना जा सकता हैं। सूर्य–तल पर होने वाली हलचल से धरती पर रेडियो व दूरदर्शन के प्रसार में होने वाली रुकावटों का सभी को ज्ञात है। धरती पर होने वाले भूचाल भी सूर्य से संबंधित व्यक्त किये गये है जलवायु परिवर्तन भी सूर्य ज्योति की घटाबढ़ी के परिणाम है। वनस्पति जगत भी चन्द्र ज्योति से प्रभावित है।

इन सब समाष्टि प्रभावों का किसी भी 'एक'' यानि व्यष्टि–तत्व पर क्या प्रभाव होता है या हो सकता है, इसे जानने के लिये ''फलित–ज्योतिष '' का विकास किया गया । इस में सूर्य व चन्द्र ही नहीं, बल्कि अन्य ग्रहों–शुक्र, वृहस्पति, शनि आदि व नक्षत्रों, नक्षत्र समूहों–राशियों, ग्रहों की गति, उनके मार्गो की आपस में काट, ग्रहों की प्रभाव–दृष्टि व बल आदि का भी ध्यान

रखा जाता है। सूर्य आदि तारों व पृथ्वी आदि ग्रहों को "ग्रह" इसलिये कहा गया कि ये सब न्यूनाधिक गुरुत्व रखते है। जो कोई वस्तु इन के समीप जाती है उसे अपने आकर्षण में ले लेते हैं।

फलित ज्योतिष में संहिता, होरा शास्त्र, जातक, मुहूर्त्त लग्न और प्रश्न–ज्योतिष ही मुख्य है। इन में जातक के जन्म समय या प्रश्न–समय की कुण्डली बनाई जाती है। अर्थात् ग्रहों की स्थिति घरों या भावों में दिखाई जाती है। फिर उस से फल वर्णित किया जाता है। शुभ फल शुभ मुहूर्त में ही माना जाता है। अनिष्ट कार्य का भी शुभ–मुहर्त ज्योतिष में आँका गया है।

परन्तु फल जानने का मुख्य आधार जन्म समय ही है। इस विषय में भी विचारणीय है कि क्या जन्म–समय की कुण्डली विचारें या गर्भाधान के समय की। फिर सामूहिक घटनाओं में मृत, प्रभावित या लाभान्वित व्यष्टियों का जन्म समय एक ही न होने से यह विचार उठा कि फलित ज्योतिष में प्रयुक्त जन्म समय की परख कर के शरीर व आकृति विज्ञान व हस्त रेखा का सहारा ले कर फलित की पुष्टि करनी चाहिये।

इसीलिये अरुण संहिता (लाल किताब) ज्योतिष में "क्याफा" अनुमान व "पुष्टि" का वर्णन किया गया प्रस्तुत पुस्तक उसी को दर्शाती है।

फलित ज्योतिष का दशा व अन्तदर्शा, सूक्ष्म अन्तर्दशा या प्रत्यन्तर–दशा का सिद्धान्त, कर्म–सिद्धांत के कर्म–विपाक के समय को दर्शाने का भी एक प्रयास है। एक प्रकार से यह कर्म–सिद्धान्त के "नियत विपाक" में विपाक–समय (कर्म फल प्राप्त होते से लगने वाला समय) के निर्णय की चेष्टा मात्र है। योगिनी आदि दशायें में इसी संदर्भ में गिनी जा सकती है।

इस प्रकार हम देखते है कि फलित–ज्योतिष से प्राप्त निष्कर्ष को रेखा विज्ञान की कसौटी पर परखने का अरुणं संहिता (लाल किताब) हस्त रेखा विज्ञान की चेष्टा सराहनीय व युक्ति–युक्त है।

आशा है कि हिन्दी भाषी विज्ञ जनों को हरे कृष्ण ट्रस्ट का यह प्रयास पसंद आयेग।

(प्रो0 ओम प्रकाश पुरी)

विषय सूचि

फरमान नंः	विषय	पृष्ट संख्या
1	कुदरत से किस्मत कि तरह आई ।	1
2.	पर्वत व राशियों के स्थान	2
3.	रेखा का असर	3
4.	हथेली के भाग	3
5.	राशियों की गिनती	4
6.	पर्वत के भाग	4
7.	पर्वत की पक्की जगह	5
8.	पर्वत के नाम	5
9.	ग्रहों के नाम	5
10.	ग्रहों के असर	6
11.	ग्रहों की अवधि	7
12.	किस्मत की हेरा फेरी	8
13.	बच्चे की रेखा	8
14.	मर्द का दांया हॉथ	8
15.	औरत का हाथ	8
16.	रेखा का झुकाव	9
17.	बिना रेखा हाथ वाला इंसान	9
18.	बहुत रेखा हाथ वाला इंसान	9
19.	चोड़ी रेखायें	9
20.	मध्यम रेखायें	9
21.	साफ एवं गहरी रेखायें	9
22.	काली रेखायें	9
23.	समाप्त होने से पहले दुसरी रेखा का शुरु होना	9
24.	रेखा में विभिन्न निशान	10
25.	रेखा का टूटना	11
26.	रेखा से फैसला	11
27.	रेखा का प्रारम्भ व अन्त	11
28.	रेखा से मर्द का मर्द से, औरत का औरत से संबंध	11
29.	दो रेखा इकट्ठी	11
30.	ग्रहों की रेखा का असर	12

फरमान नः	विषय	पृष्ट संख्या
31.	इज्जत रेखा	15
32.	दिमागी ताकत रेखा	15
33.	नशेबाज या फकीरी रेखा	15
34.	चन्द्र से उठी रेखा	15
35.	चन्द्र से वृहस्पति की ओर रेखा	16.
36.	चन्द्र से वृहस्पति को सफर रेखा	16
37.	चन्द्र से सूर्य रेखा	16
38.	चन्द्र से बुध की रेखा	16
39.	चन्द्र से बुध के पर्वत को रेखा	17
40.	धन रेखा	18
41.	श्रेष्ठ रेखा	18
42.	पितृ रेखा	19
43.	शुक्र से शनि को रेखा	19
44 –		
45.	शुक्र से सूर्य	20

फरमान नः	विषय	पृष्ट संख्या
46.	शुक्र से बुध की तरफ रेखा	20
47.	शुक्र से वृहस्पति की ओर गृहस्थ रेखा	20
48.	बुध से वृहस्पंति की ओर रेखा	21
49.	सिर रेखा	21
50.	सिर रेखा की ओर शाखा	21
51.	मंगल नेक से निकली किस्मत रेखा	21
52.	मंगल बद से शाखा	22
53.	दो शाखी रेखायें	22
54.	दो शाखी रेखायें ग्रहों में	23
55.	दो शाखी रेखायों का मुह का असर	23
56.	तीन शाखी रेखायें	23
57.	रेखा के असर का साल	24
58.	हाथ का अंगूठा	25
	(ii) अँगूठे के हिस्से	28
59.	दिमाग के खाने	30

फरमान नः	विषय	पृष्ट संख्या
60.	दिमाग के 12 खाने	35
61.	चेहरा व माथा	40
62.	सिर एवं शरीर का आकार	41
63.	सीने की हड्डिया	42
64.	गर्दन पर बल	42
65.	पेट पर बल	42
66.	जिस्म पर बाल	43
66 ए.	दाँत	44
67.	हाथ की किस्में	44
68.	हाथो की बनावट	46
69.	हथेली की बनावट	47
70.	हाथ की अँगुलियाँ	49
	(2) अँगुलियों का असर	51
	(3) अँगुलियों के नाखून	58
	(4) नाखून के रंगो का असर	62

फरमान नः	विषय	पृष्ट संख्या
71.	पाँव	63
72.	पाँव की अँगुलियां	63
73.	मुँह	66
74.	भौहें	66
75–76	कान	66
77.	जुबान	67
78.	कद	67
79.	बाजू	68
80.	छाती	68
81.	पीठ	68
82.	ओठ	68
83.	लिखाई	69
84.	आँख	69
85.	रफतार	71
86.	वाक्	71

फरमान नः	विषय	पृष्ट संख्या
87.	आवांज	72
88.	छीक का विचार	73
89.	अंग फड़कना	73
90.	सॉस	73
91.	स्वपन का विचार	73
92.	प्रारम्भ में शकुन	74
93.	हथेली पर निशान	74
94.	पॉव पर निशान	77
95.	रहने का स्थान	77
96.	खुशी व गमी का हाथ	81
97.	बचपन, जवानी, बुढ़ापा	83
98.	हाथ तंग हो	84
99.	वर्ताव	85
100 ए	खर्च – बचत	87
100 बी	कर्जा	89
101	राशि	89

फरमान नः	विषय	पृष्ट संख्या
102.	कुण्डली – राशि के पक्के घर	91
103.	कुण्डली – हर ग्रह के पक्के घर	92
104.	उच्च – नीच ग्रह	93
105.	कुण्डली– का प्रभाव हर ग्रह पर	95
106.	कुण्डली एवं घर का मालिक ग्रह	97
107.	कुण्डली – ऊँच – नीच फल के ग्रह	98
108.	कुण्डली एवं ग्रहों की एक दूसरे पर दृष्टि	99
109.	ग्रहों की मित्रता एवं शत्रुता	102
110.	ग्रहों का प्रभाव	103
111.	राशियों के विशेष अंक	105
112.	आयु पर प्रभाव	107
113.	ग्रहों की अवधि दिन व सप्ताह	109
113ए.	ग्रहों की अवधि सालों में	111
114.	नेष्ट ग्रहों के उपाय	112
115.	ग्रहों की अवधि	116
116.	राशि के प्रभाव की अवधि	117

फरमान नः	विषय	पृष्ट संख्या
117.	पर्वत (ग्रह) और राशियाँ	119
118.	कुण्डली का 12 खानों में प्रभाव	121
119ए	वृहस्पति कुण्डली के 12 खानों के तमाम अंको की खानापुरी	126
119बी	सूर्य ग्रह	128
119सी	चन्द्र ग्रह	129
119 डी	शुक्र ग्रह	130
119 एफ	मंगल नेक ग्रह	131
119 जी	बुध ग्रह	133
119 एच	शनि ग्रह	134
119 आई	राहू – केतू	135
	मिली जुली टिप्पणी	135
120.	वृहस्पति पर्वतो का ब्यान	136
121.	वृहस्पति पर्वत पर वृ0 की अपश्री रेखा (इश्क रेखा)	146

फरमान नः	विषय	पृष्ट संख्या
122.	किस्मत रेखा	149
	(1) गुरु चरणों में जाती किस्मत रेखा	151
	(2) किस्मत रेखा का आरम्भ	156
	(3) किस्मत रेखा की शाखें	159
123.	वृहस्पति की लकीरें	162
124.	पर्वत– वृहस्पति का प्रभाव	165
125.	पोरियों व हथेली पर वृहस्पति की लकीरें	167
126.	हथेली की सीधी रेखाओं का प्रभाव	168
127.	शंख – हथेली व पोरियों पर	170
128.	हथेली व पोरियों पर सिप्पी	171
129.	सिप्पी का हथेली पर प्रभाव	172
130.	हथेली पर वृहस्पति का निशान	173
131–132	राशि, पर्वत पर वृहस्पति के निशान और उनका प्रभाव	173

फरमान नः	विषय	पृष्ट संख्या
132ए	वृहस्पति का प्रभाव – विशेष विवरण	179
134.	सूर्य रेखा अनेक पर्वतों पर और उनका प्रभाव	181
135.	सूर्य पर्वत का प्रभाव खाना नं. 1	187
136.	सूर्य का सितारा	188
137.	सूर्य के निशानों का प्रभाव	189
138.	चन्द्र का समुद्री हवाई घोड़ा	195
139.	चन्द्र के पर्वत पर रेखा और चन्द्र की अपनी रेखा	198
140.	चन्द्र की यात्रा रेखा	209
141.	चन्द्र से किस्मत रेखा मिले	211
142.	चन्द्र की विभिन्न रेखायें	214
143.	चन्द्र से शुक्र को रेखायें	217
144.	चन्द्र की उँच नीच अवस्था	220
145–146	चन्द्र के सितारा का प्रभाव	221

फरमान नः	विषय	पृष्ट संख्या
147.	शुक्र की अवस्थायें	225
148.	शुक्र के पर्वत पर रेखा और शुक्र की अपनी रेखा	226
149.	शादी रेखा और उसके साथ अन्य रेखायें, उनका प्रभाव	228
150.	शुक्र के पर्वत पर अन्य रेखायें	234
151.	शुक्र के पर्वत का प्रभाव	235
152–153	शुक्र के निशान का प्रभाव	236
154	मंगल नेक	242
155.	मंगल नेक से मंगल बद को शाख	243
156.	मंगल नेक– के पर्वत पर रेखा और मंगल की अपनी रेखा	244
157.	मंगल के पर्वत पर प्रभाव	249
158–159	मंगल नेक के निशान के प्रभाव	250

फरमान नः	विषय	पृष्ट संख्या
160.	मंगल – बद के पर्वत पर रेखा और मंगल बद की रेखा	256
161.	कुण्डली में मंगल – बद का प्रभाव	259
162.	बुध की रेखायें	265
163.	बुध के पर्वत पर रेखा और बुध की अपनी रेखा	266
164.	शाखें / सिर की श्रेष्ट रेखा	270
165.	बुध के पर्वत का प्रभाव	275
166.	बुध के निशान का प्रभाव	275
167.	बुध का दायरा या गोला	280
168.	पापी ग्रहों का प्रभाव और उपाय	282
169.	शनि की रेखा और शनि के पर्वत पर रेखा (मातृ पितृ रेखा)	283
170.	काग रेखा व मच्छ रेखा	291
171.	शनि के पर्वत पर रेखा और शनि की अपनी रेखा (उमर रेखा)	296
172.	सहायक आयु रेखा (मंगल रेखा)	310
173.	शनि के पर्वत की स्थिति	312
174 – 175	शनि के निशान का प्रभाव	312
176–177	राहू ग्रह	318
178.	केतु ग्रह	323
179.	केतु का प्रभाव	326
180.	विविध योग	330
181.	उदाहरण, राशियों, अन्तर	367
	ग्राथ पर देखने की स्मृति –सहायक मुख्य अंग	370
	(1) ग्रह फल विवरण	378
	(2) प्रत्येक ग्रह का फल	379
	(3) कुण्डली से जीवन वृतान्त	383
	(4) खर्च – बचत	388

****

卐

अरुण संहिता (लाल किताब)

हस्त रेखा विज्ञान -

के फ़रमान

कुदरत से किस्मत किस तरह आयी

<u>फ़रमान नम्बर - 1</u>

जब बच्चा पैदा होता है - बन्द मुट्ठी लाता है - और जब वह इस दुनियाँ से कूच करता है, तो दोनों हाथों की मुट्ठियाँ खोल जाता है । छोटा सा बच्चा मुट्ठी बन्द ही रखता है और आसानी से किसी दूसरे को अपने हाथ की हथेली देखने नहीं देता । जैसे-जैसे बढ़ता है मुट्ठियाँ खुली रखने का आदी होता जाता है और आखिर एक दिन ऐसा आता है कि वह भरी दुनियाँ से मुँह मोड़ लेता है । शरीर अकड़ जाता है और वही मुट्ठी जोर से बन्द करने पर भी बन्द नहीं होती । मतलब यह है कि वह बचपन में अपना कुदरती भेद और छोटी सी मुट्ठी का खज़ाना किसी को दिखाना नहीं चाहता और जब अपने सीमित से जीवन निश्चित उमर के लिए साथ लाया हुआ दाना-पानी और दुनियाँ का सारा हिसाब-किताब समाप्त कर चुकता है तो शेष बची हुई चीज़ भी मुट्ठी भरकर अपने साथ न ले जा सका - यही एक भेद है जिसका मतलब इस मुट्ठी में ही भरा हुआ है। बन्द मुट्ठी क्या है? सिर्फ ख़ाली जगह । जिसका दूसरा नाम आकाश है। जिसमें सिर्फ हवा भरपूर है । हवा से जब आग मिली तो पानी पैदा हुआ । उससे मिट्टी मिली तो दुनियाँ का सब भंडार पैदा हुआ । दूसरे शब्दों में बन्द मुट्ठी के आकाश में ज़माना की हवा का मालिक वृहस्पति था जिसमें गर्मी के भंडारी सूर्य की चमक से चन्द्र के पानी और शुक्र की मिट्टी के बाद मंगल का खाना-पानी और बुध की अक्ल व बोलना-बुलाना - शनि का जादू-मन्त्र और देखना-दिखाना-राहु की रहनुमाई व कल्पना-कल्पाना और केतु से चलना फिरना- ग़ैरों से मिलना-मिलाना-या कुदरत के हुक्म को अपना ही खुद बनाना- सब के सब बन्द पड़े थे। इसके सवाल का शुरु और अन्त यानि 'माँ पहिले कि बेटी' मालूम करने का ढंग हाथ की हथेली पर ही लिखा हुआ है ।

पर्वत व राशियों के मुकाम

1 मेष 2 वृष 3 मिथुन 4 कर्क 5 सिंह 6 कन्या 7 तुला 8 वृश्चिक 9 धनु 10 मकर 11 कुम्भ 12 मीन -- पोरियों पर राशियां । 1 सूर्य 2 वृहस्पति 3 मंगल नेक 4 चन्द्र 5 सूर्य 6 केतु 7 शुक्र 8 मंगल बद 9 वृहस्पति 10 शनि 11 वृहस्पति 12 राहू - - ग्रह के मुकाम

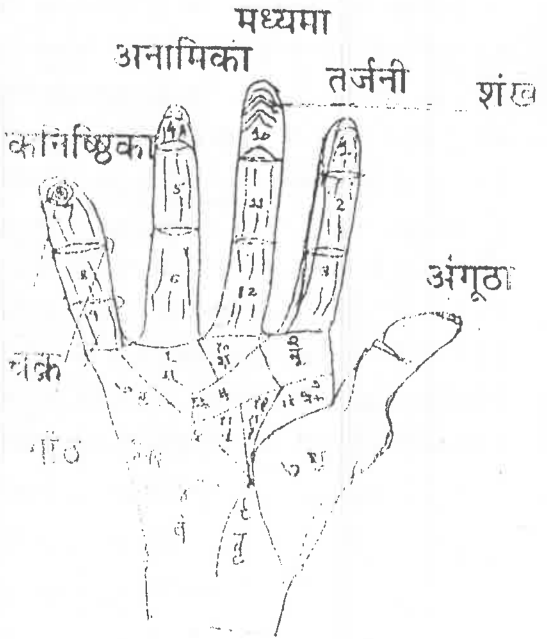

फ़रमान नम्बर - 2

बच्चे ने जब मुट्ठी खोली तो इसके हथेली और अँगुलियों का हिस्सा अलग-अलग मालूम होने लगा । हथेली का एक हिस्सा इकट्ठा और हर एक अँगुली अलग-अलग पाई गई । हथेली कहीं से ऊँची कहीं से नीची - कहीं लकीरें-कहीं निशान पाये गये । इसी तरह अँगुलियों के भी कई-कई टुकड़े अलग करके फिर इकट्ठे एक ही में मिले दिखाई देने लगे । हाथ की हथेली का एक हिस्सा ब्रह्माण्ड माना गया । पहाड़ की तरह ऊपर को उभरी हुई जगह का नाम ''पर्वत'' निश्चित हुआ । लकीरों को 'रेखा' का नाम दिया गया । और लकीरें या पानी के दरिया लहरें मारते हुए इधर उधर भागते माने गये । किसी को 'उमर रेखा', किसी को 'भाग्य रेखा' से याद किया गया जो इकट्ठे मिलकर एक समुद्र बना जिसकी बजह से इसे इल्म का नाम भी 'सामुद्रिक' या समुद्र की विद्या ही ठहराया गया ।

फ़रमान नम्बर - 3

'बुर्ज' या 'पर्वत' जिसँ तरह ऊंचे , लम्बे, चौड़े और मज़बूत होंगे - उसी तरह ही एक दूसरे की अच्छी और बुरी हवा की रोकथाम कर सकेंगे। दरिया की नदियाँ या समुद्र के दरिया जिस तरह गहरे और साफ तह - ज़मीन वाले होंगे - उसी तरह ही उन में पानी की चाल ज़्यादा या पक्का असर होगा। जिस तरह नदियाँ और दरिया कम गहरे और चौड़े होंगे - उसी तरह उनमें पानी न सिर्फ कम या उनका प्रभाव हल्का होगा बल्कि प्रभाव के वक्त की रफ्तार भी मध्यम होगी

रेखा में बद निशान दरिया में रेत, जज़ीरे या रास्ते की रुकावटें होंगे। दरिया या रेखा जिस-जिस पहाड़ या पर्वत के इलाके से गुज़र कर आयेंगे - उसी-उसी किस्म का असर उनकी साथ लाई हुई मिट्टी में मौजूद होगा और पर्वत या पहाड़ की जड़ी बूंटियों और हर किस्म की दवाइयों के पौधों से आई हुई तेज़ - मध्यम-मीठी या कड़वी हवा के असर का साथ होगा।

फ़रमान नम्बर - 4 हथेली के भाग - हथेली के टुकड़े गिनती में 7 (सात) पर्वतो के नाम से गिने गये हैं। वृहस्पति, सूर्य, चन्द्र, शुक्र, मंगल (दोनों, नेक व बद), बुध और शनि। इनके अलावा दो और हैं।

इनमें राहु को तो इस भाग -आज़म की आन्तरिक चलने वाली लहर माना गया है। और दूसरे केतु को इस भाग - सग़ीर में बैरुनी तह पर दौड़ती हुई और पहले लहर के हमेशा विपरित और दुश्मनी पर रहने वाली ज़हरीली हवा माना गया है। राहु का निशान ▦ केतु का निशान ⊔⊔ की शक्लें हैं।

पर्वतों व राशियों के स्थान हथेली और अँगुलियों की पोरियों पर साथ वाले चित्र में दिखलाये है।

इस नक्शे में पर्वतों के नम्बर उमर में असर करने के हिसाब से दिये गये हैं। यानि जिस तरह एक के बाद दूसरा नम्बर है इसी क्रम से ग्रह अपना-अपना असर उमर पर करते है। मंगल बद को मंगल नेक का ही हिस्सा लेते हैं।

राहु की आन्तरिक लहर आग वाले पहाड़ों के लावा या पिघले हुये मादा की तरह भूचाल पैदा करती है। केतु की बैरुनी लहर दरिया और समुन्द्र में तूफान लाती है। आग या आतिशी लहर का मादा पानी के इलाके में आकर रुक जाता है मगर तूफानी हवा की लहर पानी को इधर करने के अलावा तमाम साँस लेने वालों पर भी बुरा असर पैदा करती है।

फ़रमान नम्बर – 5

हाथ की हथेली के भाग – हथेली के टुकड़ों के अलावा हाथ की अँगुलियों की हर एक गाँठ को 'राशि' कहकर पुकारा गया है जो बारह दिशाओं की खबर देने के लिये गिनती में बारह है :- 1. मेष 2. वृष 3. मिथुन 4. कर्क 5. सिंह 6. कन्या 7. तुला 8. वृश्चिक 9. धनु 10. मकर 11. कुम्भ 12. मीन । हर एक पर्वत या पहाड़ का दरिया या रेखा उसी पहाड़ या पर्वत के अपने नाम से निश्चित किया गया है ।

फ़रमान नम्बर – 6

पर्वत – राशि और रेखा के अलावा मकान, रिहायश, स्वप्न, दूसरे शकुन, माल मवेशी, परिन्दे या दूसरे दुनिया के साथी और 'इल्म क्याफा' इस इल्म या विद्या के ज़रुरी पहलू गिने गये हैं । वास्तव में सबके मालिक ने इन्सान के साथ इसके कामों का हुक्म नामा उसके अपने क़बज़े में ऐसे ढंग से दस्ती भेजा है – जो कभी गुम न होने पाये । इस हुक्मनामा में कोई तबदीली या धोखाबाज़ी नहीं की जा सकती । सिर्फ शकी बात को ठीक हालत में बदला जा सकता है। इस हुक्मनामा के पढ़ने के लिए ही यह इल्म दुनियादारों ने जारी किया है जो प्रकट करता है, तो शक का खुश्क झगड़ा मालूम होता है, मगर वास्तव में कुछ अर्थ और समुन्द्र की ज़ाहिरी रंगत की तरह अपनी तह में कीमती जवाहरात रखता है – जिनकी असली कीमत एक जानने वाले से छिपी हुई नहीं । हथेली के नौ टुकड़े (सात ज़ाहिरा और दो अलग लहरें) और अँगुलियों की 12 गाँठें नौ निधि और 12 सिद्धि की याद कराएगी । या यूँ कहो कि 9 पहाड़ों, पर्वतों या ग्रहों का असर कुदरत के नौ भरे हुए ख़ज़ाने या भण्डार हैं जिसे खर्चने के लिए हाथ की चारों अँगुलियों या दुनियाँ की चारों तरफों पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण लगी हुई हैं । मतलब यह कि राशियों के फल या असर में इन्सानी ताकतों से अदली-बदली की गुंजायश है । मगर पर्वतों या ग्रहों का फल हमेशा के लिए निश्चित हो चुका है, जिसमें मनुष्य के दिमाग़ से कोई परिवर्तन नहीं कर सकता । हर एक अँगुली की तीनों गाँठों से तीन लोक या तीनों ज़माने (माज़ी, हाल या मुस्तकबिल या ज़मीन आसमान पाताल) के कारोबार से मुराद होगी । अँगुलियों की नाखून वाली पहली पोरियों पर या गाँठों पर चक्र, शंख, सदफ ज़ाहिरा ज़िन्दगी का ज़माना – दिन के काम-काज बतलाते हैं और हाथ की सबसे आख़िरी जगह गैबी हालात, दिल की आन्तरिक चाल या रात का ज़माना (चन्द्र का पर्वत) बताती है । हथेली से इन्सान के अपने काम आने वाली चीज़ों से मुराद (अर्थ) लेते हैं और हाथ की पीठ को दूसरों के काम आने के लिये माना गया है ।

फ़रमान नम्बर - 7

हर एक पर्वत की पक्की जगह हथेली की हर एक गाँठ पर हमेशा के लिये उसी जगह पक्की और क़ायम रहने वाली मानी गई है, जो कि नक्शा में दिखलाया गया है । सात पर्वतों या ग्रहों को तो पक्के तौर पर हाथ की हथेली में जगह दे दी गई है, मगर दो ग्रहों राहु और केतु को सिर्फ साया ही माना है । केतु इस धड़ का साया है, जो बगैर सिर के लाश होवे और राहु इस सर का साया है जो धड़ के बगैर सिर होवे । राहु के आग वाले मादा का पैदा किया हुआ भूँचाल सिर्फ सिर के ख्यालात से संबन्ध रखता है और केतु का असर पाँव की नकली हरकत हुआ करती है । सूर्य दिन का मालिक और चन्द्र को रोशनी देने वाला है । इसलिए मानते हैं कि जब राहु की आग से पिघले हुये मादे की लहर सूर्य के पर्वत या आग के पहाड़ पर आती है, तो हद से ज्यादा पिघलने के सबब से धूआँधार जमाना पैदा कर देती हैऔर सूर्य के सामने अँधेरा ही अँधेरा हो जाता है। सूर्य - ग्रहण का यह नज़ारा है । मगर वह मादा चन्द्र की तरफ बढ़ता है तो पानी की ठण्डक से जमकर ठहर जाता है । (जिस जगह दरिया पानी आ जावे भूँचाल की लहर रुक जाया करती है) और चन्द्र या पानी के आगे दीवार की मानिन्द बन जाता है । इसके असर को सिर्फ मध्यम करता है। असर ज़रुर बुरा है पर चन्द्र को कोई नुक़्सान नहीं दे सकता ।

इसी तरह से केतु सूर्य की आग को तो बुझा नहीं सकता । सिर्फ इधर-उधर चिंगारियाँ कर देगा । मगर जब चन्द्र के पर्वत या समुन्द्र और पानी पर जाता है, तो न सिर्फ पानी की तह को ऊपर नीचे और तूफान बगैरा पैदा करता है बल्कि पानी या चन्द्रमा के समुन्द्र को अपने दोस्त शुक्र की मिट्टी से बर्बाद कर देता है। पानी हवा को क्या कहे! हवा इसमें हर तरह की ज़हर पैदा कर देती है । यह 'चन्द्र-ग्रहण' का समय होगा।

फ़रमान नम्बर - 8

ग्रह का असल नाम गाँठ है और इस इल्म में भी हर पर्वत की बुनियाद अँगुलियों की जड़ और हथेली की गाँठ पर मानी गई है ।

फ़रमान नम्बर - 9

सप्ताह के दिनों की तरह रविवार (सूर्य), सोमवार (चन्द्र), मंगल, बुध, वीरवार (वृहस्पति) शुक्र और शनि सात ही है । शाम के समय आठवां राहु और ऊषा-काल में नौवां केतु होगा ।

फ़रमान नम्बर - 10 जो बच्चा के पैदा होने के समय इसकी बन्द मुट्ठी

ज़मीन और आसमान के मध्य की खाली जगह का नाम आकाश कहा है
में भी मौजूद या आकाश में हवा हुई । तो हवा में गर्मी या आग आई । आग से पानी और पानी से मिट्टी या कुल ब्रह्माण्ड पैदा हुआ । इसी
तरह ही इस इल्म में किस्मत को जगाने वाले पर्वत या ग्रह इसी चक्कर में माने गयें है और ग्रह अपना-अपना असर इन्सानी किस्मत में इस
तरह दिखलाते हैं :-

1. **बृहस्पति :-** हवा, रुह व साँस, पिता, गुरु सुख ।
2. **सूर्य :-** आग, गुस्सा, जिस्म, अक्ल, तमाम अंग इल्म ।
3. **चन्द्रमा :-** पानी, शांति, दिल, माता, पुरानी जायदाद ।
4. **शुक्र :-** मिट्टी, कामदेव, आजिज़ी, स्त्री, गृहस्थ ।
5. **मंगल :-** खाना-पीना, लड़ाई, हौसला, भाई, ससुराल ।
6. **बुध :-** बोलना, दिमाग़, हुनर, ज़ुबान, नसीहत, पेशा, दोस्ती ।
7. **शनि :-** देखना, चालाकी, मौत, बीमारी लौटना ।
8. **राहु :-** सोचना, ख्यालात या दिल की नक्लो-हरकत । नेकी बदी
9. **केतु :-** सुनना, पाँव की नकलो हरकत । का हिसाब । दूसरे के शुरु के मध्य 40 दिन मुश्तरकातू होंगे । यानि

ऊपर का असर सारी उमर पर ही इसी तरह होगा । एक ग्रह का असर खत्म और बुरे ग्रह की अवधि के 40 दिन बाद तक इसका बुरा असर हो सकता है । और शुरु होने वाले का अपनी अवधि से 40 दिन पहले ही असर हो जाना माना है । इकट्ठे असर के सिर्फ 40 दिन ही होंगे । मगर दोनों ग्रहों के अलग-अलग चालीस-चालीस दिन न होंगे । सह रियायती

चालीस दिन कहलाते हैं । इसी नियम पर बच्चे के जन्म से लेकर 40 दिन का छिला और मर जाने के बाद चालीस दिन का मातम या चालीसा मनाया जाता है। इन्सानों में भी चालीस चन्द्रा पूरा मनहूस होगा ।

<u>फ़रमान नम्बर - 11</u>

बच्चा पैदा हुआ । बन्द **हवा** से इस ज़माने की हवा में आया । यह ज़माना वह है जब कि बच्चे का शरीर नरम, पोला और तबीयत बिल्कुल भोली-भाली है। अभी सात ग्रह का असर मुकम्मल नहीं हुआ । या सात साल तक दिमाग़ के ख़ाने पूरे नहीं हुए । लोक परलोक के मुशतरका ख्यालात बच्चे में पैदा हो गये है । 12 साल तक या बारह राशियां की अवधि तक कोई बीमारी बच्चे की अपनी नहीं गिनते ।

(1) अब इसने गुरु से तालीम हासिल की और इस ज़माना की हवा का असर 16 आना होने लगा । कर्म धर्म करना सीखा और इज़्ज़त और बेइज़्ज़ती का फर्क होना शुरु हुआ, तो उमर का ज़माना वह आया जो रुहानी हालत का हुआ । पट्ठे जो अब बढ़ने थे बढ़ चुके, तो वृहस्पति की उमर हुई । (16 साल) ।

(2) इल्मो हुनर के बाद राज दरबार से खुद अपने हाथों धन कमाना शुरु किया तो यह समय अहदे-सूर्य हुआ । बच्चा बालिंग है । 21 साल से रेखा में भी कोई परिवर्तन नहीं मानते । अब उमर हुई 22 साल ।

(3) अपनी कमाई से माता की सेवा करने लगा तो चन्द्र का जमाना हुआ और उमर हुई 24 साल ।

(4) स्त्री संबन्ध, बड़े परिवार, गृहस्थ आश्रम और बाल बच्चों का ज़माना शुक्र का अहद हुआ । उमर हुई 25 साल ।

(5) खाना-पीना, भाई-बन्धुओं की सेवा, जंगो जदल, शारीरिक दुःख बीमारी बगैरा का वक्त मंगल (नेक व बद) गिना गया, तो उमर हुई 28 साल ।

(6) बुद्धि के काम, तिजारत-व्यापार , हुनर व दस्तकारी, दिमागी लियाकतों बगैरा से धन दौलत का ज़माना बुध का अहद हुआ । राजदरवार में होते हुये यह काम नहीं कर सकता; इसलिए जब बुध के साथ सूर्य हो तो बुध का असर नदारद और उमर हुई 34 साल।

(7) संन्यास या मकान जायदाद चालाकी की आँख से धन दौलत का ढंग पकड़ा तो शनि का समय हुआ और उमर हुई 36 साल ।

(8) दुनियाँ के अंदेशा की फरजी सोच विचार ख्यालात की नक्लो-हरकत का ज़ोर हुआ तो राहु का ज़माना आया और उमर हुई 41 साल।
(9) अपने आप से जब दुनियाँ का हल न हुआ तो इधर-उधर सलाह मशवरा के लिए पाँव की नक्लो-हरकत शुरु हुई या बच्चा चलने और दौड़ने लगा तो केतु का ज़माना हुआ और उमर हो गई 48 साल।

फ़रमान नम्बर - 12

"किस्मत की हेरा फेरी" - बड़ी रेखा शायद ही कभी बदला करती है। शाखों का बदलना मुमकिन है। वह भी उमर के हर सातवें साल (7-14) मगर 21 साल की उमर से रेखा में कोई तबदीली होनी नहीं मानते। यह बालिग़ होने का ज़माना है। उमर के हर सातवें साल तबदीली-ए-हालात (चाहे बुरी तरफ होवे चाहे भली तरफ़) मानते है। 'अल्प आयु' (छोटी उमर जिसका ज़िक्र उमर रेखा में होगा) वालों की उमर के आठवें साल (8, 16, 32, 40, 48, 56, 64 तक) जिन्दगी खतरे में गिनते हैं।

फ़रमान नम्बर - 13

बच्चा की रेखा का 12 साला उमर तक कोई एतबार नहीं।

फ़रमान नम्बर - 14

मर्द का दाँया **हाथ** (सूर्य) - तदबीर - "ज़ाहिर अपने आप का काम"। और बाँया हाथ (चन्द्रमा) तक़दीर-बुजुर्गों का हिस्सा - दैविक मदद के हालात से संबन्धित है। क्योंकि आम तौर पर इन्सान दिमाग के बांई तरफ के ख़ानों से काम लेता है जिसका अक्ष दांये हाथ पर होता है। और दिमाग़ के दांई तरफ़ के ख़ानों से कम ही काम लेता है- जिनका संबन्ध बाँए हाथ से है। इसलिये, अगर कोई रेखा बाँए हाथ पर ही होवे और दाँए पर ज़ाहिर न हो तो इस रेखा का असर कम ही गिना है। क्योंकि इस असर को पैदा करने के लिए इन्सान कभी स्वप्न में ही न लायेगा। कुदरती तौर पर इसका अगर असर पता लग जाये तो मुमकिन है। मुफस्सल दिमाग के खानों में ज़िकर-हाल है।

फ़रमान नम्बर - 15

औरत का यही हाल उल्ट हाथों से माना है।

फ़रमान नम्बर - 16

रेखा का ऊपर को झुकाव और उठाव तरक्की या नेक असर और नीचे को झुकाव बुरा असर बताता है। यही हाल शाखों के ऊपर को या नीचे को निकल कर जाने से गिना है ।

फ़रमान नम्बर - 17

बगैर रेखा वाला हाथ- क़ज़ाक़, डाकू, संगदिल होगा ।

फ़रमान नम्बर - 18

बहुत ज्यादा रेखा वाला हाथ - मंद भाग और बहमी होगा ।

फ़रमान नम्बर - 19 - 20

ज्यादा चौड़ी रेखायें - बहुत कम नेक असर देंगी ।

मध्यम सी रेखायें - बे-माइनी होंगी । देर बाद असर देंगी ।

फ़रमान नम्बर - 21

साफ रेखायें - अच्छा नतीजा और पुर - माइनी होंगी ।

गहरी रेखायें - और जल्द असर देंगी ।

फ़रमान नम्बर - 22

स्याह व काली रेखायें - मनहूस नतीजे वाली होंगी ।

फ़रमान नम्बर - 23

समाप्त होने से पहले ही दूसरी रेखा का शुरु हो जाना रेखा का टूटा हुआ नहीं होता बल्कि समय में परिवर्तन के बारे में बताती है । चाहे वह परिवर्तन बुरी तरफ को होवे, चाहे भली तरफ को जाने लगे । अगर ऐसा परिवर्तन बुरी तरफ को जाता मालूम देवे तो दान से रिहाई और नेक असर होगा । जिसका ज़िकर पर्वतों में है ।

फ़रमान नम्बर – 24

रेखा में :-

जज़ीरा, सुर्ख निशान – मंगल, बीमारी ।
ज़रद निशान – कुदरती कमज़ोरी ।
धब्बे – असर में रुकावट ।
त्रिकोण Δ – बुरा असर ।
दायरा – असर चक्कर में ।
सितारा – सूर्य चन्द्रमा का संबन्ध ।
त्रिशूल – शनि का संबन्ध ।
सीधे खत – वृहस्पति का संबन्ध ।
लेटी हुई लकीर – शुक्र ।
टेढ़ी लकीर – चन्द्र ।
जाल – राहु ।
चारपाई – केतु ।

अपना-अपना असर – जिनका ज़िकर पर्वतों में है – किया करते हैं ।

चौकोर – हमेशा नेक असर देता है ।
शाखदार रेखा, शाख दर शाख संगली सी रेखा – मुआवन मददगार
मसावी (Parallel) रेखा – नेक होती है ।

फ़रमान नम्बर - 25

( ) रेखा का एकाएक टूट जाना किसी आने वाले हादसा की समय से पहले ही निशानी है ।

फ़रमान नम्बर - 26

सिर्फ़ एक ही रेखा को देखकर किया हुआ फैसला कोई सही फ़ैसला नहीं होता, बल्कि शक पैदा करने की निशानी होती है ।

फ़रमान नम्बर - 27

खूब ज़ोर से मलने पर रेखा जिस तरफ से ज्यादा सूर्ख़ या लाल हो जाये - वही तरफ इस रेखा या शाख के शुरु होने की तरफ होगी ।

फ़रमान नम्बर - 28

वृहस्पति, सूर्य, मंगल के पर्वतों से निकली शाखे	-	मर्द और मर्दों का संबन्ध
शुक्र और चन्द्र के पर्वतों से निकली शाखें	-	औरत व औरतों का संबन्ध
या सीधे ख़त	-	मर्द
दो शाखी —< ख़त	-	औरत

को ज़ाहिर करते हैं ।

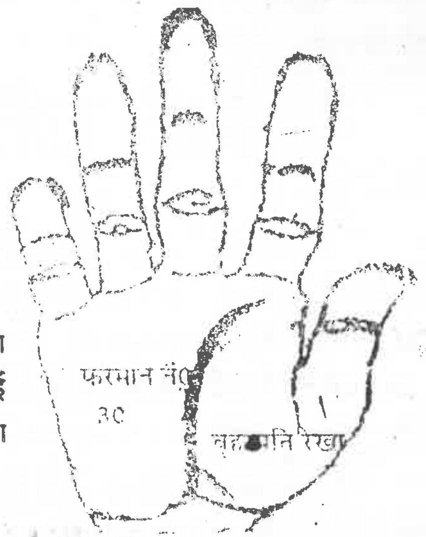

फ़रमान नम्बर - 29

एक ही रेखा के बिलमुकाबल दूसरी रेखा // ═══ एक ही किस्म की रेखा होगी बशर्ते कि दोनों एक ही पर्वत पर वाक्या हों । ऐसी शाखों से मुराद होगी कि कोई अपना ही भाई बहन साथ चल रहा होगा । या वह दूसरी शाख अपने ही खून का तअल्लुकदार बताएगी ।

तमाम ग्रहों की बड़ी रेखायें (ज़िकर हर पर्वत में अलग-अलग है ।)

फरमान नम्बर - 30

(1) वृहस्पति रेखा -
अच्छी हालत का असर - धार्मिक संबन्ध और हकूमत की ताक़त ।
टूटी फूटी का असर (अगर गहरी व साफ न हो) - मुतअस्सब और जाहल होवे ।

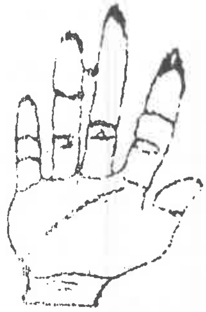

चन्द्र रेखा खराब

(2) सूर्य रेखा - अच्छी हालत का असर -
कामयाबी और बरकत होवे ।
सेहत और तरक्की मिले ।
खराब रेखा का असर -
गुस्सा, बद मिज़ाजी खुद गर्ज़ी ।

(3) चन्द्र रेखा - ठीक हालत का असर -
कुव्वते ख्याल या दिल की ताकत, शांति व सबर होवे ।

खराब व टूटी-फूटी रेखा- मायूसी, बुज़दिली और
सुस्ती होवे।

शुक्र रेखा खराब

(4) शुक्र रेखा -ठीक हालत का असर - कामदेव, मुहब्बत बाज़ी,

शादी व स्त्री संबन्ध ।

खराब रेखा -मेहरबानी न करने की आदत, तबीयत का बदल जाने वाला, खराब वाला होगा ।

(5) मंगल रेखा - मंगल नेक -

जंगी ताकत, दिलेरी, हौसले का पक्कापन । हर तरह का आराम गृहस्थ में होवे ।

मंगल बद - ख़राब रेखा से घर फूंककर तमाशा देखने वाला। शरीरफ़सादी । बीमारी - मौतें । बुजदिल - डरपोक होगा ।

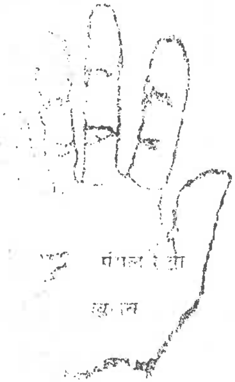

(6) बुध रेखा -

अच्छी हालत - अक्ल की बारीकी, तिजारत, इल्मो - हुनर। दोस्ती की ताकत। जुबान-जुबान से महल खड़े कर दे।

खराब हालत- झूठ बोलने वाला और बे-एतबारी की ज़िन्दगी होवे। जुबान का गन्दा होवे।

(7) शनि की रेखा -

अच्छी ऊर्ध रेखा (मछली के मुँह में) - कम बोलना-मतलब परस्ती, आँख की चालाकी की ताक़त व होशयारी। बेशक अक्ल का अंधा मगर गाँठ का पूरा।

खराब रेखा (सूर्य रेखा मछली के मुँह में) बदनसीब व गुमनाम जिन्दगी वाला होवे।

(8) राहु से हसद और कीना। दिल की दुश्मनी रखना।

(9) केतु से पाँव चक्कर।

इन दोनों का न किसी ने कोई पर्वत या घर निश्चित किया है और न ही इनका कोई दरिया या रेखा माना है। किसी ने इनको सिर और धड़ का साया कहा। किसी ने भूँचाल का मादा और तूफान की बुनियाद गिना। किसी ने नेकी-बदी, दाँए-बाँए रहने और एमाल नामा लिखने वाले फ़रिशते बताया। किसी ने धूप साया - रात दिन से याद किया। किसी ने मस्त हाथी और शरारती सूअर कुत्ता बहर हाल सबने इन दोनों को 'पापी ग्रह' या 'पाप' या बदफेली की तरफ ले जाने वाली ताकतें जरुर माना है।

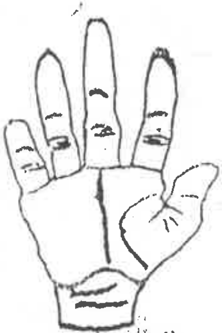

शनि ठीक रेखा (ऊर्ध रेखा)

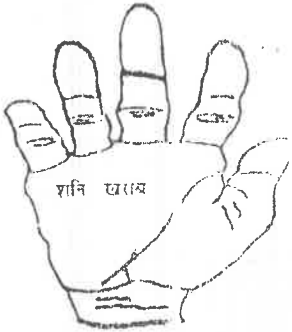

फ़रमान नम्बर - 31

(तमाम पर्वतों की मुशतरका रेखायें)

वृहस्पति से -

अगर कोई रेखा निकलकर दिल रेखा और सिर रेखा के मध्य शनि या सूर्य के पर्वत की तह की हद तक चली जावे तो वह इज्जत रेखा होगी ।

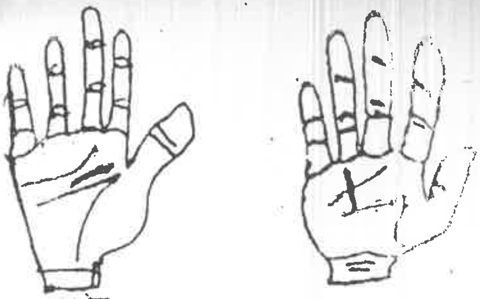

फ़रमान नम्बर - 32

सूर्य से -

अगर रेखा निकलकर सिर रेखा से जा मिले तो दिमागी लियाकत या उमदा दिमाग, जिसमें सूर्य का तमाम नेक असर मौजूद हो, जाहिर होगा ।

फ़रमान नम्बर - 33

चन्द्र से -

निकलकर शाख यानि चन्द्र के पर्वत से अगर कोई रेखा निकलकर अपने हमसाया शुक्र की तरफ बल्कि शुक्र में चली जावे तो बहू, बेटी, या माँ की मुहब्बत और कामदेव से दूर या फकीर सहिबे कमाल होगा - वरना दुनियाँ से बेहोश, तमाम नशों का सरदार भंगी, चरसी, शराबी, पोसती ज़रुर होगा । बहर हाल वह दुनियावी मुहब्बत और इश्क से ज़रुर दूर होगा ।

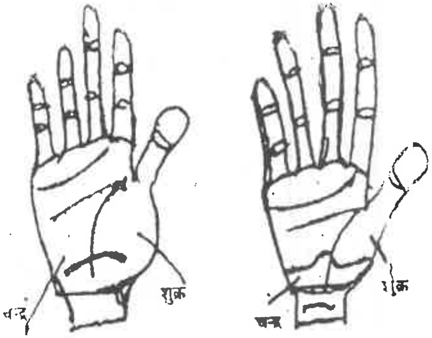

फ़रमान नम्बर - 34

चन्द्र से -

निकली यह रेखा अगर बीच से ऊपर को उठी हुई होवे तो माँ बाप दोनों की तरफ से पूरा भला इन्सान होगा ।

फ़रमान नम्बर - 35

चन्द्र से -

वृहस्पति को जाने वाली रेखा अगर रास्ते में सिर रेखा तक ही रह जाये तो बुरे असर ही दिखलाएगी और अगर बढ़ती-बढ़ती दिल रेखा में जा मिले तो दिल की शांति पूरी होगी और चन्द्रमा का तमाम नेक असर देगी ।

फ़रमान नम्बर - 36

चन्द्रमा से -

वृहस्पति को जाने वाली यह रेखा अगर किस्मत रेखा में ही खत्म हो जाये तो मामूली सफर और आम चन्द्र के पर्वत से संबंधित कामों में किस्मत का नेक असर देगी ।

फ़रमान नम्बर - 37

चन्द्र से -

निकली यह रेखा अगर किस्मत की रेखा से न मिले और सीधी सूर्य या शनि के पर्वत में जा निकले तो निहायत ही बुरी ज़िन्दगी होगी चाहे वह लाखपति ही क्यों न हो । मुसबित पर मुसीबत ही देखता रहेगा ।

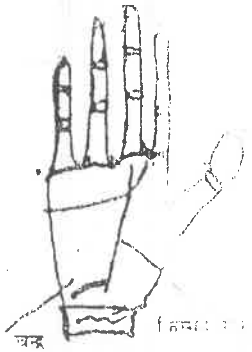

फ़रमान नम्बर - 38

चन्द्रमा से -

अगर चन्द्रमा से 'बुध की तरफ' मंगल बद तक ही रेखा रह जाये तो हौसले वाला लम्बे-लम्बे समुन्द्र पार सफर बतलायेगी , जिनके नतीजे भी नेक होंगे । यह रेखा अगर बुध की तरफ का रुख़ रखती हुई मालूम हो तो राजदरबार के सफ़र से लाभ होगा जो काफी मुनाफा होगा ।

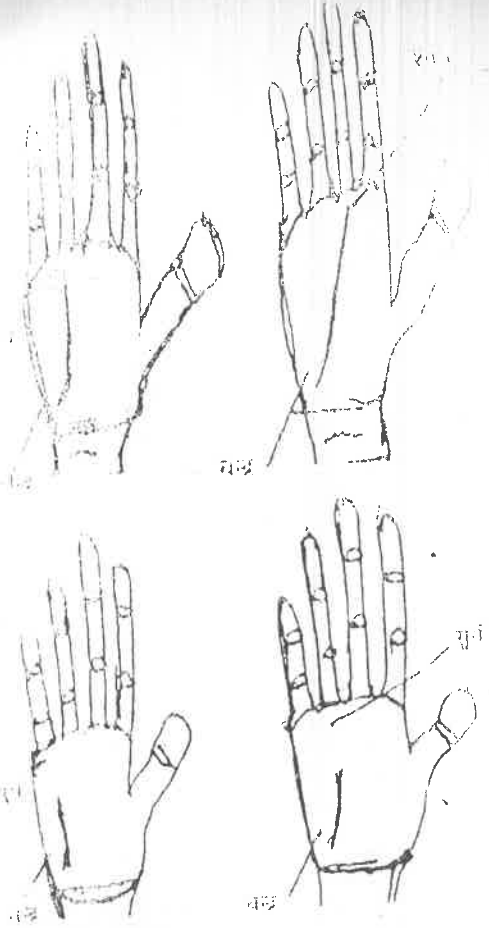

फ़रमान नम्बर - 39

चन्द्र से -

अगर यह रेखा जिस तरह पहले सूर्य के पर्वत में जा निकली थी, इसी तरह अब बुध के पर्वत के अन्दर चली जावे तो दिल की आन्तरिक अकल की बारीकी व्यक्त करेगी । मगर आन्तरिक हालत में बुध और चन्द्रमा दोनों का फल खराब देगी । खासकर माता या संतान को अंधी (ऐसी हालत में माता कानी न होगी अगर होगी तो अंधी होगी क्योंकि एक आँख पर शुक्र का असर गिना है) कर लेगा । खुद इसकी अपनी नज़र भी इस खतरे से बाहर नहीं हो सकती । अन्ततयः बुध व चन्द्र दोनों के बीच मंगल बद बैठा है जो चन्द्र और बुध दोनों के ही बराबर का है और इसका असर है और गहरी नज़र से ही मंगल लाल सुर्ख हो जाता है। चन्द्र व बुध दोस्त है । बुध का दिल साफ है । मगर चन्द्र बुध से आन्तरिक दुश्मनी ही करता है। मंगल साथ दोनों का ही देता है । लड़ाई में वह पहले बुध या पेशावर या दस्ती काम से रोटी खाने वाले पर चन्द्र की तरफ हमला में

साथ जाता है और इसके भी एक की बजाए दो थप्पड़ लगा देता है क्योंकि इसे पता है कि चन्द्र बुध से दुश्मनी करता है । अब चन्द्रमा बुध मंगल की मदद से अपनी एक आँख (बुध वाला) और दोनों आँख (चन्द्र वाला) - माता संतान गवाकर फिर वही दोस्त बन बैठे और इकट्ठे रोटी खाने लगे । मगर वास्तव में नतीजा क्या होगा ? न चन्द्र (माता) सुखी न बुध का कुछ बनेगा। आन्तरिक **अक्ल करे तो क्या करे** । इलाज क्या होवे ? बुध माता से अलग रहे या अपना हाथ का काम बन्द करे । चन्द्र आन्तरिक दुश्मनी ही करता जायेगा ।

चन्द्र के पर्वत से मंगल नेक को रेखा बहुत शुभ है - जिसके कई नाम है।

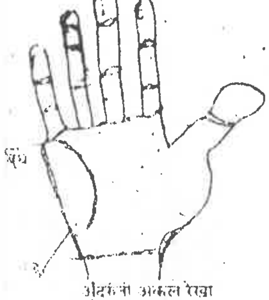

आंतरिक अक्ल रेखा

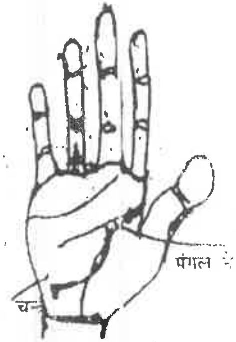

धन रेखा: चन्द्र से मंगल

फ़रमान नम्बर - 40

धन रेखा -

अगर रेखा चन्द्र के पर्वत से निकल कर शुक्र के पर्वत पर से उमर रेखा के बराबर होती हुई मंगल नेक तक चली जाये तो वह धन रेखा के नाम से गिनी जाएगी ।

फ़रमान नम्बर - 41

श्रेष्ठ रेखा -

अगर रेखा चन्द्र से निकलकर शुक्र के पर्वत की बजाए उमर रेखा के बराबर हथेली के मध्य मैदान से होकर मंगल नेक तक चली जाये तो श्रेष्ठ रेखा कहलायेगी ।

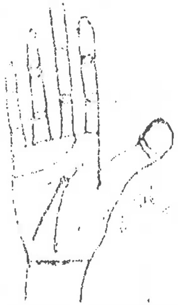

... रेखा: उमर रेखा चन्द्र के पर्वत पर ...

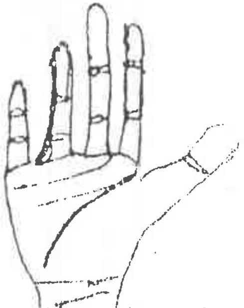

पितृ रेखा: उमर रेखा चन्द्र के ... पर आ गिरे

फ़रमान नम्बर - 42

पितृ रेखा -

अगर उमर रेखा ही चन्द्र के पर्वत पर जा गिरे तो पिता की साथी या पितृ रेखा (पिता की रेखा) होगी ।

फ़रमान नम्बर - 43

शुक्र के -

बुर्ज से निकली हुई रेखा अगर "शनि की तरफ" को चले तो गृहस्थी - साथ में - दूसरे साथी होंगे जो उसकी कमाई से परवरिश पायेंगे और अगर यह शुक्र के पर्वत की रेखा सिर्फ उमर रेखा से ही शुक्र के मुकाम से निकले तो ऐसे साथी बिलकुल क़रीबी रिशतेदार होंगे, जिन्दगी और कमाई वास्तव में इनके लिए ही होगी । अगर यह शुक्र से निकली हुई रेखा शनि के पर्वत के अन्दर तक चली जावे तो शनि का बुरा असर ज़ोर से होगा। अगर शनि से निकलकर रेखा शुक्र के पर्वत पर उमर रेखा को आ काटे तो निहायत दुख की मौत होगी । अगर उमर रेखा से निकल हुई शाख ऊपर शनि को - किस्मत रेखा - शनि की ऊर्ध रेखा के बराबर-बराबर ही शनि मे चली जाये तो शनि का बुरा असर न होगा बल्कि यह नज़दीकी रिशतेदार शनि के कामों (मकान बगैरा) के संबंधित कारोबार से संबंध रखते हुये इसकी कमाई को खर्च करेंगे । ऐसे आदमी की खुद अपनी कमाई मकानों पर ज्यादा होगी ।

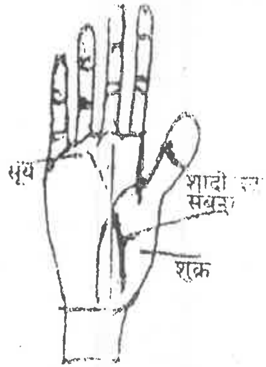

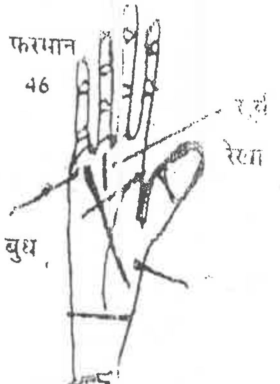

फ़रमान नम्बर - 44-45

शुक्र के -

बुर्ज से रेखा अगर 'सूरज की तरफ' चले और रास्ते में किस्मत रेखा में ही रह जाये तो ऐसी शुक्र की शाख (स्त्री, औरत) किस्मत से संबंधित होगी। शादी होने पर ही किस्मत को रोशन और नेक असर बना देगी। ऐसी औरत स्याह रंग न होगी बल्कि शुक्र या सूर्य के रंग की होगी और चमकीला चेहरा होगा।

अगर यह शुक्र से निकली रेखा सिर - रेखा को सूर्य के पर्वत के अन्दर ही चली जाये तो चन्द्र और सूर्य के मिले हुए पर्वत की तरह निहायत बुरी जिन्दगी होगी। तपैदिक होगी जिसका कारण औरत होगी, यानि बुखार या दीगर स्त्री संबंध से बिगड़ा हुआ तपैदिक होगा।

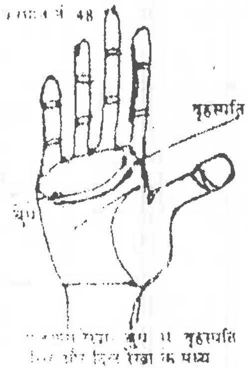

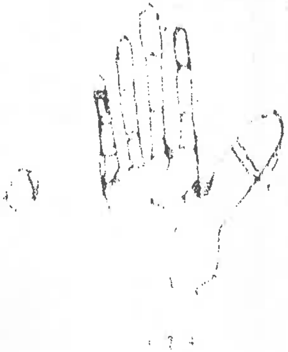

फ़रमान नम्बर - 46

शुक्र से -

निकली हुई यह रेखा अगर बुध का रुख करे या बुध की तरफ या बुध में चली जाए और रास्ता में सूर्य-रेखा से न कटे कटाये तो बुध का उत्तम फल होगा। दस्ती, दिमागी, काम नेक होंगे।

फ़रमान नम्बर - 47

शुक्र से -

अगर कोई रेखा मंगल नेक के रास्ते वृहस्पति पर जा निकले (जिसे गृहस्थ रेखा भी कहते है) तो औरत खानदान या ससुराल से जायदाद

आदि के लाभ दिलवायेगी।

<u>फ़रमान नम्बर - 48</u>

बुध से -

अगर कोई रेखा दिल-रेखा और सिर-रेखा के मध्य होती हुई **वृहस्पति पर चली** जाए तो 'राजयोग' होगा जिसमें शनि और सूर्य दोनों का शुभ असर शामिल होगा।

<u>फ़रमान नम्बर - 49</u>

सिर रेखा से अगर सूर्य या बुध को रेखा चली जावे तो सूर्य और बुध का उत्तम असर दस्ती दिमागी कामों में होगा। मंदा असर इस रेखा का वृहस्पति पर होगा। मगर ऐसी हालत में बुध दस्ती काम व हरे रंग का संबंध कुछ नुकसान करने वाला भी रहेगा, वह भी सिर्फ माली हालत में। लेकिन **यह** रेखा - सिर की रेखा की शाख (शनि की तरफ चली हुई) नुकसान नहीं देगी। लेकिन रास्ते ही में दिल रेखा या चन्द्र रेखा पर खत्म हो जाये तो चन्द्र अपना बुरा असर ज़रुर करेगा। खूनी होगा।

<u>फ़रमान नम्बर - 50</u>

लेकिन यही रेखा अगर **चन्द्र** रेखा या दिल रेखा से पार होकर ऊपर को बढ़ जाये तो नेक असर होगा। चाहे ऐसी रेखा बुध, सूर्य, शनि या वृहस्पति पर कहीं भी खत्म हो।

<u>फरमान नम्बर - 51</u>

अगर मंगल - नेक से निकली हुई कोई रेखा किस्मत -

फ़. नं. 49

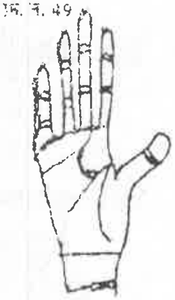

शनि को जाती दिल रेखा पर रुकी

फ़. 50

दिल रेखा को पार

फ़रमान नं. 51

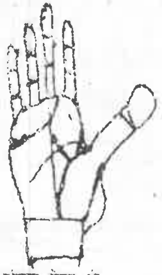

मंगल-नेक से

मंगल-बद से

रेखा से जा मिले तो औरत खानदान का सम्बंध व्यक्त होगा।

लेकिन मंगल - बद से किस्मत - रेखा की तरफ को आई रेखा अपने ही भाई-बन्धुओं का सम्बंध बतायेगी। मगर अपने भाई बन्धुओं करीबी सम्बन्धी की मौतें जरुर देखेगा, यानि मंगल नीच होगा और बुध राहु केतु का बुरा असर होगा। जरुर अपनी आँखों और नजर पर भी कोई खराब असर हो सकता है।

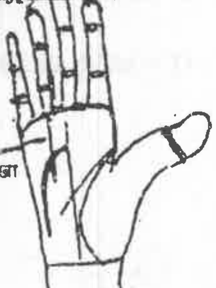

सूर्य रेखा को काटती मंगल बद रेखा

फ़रमान न. 53

दो शाखी रेखा (नेक असर)

फ़रमान नम्बर - 52

ऊपर कही मंगल - नेक वाली रेखा कोई बुरा नतीजा न देगी मगर मंगल बद से आई रेखा अगर सूर्य-रेखा या तरक्की-रेखा को काटे तो विरोध या रोजगार में धक्का बाजी। बल्कि मंगलबद का असर मौतें वगैरा दिखायेगी यानि उसकी (ऐसे सुंध वाले की) अपनी मौत तो न होगी पर।

फ़रमान नम्बर - 53

अँगुलियों की जड़ और हथेली के ऊपर के किनारे पर

दो शाखी रेखा (V) - दो बुर्जों को मिलाने वाली रेखा-नेक असर देगी। बृहस्पति और शनि; शनि और सूर्य; सूर्य और बुध; के बीच मिलाने वाली रेखा नेक असर देगी। शनि भी ऐसी हालत में अपना बुरा असर छोड़ देता है और शुभ असर करता है। शनि का साँप औरत के सामने अंधा हो जाता है।

फरमान नं0 54

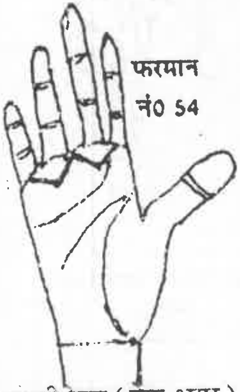
दो शाखी रेखा (नेक असर)

फरमान नं0 55

दो-शाखी रेखा का मुँह ऊपर मुँह-नेक, नीचे मुँह निष्फल

हरगिज़ डंक न मारेगा । इकलौते बेटे पर भी हमला न करेगा क्योंकि इकलौता बेटा भी सूर्य उत्तम का सबूत है । शर्त यह है कि पहला लड़का होवे ।

फ़. नं. 56

तीन-शाखी रेखा-केतु

<u>फ़रमान नम्बर - 54</u>

अगर यह दो - शाखी रेखा दो नज़दीकी पर्वतों के अलावा पहले - तीसरे,
दूसरे - चौथे पर्वतों पर भी हो यानि एक सिरा वृहस्पति - दूसरा सूर्य पर; या एक सिरा शनि पर और दूसरा बुध पर; हो तो भी नेक असर ही होगा चाहे ऐसी दो - शाखी रेखा का शुरु दिल रेखा पर हो, चाहे यह सिर-रेखा से निकलकर ऊपर को भाग रही हो ।

<u>फ़रमान नम्बर - 55</u>

ऊपर को उठने वाली शाखें या ऊपर को मुँह रखने वाली दो - शाखी V का नेक असर होगा । नीचे को निकल भागने वाली शाखों या नीचे की तरफ मुँह रखने वाली दो - शाखी V का कोई नेक असर न होगा ।

<u>फ़रमान नम्बर - 56</u>

हाथ में तीन - शाखी रेखा केतु होगा । ⊔ ⊓ ┌┴┐ । केतु उल्टी चारपाई तीने पावे होता है। शनि अब बराबर का होगा । पर

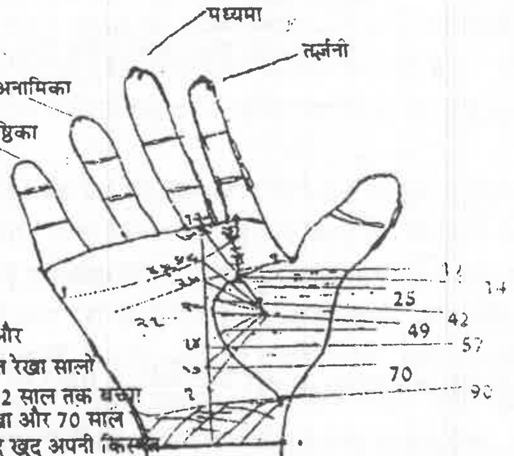

उमर और किस्मत रेखा सालों में- 12 साल तक बच्चा की रेखा और 70 साल के बाद खुद अपनी किस्मत का एतबार नहीं । 12 साल तक जमाना की हवा में नहीं आया। 70 साल दुनिया के लिये सत्तरिया बहतरया गया ।

शनि का साँप चारपाई पर नहीं जाता । केतु की चारपाई के तीन पावे हैं । अगर चौथी चीज़, औरत की गुत या कोई कपड़ा मददगार होवे तो चारपाई पर चला जायेगा और डँक मार देगा। यानि चुगली और शरारत पैदा होगी ।

फ़रमान नम्बर - 57

रेखा के असर का अब कौन सा साल है ?

1. दस साल तक:- कनक या जौ के दाना के बराबर के टुकड़े के पैमाना पर ⬭ रेखा का असर होगा चाहे कोई भी रेखा होवे ।
2. 12 साल :- अगर तर्जनी अँगुली की जड़ से हाथ के किनारा के साथ-साथ नीचे की तरफ उमर रेखा को काटता हुआ खत खैंचें तो इसकी पहली सीढ़ी या रेखा की इस तक लम्बाई 12 साल होगी ।
3. 90 साल:- जब नं० 2 वाला खत आगे बढ़कर दोबारा काटे तो आयु है 90 साल ।
4. 21 साल :- जिस जगह किस्मत रेखा उमर रेखा से मिले ।
5. 35 साल :- जिस जगह किस्मत रेखा सिर रेखा से मिले ।
6. 56 साल :- जिस जगह किस्मत रेखा दिल रेखा से मिले ।
7. 45 साल :- हथेली की चौड़ाई और दिल रेखा के चौथाई का निशान जहाँ दिल रेखा को काटे वह घर ।
8. सेहत या तरक्की रेखा जिस जगह उमर रेखा से मिले या जिस निशान पर दोनों आपस में कटें। - उमर का आखिर ।
   बाप बेटे की आपसी उमर और किस्मत के सालों का अपना अपना असर

औसत	किस्मत	1	7	14	21	28	35	42	49	56	63	70	220
	उमर	70	63	46	49	42	35	28	21	14	7	1	120

हाथ का अँगूठा

<u>फ़रमान नम्बर - 58</u>

अँगूठे को हाथ के घूमाने बाली कीली माना है। बाज़ का खयाल है कि ज़मीन एक कीली पर घूमती है। बाज़ कहते हैं कि तमाम ज़मीन के बोझ को नारीया बैल (अँगूठा शुक्र का घर और शुक्र को बैल माना है) ने अपने सींगों पर उठाया हुआ है। वैसे ही अँगूठे पर तमाम हाथ का बोझ माना है। अँगूठे की कीली पर ही हाथ घूमता है। अँगूठे की ताक़त दिल को चलाती है। चलता हुआ दिल इन्सान के ज़िन्दा होने की दलील है। जिस ज़िन्दगी से यह तमाम तमाशा दिन रात होता है। अँगूठे में कीली की तरह घुमाव दे देने की ताक़त इन्सान की तमाम ताक़तों को अपनी अपनी सीमा में कर देती है और उदासी का अँधेरा हमेशा कायम नहीं रहने पाता। कहते हैं कि अपनी सीमा में कर देती है और उदासी का अँधेरा हमेशा कायम नहीं रहने पाता। कहते है कि एक दिन तर्जनी अँगूली ने हकूमत के नशे में कहा - मेरा दिल चाहता है कि खाऊँ, खाऊँ, यानि जी कुछ खाने को चाहता है। आदत से मजबूर हकूमत की तबीयत वाले अपना क्या सब दूसरों का माल खा जाना ही पसन्द किया करते है। वह हरदम अपने ही खाने खेलने या पीने की इच्छा का सबसे ज्यादा ख्याल रखते हैं। अपनी तबीयत से मजबूर हर-समय खाऊँ-खाऊँ ही करते रहते है और दूसरों पर अपनी खा जाने की ताकत या आदत का भय या डर डालते रहते है।

मध्यभा ने जवाब दिया कि -"कहाँ से खाऊँ।" (यह नहीं बोली कि कहाँ से खाओगे) यानि यह अँगूली संन्यास या बैराग की है। हरदम यही लहर पैदा करती है कि कहीं से खाना है। किसको खाना है। यह सब खुदा के बन्दे है। किसका खाँऊ और क्या खाऊँ। क्यों खाँऊ। क्यों न खाऊँ। कहाँ से खाऊँ। सैंकड़ों तरह की सोच विचार। इस दुनिया और परलोक का ध्यान वगैरा उदासी और मायूसी की हवा से सब विचार मुर्दा कर देती है। राशियों और ग्रहों के हिसाब से भी मौत बीमारी और शनि का यही अँगूली घर है। (तर्जनी से चलकर पाँचवें नम्बर पर चार तत्व आग, पानी, मिट्टी, हवा का पुतला अपनी चारों ताकतों से आगे बढ़कर या तर्जनी से चलकर चार ख़ाने छोड़कर दसवें द्वार या दरवाज़े से आगे चलकर दस इन्द्रियाँ बगैरा लम्बा हिसाब किताब है। छोड़ कर चला) इस स्याह सूरत श्याम रंग - मध्य - सब तरफ से दरम्याना या मध्यमा अँगूली चाहे गिनती गिनों, चाहे

हाथ के दो टुकड़े कर दो, चाहे लोक परलोक के मध्य से कहो, चाहे सप्ताह के सात दिनों का आखिरी दिन और नये सप्ताह के शुरु का पहला पहलू या बीच की हालत या दिल की आन्तरिक ताकत को बाहर व्यक्त करने वाली ताकत या बाहर की सभी चीज़ों को देखकर बाहर से अन्दर आकर जता आने वाली चीज़ या चेहरा की बीच की चीज़ । आँख के बीच घर की पुतली की नज़र या अंधों और फरक़ करने वाले आँखों के मालिकों में हद-बन्दी ।

कुछ भी हो, आँख खुली तो दिन हुआ, जन्म हुआ । आँख बन्द हुई, अँधेरा छाया । आँख पथराई, मौत का आसार हुआ। नज़र गई, अँधेरा हुआ । मौत आई । जहान या जहाँ से खत्म हुआ । शनि का आखिर यही कुछ देखा , और

वस्ल की बस्ती या दरम्यान की दरम्यानी
वही मध्यमा की मध्यमा ।
सुभ्र और आस या संन्यास पल्ले रहा ।
न कुछ खाया न हमसाया को खिलाया ।

तर्जनी मध्यमा से बात करके उदास हुई और मध्यमा भी संन्यासी या उदासी होकर सवाली हुई । दर बदर भिक्षा माँगने लगी । रात का अँधेरा खत्म हुआ । शनि टला और दिन का ज़माना आया । सूर्य चमका । सब को हौसला हुआ। और अनामिका से सलाह पूछी । इसने जवाब दिया कि इतनी उदासी क्यों । और दर-बदर भटकने से क्या मतलब ? हम खुद कामकर सकते है। हमारे हाथ पाँव चलते है । जिस्म हमारे पास है। वृहस्पति की हवा शनि की आग का साथ है । अगर मिट्टी नहीं बनी तो पानी हम पहले बना लेते है । अगर पास नहीं तो फिर दे देंगे । "लाओं उधार" । मगर हौसला न हारो ।

अब पहली दो बहिनों को कुछ हौसला हुआ और सोचने लगी । मगर सोचने की या बोल कर माँगने की ताक़त न हुई कि किस जुबान से और किससे उधार लाऊँ । इतने में सबसे छोटी कनिष्ठिका भी आ गई । वह खूब सोचती और बोलती है । कहने लगी कि कुछ बुद्धि पकड़ो । 'उधारा' लाना तो आसान है मगर देना 'भारी' । मैं फौरन जो कहो, जुबान की ताकत और सरस्वती की मदद से लाने के लिए सबसे बोल सकती हूँ । मगर मुझे शक है कि मैं छोटी-सी हूँ । मेरी कोई हस्ती नहीं । (बुध के पास कोई अलग काम करने की शक्ति नहीं मानी । दूसरों के साथ मिलकर ताकत पकड़ लेती है । गोल खाली दायरा बुध को माना है । गोल निशान जिस्म पर गोल सिर का ढाँचा और जुबान मानी है, जिससे बगैर दिमाग या रुह या सूर्य के कुछ नहीं

बनता। बुध के दायरा में जब सूर्य की ताक़त हो जाये या बुध और सूर्य मिल जाये तो हर तरफ उत्तम फल और अमीरी होगी। चाहे औरत या शादी- रेखा, चाहे सिर से श्रेष्ठ या कोई भी और हालत हो) खाने की वासना पैदा हुई। काम कर उधार वापिस करने का हौसला हुआ मगर सिर पर बोझ रखे बैठने की ताकत न पैदा हुई। चारों भाई- वृहस्पति, शनि, सूर्य, बुध सोच विचार के चक्कर (बुध के दायरा में) चला रहे है। आखिर अँगूठा जो बिल्कुल दूर बैठा था सबको हौसला देता है कि ''जब तक मैं ज़िन्दा हूँ जो जी चाहता है खाओ। अगर मैं सबका बाप नहीं तो चाचा जरुर हूँ। मुझे ही सबकी शर्म है। परवाह नहीं, जो चाहो खाओ।'' मेरा यही काम है कि खाना खिलाना और बस।

अँगूठे का काम सबको हौसला देना है और पक्के तौर पर। चाहे सबके बोझ से कीली ही होना पड़े। यही बजह है कि अँगूठे के पर्वत शुक्र का दुनिया से कोई संबंध नहीं। सिर्फ ऐशो - आराम करना और कराना।

वृहस्पति से मिला तो बहुत बड़ा वृहस्पति शुक्र का फल देने वाला हुआ। बुध से मिला तो शादी औलाद ही सबके सब इसके घर रखने लगा। बगैर शुक्र के बुध की बुद्धि खराब हुई। शनि से मिला तो अपने दोस्त की आँखों से दुनिया को बचाने लगा और सेहत उमदा हुई। सूर्य की दोस्ती से चाहे खुद तबाह हुआ, मगर इसे दो बाला किया। खुद मित्रत दारी ली। बेशक सूर्य ने दुश्मनी न छोड़ी मगर जब दाव लगा (सूर्य घर से बाहिर हुआ, या सूर्य रेखा न हुई) तो स्त्री-पूजक करके छोड़ा। जब सबके सब इसके संबंधी हुये तो मौत को भूलकर सबने औरत को याद किया। क्योंकि शुक्र की कानी आँख की चमक की लहर की मुहब्बत से न गुरु वृहस्पति बचा (जो सबको पढ़ा रहा था) और न बुध (जो बोल बोलकर सबको सुना रहा था)। न शनि बोला जो सबको खा रहा और देख देखकर खा रहा था। सूर्य का तो कुछ भी न रहा। वह तो शुक्र की तलाश में स्त्री-पूजक हो बैठा। सुबह से शाम और शाम से सुबह इसी शुक्र के पाँव की मिट्टी पर शुक्र की तलाश करते हुये आज तक इसी चक्कर में फिर रहा है। देवताओं की दुर्दशा करने वाली ताकत को आखिर ऊपर से नीचे फैंका गया तो वह अँगूठे की जड़ में शुक्र का पर्वत अँगूठे की हमसाया के सिर पर आ बैठी। यानि अँगूठे ने सब मिट्टी का बोझ या तमाम दुनिया का बोझ बतौर कीली मंजूर किया और हौसला न छोड़ा।

यह है अँगूठे के हौसला वाले आदमी का हाल । इसका हौसला दिली और पक्का होगा । किसी को नुकसान पहुँचाने का हौसला कभी न होगा । किसी की मदद का हौसला होगा । मुहब्बत दलील देगा और दलील के सहारे हौसला क़ायम कर देगा । मगर शनि की उदासी का साथ न होगा ।

2. अँगूठे के हिस्से

जिस तरह शुक्र के पर्वत को दुनियावी किस्मत से कोई तअल्लुक नहीं है । सिर्फ इश्को-मुहब्बत की ही एक आँख कहलाता है, इसी तरह ही अँगूठे या इसकी ताकत को बाकी अँगूलियों से कोई मतलब नहीं । इसका संबन्ध सिर्फ दिल या 'जी' से है । यानि जी है तो है जहान । दौलत मंदी और अमीरी दिल से है न कि मालो दौलत से । दुनियाँ में यह दिल का ही दरिया है जिसमें हज़ारों लहरें आती हैं और जाती हैं । इन लहरों के आने और जाने की ताक़त को अँगूठे की ताकत माना है। दिल का दरिया तो चन्द्र-रेखा या दिल-रेखा है मगर इसमें लहरों की ताकत जो है, वह अँगूठे की ताकत है ।

शुक्र और चन्द्र आपस में दुश्मन है । इसलिए दिल के दरिया में लहरों का आना-जाना ही इन्सानी तबीयत में तूफान पैदा कर देता है । दिल के दरिया में शुक्र या अँगूठे ने ऊँची लहर पैदा की तो सिंहासन की खवाहिश पैदा हुई । दूसरे वक्त यह लहर गिरी तो न चन्द्र का समुन्द्र बाकी है, न दुनियावी ख्यालात का निशान । वही शुक्र की रेत ही रेत रह गई न सिंहासन की खवाहिश न समय (बदनसीबा) का भय या डर ।

इस ताक़त के तीन हिस्से क़रार दिए हैः-

अलिफ़)

(1) मन मर्जी (2) तर्कशीलबुद्धि, दलील बाज़ी (3) मुहब्बत

अँगूठे की नाखून वाली पोरी या हिस्सा को दिली मर्जी की ताकत की जगह; मध्य के हिस्से को दलील बाज़ी, सोच विचार की ताकत; तीसरी या नीचे की जगह या शुक्र के पर्वत वाली गाँठ को मुहब्बत का भँडार या खज़ाना माना जाता है । (इन्सानी नफसानी ताकत) या यूँ कहों कि नाखून वाला हिस्सा रुहानी ताकत; मध्य का हिस्सा शारीरिक ताकत; और नीचे का या जड़ वाला हिस्सा नफसानी ताकत से संबन्धित है । यही नियम तमाम अँगूलियों की पोरियों का है ।

बे)

अँगूठा जितना लम्बा हो उतना ज्यादा शहवत पर काबू होगा। इन तीनों ही हिस्सों को उमर या ज़िन्दगी के तीनों हिस्सों से संबन्धित करते हैं। यानि सबसे ऊपर का हिस्सा या नाखून वाला हिस्सा बचपन; मध्य का हिस्सा जवानी; और सबसे नीचे का हिस्सा या आखिरी हिस्सा बुढ़ापा ज़ाहिर करता है।

सीन)

[1] अँगूठा या नाखून वाला हिस्सा जिस क़दर मोटा हो उस कदर मुफलिस और जिस कदर छोटा होता जाये उसी कदर क्रूरता व पशुता ताकत का मादा ज्यादा होता जावे या जिद्दी होता जावे या तंग - हौसला हो जाये। साथ ही वह व्यक्ति कम दौलत भी हो जावे। नाखून वाला हिस्सा अगर हाथ की हथेली के बाहर की तरफ या हाथ की पीठ की तरफ झुके तो नरम दिल और अगर उल्ट हो तो तबीयत उल्ट है। अँगूठे की जड़ की गाँठ वाला हिस्सा जिस कदर छोटा होता जाये उसी कदर ज्यादा जादू मन्त्र की ख़्वाहिश होगी और स्त्री-पूजक होगा।

3. अँगूठे पर जौ का निशान

यह निशान अँगूठे की तीनों पोरियों की जड़ पर माना जाता है। साफ व सालम हो तो इस हिस्सा में सुख, आराम और दौलतमंदी का ख़ज़ाना होगा और अगर टूटा हुआ होवे तो उमर के इस हिस्सा का हाल खराब होगा। जिस हिस्सा की जड़ में यह टूटा हुआ निशान होवे। यानि नाखून वाली पोरी और बीच की पोरी के

फ़रमान नं. 58

सीन-मोटा और छोटा अंगूठा

फ़. नं. 58

अलिफ-बे- लम्बा अंगूठा

फ़रमान नं. 58

सीन-मोटा और छोटा अंगूठा

मध्य का जौ उमर के दो हिस्से-बचपन और जवानी-पर असर करेगा साफ हुआ तो बचपन और जवानी उमदा होगी । जन्म शुक्ल पक्ष का और अगर टूटा हुआ होवे तो बचपन और जवानी का सुख तसल्ली - बखश न होगा । बल्कि खराब होगा । इसी तरह ही बीच का हिस्सा और नीचले हिस्सा के मध्य का जौ अगर टूटा हुआ होवे तो जवानी और बुढ़ापा खराब होंगे । बचपन पर इसका खराब असर न होगा । नीचले हिस्से की जड़ का जौ सिर्फ बुढ़ापे से संबन्धित है । खराब और टूटा हुआ जौ का निशान बुढ़ापे में मन्द-भागी और बद नसीबी की निशानी है । इस जगह सूर्य रेखा का संबन्ध ज़रुर साथ देगा । यानि अगर इस नीचले हिस्सा की जड़ पर शुक्र के पर्वत के खातमा और अँगूठे के इस नीचले हिस्सा के मध्य में अगर जौ का निशान होवे तो बुढ़ापा उमदा और सुख । अगर टूटा होवे तो मन्दा हाल । इस जगह अगर जौ की बजाए रेखा शाखदार →>>> होवे तो भी नेक असर होगा । यानि सूर्य का नेक असर होगा । बशर्ते कि सूर्य के पर्वत पर सूर्य रेखा व सूर्य का पर्वत भी क़ायम होवे । अँगूठे पर सीधे । । । वृहस्पति के ख़त पड़े हों तो भी नेक असर देंगे । नीचले हिस्से पर यही ख़त नर औलाद जिनमें से दो शाखी लकीरें लड़कियाँ बगैरा मुराद हुई हैं । नाखून वाले हिस्सा पर चक्र, शंख, सदफ का हाल इनकी गिनती कुल हाथ के सारे के सारे ही गिनकर असर देखा जाएगा । अँगूठे का सिरा अगर आगे से बारीक होता जावे तो हौसला की ताक़त कम होती जावेगी और अगर मोटा होता जावे तो हौसला मोटा होता जायेगा या परिश्रमी और ज़िद पर अड़ जाने वाला होता जाएगा ।

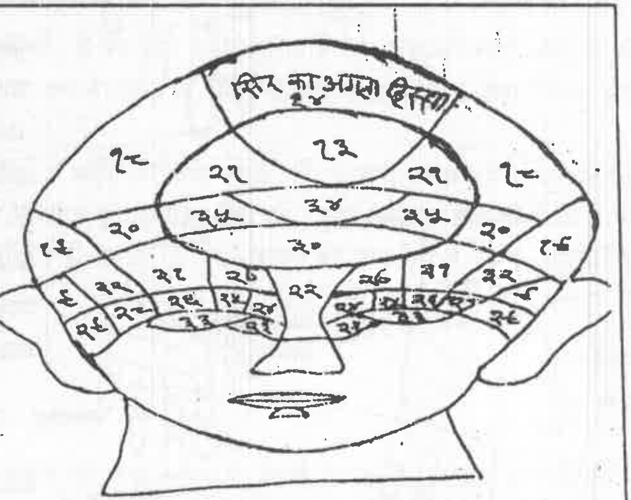

दिमाग के लिहाज से सिर का अगला हिस्सा। फरमान नं0 59

फ़रमान नम्बर - 59 खोपड़ियाँ

दिमाग़ के ख़ाने

कान के सुराख (छेद) से 90 दरजा पर सिर और भौंहें की तरफ को खैंचा हुआ ख़त दिमाग़ के हिस्सा को मस्तिष्क से अलग़ कर देगा । दिमाग के हर एक ख़ाने की स्थिति नक़्शा से पूरे तौर पर प्रकट होती है ।

1	मुहब्बत बाज़ी	यह ताकत मर्द और औरत में 16 से 36 साल उमर में तरक्की पर होती है ।
2	शादी की खवाहिश	इश्क से पहली मुहब्बत का नाम उलफत और इश्क के बाद का ग़लबा इश्क होगा ।
3	प्यार या बालदैनी मुहब्बत	नं० 1-2 का ही नतीजा है मगर इसका खाना अलग ।
4	दोस्ती या मुलाकात की ताक़त	ऐब पर पर्दा डालना और खूबी पर नज़र डालना ।
5	वतन की मुहब्बत	कुत्ता दोस्ती में मालिक को नहीं छोड़ता । बिल्ली हुबुलवतनी में मकान को नहीं छोड़ती । मालिक ने कुत्ता पाला मकान बदला । तो कुत्ता साथ गया । इसे मालिक से मुहब्बत है । पिछले मकान से मुहब्बत नहीं । मालिक ने बिल्ली पाली मकान बदला । तो बिल्ली पिछले मकान की तरफ भागी बिल्ली को मकान से मुहब्बत है ।
6	दिलचस्पी या पक्की मुहब्बत	हर काम के लिये तैयार । लगा रहने वाला । काम पूरा किये बगैर न छोड़ना ।
7	स्वार्थ-परक बातें	(शनि)
8	जन्दगी बढ़ने की ताकत	चपटे सिर में ज्यादा । तंग सिर में कम होती है ।
9	हमला रोकने की ताक़त	कामयाबी हो या न हो मगर अपना काम नहीं छोड़ना । चाहे लाख मुसीबत हो ।
	बदला लेने की ताक़त ।	खुद बदला लेना । वरना औलाद को बदला लेने की नसीहत कर मरे ।
10	स्वाद	पक्का हाज़मा । मज़बूत जिस्म ।
11	भंडार जमा करने की ताक़त	पहला हिस्सा नेस्त । यानि जमा करते जाना चाहे काम आये या गल सड़ कर बर्बाद हो जाए । लोमड़ी । दूसरा हिस्सा लियाकत का । जवानी में जमा बुढ़ापे में आराम - शहद की मक्खी । तीसरा हिस्सा लियाकत का । जवानी में जमा बुढ़ापे में आराम-शहद की मक्खी । तीसरा हिस्सा नालायकी चोरी । दूसरे का माल उड़ाकर उसी वक्त-खा जाना।
12	राज़दारी	फरेब पोशीदा । हर काम चालाकी से । अपना भेद छिपाना ।
	हमदर्दी की ताकतें	(शनि)
13	होशयारी की ताकत	सिर्फ उमीद पर बैठे रहने की बजाए लम्बी सोच से वक्त से पहले ही काम कर लेना ।
14	अहंकार व स्वार्थ प्रियता	अपने से अच्छा किसी को न समझना ।

15	खुद्दारी	खुद अपनी इज्जत मगर हसद से बरी और अपनी इज्ज़त के लिए दूसरे की बेइज़्ज़ती नहीं करना।
		काम में हमेशा लगे रहना। चाहे बुरा काम हो चाहे भला।
16	साहस व प्रताप	<u>ताकतें (बृहस्पति)</u>
		एक का दूसरे पर ज्यादती करते नहीं देख सकना।
	<u>बजुर्गाना या शरीफाना</u>	खाना होशयारी ठीक तो उमदा असर वरना फोकी उमीद बायसे तबाही।
17	न्याय या न्यायप्रियता -मिज़ाजी	कमजोर खाना। नास्तिक होगा।
	भरोसा या उमीद	
18		दूसरे की इज्ज़त और अपने फर्ज़ से पूरी अदायगी। अन्दर बाहर से नेक।
	मज़हब या रुहानी ताकत	तंग पेशानी में कम, चौड़ी चपटी में ज्यादा; चौड़ी व बुलन्द में बहुत ज्यादा।
19	इज्ज़त या बजुर्गी (सूर्य)	<u>दिमागी ताकतें (सूर्य)</u>
		चौड़ी पेशानी का सामना हिस्सा उभरा हुआ होता है।
20	हमदर्दी या दयालुता (चन्द्रमा)	औरत और हर चीज़ ज़ाहिरा खूबसूरत होवे। खूबी या सिफत की परवाह नहीं।
		मुझ से दूसरा अपनी शान न बढ़ाने पावे।
21	अक्ल	बहरुपिया पन इसी से हो सकता है।
		हद से ज्यादा बेवकूफ कर देता है।
	मोहकता	<u>महसूस की ताक़तें (चन्द्र)</u>
22		तर्क की शक्ति।
	हौसला	पुरानी याद दाशत।
23	नकल करने की ताक़त	कदो कामत व औसत तनासब की ताकत।

	मसखरापन	
24		दबाव-बोझ, समानता की ताकत ।
25		रंगो रूप में फर्क बगैरा ।
26		
27		
28		
29		
30		
31		
32		सफाई, शायस्तगी, धुलापन ।
33		इल्म रियाज़ी के उसूलों की ताकत ।
34		जगह- मुकाम की याद ।
35		पेशानी । वाक्यात गुज़रते हुये की याद ।
36		वक्त ।
37		राग ।
38		ज़ुबानदानी ।
39		वहज, सबब की ताकत ।
40		मुकाबला एक चीज़ का दूसरी से ।
41		इन्सानी खसलत ।
42		रज़ा मन्दी ।

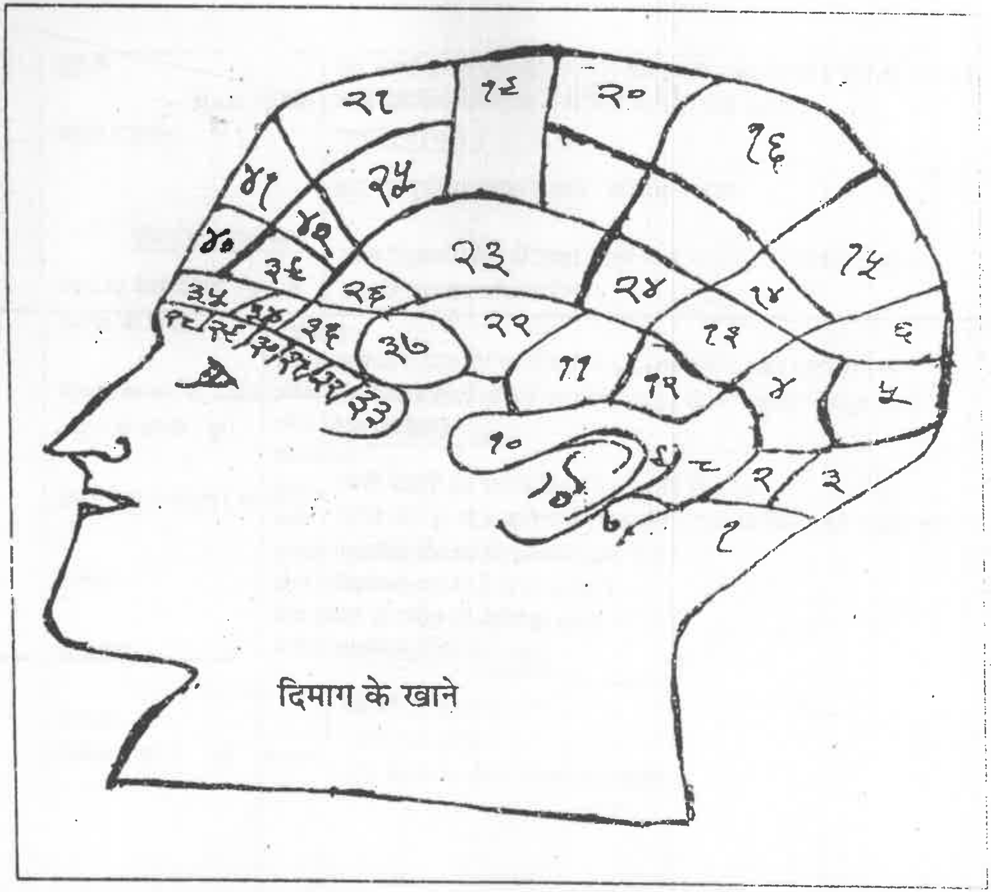

दिमाग के खाने

E

नोटः- ऊपर के दिये हुये ख़ानों के नतीजे हैं जिनका ज़िकर इल्म सामुद्रिक में ज्यादा तअल्लुका नहीं हैं ।

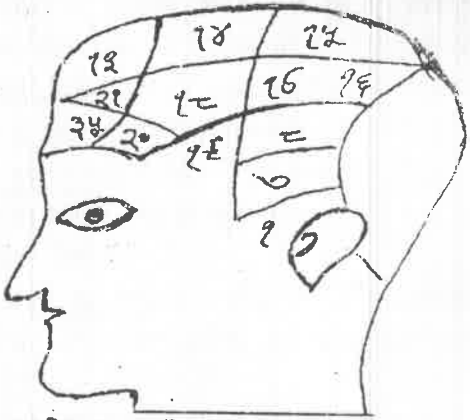

दिमाग का दाँया या बाँया हिस्सा ।

फ़रमान नम्बर - 60 **खोपड़ी**

दिमाग के बारह खाने

इन्सानी दिमाग के यही 12 ख़ाने कुण्डली में ग्रहों के पक्के तौर पर मुकर्रर घर हैं । जो बारह राशियों से याद किए गये है । दिमाग़ के दाँए और बाँए हिस्सा में उसी गिनती के है । आम इस्तेमाल में दिमाग का बाँया हिस्सा आता है । और कभी ही अचानक कुदरती तौर पर एक हिस्सा के असर में दूसरे हिस्सा का कोई ख़ाना रेख में पहले राशि मेख, जिसमें सूर्य उच्च है, मेख़ ठोंकना या सबसे उत्तम हालत की ताकत वाले सूर्य को पहले ही घर में बन्दकर देना या दुनिया की तमाम ताकतों के बरखिलाफ काम का दिखाना डाला करता है । इन तमाम ख़ानों का

असर इन्सान के दाँए और बाँए हाथ से संबन्धित है । कुदरत के सितारों का

असर दिमाग़ के खानों पर होगा । दिमाग़ का अक्ष **हाथ** की

रेखा के दरयाओं के पानी से प्रकट होगा । दिमाग़ का बाँया हिस्सा दाँए हाथ

पर और दिमाग का दाँया हिस्सा बाँए हाथ

दिमाग का दाँया या बाँया हिस्सा

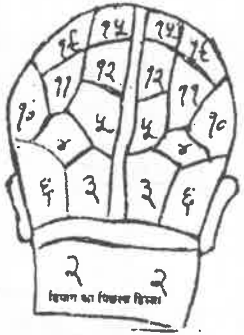

पर रेखा के दरयाओं में अपना अक्ष डालता है । जिस तरह से दिमाग़ में यह टुकड़े निश्चित जगह और निश्चित हिंदसों से माने गये है, इसी तरह ही इनका असर देखने के लिए सामुद्रिक में पर्वत और ग्रह हमेशा के लिए खास-खास जगह पर निश्चित कर लिये गयें है । जिनकी तफसील और आपसी संबन्ध का नक्शा नीचे दिया गया है ।

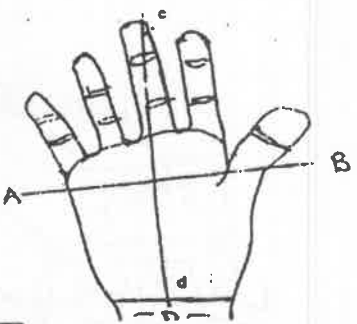

दिमाग खाना नं०	मुतअल्लका	ग्रह		ताकत	हरकत	खाना नं० कुण्डली
1	इश्क	शुक्र	औरत	मिट्टी	इश्क	7
7	जिन्दगी बढ़ने।	बृहस्पति	औलाद	उमर और लाभ	लालच	11
8	हमला रेकने की ताकत।	मंगल बद	मौत	खाना	बदी	8
13	होशयारी।	शनि	जायदाद	देखना	मक्कारी	10
14	तकब्बर (घमंड)	राहु	शरारत	सोचना	दिमागी हरकत।	12
15	खुद्दारी	वृहस्पति	सुख	औलाद	शोहरत	5
16	साहस व प्रताप	केतु	सुनना	चलना	पाँव की हरकत	6
17	न्याय प्रियता	मंगल नेक	भाई	पीना	नेकी	3
18	भरोसा	बुध	सिर	बोलना	अक्ल	7
19	मज़हब	वृहस्पति	गुरु, इल्म	हवा	साँस	9
20	बजुर्गी	सूर्य	पिता, जिस्म	आग	गुस्सा	1
21	हमदरदी	चन्द्र	माता, दिल	पानी	शांति	4

35 – पेशानी पर सबकी मुशतरका किस्मत लिखी है ।

दिमाग की खाना नम्बर 35 हमेशा जमान की हवा से टकराता और इन्सानी किस्मत पर वृहस्पति का असर डालता है । इसके पीछे खाना नम्बर 20 सूर्य और खाना नम्बर 21 चन्द्र चमक रहे है । जिन दोनों के ऊपर खाना नम्बर 13 शनि का घर है । दिमाग़ के तमाम खाने 7 साल में पूरे तौर पर मुकम्मल हो जाते है । गोया 7 पर्वतों का असर 12 राशियों में हो चुकता है । 35 साल में तमाम ग्रह अपना-अपना दौरा पुरा कर लेते है । 12 साल तक बच्चा की रेखा का एतबार नहीं । और 12 साल के बाद किस्मत बदलने की उमीद और 35 साल के बाद दूसरा चक्कर माना है । यह खाने दिमाग के दाँए बाँए हूबहू एक ही है । इसलिए ग्रहों में माना है कि जो ग्रह पहले 35 साला चक्कर में बुरा असर देगा, दुसरे चक्कर में पहला असर न देगा । यानि अगर दांई तरफ का असर हो गया तो बाँया हिस्सा बाद में असर देगा । बाप बेटे की उमर और किस्मत का आपसी संबन्ध 35 साला चक्कर के सबब 70 में खत्म गिना है ।

दाँया बाँया हाथ नेकी बदी, सिंहासन-समय (शाही-गदाई), तदबीर व तकदीर, राहु-केतु, नर - मादा (मर्द-औरत) गर्जेकि हर दो पहलू निश्चित करते है । इन्सान का ज़ाती हाल या इन्सान का कुल दुनिया से संबन्धित और सबकी मुशतरका किस्मत का मैदान या माथा हर व्यक्ति अपने साथ लिए फिरता है।

12 घंटे का दिन, 12 घंटे की रात, 12 महीने का साल, 12 राशियों का असर और 12 साला मासूम बच्चा और 12 साल के बाद अच्छे दिनों की उमीद सबके सब 35 में शामिल है । और ज़माना की हवा या वृहस्पति की तलाश की फिकर में ज़रद रंग हो रहे हैं ।

तमाम ग्रहों के रंगों का असर दुनिया की सब चीज़ों पर असर करता है । 35 हरफों की जुबान या इल्म खुद चुप मगर लोगों को बोलना सिखला रही है और सामुद्रिक में 35 साला चक्कर सब ताकतों के असर के बड़े मैदान या इन्सानी हाथ पर ज़ाहिर है । निकलते सूर्य के मुँह पर लाली या जंगल में मंगल हो रहा है और हाथ के अन्दर नेकोबद की रेखा व चक्कर और निशान साँप घोड़ा बगैरा ज़ाहिर हो रहे है। और यह 35 का हिंदसा जानवरों की जुबान से भी यही असर ज़ाहिर करता है, जो वास्तव में इन्सानी दिमाग की नक्ल है। दूसरा दिमाग़ अक्ल सीखता है । दिमाग़ बुध, बुद्धि या अकल की नकल से जानवरों में तोते का सिर गोल हुआ । रंग सब्ज हुआ और जुबान से बोलने लगा कि

"लट पट 35 चतुर सुजान - कहो गंगा रामों श्री भगवान ।"

इस इन्सानी दिमाग की नकल में भी वही असर है जो असल का असर था ।

शब्द	ग्रह	कुण्डली का खाना	स्थिति
लट	शनि	10	लट पटा उमर । लूटना, लुटाना, मक्कारी
पट	वृहस्पति	2	पत, इज़्ज़त, दौलत
35	वृहस्पति	11	माथा, सबकी किस्मत ।
चतुर	बुध	7	चतुराई, अक्ल ।
सुजान	मंगल	3	आदिल तो मंगल नेक ।
कहो	केतु	6	कहना, सुनना ।
गंगा	वृहस्पति	5	गंग, दरिया, समुन्द्र, आ आवे औलाद ।
रा	राहु	12	को, मुझे, मैं, मेरा, तकब्बर।
माँ	चन्द्रमा	4	माता, दिल, शांति ।
श्री	सूर्य	1	सबसे उत्तम, सबका बुजुर्ग ।
भाग	शुक्र	7	लक्ष्मी, औरत, ज़मीन ।
वान	मंगल बद	8	मंगल बद, सब का आखिर मालिक मौत ।

ग्रह कुण्डली के शुरु का ख़ाना नम्बर एक नेक मंगल का घर जो नेक सूर्य का उत्तम असर और आखिरी ख़ाना नम्बर 8 वृश्चिक मंगल बद ∆ मौत होता है । जन्म और मरण में मंगल साथ है ।

किस्मत के दोनों बड़े सितारे सूर्य और चन्द्र हर वक्त साथ में पीछे बैठे हुये है । और दोनों आँखों से इन्सान के मददगार है । शनि आँख का मालिक है । मगर सूर्य चन्द्र दोनों ही इसके दुश्मन है । इसलिए काम-काज में जिस व्यक्ति का दाँया हाथ ज्यादा चलता होवे

इसकी दाई आँख और जिसका बाँया हाथ चलता होवे (उसकी) बाईं आँख दूसरी की निसबत कमजोर होगी । मतलब यह कि जिस तरफ शनि का असर होगा । वह कमज़ोर होगी या ग्रहों की 35 साला चाल में अगर एक तरफ शनि का बुरा असर नहीं आया तो दूसरी तरफ ज़रुरी है कि आएगा, जिनकी दोनों आँखों की नज़र एकसी हो वह बेशक दोनों चक्रो में बचें रहेंगे । सूर्य पहले वक्त का मालिक है । या दाई तरफ का । और चन्द्र दूसरे वक्त रात या बांई तरफ का । इसलिये जिनकी दांई नजर उमदा है, सूर्य के वक्त में शनि का अमूमन बुरा असर न होगा और अगर होगा, तो चन्द्र के वक्त में हो सकता है । इसी तरह दूसरी आँख की नज़र से असर होगा । इसी नियम पर दिमाग के लिहाज़ से शनि का ख़ाना नम्बर 13 होशयारी जो आँखों की जान है या जो आँखों की सिफत है और शनि की सिफत है । खाना नम्बर 20 और 21 के ऊपर होता हुआ भी आँखों में शनि के घर जाने के वक्त चिन्ता में रहता है । और बृहस्पति की मदद ढूंढता रहता है । और शनि जब उच्च होवे तो बृहस्पति का काम देता है । दाँया साँस चलने के वक्त सूर्य का असर होगा । और बाँए में चन्द्र का असर होगा । इसलिए शुभ और ज्यादा देर रहने वाले काम सूर्य की उमर 10 साल तक रहने वाले या बहुत ज़रुरी काम दांई सांस के चलते वक्त और मामूली काम चन्द्र के असर या बाँई साँस के चलते वक्त जायज़ गिने गये है । दूसरे शब्दों में - दाँया हिस्सा सूर्य का और बाँया हिस्सा चन्द्र का है । इसी नियम पर तिल (स्याह दाग) अंग फड़कना बगैरा के लिए दाँया ही पहलू मुबारक हुआ है । और हाथ भी दाँया नेक गिना है । और आगे दाँए हाथ का भी दाँया हिस्सा असल मुबारक है । ख़त A B के ऊपर का हिस्सा या मध्यमा की तरफ का ऊपर का हिस्सा और कलाई वाला निचला हिस्सा । इसी तरह से ही खत C D से तकसीम शुदा अँगूठे की तरफ का टुकड़ा हाथ का दाँया हिस्सा और कनिष्ठिका की तरफ का टुकड़ा हाथ का बाँया हिस्सा होगा । चाहे हाथ बजाते खुद दाँया ही है । इस दाँए हिस्सा पर घोड़े, साँप, मन्दिर बगैरे मुतफर्रिक निशान मुबारक होंगे । और शनि का असर भी कम होगा । यानि रेखायें भी, जो शनि की ऊर्ध रेखा से निकलकर दाँए हाथ के दाँए हिस्सा में जाएं और हाथ के ऊपर के हिस्सा का रुख करें, नेक होंगे । मकान बगैरा बनेंगे । बांई तरफ हाथ के निचले हिस्से का रुख रखने वाली रेखा, मकान बनाना बन्द या बने हुए गिराएगी व बुरा असर होगा । इसलियें ही मंगल-बद ने भी बाँए हिस्सा में जगह ली है, जो मौत का घर है ।

फ़रमान नम्बर - 61 चेहरा

चेहरा व माथा :-

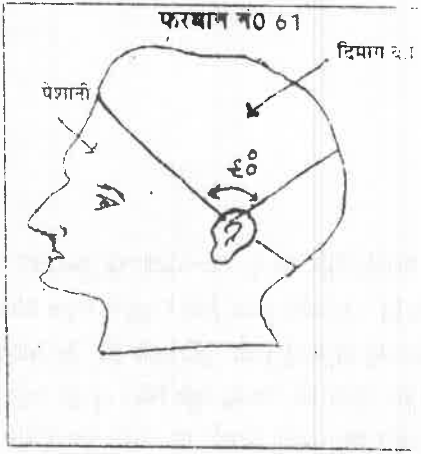

अबरु से ऊपर और दिमाग की हद से नीचे (कान के सुराख से 90° दर्जा पर सिर और अबरु को खींचा हुआ खत दिमाग के हिस्सा को माथा से अलग कर देता है) माथा होगा ।

1. चेहरा की चौड़ाई - कुल चेहरा की लम्बाई का $^{2}/_{3}$ दो बटा तीन ।

अगर कुल के तीन हिस्से करें तो तीन हिस्सों से दो हिस्से नेक होती है । यह चौड़ाई जिस तरह इस मिकदार से घटे इसी तरह नेक असर ज्यादा बढ़े और मुबारक होवे ।

2. माथा की चौड़ाई - कुल चेहरा की लम्बाई का $^{1}/_{4}$ । अगर कुल चार हिस्से करें तो चार में से एक हिस्सा नेक होता है । माथा की इस मिक़दार से जिस तरह चौड़ाई बढ़े इसी तरह नेक असर ज्यादा बढ़े और मुबारक होवे ।

इस तरह लम्बा चेहरा व चौड़े माथा वाला हमदर्द व बुलन्द - मरतबा होगा ।

चौड़ा चेहरा व तंग माथा - ख़ुदगर्ज़ व मन्द भाग होगा ।

(अगर नाक की तरफ से दोनों कानों का बीच का फासला ज्यादा होवे तो चेहरा चौड़ा गिना जाता है ।)

3. माथा का ऊपर का हिस्सा - जिस तरह बाहर को उभरा हुआ होवे, उसी तरह कुव्वते दरयाफत और चाल चलन उमदा होगा ।
4. माथा का निचला हिस्सा - जिस तरह बाहर को उभरा हुआ होवे, उसी तरह कुव्वते ख्याल ज्यादा नेक तरफ काम करने वाली होगी ।
5. कुशादा माथा में अक्ल की बारीकी ज्यादा होगी ।
6. माथा पर त्रिकोण, तराज़ू, मछली, त्रिशूल, आनकस, पद्म, पँखा, तलवार या परिन्दे का निशान कोई भी एक हो तो अज़ीज़ों व रिश्तेदारों का सुख नसीब न होवे ।
7. कौए के पाँव का निशान हो तो कम-उमर मंद भाग होगा ।

सात या ज्यादा लकीरें हों, तो कज़ाक़ होगा ।

8. माथा पर टूटी-फूटी लकीरें बहुत हों या उनका झुकाव नीचे की तरफ 〜 मानिंद हो, तो अल्प आयु होगी । यानि कम उमर और ज़िन्दगी के हर आठवें साल 8, 16, 24, 32, 64 तक खतरा में होवे ।

9. माथा व चेहरा का क़िस्मत पर बहुत असर लिया गया है । यानि किस्मत का सही व ठीक जवाब इस बात से संबन्धित है !

10. माथा पर तिलक लगाने की जगह Δ या ⊥ का निशान हो तो हुक्मरान, आसूदा हाल होगा ।

11. चौड़े चेहरे वाले में स्वार्थ-परक बातें यानि दिमाग के ख़ाना नम्बर 7 से 12 तक की ताकतें यानि (7) जिन्दगी बढ़ने की ताकत (8) हमला रोकने की ताकत (9) बदला लेने की ताकत (10) ज़ायका (11) ज़ख़ीरा जमा करने की ताकत (12) राज़दारी ज्यादा होंगी । ज़िहानत कम होगी और जिस तरह चौड़ाई से लम्बाई वाला चेहरा होता जाये उसी तरह यह खुद गर्जाना ताकतें कम होती जायेंगी । ज़िहानत बढ़ेगी या लम्बे चेहरे वाला हमदर्द होता चला जायेगा ।

12. मर्द का चहेरा व मुँह दोनों ही चौड़े हों - खुद गर्ज होगा ।

13. मर्द का चहेरा व मुँह दोनों ही लम्बे हों - नेक बख़्त होगा ।

14. औरत का चहेरा लम्बा व मुँह लम्बा - बद बख़्त होगी ।

15. औरत का चहेरा चौड़ा व मुँह लम्बा - नेक नसीब होगी ।

16. माथा पर सूर्ख (लाल) रंग की रगें या नाड़ें कम उमर होने की दलील है । सब्ज़ रंग की नाड़ें मुबारक होंगी । चाहे मर्द की हों चाहे औरत की ।

<u>फ़रमान नम्बर - 62</u>

सिर

सिर गोल और आँख गोल - खुश नसीब । औरत अमीर ख़ानदान से होगी ।

सिर छोटा, पेट मोटा हो - बेवकूफ होगा ।

<u>फ़रमान नम्बर</u> - <u>63</u>

सीना या पुश्त की हड्डियाँ

गिनती में हों :-

8 - राजा या हुक्मरान होगा ।

9 - रईस जायदाद वाला ।

10 - फिकरो ग़म में ग़रक होवे ।

11 - ब्रह्मशनास या परमात्मा की छिपी हुई ताकत को पहचानने वाला और मालिक को हाज़िर नाज़िर मानने वाला हो ।

12 - हमेशा बीमार रहे ।

13 - मालदार होवे ।

14 - बुरी करतूत - खोटे काम करने वाला हो ।

<u>फ़रमान नम्बर</u> - <u>64</u>

गर्दन पर बल या शिकन पड़ते हों, गिनती में :-

एक - उमर दराज़ हो ।

दो - दौलतमन्द होगा । मगर दस्ती काम से ।

तीन - दौलतमन्द होगा, पर बद - फेअल होगा ।

चार - दरिद्र व परेशानी का घर होवे ।

बिना बल - दौलतमंद होवे ।

<u>फ़रमान नम्बर</u> - <u>65</u>

पेट पर बल पड़ते हों, गिनती में :-

एक - जंगो जदल व लड़ाई से मारा जाये ।

दो - अय्याश होवे ।

तीन - अध्यापक, नसीहत करने वाला हो ।

चार - साहिबे इल्म और साहिबे औलाद होवे ।

पाँच - हुक्मरान होवे ।

बगैर बल - दौलतमंद होवे ।

फ़रमान नम्बर - 66

जिस्म पर बाल

हर एक बाल की जड़ के सुराख़ (छेद) को मुसाम कहते हैं ।

(1) एक मुसाम से अगर बाल पैदा हुए गिनती में हों :-

एक - हुक्मरान, दौलतमंद, अक्लमंद ।

दो - हुनरमंद, अक्लमंद ।

तीन - ख़ुदा परस्त ।

चार - मुफलिस, बेहुनर

(2) सिर पर टटरी हो (बिना बाल जगह) - दौलतमंद होगा ।

(3) दाढ़ी मूंछ के बाल कम हों या बिल्कुल न हों तो कम हौसला, उमीदों में मायूसी । खुद पैदा करदा जायदाद न होवे ।

(4) सारे जिस्म पर ज्यादा बाल हों - बद नसीब होगा ।

(5) पुश्त-पाये या माथा पर बाल हों - मन्द भाग होगा ।

(6) छाती पर ज्यादा बाल हों - उमर गुलामी में गुज़रे ।

(7) छाती पर बाल बिल्कुल न हों - ना काबिले एतबार । इसके दिल का कोई भरोसा नहीं ।

(8) तमाम जिस्म पर हद से ज्यादा बाल - तंग हाल होगा ।

फ़रमान नम्बर - 66 A

दाँत

(1) अगर बाहर को निकले हुये हों तो अक्लमंद मगर किस्मत के साथ की कोई तसल्ली न होगी ।

(2) गिनती में 30 से कम और 32 से ज्यादा । चाहे औरत हो चाहे मर्द - मनहूस - मंद भाग

(3) गिनती में 32 हों - जो अनमोल या अचानक बोले - पूरा हो जाये । कहा हुआ सुख़न या दुर्बचन ख़ाली न जाये । ऐसे आदमियों को सताना नेक फल न देगा । खुद भी ऐसे आदमियों को गुस्सा से परहेज़ करना चाहिए । ऐसे आदमियों से बुरी आवाज़ अमूमन ज्यादा निकल जाया करती है ।

फरमान 67 - 1

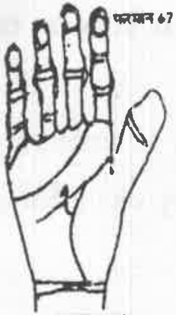

1 सपाट हाथ

फरमान - 67 - 2

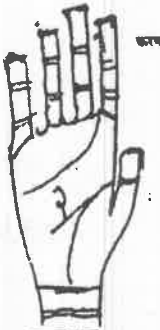

मुरब्बा हाथ - 2

फ़रमान नम्बर - 67

(1) सपाट हाथ

अँगुलियों के मध्य जोड़ मोटे और सिरे उनके गोल हों, तो ऐसा व्यक्ति मेहनती, इरादे में पक्का होवे । जिस बात पर अड़े फिर पीछे न हटे ।

(2) मुरब्बा हाथ

अँगुलियों के सिरे आगे से चौड़े और मुरब्बा हों तो हकूमत का खवाहिश मन्द, इरादे का पक्का होवे ।

(3) त्रिकोण हाथ

फरमान 67 - 3

त्रिकोण हाथ - 3

फरमान 67 - 4

हाथ

अँगुलियाँ नोकदार और जोड़ इनके कुछ मोटे हों तो हुसन–परस्ती पर मर मिट जाने वाला हो ।

(4) रुहानी हाथ

अँगुलियों के जोड़ मालूम ही न दें और नाखून वाली पोरी नुकीली सी हो तो मज़हब पर मर जाने वाला हो । 'जो किस्मत करेगी देखा जाएगा' के क़ौल का आदी होगा । ऐसे व्यक्ति से किसी को भी फ़ायदा न होगा । आदत का लापरवाह । माली हालत बीच की सी ।

(5) मनतक़ी हाथ

मनतकी हाथ

मुतफर्का हाथ

अँगूठा लम्बा – अँगुलियों के जोड़ बाहर को या मोटे । हथेली का कनिष्ठिका के नीचे का हिस्सा बाहर को निकला हुआ । मामले की जड़ तक पहुँचने वाला होगा ।

(6) मुतफर्का हाथ

अँगूठा छोटा, अँगुलियाँ तराशी हुई सी हों । तो मवेशी पालने का शौकीन होवे । और मवेशियों से फायदा उठावे ।

(7) अँगूठा लम्बा अँगुलियों के सिरे चौरस से या मुरब्बा हों तो झगड़ालू होगा ।

(8) अँगूठा और अँगुलियाँ दोनों छोटे हों तो मामूली जिन्दगी बसर करने वाला होवे ।

अंगूठा लम्बा

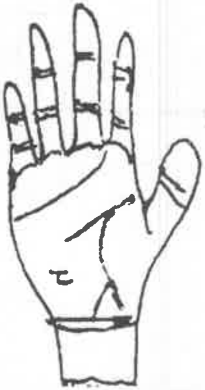

अंगूठा उँगलियां छोटे

फरमान नम्बर 68

हाथों की रुनुमाई (जाहिर दारी)

1. सख्त हाथ वाला - हकूमत करने में यावर होगा।
2. नरम हाथ वाला - आराम तलब होगा।
3. नरम और फैले हाथ वाला -- सुस्त तबीयत, मन्द भाग होगा।
4. सख्त और मजबूत हाथ वाला - सबर और फर्तीवाला होगा।
5. छोटा सा हाथ - जिन्दगी गुलामी में गुजारने की इलामत है।
6. लम्बे हाथ वाला - छानबीन की लियाकत से जिन्दगी उमदा बनाने वाला होगा।
7. लम्बा, बदनुमा सख्त - जल्लाद बेरहम। मन्द भाग होगा।
8. हाथ, पाँब दोनों छोटे-छोटे - मतलब परस्त। खुद अपने लिए मंद भाग। दूसरों के लिये मनहूस हो।
9. साफ और उमदा हाथ - अक्ल व भल-मानसी ज़ाहिर करता है।

खुलासतन :-

अगर अँगुलियाँ लम्बी-लम्बी हों, तो हाथ भी लम्बा होगा, तो सिर और क़द भी लम्बा या बड़ा होगा, तो खुशगुजरान होगा। बशर्तेकि हथेली की लम्बाई मध्यमा से ज्यादा होवे।

अगर हथेली में गहराई होवे तो खुद कमाई करके गुज़ारा करता होगा और अपने बाप की निस्बत मरतबा में बढ़ जाएगा। जायदाद में इज़ाफ़ा करेगा। बजाए ऊँचाई हो यानि हथेली बाहर को उभरी हुई हो जिस पर पानी जमा न रह सकता हो (हाथ को खूब अकड़ा कर पता लग जाता है) तो बुजुर्गों की जायदाद खत्म कर जाने के इलावा दूसरों से भी क़र्जा उठाकर खा पीकर बर्बाद कर जाएगा, यानि पानी से भरे तालाब को खुशक किया और तह की मिट्टी भी उड़ा देगा।

फ़रमान नम्बर - 69

हथेली

(1) हथेली भारी या मोटी - लालची होगा, मामूली दर्जा की जिन्दगी वाला । क्योंकि इस हालत में तर्जनी हासिद, मध्यमा-बेबुनियाद ख़्याल, अनामिका- मशहूरी पसन्द और कनिष्ठका- बेबफाई को ज़ाहिर करती है ।

(2) हथेली लागि़र

हथेली लागि़र या पतली सी हो और कमज़ोर सी हो तो ग़रीब हालत व ग़रीब रोज़गार वाला होगा ।

(3) हथेली लम्बी

लम्बी हथेली वाले की ज़ुबान में ज़ाहिर करने की ताकत ज्यादा हो । जिस तरह लम्बाई ज्यादा होवे उसी तरह यह ताक़त ज्यादा होवे ।

(4) हथेली लम्बी व गोल

लम्बी व गोल हथेली वाला हुक्मरान, खुश गुज़रान व आसूदा हाल होवे ।

(5) हथेली की चारों तरफ़ें

(ए) बुध से चन्द्रमा की तरफ की लम्बाई वाला हिस्सा ।

जिस तरह ज्यादा लम्बाई, इसी तरह ज़ुबान की ताक़त ज्यादा । और जिस तरह कनिष्ठिका की जड़ से बाहर को

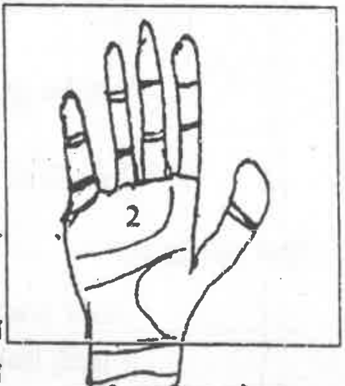

पतली लागि़र हथेली

उभरी हुई या निकली हुई होगी, उसी तरह रसूख पैदा करने की ताकत और रसूख पैदा किया हुआ ज्यादा हो।

(बी) बृहस्पति से बुध की तरफ अँगुलियों की जड़ वाला हिस्सा

जिस तरह लम्बाई ज्यादा इसी तरह ज़िहनी और दिमागी ताकत ज्यादा होगी। और उसी तरह बुध के पर्वत की पायेदारी होगी।

(सी) शुक्र से चन्द्रमा वाला हिस्सा

जिस तरह लम्बाई, उसी तरह ख़्वाहिशात-ए-नफसानी या शुक्र की ताकत ज्यादा या शुक्र का असर ज्यादा होगा।

(डी) शुक्र की जड़ से बृहस्पति के आखिर तर्जनी की जड़ तक का हिस्सा

जिस तरह यह लम्बाई ज्यादा, इसी तरह ज़ाती हिस्सा हौसला में ज्यादा या अँगूठे की ताकत ज्यादा या मंगल नेक का नेक असर ज्यादा होगा।

हथेली की बैरुनी हदूद का असर

क-ख. अँगूठे और तर्जनी की जड़ का मध्य का फासला (जिस में मंगल-नेक व बृहस्पति है।) यह फासला हौसला और आन्तरिक दिली ताकत की मज़बूती से संबन्धित है।

ख-ग. तर्जनी और मध्यमा की जड़ों का मध्य का फासला (बृहस्पति और शनि का दरम्यान)। यह फासला कुव्वते ख्यालात, सोच विचार की ताकत से संबन्धित है।

ग-घ. मध्यमा और अनामिका की जड़ों का मध्य का फासला (शनि व सूर्य का दरम्यान)। यह फ़ासला विचार की आज़ादी ज़ाहिर करता है। मौका के

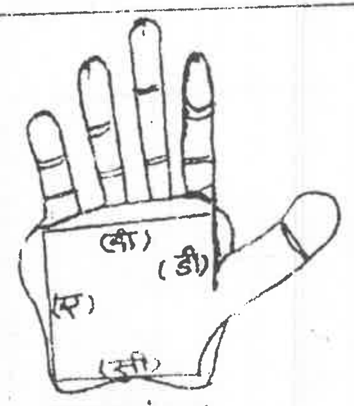

फरमान नं0 69

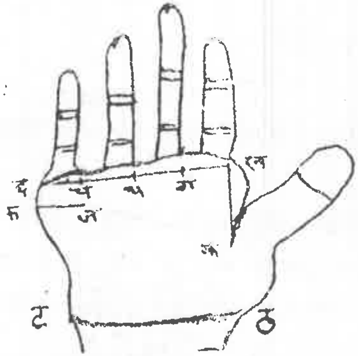

फरमान नं0 69

मुताबिक लट्टू की तरह फौरन पहलू बदल लेने वाला होगा ।

च-च. अनामिका और कनिष्ठका की जड़ों का बीच का फासला (सूर्य और बुध का दरम्यान) । खुद काम करने की ताकत व आदत ज्यादा । दूसरों की कमाई की तरफ उमीदें रखने की बजाए खुद अपनी कमाई में बरकत पर संतोष व सबर करने वाला हो ।

ज-झ. कनिष्ठिका की जड़ और बुध का हिस्सा हथेली से निकला हुआ (बाहर को), सिर्फ बुध के पर्वत की हद । बोलने की ताकत से लोगों में रसूख पैदा करने की ताकत ज्यादा हो ।

ट-ठ. शुक्र की जड़ से चन्द्र की जड़ का हिस्सा जो बाजू की चौड़ाई या कलाई की चौड़ाई होगी ।

दिली मुहब्बत और लगन, शुक्र या औरत की लगन, इश्को मुहब्बत, माता की मुहब्बत, पित्रों या बुजुर्गों की सेवा की ताकत से संबिन्ध होगी ।

फरमान 70

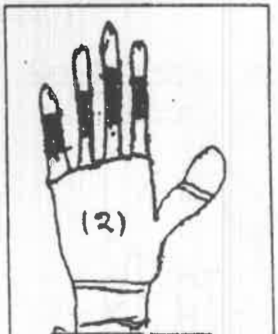

जिसमानी ताकत

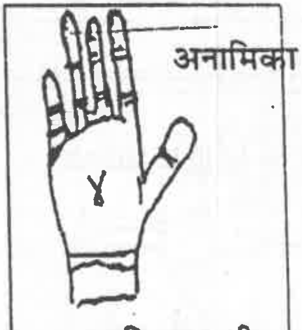

अनामिका बड़ी

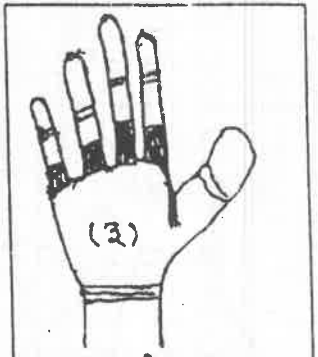

नफसानी ताकत

<u>फ़रमान नम्बर - 70</u>

हाथ की अँगुलियाँ

अमूमन हाथ की पाँच अँगुलियाँ होती है । और अगर गिनती में छह हों तो कम-उमर और मन्द भाग होगा । वरना लम्बी उमर और खुशहाल व उमदा हाल होगा ।

अँगूठा नर अँगुली कहलाता है। जिसका ज़िकर अलग हुआ है ।

बाकी चारों अँगुलियाँ बारह राशियों की मालिक है जिनसे तमाम दुनियावी कारोबार संबन्धित है । हर एक अँगुली की अलग-अलग शक्ति है। और अँगुली की हर एक पोरी या टुकड़े या राशि का अलग-अलग असर है ।

(1) नाखून वाली पोरी या टुकड़ा रुहानी ताकत से संबन्धित है।

(2) मध्य वाली पोरी या टुकड़ा शरीरिक ताकत से संबन्धित है।

(3) अखिरी या निचली पोरी या टुकड़ा नफसानी ताकत से संबन्धित है ।

(4) अनामिका मध्यमा से बड़ी - अगर अनामिका मध्यमा से बड़ी हो, तो दौलतमन्द मगर हासिद व कंजूस ।

(5) मध्यमा अनामिका से बड़ी - दानिशमंद व साहिबे इज़्ज़त होगा (आम दुनियावी हाल)

(6) तर्जनी मध्यमा से बड़ी - पादरी हो या मुल्की ख्यालात की लहर व कर्म धर्म वाला होगा और सोचकर कम खर्च करने वाला भी ।

(7) अनामिका तर्जनी से बड़ी - मशहूर जिन्दगी वाला होवे ।

(7क) तर्जनी और मध्यमा बराबर - नैपोलियन जैसा समय में बहादुर होगा ।

(7ख) तर्जनी अनामिका बराबर - मशहूर जिन्दगी

तर्जनी मध्यमा बराबर

का मालिक हो ।

(8) मध्यमा अनामिका बराबर - मशहूर जवाहरों का व्यापारी हो । ध्यान रहे सूर्य शनि बराबर, सो सब जमा तफरीक बराबर ।

(9) कनिष्ठिका अनामिका बराबर - तहरीर व तकरीर दोनों में एकसाँ माहिर ।

अँगुलियों का असर

बलिहाज़ लम्बाई हर एक की अपनी -अपनी

तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठिका पर लम्बाई का असर चार तरीकों से यानि लम्बी, बहुत लम्बी, बहुत ही लम्बी और बहुत छोटी के होने के हिसाब से नीचे दर्ज है । हर एक हालत में जो जो असर पैदा होता है. वह भी साथ में दिया है ।

इसी तरह तर्जनी, मध्यमा अनामिका और कनिष्ठिका का प्रभाव अँगुली के नोकदार, चौड़ा, गोल और मुरब्बा होने से ख़ाका नम्बर 14 से खाका नम्बर 17 तक दिखलाया गया है ।

तर्जनी अनामिका बराबर

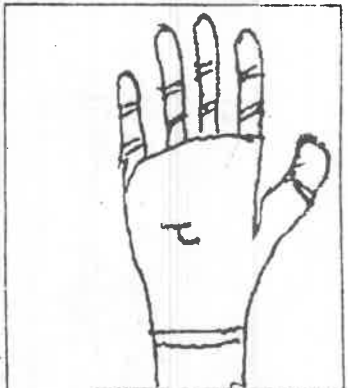

मध्यमा अनामिका बराबर

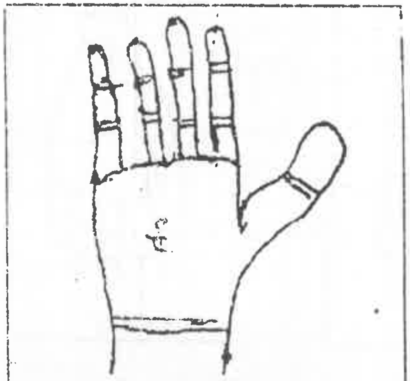

कनिष्ठका अनामिका बराबर

लम्बी हकूमत

तर्जनी- बहुत लम्बी
सोच विचार

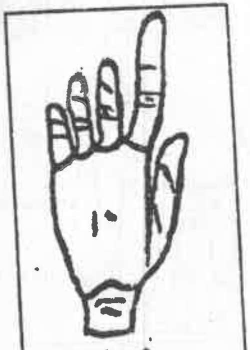

बहुत ही लम्बी
हकूमत का चला हुआ

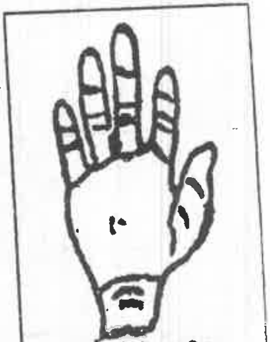

बहुत छोटी - हासिद

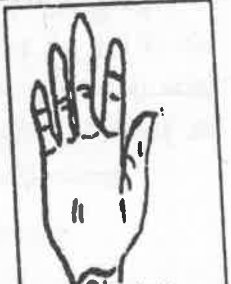

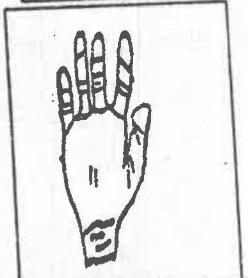

बहुत छोटी - बे बुनियाद

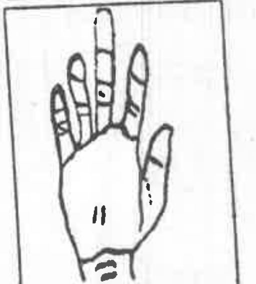

बहुत ही लम्बी- मुर्दा ख्याल

अनामिका
लम्बाई
लम्बी दस्ती काम

बहुत लम्बी
अनामिका
गुलजार बहुरूपिया

अनामिका
बहुत ही लम्बी
शौकीन

अनामिका
बहुत छोटी

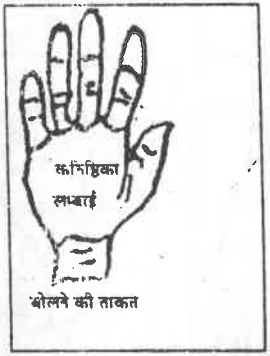
कनिष्ठिका
लम्बाई
बोलने की ताकत

कनिष्ठिका
बहुत लम्बी
अच्छी तकदीर

कनिष्ठिका
बहुत ही लम्बी
जुबान से नुकस तक छिपा

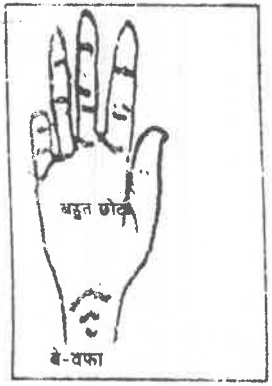
बहुत छोटी
बे-वफा

तर्जनी नोकदार
14
नेक, ईमानदार तेज

तर्जनी
14
चौड़ी
बहादुर

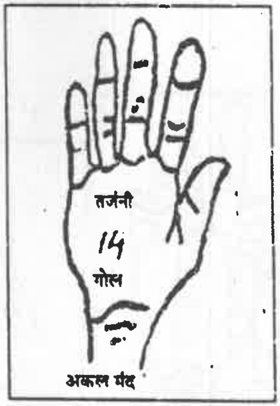
तर्जनी
14
गोल
अकल मंद

तर्जनी
14
मुरब्बा
सच्चाई पसंद

मध्यमा
उंगली सिरे
15
नोकदार बच्चो के ख्यालात

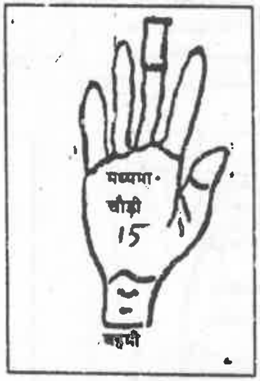
मध्यमा
चौड़ी
15
वहमी

तर्जनी
15
गोल
अकल मंद

तर्जनी
15
मुरब्बा
दानिशमंद

अनामिका
16
उंगली सिरे
नोकदार - सच्चाई

अनामिका
16
चौड़ा
हुनरमंद

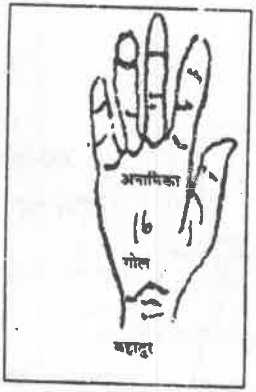
अनामिका
16
गोल
बहादुर

अनामिका
16
मुरब्बा
लालची

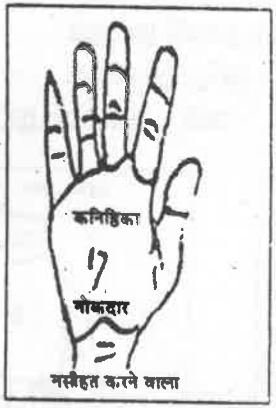
कनिष्ठिका
17
नोकदार
नसीहत करने वाला

कनिष्ठिका
17
चौड़ा
हाज़िर नवाब

कनिष्ठिका
17
गोल
ज्ञानी

कनिष्टिक
17
मुरब्बा
पुख्ता राए

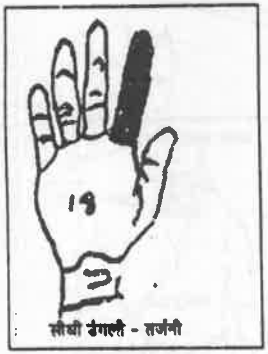

सीधी उंगली - तर्जनी

सीधी उंगली- अनामिका

सीधी उंगली कनिष्ठिका

सीधी उंगली - मध्यमा

सीधी अँगुली का असर हाथ

तर्जनी - हकूमत की अँगुली ।
इरादा की पुख़तगी और बुलन्द ख़्याली । (ख़ाका नं० 18)

मध्यमा - सन्यास, उदासी, अकेलापन, गोशा पसन्दी । (ख़ाका नं० 19)

अनामिका - ख़ुद दस्ती मेहनत की आदत । हुनरमंदी । पेशाबरी । (ख़ाका नं० 20)

कनिष्ठिका - बोलने की ताकत व दिमागी ताकत ।(ख़ाका नं० 21)

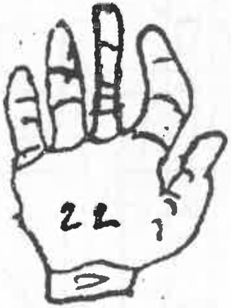

उंगली टेढ़ी

टेढ़ी अँगुली

जो अँगुलो टेढ़ी हो जाये वह अपनी ताकत छोड़ देती है। और जिस अँगुली की तरफ झुक जाये उसी अँगुली का असर पैदा होगा । अँगुली के झुकाब से मुराद **यह है** कि अँगुली की बनावट में टेढ़ापन होवे ।

(ख़ाका नं० 22)

अँगुलियाँ गाजर की तरह

अँगुलियाँ नाखून वाले सिरे से नीचे की तरफ जड़ को अगर गाजर की तरह दर्जा व दर्जा मोटी होती जावें और इनको बाहम मिलाने से जड़ों में कोई सुराख न रहे तो सारी उमर आराम व खुश-खुराक खुश-पोशाक । उमदा हाल । मज़बूत जिस्म होगा । तंग दस्ती कभी न होगी । यानि बवक्ते ज़रुरत रुपया का बन्दोबस्त मौजूद हो । अमूमन अय्याश होगा।

(ख़ाका नं० 23)

गुली की 'बनावट का झुकाव' का असर न कि ज़ाहिरा झुकाव

अँगुली	झुक जाए जिस तरफ	असर
(1) तमाम	तर्जनी	पक्का इरादा, आज़ाद तबीयत, बढ़ने का ख्याल, हौसला भरी उमीद का आदमी होगा। (24)
(2) तमाम	मध्यमा	हद से ज्यादा उदासी । एकान्त एकान्त पसन्द, खुदाई पहुँच बदरजा कमाल । (25)
(3) तर्जनी	मध्यमा	(1) से उल्ट । (26)
(4) मध्यमा	तर्जनी	दुनिया को छोड़ जाने वाला, मुर्दा ख्याल, उदास । (27)
(5) मध्यमा	अनामिका	एक क्षण में खुश और दूसरे में उदास । अजीबोगरीब तबीयत । (28)
(6) अनामिका	मध्यमा	बहुत शोहरत पसन्द । (29)
(7) अनामिका	कनिष्ठिका	दस्ती काम में माहिर, या व्यापारी, पैसे का पुत्र । (30)
(8) कनिष्ठिका	अनामिका	अमली (Practical) ताकत । दस्ती काम की तिजारत से अच्छा सम्बंध रखने वाला । हुनरमंद । (31)

झुकाव तर्जनी को

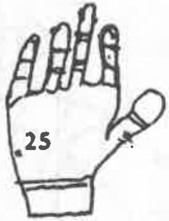

झुकाव मध्यमा को

हाथ की अँगुलियों के नाखून

हाथ की अँगुलियों का बर्बाद या कटा हुआ नाखून 9 महीनें में पूरा हो जाता है । इसलिये जब नाखून फटने लगें (किसी चोट बग़ैरा से नहीं, वैसे ही) या फटे हुये नाखून ठीक होने लगें तो फटे हुये सेहत की दरुस्ती-खराबी व दीगर तबदीलियों के पेश ख़ैमा का 9 महीने पहले ही पता जाहिर कर देते हैं ।.

नाखून की शक्ल और उनका असर नीचे की तालिका में नाखून की शक्ल और उनका असर दर्ज है ।

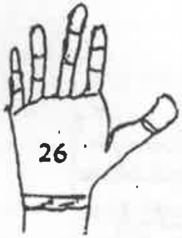

तर्जनी झुकी मध्यमा को

मध्यमा झुकी तर्जनी को

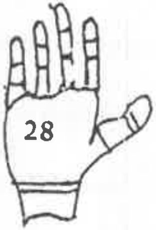

मध्यमा झुकी अनामिका को

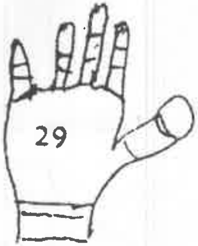

अनामिका झुकी मध्यमा को

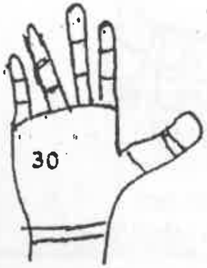

अनामिका झुकी कनिष्ठिका को

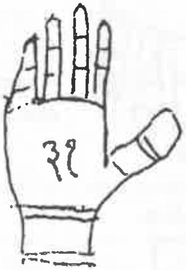

कनिष्टिका झुकी अनामिका कं

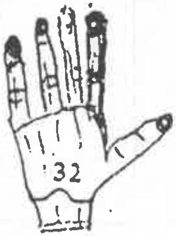

नाखुन गोल

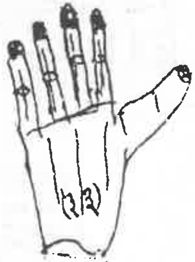

नाखुन छोटे

नाखुन बहुत छोटे

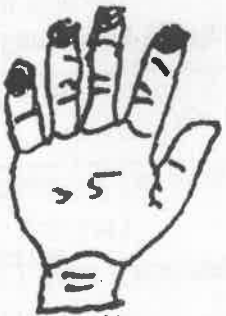

नाखुन चौड़े

नाखून दरम्याना

नाखुन लम्बे

नाखून लम्बे और बहुत तंग

नाखून पतले ,झुके चितकबरे

क्रम सं०	किस्म नाखून	असर
1	गोल या उनका रंग सब्ज़ हो जाये।	स्वयं कारीगर तथा शर्म वाला होगा, मगर आन्तरिक तबीयत से शरीर और फ़सादी होगा। ऐसे फ़साद झगड़े उसके लिये दिमागी बीमारियों का बहाना होंगे। (32)
2	नाखून छोटे हों या उनका रंग सफेद हो जाए।	खुद तंगदिल, लालची, जल्दबाज़ और रंजीदा। खून की कमी या पथरी से बीमार। (33)
3	नाखून बहुत छोटे या उनका रंग ज़रद हो जाये।	कम-अक्ल, जल्दबाज़। दिल की बीमारी हो। (34)
4	नाखून चौड़े या उनका रंग नीला हो जाये (चोट से नहीं)।	खून की कमी। पट्ठों की बीमारी होवे। (35)
5	नाखून दरम्याना या उनका रंग स्याह हो जाये।	कारोबार करने कराने के संबन्ध में तो अच्छे व मुबारक असर वाला मगर उमर भर कम दौलत जो बीमारियों में जाती रहे। (36)
6	नाखून लम्बे या उनका रंग सोने का हो जाए।	फेफड़ें और छाती की बीमारी। जिस्मानी हालत कमज़ोर होवे। (37)
7	नाखून लम्बे और बहुत तंग या उनका रंग चितकबरा (स्याह और सफेद, रंग बिरंगे धब्बे)।	पुश्त (पीठ) की बीमारी हो। (38)
8	नाखून पतले, झुके हुए, टेढ़े या उनका रंग सिक्के (धात) का हो जावे।	नाजुक हालत (खराब मायनों में)। (39)

नाखून के रंगों का असर

रंग	असर
सब्ज़	शरारती, फसादी ।
नीला, सफेद	खून की कमी, बीमार ।
ज़रद	दिल, जिगर की बीमारी ।
स्याह	उमर भर कम दौलत ।
सोने या सिक्के का	परेशानी ।

छोटे बड़े पाँव

बाँया पाँव

दाँया पाँव

अँगुलियों के वही नाम हैं जो हाथ की अँगुलियों के हैं और पर्वत व राशियां बगैरा सब कुछ हाथ की मानिन्द गिना है ।

फ़रमान नम्बर - 71

पाँव का हाल

पाँव का वही हिसाब है जो हाथ का है । पाँव हमेशा ज़मीन से लगता है । और ज़मीन को शुक्र माना है। शुक्र का पर्वत अँगूठे पर होता है। इसलिये पाँव की सिर्फ एक रेखा हाथ की रेखाओं से फर्क पर होती है। बाकी बातों में पाँव की सब रेखा हाथ की मानिन्द देखी जाती हैं । पाँव में रेखा अगर एड़ी से निकलकर अँगूठे तक चली जावे तो सवारी का सुख होगा । चक्र, शंख, सिप्पी का पाँव की अँगुलियों पर होने का असर ''औलाद'' में ज़िकर है । बाकी निशान का हाथ के खास निशानों में वर्णन है । पाँव की अँगुलियों को छोड़ कर अगर चक्र, शंख, सिप्पी का निशान दाँये पाँव पर हो तो पर्वत या ग्रह के कायम होने का नेक असर हाथ की तरह होगा । मगर बाँए पाँव पर चक्र, शंख, सिप्पी पर्वत के नीच होने का असर देंगे । अगर बाँया पाँव दाँए से बड़ा हो तो कम हौसला व डरपोक होगा ।

फरमान नम्बर - 72 पाँव

फरमान नं० 72

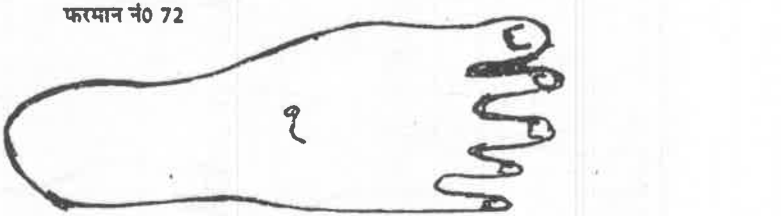

पाँव की अँगुलियां

(1) अँगूठा व तर्जनी मिले हुये - मन्द भाग होगा ।

(2) अँगूठा छोटा हो -एक जगह न रहे ।

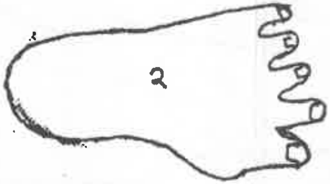

(3) अँगूठा छोटा व तर्जनी बड़ी हो - पहले लड़के या लड़की का सुख न हो ।
(4) अँगूठा तर्जनी बराबर - खुश गुजरान ।
(5) अँगूठा बड़ा, तर्जनी छोटी - दूसरों का गुलाम रहे ।
(6) तर्जनी मध्यमा से बड़ी - औरत खानदान ग़रीब औरत से रंजीदा हाल रहे ।
(7) तर्जनी मध्यमा से थोड़ी छोटी - औरत का सुख पूरा होवे ।

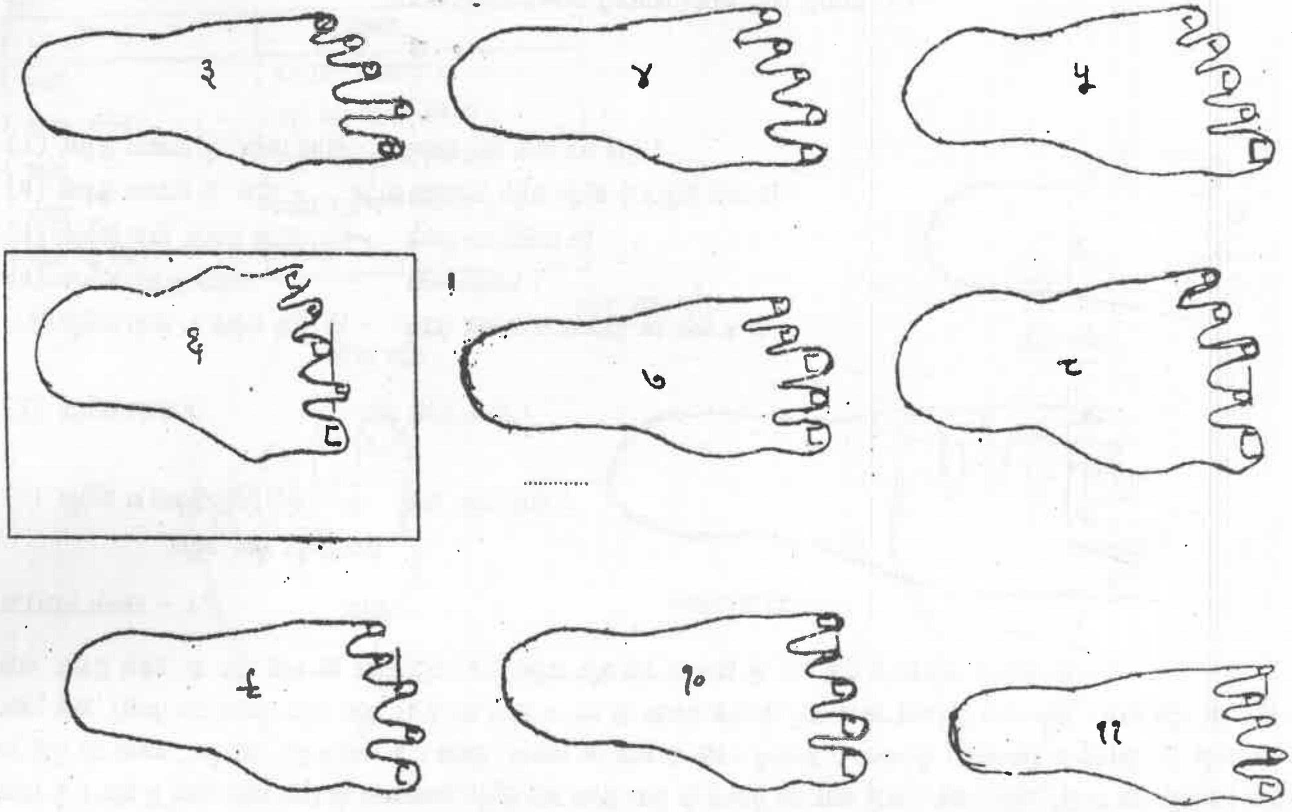
३
४
५
६
७
८
९
१०
११

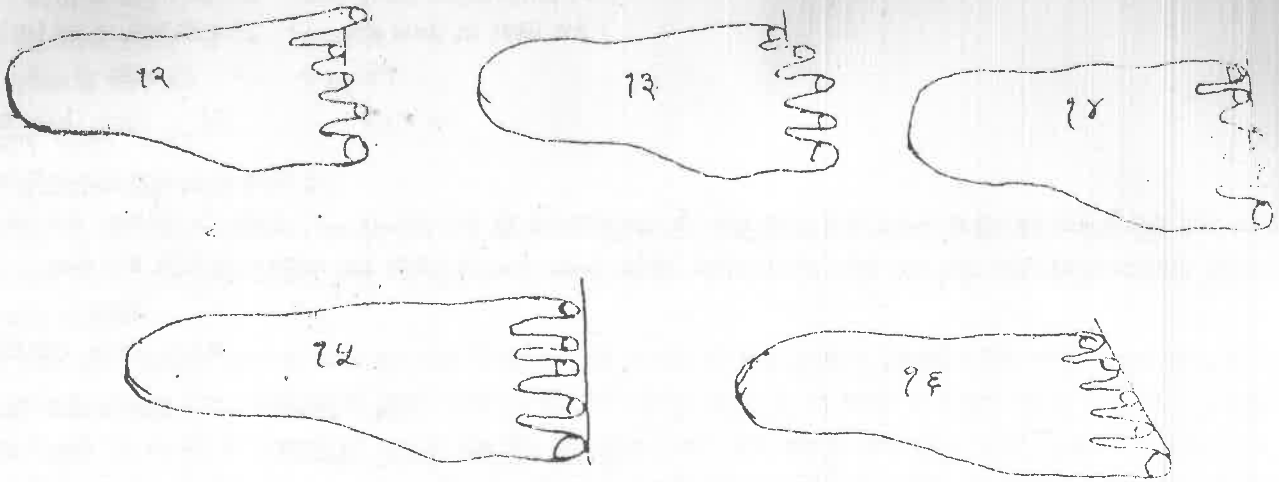

(8) तर्जनी मध्यमा से बहुत छोटी - औरत का सुख हल्का हो ।
(9) अनामिका मध्यमा से छोटी - औरत का सुख हल्का हो ।
(10) कनिष्ठिका अनामिका से कदरे बड़ी हो - नेक नसीब ।
(11) कनिष्ठिका अनामिका से बहुत बड़ी - मनहूस - मन्द भाग ।
(12) कनिष्ठिका अनामिका से बहुत ही बड़ी - ज़लील होवे ।
(13) कनिष्ठिका अनामिका से छोटी - नेक असर होवे ।
(14) कनिष्ठिका अनामिका के बराबर हो - औलाद का सुख मगर अपनी उमर कम होवे ।
(15) पाँचों बराबर या दराज़ - हुक्मरान होवे ।

(16) पाँचों बिलतरतीब (कनिष्ठिका से) एक से दूसरी बड़ी होती जावे - साहिबे औलाद होवे ।

पाँव की अँगुलियों के नाखून

(1) सुर्ख ताँबा के रंग के - राजा या हुक्मरान होवे ।
(2) नीलगूँ - आलि मरतबा ।
(3) ज़रद - दीवान साहिब ।
(4) स्याह - चोर डाकू फिर भी मंदा हाल ।

फ़रमान नम्बर - 73

मुँह का दहाना

(क) खुला व कुशादा - साहिबे हौसला ।
(ख) तंग - डरपोक ।
(ग) चौड़ा - दरम्यानी जिन्दगी । अमूमन परेशानी ।
(घ) बड़ा व लम्बा - शहवत - परस्त

फरमान नम्बर - 74

भौंहें

जिस तरह आँख के नज़दीक और कमान की तरह गोलाई पर हों, इसी तरह ही ज्यादा नेक दिल और नेक काम करने वाला होगा । जिस तरह आँख से दूर सीधी (–) हो उसी तरह ही संग-दिल और बुरे काम करने वाला होगा । कमान की तरह झुकाव दिल का झुकाव या रहम-दिल होना प्रकट करता है ।

फरमान नम्बर - 75

कान

(अ) मर्द के कान लम्बे - उमर लम्बी पर अक्ल कम ।

(आ) औरत के कान लम्बे - क़वी हाजमा और अक्लमंद ।
(इ) मर्द के कान छोटे - अक्लमंद ।
(ई) औरत के कान छोटे - बेवकूफ ।

फरमान नम्बर - 77

(1)ज़ुबान व तालु स्याह रंग

ऐसे मर्द की औलाद मर जावे । लावल्द होवे और औरत को सुख न हो । क़बीला को बदनाम और बर्बाद करने वाला होवे ।

(2) अगर औरत ऐसी ज़ुबान व तालु स्याह रंग वाली हो तो अपनी औलाद से महरुम हो जाये । मगर दूसरों पर इसका मर्द की तरह कोई बुरा असर न होगा ।

(3) स्याह ज़ुबान अमूमन स्याह या तबाह कुन बात निकालेगी । जो 32 दाँत की तरह खाली न जायेगी । मगर काली ज़ुबान वाला 32 दाँत वाले से ज्यादा मनहूस होगा । यानि काली ज़ुबान वाला 32 दाँत वाले से बुरा कहने में, जो खाली न जाएगा, ज्यादा होगा या मुकाबला में ज़ुबान से कहे हुए या मुँह से निकाली हुई बात के सच होने की ताकत (चाहे नेक बात हों चाहे बुरी) काली ज़ुबान में 32 दाँत वाले से ज्यादा होगी । अगर काली ज़ुबान काला तालु और साथ ही आँख भी साँप की तरह गोल और गहरी और स्याह रंग हो तो खुद भी बर्बाद और साथियों को भी तबाह करे ।

फरमान नम्बर - 78

कद

(1) मर्द लम्बा हो - नरम दिल, धर्मात्मा ।
(2) औरत लम्बी हो - सादा लोह, भोली तबीयत ।
(3) लम्बाई 68 अँगुल- बद नसीब ।
(4) लम्बाई 52 अँगुल- नेक नसीब ।
(अपनी अँगुली के पैमाना से)

तीन अँगुल की एक गिरह, चार गिरह की एक बालिशत, दो बालिशत का एक हाथ, दो हाथ का एक गज़ (यानि 36 इंच) या 48 अँगुल। इस तरह इन्चों को $^4/_3$ ज़रब दो तो रक्म अँगुलों मे निकल आयेगी।

फरमान नम्बर - 79

बाज़ू

जिस तरह बाज़ू लम्बे, उसी तरह नसीबा वाला। अगर घुटनों से ज्यादा नीचे को और लम्बे हों तो ''राज योग'' गिना जाता है।

फरमान नम्बर - 80

छाती

(1) फ़राख और बुलन्द - दौलतमंद

(2) नाहमबार - मौत अचानक होवे।

(3) छाती पर बाल न हों - चालबाज़, धोखेबाज़।

(4) छाती पर ज्यादा बाल - अय्याश तबीयत, कम-अक्ल, उमर भर गुलामी में गुजारे।

फरमान नम्बर - 81

पीठ

(1) उभरी हुई - रईस, हुक्मरान।

(2) चौड़ी - मुफलिस।

(3) छोटी - ज़माना का गुलाम।

फरमान नम्बर - 82

लब (होंठ)

(1) मोटे और लम्बे - कम-अक्ल ।

(2) बहुत लम्बे - चोर, बदमुआश ।

(3) बारीक और सुर्ख रंग - मोतदिल मिज़ाज

(4) बलिहाज़ रंग, सुर्ख - दाना, अक्लमंद, भला मनुष्य, खुश-गुज़रान होवे ।

(5) बलिहाज़ रंग, सफेद स्याह या नीला - बद-बख्त, मुफ़लिस ।

(6) एक बड़ा, दूसरा छोटा - बद-बख्त ।

(7) नीचे का बड़ा - जल्द नाराज़ होने वाला ।

फरमान नम्बर - 83

खुद - दस्ती तहरीर

(1) बड़ा व मोटा हरफ़ - फराख दिल ।

(2) सादा अक्षर, पढ़ा जाने वाला - मज़बूत व सख्त दिल ।

(3) लम्बी लकीरें बचिध-मिध - बगैर सोचे, जल्दी करने वाला ।

(4) अक्षर सीधा साफ - कुदरती अक्ल वाला ।

(5) बारीक व बराए नाम - अमली (Practical) लियाकत वाला ।

(6) गोल व बराबर हरफ - उमदा फैसला करने वाला ।

(7) छोटा-छोटा हरफ़ बुझा हुआ - शर्मनाक व डराकल ।

(8) खूबसूरत व फूलदार, सजावटी - लाफ-ज़न, गप्पी ।

फरमान नम्बर - 84

आँख

(1) जिस तरह बड़ी - उभरी हुई या बाहर को निकली हुई और हल्का रंग हो, इसी तरह ज्यादा नेक स्वभाव और जल्द समझने वाला होगा और रुहानी ताकत वाला होगा ।

(2) जिस तरह छोटी, गोल, अँदर को धंसी हुई या गहरी और हल्का रंग होवे, इसी तरह ज़्यादा मतलब -परस्त, शरीर, मक्कार और तुंद मिज़ाज होगा ।

(3) जिस तरह और जिस जानवर से मिलती जुलती होवे, इन्सान में उसी तरह इस जानवर के स्वभाव और दिल की खुफिया काम करने की ताक़ते होंगी ।

(4) छोटी आँख - दिल का हौसला छोटा, दिल तंग ।

(5) लम्बी आँख - दिल की नक़लोहरकत लम्बी ।

(6) गोल आँख - सफर कई और हर सफर में साल कई या ज्यादा (एक जगह) पर लगेंगे ।

(7) गहरी आँख - खुद-गर्ज़, बेवफा ।

(8) गोल, गहरी व स्याह - मार चशम । साँप का स्वभाव ।

(9) गोल, गहरी व भूरी - बहुत शादियां मगर फिर भी औरत का सुख न होवे ।

(10) अगर जुबान और तालु स्याह का साथ होवे तो - खुदा की पनाह । एक साँप दूसरा उड़ने वाला । हर तरह से मनहूस ।

(11) बड़ी और रौशन- अकलमंदी ।

(12) आतिशी (सूर्ख रंग) - भड़कने की ताकत ।

(13) धीमी और झलक मारती हुई - समझने की ताकत ।

(14) नरम नज़र - नरमी तबीयत को ज़ाहिर करती है ।

(15) सब्ज- जल्द समझने वाला ।

(16) अँधा- खुद-गर्ज होगा ।

(17) काना - बुरा स्वभाव ।

(18) भैंगा - सबसे ऊपर फ़रेबी ।

(19) बिल्ला - खोटे काम करने वाला । बद - फेअल ।

फरमान नम्बर - 85

रफ़्तार

(1) मध्यम रफतार - खराब हाफ़िज़ा, सुस्तुलबजूद । हर काम में देरी करने वाला ।

(2) तेज़ मगर छोटा कदम - बुलन्द ख्याल, ठण्डा स्वभाव । हर काम में साबित कदम होने वाला ।

(3) आदतन झुककर चले - अक्ल वाला, नेक, मेहनती, बैगर दलील बात न मानने वाला होवे ।

(4) तेज़ व तुंद रफतार - कम-अक्ल, हासिद, खुद राये, खुद-पसंद ।

(5) कदम बड़ा मगर चलने में लंग मारे - लालची, बुरा करने में ज्यादा होवे ।

(6) रफ़तार में लंग या नुक्स हो - बदला लेने वाला, हासिद, झूठा, चुगलखोर होवें ।

(7) एक जगह चैन से न बैठने वाला - बेहूदा, हासिद, कंजूस होवे ।

(8) सीना व पेट निकालकर चले - मिलनसार, जिन्दा दिल, मगरुर, कहने सुनने पर मान जाने वाला ।

(9) सिर और कमर हिलाकर चले । तिरछी चाल वाला - नापाक आदत वाला हो । बुजुर्गों की बुराई और बद-ख़ोई करने वाला । लाअनती ज़माना होवे ।

(10) मुंदरजा वाला से बरी - नेक तबीयत - नेक किस्मत ।

(11) जिस जानवर की चाल से मिलती हो - इसमें वही आदत, इसका वही हाल, वही तबीयत और वैसी-वैसी ही किस्मत का मालिक होगा ।

फ़रमान नम्बर - 86

गुफ़तार

(1) गला फूलाकर बात करे - अपने मतलब में दूसरे के खून की परवाह न करे ।

(2) बात करते वक्त कोई न कोई अंग (हाथ, पाँव) हिला दे - बेहूदा, बद-फ़ेअल, शोहरत पसंद होगा ।

(3) बात करते वक्त दाँतों का माँस नज़र आवे - कम-उमर होगा ।

(4) जल्द-जल्द बोलने वाला - बुरा स्वभाव, मतलब परस्त होगा ।

(5) संभलकर, नरमी और आहिस्ता-आहिस्ता सोचकर बोलने वाला - दाना, अक्लमंद ।

(6) नाक में बोलने वाला - मग़रुर चशम ।

(7) चैन से बैठकर न बात करे - बेहूदा - हासिद, कंजूस ।

फ़रमान नम्बर - 87

आवाज़

(1) बुलन्द, ऊँची और वज़नी - बहादुर, मरतबे वाला ।

(2) बुलन्द भारी मानिन्द गरज बादल - नेक हुक्मरान ।

(3) ढोल के समान - राग विद्या का शौकीन ।

(4) मोर के समान - मशहूर - सरदार फौज ।

(5) चकोर के समान - दौलतमंद, बेपरवाह, बे-लिहाज़ ।

(6) मुर्गाबी के समान - दुनियादार, लज्ज़त - पसंद ।

(7) कव्वा, चील, गिद्ध के समान - अपने मतलब में दूसरे के खून होने की भी परवाह न करे ।

(8) मुतकब्बराना - सख़्त कड़ी आवाज़ - बद - नीयत, कम - अक्ल ।

(9) बुलन्द और भारी - दयानतदार, बुलन्द-हिम्मत, रज़ामंद मगर मग़रुर होवे ।

(10) बुलन्द मगर बारीक - दूर-अंदेश, सच्चा, ज़हीन मगर खुशामद पसंद । जल्द नाराज़ होने वाला । खिज्जू ।

(11) बुलन्द बारीक मगर नाखुश आवाज़ - झगड़ालू, शरीर, दुःख देने वाला, बुरा करने वाला, खुद-रोये मगर शरीर मज़बूत होगा ।

(12) ना-मुलायम व भारी - कम-अक्ल व कम हिम्मत ।

(13) मुलायम व भारी - सुलह पसंद व हौसला वाला ।

(14) कमज़ोर व काँपती आवाज़ वाला - हसद करने वाला, वहमी, कमज़ोर, ख़ौफ खा जाने वाला ।

(15) दो आवाज़ वाला - फ़रेबी , कमीना ।

फ़रमान नम्बर - 88

छींक का बिचार

(1) सामने से या दाईं तरफ से एक या तीन छींक - कभी नेक नतीजा न होवे ।
(2) पीछे से या बाईं तरफ से दो अदद छींक होवें । - हमेशा नेक नतीजा होगा ।
(3) पीछे से आवाज़ - मनहूस गिनी गई है ।

फ़रमान नम्बर - 89

अंग फड़कना

दाँया अँग फड़कना - शुभ । मुबारक ।
बाँया अँग फड़कना - अशुभ । गैर मुबारक ।

फ़रमान नम्बर - 90

साँस

(1) दोनों साँस (नथने) या सिर्फ दाँया चलता हो - नेक काम या देर तक कायम रहने वाली चीज़ का शुरु करना मुबारक होगा ।
(2) बाँया साँस चलता हो - इस हालत में किया हुआ काम मामूली सा नतीजा देने वाला होगा । कोई खास नेक न होगा ।

फ़रमान नम्बर - 91

स्वप्न का नतीजा

(1) नींद के पहले वक्त का स्वप्न - छह महीने में असर देवे ।
(2) नींद के दूसरे वक्त का स्वप्न - तीन महीने में असर देवे ।
(3) नींद के तीसरे या आखिरी वक्त का स्वप्न - फौरन असर ज़ाहिर करे ।

4) स्वप्न में किसी को मार देना, साँप या दुश्मन को हलाक करना। बुलन्दी पर चढ़ना। पहाड़ पर जाना - तरक्की होने की दलील है।
5) पानी के किनारे या पानी पर स्वप्न में देखी हुई बात - जल्द सच्ची होवे ।
6) (अपनी) मौत देखना - उमर दराज़ हो। खुशी हो।
7) विवाह शादी देखना - ग़मी व मातम सुनने या देखने में आवें।

फ़रमान नम्बर - 92

नेक काम को जाते हुये शुरु में शकुन

(1) कुम्भ या घड़ा पानी से भरा - दूध - कन्या - फूल - विवाह - शादी बगैरा अगर दाँई तरफ से मिलें तो शुभ असर होगा।
(2) लकड़ी, औज़ार या हथियार आगे से उल्ट छींक बगैरा होवे तो बुरे (बद) असर की निशानी है।
3) कुत्ता या बिल्ली बुलन्द आवाज़ से रोये, जानवर मंडराने लगें तो मौत की निशानी है।
(4) नेक जानवर - काला कुत्ता, गाय, हिरण बगैरा मिलें तो नेक फल की निशानी।

फ़रमान नम्बर - 93

हथेली पर ख़ास निशान (दाँए हाथ के हिस्से पर शुभ नेक असर)
(मर्द के)

नम्बर	निशान	असर	स्थिति	कुण्डली में ग्रह
1	मछली	दौलतमंद, नेक, भागवान, चरागे खानदान।	शनि का उत्तम फल वृहस्पत से मिला हुआ।	शनि मीन-राशि में।
2	शेर	बहादुर, बेधड़क मगर बेरहम।	सूर्य व वृहस्पति	सूर्य खाना नं० 2 में।
3	साँप	खज़ाना का मालिक। यह साँप ज़हरीला न होगा हाथ इच्छाधारी साँप गिना जाता है। और शेष नाग होगा।	शनि व राहु	शनि खाना नं० 12 में।
4	हाथी	मानिन्द राजा।	राहु व मंगल	राहु खाना नं० 3, 6

5	कब्बा	फ़रेबी, काग स्वभाव।	सूर्य, शनि	शनि ख़ाना नं० 1
6	गाय, बैल	ख़ेती में फ़ायदा उठाये।	शुक्र व शनि	शुक्र ख़ाना नं० 12 में
7	चूल्हा	चोर फ़रेबी।	मंगल बद व शनि	मंगल नं० 4 शनि नं० 1 में
8	कमान	बहादुर, दिलावर।	मंगल नेक व शनि	मंगल नं० 3 में
9	फूल	दौलतमंद, उमदा जिन्दगी।	बुध उत्तम	बुध नं० 6
10	झण्डा	मज़हबी इल्म में मशहूर।	वृहस्पति का डंडा	वृहस्पति नं० 7 में
11	छत्तर	दौलतमंद ध्वजाधारी।	चन्द्र वृहस्पति	चन्द्रमा नं० 2 वृहस्पति नं० 6 में
12	पहाड़	मानिन्द वज़ीर, साहिबे तदबीर।	सूर्य बुध	सूर्य नं० 1 बुध नं० में
13	गाँव	रईस।	शनि बुध	शनि नं० 7 बुध नं० में
14	ढाल	बुज़दिल, दलिदरी।	मंगल बद वृहस्पति	मंगल बद 4 वृहस्पति नं० में
15	तलवार	दुश्मन पर गालिब।	मंगल सूर्य	मंगल नं० 1 में
16	घोड़ा	दौलतमंद, घोड़े पर सवार।	उच्च चन्द्रमा	चन्द्रमा नं० 2 में।
17	मन्दिर	पूजा पाठी, परहेज़गार	वृहस्पति घर का मालिक	वृहस्पति खाना नं० 2 में।
18	चौसर (चौपट)	साहिबे इकबाल खिलाड़ी	शनि केतु	शनि नं० 6, केतु नं० 10 में।
19	क़लम	मीर मुंशी, अहले क़लम	बुध अपने घर का	बुध ख़ाना नं० 7 में।
20	आँकस (कानंका) दायरा, कुण्डल। शंख, चक्र	तीनों निशान इकट्ठे हो तो बड़ा अमीर होवे।	मंगल नेक व वृहस्पति	वृहस्पति नं० 1 में, मंगल नं० 1 में।
21	मूसल	कँजूस	बुध वृहस्पति राहु	बुध नं० 12 में।
22	ऊखल	रोटी से भी तंग	बुध वृहस्पति	वृहस्पति नं० 7 में।
23	छड़ी	तंग-दस्त	मंगल-बद की रेखा	मंगल नं० 4 में।
24	सूर्य या चन्द्रमा	मानिन्द राजा दूसरों से खिराज लेवे। मगर मौत अचानक होवे।	दोनों ग्रह इकट्ठे।	खवाह नं० 1 में, खवाह नं० 4 में।
25	दरखत (वृक्ष)	जायदाद का मालिक	शनि।	शनि नं० 10 में।
26	चौकी	तख़्त का मालिक	मंगल नेक।	मंगल नं० 10 में

नम्बर	निशान	असर	स्थिति	कुण्डली में ग्रह
27	रथ गाड़ी	राजा, महाराजा । सवारी का सुख हो ।	सूर्य व चन्द्र	सूर्य नं॰ 4 में ।
28	तराज़ू	व्यापारी, आढ़ती	बुध व शुक्र	दोनों ग्रह नं॰ 7 में ।
29	पालकी	बहुत आराम पावे ।	बृहस्पति घर का।	बृहस्पति नं॰ 2 में ।
30	आँख	दौलतमंद मगर फ़रेब से धन कमाए ।	शनि उत्तम	शनि नं॰ 11 में ।
31	नाक	मामूली व्यापारी	बुध बृहस्पति	बुध नं॰ 12 में ।
32	त्रिशूल	ज़िन्दगी अच्छी व उमदा गुज़ारे।	शनि	शनि नं॰ 12 में ।
33	ख़ाल या तिल	(क)दाँए हाथ की हथेली पर जो मुट्ठी के अंदर छिप जावे तो-दौलतमंद (ख) अगर हथेली की पीठ पर या बाँए हाथ पर हो तो - फ़िजूल खर्च, रुपया ज़ाया करे । (ग) जिस्म के सामने हिस्सा पर और जिस्म के दाँयें टुकड़े पर हो तो-नेक असर । (घ) बाँईं तरफ और पीठ की तरफ़ और पीठ की तरफ-गैर-मुबारक ।	छोटा स्याह बड़ा स्याह सबसे बड़ा	निशान-ख़ाल । निशान-पदम । निशान-लसन कहा जाता है ।
34	पदम	एक से चार तक - राजा, बड़ा साहिबे इकबाल । पाँच से आठ तक - महाराजा। नौ या ज्यादा - योगी ।		
35	गुदा, गुर्ज (हथियार)	एक हो तो सरदार शासक; दो से पाँच - बालिए सिंहासन, वरना खुदा परस्त परहेज़गार; 5 से ज्यादा हो तो ब्रह्म ज्ञानी ।		

ऊपर के निशान मर्द की सिर्फ दाँए हाथ की हथेलो पर नेक असर देंगे । माथा पर निशानात का असर सिर्फ उमर पर होगा जिसका जिकर ''उमर रेखा'' में हुआ है ।

फ़रमान नम्बर - 94

पाँव पर निशान

(1) पाँव के पँब पर, कनिष्ठिका के नीचे बुध पर या शुक्र के बुर्ज या अँगूठे की जड़ में अगर शंख सिप्पी हो, तो वही असर होता है जो ऐसी हालत में हाथ पर होता है ।

(2) अगर चक्र का निशान हो तो - धनवान व प्रतापी होगा ।

(3) अगर त्रिशूल आँकस का निशान हो तो - आला अफसर और न्यायप्रिय मिज़ाज हो।

(4) चश्में - फील (हाथी की आँख) का निशान हो तो साहिबे सिंहासन हो ।

(5) अगर यही निशान बाँए पाँव में हो तो लुटेरा, चोर, डाकू होवे । मगर फिर भी तंग - दस्त ।

पाँव की हथेली या पब पर 'चक्कर' के लिए देखें फरमान 123 नं० 5 ।

फ़रमान नम्बर - 95

रहने को स्थान

शुभ लग्न और नेक शकुन से शुरु किये हुये मकान के लिए निम्नलिखित बाते पूरा करने के लिये निहायत मुबारक होंगी ।

मकान बनने से पहले तमाम और सारी की सारी तह ज़मीन को एक ही गिनकर इसके कोने देखे जावें । चहार कोने सबसे उत्तम होगा जिसका हर एक कोना 90° नब्बे दरजे के कोण का हो । निम्नलिखित कोने कदापि न हों, जो मनहूस गिने गये हैं ।

आठ, अठारह, तेरह, तीन, बिच में चुक[१] भुजा बल हीन[२] । १. मछली २. मुर्दा

पाँच कोण का मन्दिर रचे, कह विसकर्मा कैसे बसे ।

2. मछली से खानदानी नसल घटती जावे । मुर्दा, मौतें दिखलावे ।

3. तह-ज़मीन के गोशे देखने के बाद और मकान बनने से पहले दीवारों का रकबा या बुनियादें छोड़ कर हर एक हिस्सा या कमरा की आन्तरिक दरी या श्रेत्रफल अलग-अलग देखा जाये । जो मकान के मालिक या स्वामी जिसने मकान बनाना है और खुद भी इसमें रहायश करनी है - के अपने हाथों की पैमाइश में क्षेत्रफल देखा जाये । यानि पैमायश के लिये खुद इसका अपना हाथ होवे । चाहे वह अठारह इन्च का होवे चाहे उन्नीस इंच या सतरह इंच का पैमाना इसके अपने हाथों की लम्बाई का होवे । हाथ की लम्बाई कहाँ तक होगी ।

(1) कोहनी (बाज़ू) के सिरे की हड्डी से लेकर अनामिका के आखिर तक या

(2) कोहनी (बाज़ू) पर जो जोड़ के सिरे के अलावा दूसरी हड्डी होती है, वहाँ से लेकर मध्यमा के आखिर तक यह नं० 2 की हद बन्दी, ठीक और उत्तम है ।

4. कायदा

$\frac{[(\text{तूल} + \text{अरज़}) \times 3] - 1}{8}$ जो बाकी बचा वह असर का हिंदसा होगा ।

यानि तूल = 15 हाथ, अरज़ = 6 हाथ ।

15+7 = 22 ; 22 × 3 = 66; 66−1 = 65; 65 ÷ 8 = 8 पूरा और एक बचा ।

22 − 1 = 21

इस तरह जो बाकी बचा वह 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8 या सिफर का हिंदसा हो सकता है ।

5. जवाब में अगर ताक यानि 1, 3, 5, 7 हों, तो नेक असर होगा और अगर जबाब में जुफत यानि 2, 4, 6, 8 हों तो मनहूस होगा । वह किन किन बातों से संबन्धित होगा ।

अगर बाकी बचने वाला हिंदसा होवे :-

6. एक तो - वह मकान मकानों में मानिन्द राजा उत्तम और बुलन्द हैसियत होगा ।

7. दो हों - कुत्ते के समान, गरीब निर्धन ।

8. तीन हों - शेर के समान होगा । आदमियों के लिये उमदा और मुबारक दीवान खाना, बैठक या दुकान कारोबार तिजारत के लिये

निहायत मुबारक होगा। मगर औरतों और बच्चों के लिये गैर मुबारक होगा। ऐसे मकान में मर्दों की हमेशा बरकत होगी और दुनयावी जंगो जदल के मुतअल्लिक सब काम शुभ असर देंगें। मकान का अगला हिस्सा चौड़ा और पिछला हिस्सा तंग हो तो भी शेर दहाना यानि शेर बबर की तरह सर भारी, दुम का हिस्सा छोटा सा या दोनों बातों में शेर या वृहस्पति का नेक असर होगा।

9. चार हों :- गधे के समान होता है। रात दिन मज़दूरी की मगर इवज़ में खुराक के लिये वही गंदी गिज़ा मिली। किसी ने गधे का खयाल न किया। न मिली तो न ही मिली।

10. पाँच हों :- गाय के समान होगा। जिसमें औरत ज़ात, बाल बच्चे बगैरा सबके सब सुख व आराम पायेंगे। और शुक्र का पूरा और उत्तम फल होगा। बल्कि मच्छ रेखा (उत्तम) का असर होगा। मकान पीछे से चौड़ा और अगला हिस्सा तंग मानिन्द, बैल हो, तो भी "गऊ घाट" कहलाता है। जिसका वही नेक असर है जो 'बाकी पाँच' का था। 11. छह हो :- मानिन्द तकिया मुसाफिर होवे। यानि केतु अपना बुरा असर देगा। न माता रहे न पिता सुख ले। न औलाद आराम करे न यार दोस्त साथ मिलें। हरदम मुसाफिर और वह भी मुसीबत का मारा हुआ।

12. सात हों :- हाथी के समान होगा। फ़ील ख़ाना। मवेशियों का तबेला। उमदा और मुबारक। (राहु)

13. आठ या सिफर :- मानिन्द चील, गिद्ध, मर्द घाट, मौत का घर, शनि का हैड क्वार्टर और समाप्त।

14. मकान में आने-जाने का सबसे बड़ा दरवाज़ा या शाराए -आम वाला। अगर जिस तरफ मशरिक या पूर्व हो, तो सबसे उत्तम। हर वक्त आदमियों की नेक आमदोरफत और तमाम सुख नसीब रहें।

15. पश्चिम हो :- दरजा दोयम का उत्तम होगा।

16. उत्तर या पहाड़ की तरफ:- नेक है नेकी के लिए यानि लम्बे सफर, पूजा-पाठ, शुभ काम, लम्बे मामले, नेकी के काम करने के लिए आने-जाने का रास्ता होगा। जिसका असर नेक होगा।

17. दक्षिण :- सबसे मनहूस है। खासकर औरत ज़ात के लिए मौत का सबब है। आदमी भी कोई सुख नहीं पाते। अग्निकुण्ड का जेल ख़ाना जिसमें जल-बुझ कर मरने के सिवा और कुछ नसीब न होगा। छड़ा तवेला या "रण्डों का" अफसोस करने की जगह या मौतें गिनने का मुकाम।

18. शहतीरों का रुख़:- दाख़ला के दरवाज़े के बराबर हो तो मुबारक। (शुक्र की छत उत्तम)। अगर काटती हुई शक्ल या सोते वक्त छाती को अबूर करें। (शनि की छत - मौत बीमारी)।

19. **कड़ियाँ, वाले :-** कुल तादाद को अगर चार पर तकसीम करें और जबाब में बाकी हो :-

एक - तो राजा इन्द्र के समान हो। उत्तम फल।

दो - तो यम के समान हो। मौत के यमदूत हों।

तीन - तो मानिन्द राज यानि "राज योग" हों।

20. मकान में अगर बाहर से हवा किसी सीधे रास्ते या शाराए-आम से बिल्कुल सीधी ही आकर दाखिल होवे तो बच्चों के लिए निहायत मनहूस या हवाए-बद या बुरी रुह का दाखला गिना जाएगा। जो हमेशा बुरा ही असर देगा। कोई न कोई अचानक मुसीबत खड़ी ही होती रहेगी।

21. सहेत के असूल पर दूसरी चीज़ों के इलावा यह ख्याल ज़रुरी है कि रात को सोते वक्त चारपाई का सिरहाना पूर्व में रहे, तो मुबारक असर होगा। दिन को दिमाग ने काम किया। सूर्य ने मदद दी, तो रात को रुह ने काम संभाला और चन्द्र ने मदद दी। पाँव दक्षिण या पूर्व में सोते वक्त होना मनहूस है। उत्तर का कोई पाँव के ज़रिये - नेकी करना हर तरह से मुबारक है। इसमें पहले हाथ या पहले पाँव का सवाल उठता ही नहीं है। चाहे सोये हुए सोच विचार रुह से हो, चाहे जागते जिस्म से हो मुबारक है।

मकान के अँदर की चीज़े मुबारक असर देंगी अगर :-

22. सिहांसन या बैठक :- पूर्व की दीवार के मध्य के हिस्से में हो।
23. आग की जगह :- दक्षिण या दक्षिण पूर्वी कोने में हो।
24. पानी की जगह - पूजा पाठ - पहाड़ - पूर्वी कोने में हो।
25. लक्ष्मी स्थापन : धन दौलत की जगह - दक्षिण या पश्चिमी कोने में मुबारक।
26. खाली जगह - मेहमान बगैरा के लिए - पहाड़ - पश्चिमी कोने में मुबारक।
27. चूल्हे का मुँह - पूर्व की ओर हो, तो मुबारक है।
28. मकान से बाहर निकलते वक्त पानी की जगह दाँए हाथ और आग बाँए हाथ बल्कि पीठ पीछे रह जाये, तो निहायत मुबारक है।

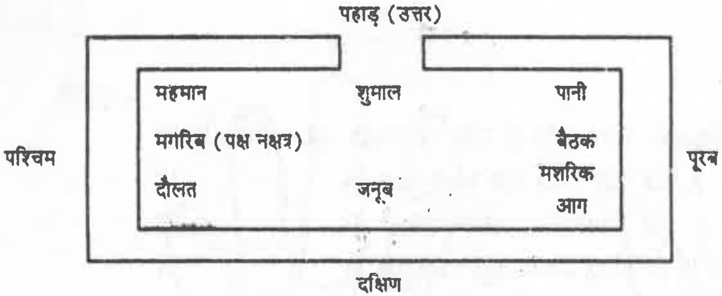

29. मकान के नज़दीक अगर पीपल का वृक्ष हो, तो इस वृक्ष की सेवा से बहुत नेक फल होगा। अगर इसकी सेवा या इसकी जड़ों को पानी न डाला जाएगा तो जहाँ तक इसका साया जाएगा, तबाही और बर्बादी करता रहेगा। यही हाल नज़दीक के कूँए का है। अगर इसमें कभी कभी बतौर श्रद्धा-भाव थोड़ा सा दूध डाल दिया जाए तो नेक फल और अगर गंदा करें तो तबाही का हाल होगा। घर में कीकर का वृक्ष ला-वल्द किए बिना न छोड़ेगा। इससे बचावः- सूर्य निकलने से पहले तारों की छाँव में जबकि अभी अँधेरा ही होवे, चालीस दिन हर शनिवार हफ़ता में एक दफा और गाहे बगाहे हमेशा पानी डालना चाहिए।

फ़रमान नम्बर - 96

(1) खुशी - ग़मी हाथ

अँगूठा छोड़कर बाकी तमाम अँगूलियों पर यानि 4 (अँगूली) ज़रब 2 (हाथ) ज़रब 4 (निशान) कुल 32 निशान जौ (अनाज गन्दम जौ ⬭) वाक्या हों तो दुःख सुख बराबर होंगे। इस 32 के हिंदसा को पक्की बात माना है 32 दिन का ही ज्यादा से ज्यादा दिन एक महीना में देशी हिसाब में माने गये हैं। मुँह में भी ज्यादा से ज्यादा 32 दाँत नेक असर वाले माने हैं। अगर 33 खत हों तो 32 ग़मी के हिन्दसा के मुकाबले में 31 खुशी के दिन होंगे। इसी तरह ही जितने हिन्दसे या खत अँगूलियों पर कायम हों इतने ही दिन 32 के मुकाबला में खुशी होगी।

सिर्फ एक ही हाथ पर

(दाँए पर) हाथ

(2) 12 राशियाँ और 9 ग्रह कुल जोड़ 12+9=21 के हिंदसा का हिसाब जायज़ रखा है । यानि 21 निशान से ज्यादा वाला दुनिया के तमाम हिसाब-किताब 9 ग्रह और 12 राशियों से बाहर होगा या दुनिया से किनारा कश होगा । सिर्फ दाहिना हाथ लेकर अगर इस पर निशान हों :-

12 - तो सारी उमर दौलतमंद और खुश - गुज़रान हो ।

13 - तो हमेशा दुःख व मुसीबत होवे ।
14 - तो औसत दरजा की जिंदगी हो ।
15 - तो चोर लुटेरा डाकू हो ।
16 - तो बद - समय जुआरिया होवे ।
17 - तो बेइज्ज़त बे एतबारा होवे ।
18 - तो भला आदमी । भले काम । नेक तबीयत होवे ।
19 - तो धर्मात्मा । राज दरबार में इज़्ज़त हो ।
20 - तो साहिबे तदबीर - अक्लमंद होवे ।
21 - तो कम-समय और बद नसीब होवे ।

21 से ज्यादा - तो दुनिया से जुदा ही रहने वाला । दुनिया छोड़ देने वाला होवे ।

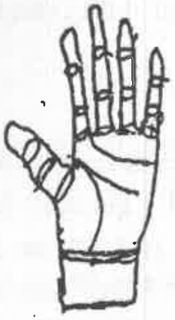

बाँया हाथ - जौं

दायाँहाथ जौं

चन्द्र के दो आधे आधे आकार

जौं या पूर्ण चन्द्र

जौं अंगूठे की पहली पोरी पर

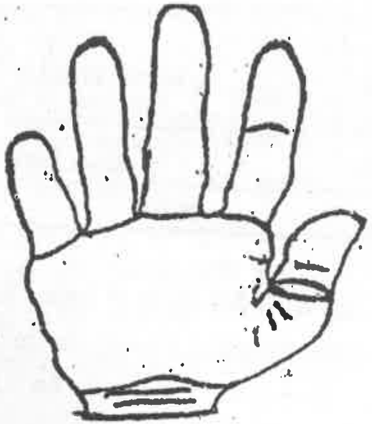

जौं अगूंठे की दूसरी पोरीं पर

जौं अंगूठे की तीसरी पोरी पर

फरमान नम्बर - 97

बचपन - जवानी - बुढ़ापा

जौ का निशान सिर्फ अँगूठे पर उमर के तीनों हिस्सों का हाल ज़ाहिर करता है । अगर यह निशान वाक्या हों

	हिस्सा	सही व सालम हो	टूटा फूटा हो
1	नाखून वाल हिस्से पर	बचपन, जवानी, बुढ़ापा तीनों में ही आराम पावे और दौलतमंद हो ।	बचपन और जवानी मंदा । बुढ़ापे में सुख नसीब होवे।
2	मध्य के हिस्से पर	उमदा व नेक भाग	बचपन व जवानी आराम । बुढ़ापा मंदा होवे ।
3	तीसरे हिस्से पर	उमदा व नेक भाग	बचपन व जवानी आराम । बुढ़ापा मंदा होवे ।

फ़रमान नम्बर - 98

अँगुलियों को आपस में मिलाने पर उनकी जड़ों में कोई भी सुराख न हो तो तीनों हिस्से उमदा । सूर्य रेखा वाक्या हो तो भी तीनों उमदा और अगर अँगुलियों के सुराख मौजूद हों तो असर इस तरह है :-

	सुराख	असर
1	तर्जनी मध्यमा में	बुढ़ापे में तकलीफ़ हो
2	कनिष्ठिका अनामिका में	बचपन में तकलीफ़ हो
3	अनामिका-मध्यमा में	जवानी में तकलीफ़ हो

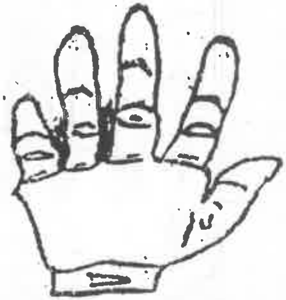

सुराख तर्जनी मध्यमा में

(4) अँगुलियों के मध्य सुराख होने से बवक्ते जरुरत या अचानक रुपये के मिलने या न मिलने से मुराद है । आमदन, खर्च, कमाई या बचत से कोई संबन्ध नहीं । वह बात तो हथेली से संबन्ध रखती है ।

अँगुलियों में अगर कोई भी सुराख न हो तो बवक्ते जरुरत रुपये का बन्दोवस्त हाजिर है । तीनों सुराखों से अगर तीन रुपये की ज़रुरत फर्ज़ करली जाये और हाथ में एक सुराख हो तो दो रुपये हाज़िर होंगे और एक की कमी होगी । अगर दो सुराख हों तो एक रुपये की कमी होगी । अगर दो सुराख हों तो एक रुपया हाज़िर और दो की कमी होगी । अगर तीनों सुराख हों तो तीन से तीन की कमी होगी ।

फ़रमान नम्बर - 99

बर्ताव

सिर और दिल रेखा के मध्य का आयात

(**Rectangle**)

सुराख कनिष्ठिका अनामिका में

सुराख अनामिका मध्यमा में

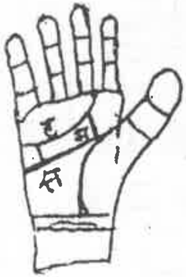

- दिल रेखा स - सिर रेख
म - मुसततील

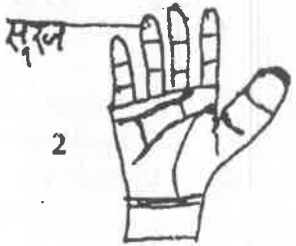

मुसततील सूर्य के बुर्ज के नीचे ज्यादा चौड़ी

1. सिर रेखा या बुध रेखा और दिल रेखा या चन्द्र रेखा आपस में दुश्मन है । जिस तरह यह एक दूसरे के नज़दीक होती जावें, (इसी तरह) सिर और दिल की ताकतें आपस में दुश्मन होती जायेंगी । यानि जिस तरह इन दोनों रेखाओं के मध्य के मैदान तंग होता जावे उसी तरह ही वह ज्यादा तंग दिल इन्सान होता जावे । यानि बुध की तासीर तेज़ और खराब आमेज़श वाली होती जाएगी । बुध मंगले और वृहस्पति दोनों का दुश्मन है । इसलिये ऐसा आदमी आम दुनियावी लेन-देन में तुरश सा बर्ताव करने लगेगा । मंगल-नेक की इन्साफ की तबीयत के बदले में बेइंसाफ और एक -तरफा रियायत करने वाला होगा और वृहस्पति का मज़हबी असर मुतअस्सब ज़ाहिलाना हालत में ज़ाहिर होगा । मंगल-बद या भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों बगैरा से भी नफरत करने वाला ही होता जायेगा । बहर हाल बर्ताव नेक न होगा ।

अगर यह मुसततील एकसाँ हालत की बजाए :-

2. सूर्य के पर्वत के नीचे ज्यादा चौड़ी हो जाए, तो इज्ज़त और बेइज़्ज़ती में कोई फर्क ही न जानेगा या इसके दिल पर गैरत और बेगैरती कोई असर न करेगी ।

3. अगर सूर्य के पर्वत के नीचे ज्यादा तंग होवे-तो तंगदिली की वजह से शर्म शर्माने में अपना ही नुकसान करने वाला होगा ।

3

म. सूर्य के बुर्ज के नीचे ज्यादा तंग

4

म. वृहस्पति के नीचे ज्यादा चौड़े ।

5

म. शनि के नीचे ज्यादा चौड़ी

म. बुध के नीचे ज्यादा चौड़ी

फरमान नं० 100 ए

4-5. अगर मुसततील वृहस्पति के पर्वत के नीचे ज्यादा चौड़ी हो जाये या शनि के पर्वत के नीचे ज्यादा चौड़ी हो जाये तो - दौलत व ज़ायदाद को हरदम अज़ीज़ रखने वाला या बेहद कंजूस होगा ।

6. बुध के पर्वत के नीचे मंगल-बद के मुकाम पर ज्यादा चौड़ी होवे तो - ज्यादा खुश दिल होने के बजाये तबाह होवे और अपना नुक़सान करा ले ।

7. अगर वृहस्पति की तरफ से चलकर मंगल बद की तरफ को दरजा व दरजा मुसततील चौड़ी होती जावे तो - दूसरों को दिया हुआ पैसा कभी वापिस न आवे । चाहे वापिस करने वाला देने का नाम ही न लेवे और अगर वह ईमानदार वापिस देने की नीयत वाला भी हो तो वह बेचारा वापिस करने के क़ाबिल ही न रहे ।

8. अगर मंगल बद के मुकाम की तरफ से वृहस्पति के पर्वत की तरफ को चौड़ी होती जाये तो दिया हुआ रुपया ज़रुर वापिस आये और साहुकारा उमदा हो ।

1

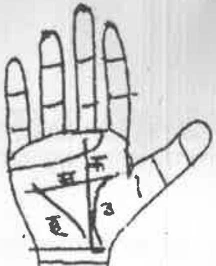

क - किस्मत रेखा

त - त्रिकोण
उ - उमर ...

7

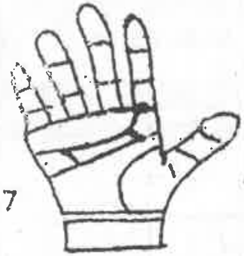

म. दरना-बदरना चौड़ी
वृहस्पति सेमंगल बद की तरफ

8

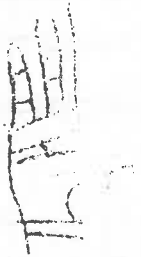

म. मंगल बद ...
की तरफ ज्यादा ...

खर्च - बचत फरमान 100A

सिर - रेखा, उमर रेखा और सेहत रेखा की त्रिकोण

(1) त्रिकोण का मैदान (त) हाथ की हथेली पर बिल्कुल खाली मैदान है, जिसके तीनों किनारे उमर रेखा (हवाई लहर),

सेहत रेखा या तरक्की रेखा (ह) - हवा मे उड़ती हुई भाप और सिर रेखा (बोलने की आवाज़) तमाम के तमाम हवाई चीज़े बैठी हुई हैं। किस्मत रेखा (क) का दरिया, ऊर्ध रेखा या मच्छ रेखा का दरिया, धन रेखा या श्रेष्ठ रेखा का दरिया बगैरा इसे अपना रास्ता बना सकते हैं। यानि इन दरियाओं में से जिस दरिया का पानी इस मैदान में होगा, वही असर ज़ाहिर होगा।

(2) और अगर किसी बजह से इस मैदान में कोई भी दरिया न हो तो ख़ाली रेगिस्तान या रेत का खुश्क समुन्द्र होगा जिसकी रेत में किसी भी धात की चमक न होगी। रेत की तबीयत का आदमी थोड़ी गर्मी से हां गर्म होगा और सर्दी से ठण्डा होने वाला होगा। किस्मत की तरफ से उत्तम न होगा। बुध के अरसा तक बगैर दौलत या तंग-दस्त सा ही होगा। यह मन्दी किस्मत का वक्त 34 साल तक होगा। जो उसकी $8^1/_2$ साल 17 साल (बुध के अर्सा का चौथाई) उमर से शुरु हो सकता है। किस्मत का मंद भाग इसके अपने सिर की ख़राबियों का नतीजा होगा। खुद कमाई की बजाए दूसरों का मुहताज या करज़ा उठाकर आमदन खर्च करेगा। मगर बचत नहीं गिनी जा सकती।

(3) इस मैदान (त्रिकोण) में चलने वाला दरिया या रेखा इस बरेती को दो हिस्सों में तकसीम करेगा। हाथ के दाँए या अँगूठे

4

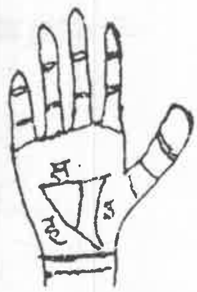

ह स उ के तीनों कोणे बन्द

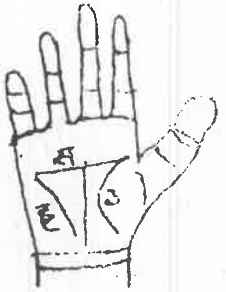

ह, उ कोण खुला

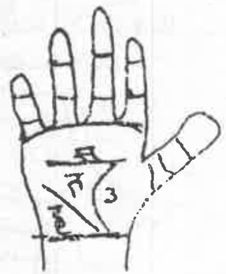

ह, स का कोण खुला

फरमान

100 बी

क, ख हथेली की लम्बाई

अ आ मध्यमा की लम्बाई

की तरफ का त्रिकोण खर्च ज़ाहिर करेगा और बाईं तरफ या मंगल-बद की तरफ का हिस्सा चन्द्र का नेक असर या बचत को बतायेगा । इन दोनों (दाँई-बाँई) त्रिकोणों का आपसी रकबा खर्च और बचत की औसत बताएगा । यानि अगर कुल बड़ी त्रिकोण के लिये सारी आमदन एक रुपया फर्ज़ हो तो रकम के हिसाब से खर्च व बचत में निसबत होगी ।

(4) अगर बड़ी त्रिकोण के तीनों कोनें बन्द हों तो खर्च और बचत बंधे हुये होंगे या बंधे हुये गिने जा सकते है या अपनी मरज़ी के मुताबिक हद बंदी के लिए हिसाब-किताब में लिखे लिखाये जा सकते है । मगर रुपया ख़र्च की रक़म से बचत के रकम में नहीं बदली जा सकती। सिर्फ खर्च बचत का हिसाब रखकर खर्च हुई व बाकी बचत की रकम मालूम की जा सकती है ।

(5) और अगर उमर रेखा और सेहत रेखा के मिलने का खुला ही होवे तो खर्च बचत का हिसाब-किताब भी नहीं रखा जा सकता । अगर खर्च कम क़र दिया जाये तो आमदन भी खुद व खुद कम हो जायेगी।

(6) यही असूल सिर-रेखा और सेहत-रेखा के मिलने वाली तरफ के कोने से बचत का होगा।

(7) अगर ऊपर कहा हुआ मैदान खाई के समान होगा तो किस्मत का दरिया का बहाव और उमदा पानी और खुद अपनी कमाई का खर्च-बचत होगा वरना कर्ज़ा वगैरा से गुज़ारा करेगा ।

फरमान नम्बर 100 बी

कर्ज़ा और जायदाद जद्दी

हथेली की लम्बाई जैसे-जैसे ज्यादा होवे वैसे-वैसे रुपया पैसा इस के हाथ आवे या आता जावे। जैसे-जैसे मध्यमा की लम्बाई होवे, वैसे-वैसे दुनिया या रुपये को छोड़ने वाला होवे या इसी कदर उस का खर्च हो जावे।

फरमान नम्बर 101

राशी

1. हाथ की ऊँगलियां की **हर** एक गाँठ या 24 घंटे के दिन रात को 12 हिस्सों में तकसीम करने पर **हर** एक टुकड़ा (गोर **हर** एक टुकड़ा पूरे 2 घंटे का न होगा मगर 12 टुकड़ों में से हर एक टुकड़ा) राशि कहलाता है ।

2. राशियां गिनती में 12 (बारह) हैं । जिनके नाम और नम्बर हमेशा के लिए एक ही निश्चित हैं। कुण्डली में बार-बार हर राशी का नाम लिखने की बजाए, इसके लिये निश्चित किया हुआ हिन्दसा नम्बर ही लिख दिया जाता है । आजकल के जारी या प्रचलित ज्योतिष में राशियाँ कुण्डली के घरों में घूमती रहती है । मगर फलादेश देखने के लिए इस इल्म में उनकी जगह हमेशा के लिये पक्के तौर पर निश्चित कर दी गई है ।

राशियों की तालिका इस प्रकार है :-

राशि	नम्बर	निशान	अँगुली	पोरी नं०
मेष	1	ɱ	तर्जनी	1
वृष	2	8	तर्जनी	2
मिथुन	3	II	तर्जनी	3
कर्क	4	२	अनामिका	1
सिंह	5	w	अनामिका	2
कन्या	6	ɱ6	अनामिका	3
तुला	7	♎	कनिष्ठिका	1
वृश्चिक	8		कनिष्ठिका	2
धनु	9	m	कनिष्ठिका	3
मकर	10	♓	मध्यमा	1
कुम्भ	11	?v	मध्यमा	2
मीन	12	+E	मध्यमा	3

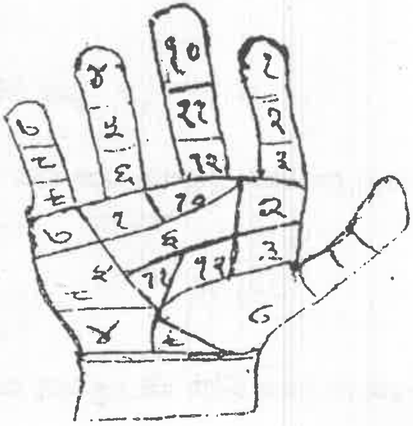

राशियाँ उंगली पारियों पर और हथेली पर फरमान 101

1. तर्जनी अँगुली वृहस्पति या हकूमत की अँगुली है।

अनामिका अँगुली सूर्य या ज़ाति (हिम्मत से) कमाई की अँगुली है।

कनिष्ठिका अँगुली बुध या इल्मोहुनर की अँगुली है।

मध्यमा अँगुली शनि या उदासी या बैराग की अँगुली है।

2. गिनती, चाल और जगह निश्चित करने के समय मध्यमा अँगुली को **सब** अँगुलियों के आखिर पर लेते है। क्योंकि मध्यमा अँगुली उदासी, सन्यास, बैराग या दुनिया से अलग गिनी है। जिसका संबंध गृहस्थ के बाद होगा।

फ़रमान नम्बर - 102

कुण्डली

राशि के पक्के घर

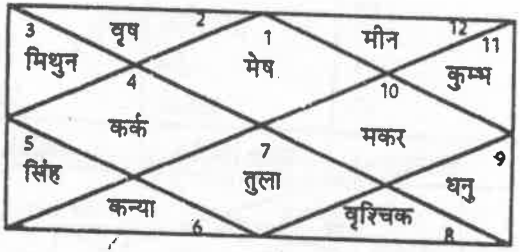

1.	मेष - मींढ़ा	2.	वृष - बैल	3.	मिथुन - जोड़ा
4.	कर्क - केकड़ा	5.	सिंह - शेर नर	6.	कन्या - लड़की
7.	तुला - तराज़ू	8.	वृश्चिक - बिच्छू	9.	धनु - धनुष, दरयाई गाय
10.	मकर - मगर मच्छ	11.	कुम्भ - घड़ा	12.	मीन - मछली

फरमान नम्बर - 103

कुण्डली

हर ग्रह या पर्वत के पक्के घर

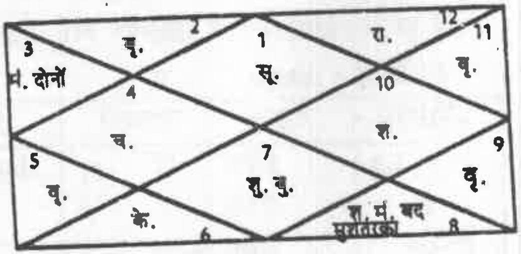

ग्रह या पर्वत	निशान	ग्रह या पर्वत	निशान
सूर्य	* सितारा	चन्द्रमा	∪
बृहस्पति	ㄐ ⊙	शनि	+
मंगल नेक	▭	केतु	Ш
मंगल बद	Δ		
बुध	o		
शुक्र	=		
राहु	▦		

घरों में राशि व ग्रह कुण्डली के हिसाब से फर्क मालूम होगा । यानि नम्बर 101 से 103 के मुकाबला से यह बात ज़ाहिर होगी । कुण्डली में राशि नम्बर से मकान की तह - ज़मीन मुराद होगी और ग्रह कुण्डली के हिसाब से मकान की इमारत मुराद होगी । मिसाल:- ख़ाना नं० 11 वास्तव में राशि के हिसाब से शनि की मालकीयत फरमान नं० 101 है । मगर ग्रह कुण्डली के हिसाब से यह ख़ाना नं० 11 वृहस्पति का घर है । फ़रमान नं० 103 अब फरमान नं० 101 से यह मुराद होगी कि

घर की ज़मीन पर तो शनि का असर है और मकान की इमारत पर वृहस्पति का है।

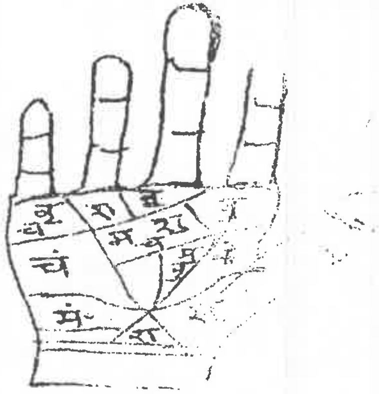

हाथ नीच

फ़रमान नम्बर - 104

कुण्डली   ऊँच नीच ग्रह

(अ) किस्मत रेखा दोनों तरह का असर

(आ) सूर्य के बगैर मंगल बुजदिल होगा ।

सू. = सूर्य, चं. = चन्द्र, मं. = मंगल, बुध = बुध,
वृ. = वृहस्पति रा. = राहु के. = केतु शु. = शुक्र ।

ऊँच - शनि

ख़ाना नम्बर	ग्रह व फल
1	शनि नीच फल ।
2	बुध खराब, शुक्र उत्तम मगर चन्द्र मुशतरका खराब ।
3	राहु उत्तम, केतु खराब
4	मंगल नीच फल, वृहस्पति उत्तम ।
5	कलाई रेखा खराब, उमर रेखा उत्तम ।
6	मंगल या शुक्र या चन्द्र खराब बुध या राहु उत्तम, सिर की श्रेष्ठ रेखा उत्तम ।
7	शनि उत्तम फल अज़ सूर्य खराब । पर सूर्य का अपना उत्तम ।
8	चन्द्रमा नीच, उमर रेखा उत्तम
9	राहु खराब, केतु उत्तम ।
10	मंगल उत्तम फल, वृहस्पति नीच ।
11	श्रेष्ठ रेखा उत्तम, धन रेखा खराब, ऊर्ध दौलत ।
12	शुक्र या केतु उत्तम, बुध मंगल खराब ।

फरमान नम्बर - 105

कुण्डली

असर हर ग्रह

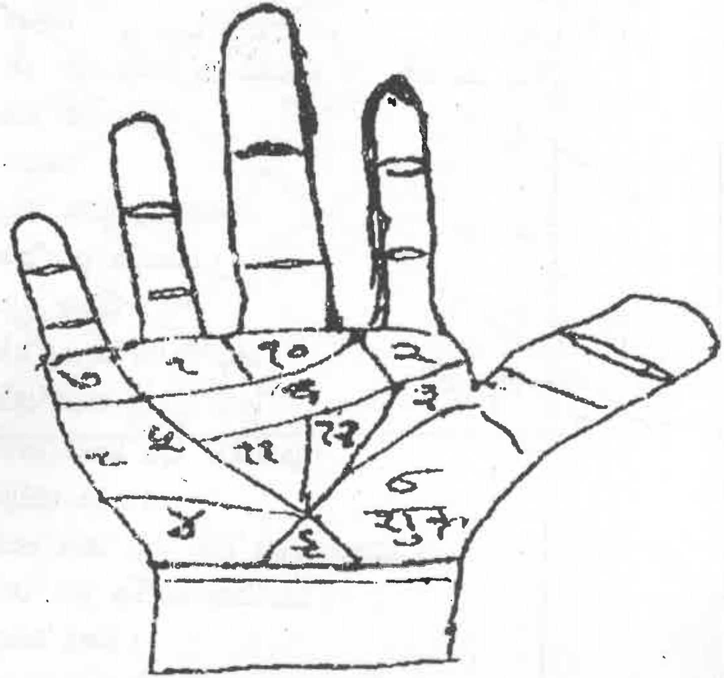

घर - ग्रह	असर
1	आग, जिस्म, खुद अपना-आप, रुह, गुस्सा।
2	दौलत, इज्जत।
3	नज़र, भाई-बंधु, नर-मादा, जंग।
4	सफर, माता, दिल, पानी, शांति, जायदाद।
5	औलाद नरीना।
6	सफर, दुश्मन, मॉमू, लड़कियाँ।
7	शुक्र, औरत, मिट्टी, खेती।
	बुध, दिमाग, व्यापार, पेशा।
8	मौत, बीमारी।
9	कर्म, धर्म, परोपकार।
10	पिता, चालाकी, मकान।
11	आमदन
12	खर्च, स्त्री-सुख।
	सूर्य और मंगल के मुकाबले में बुध का फल अच्छा।

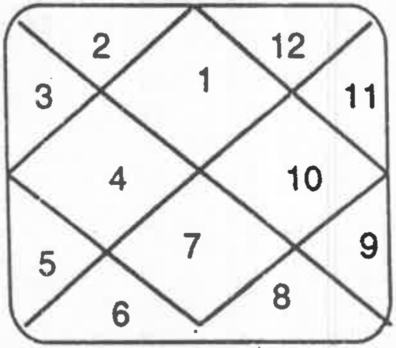

फ़रमान नं० - 106

कुण्डली

घर का मालिक ग्रह बलिहाल राशि

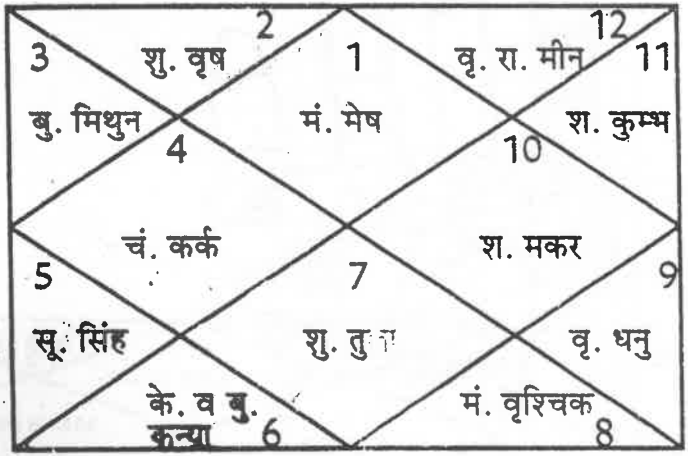

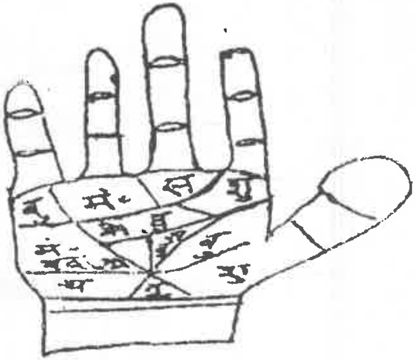

मं0 बद - मंगल -बद
सू0 सूं खाना नं0 5

फरमान नम्बर - 107

कुण्डली

ऊँच फल नीच फल के ग्रह राशि

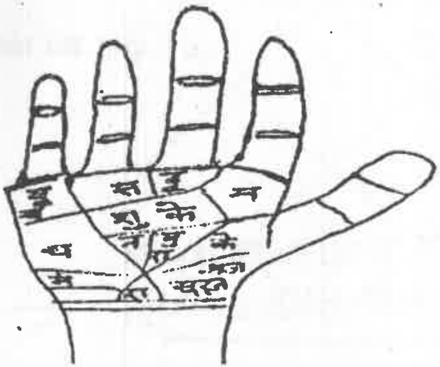

न - नदारद

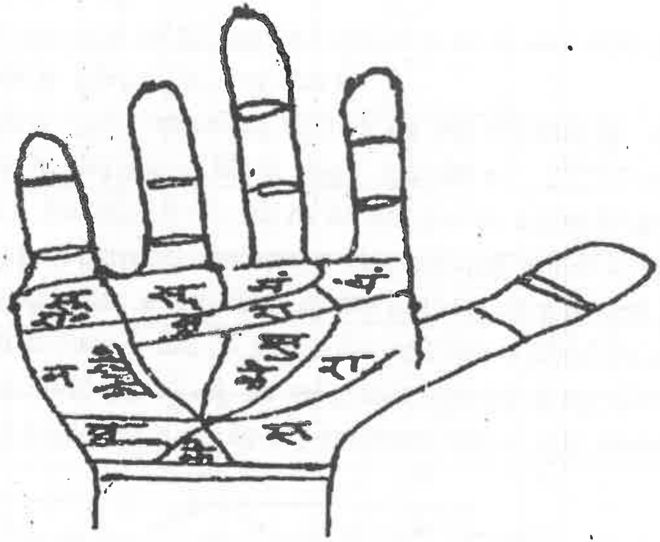

न – नदारद गायब

कुण्डली ग्रहों की बाहमी नज़र

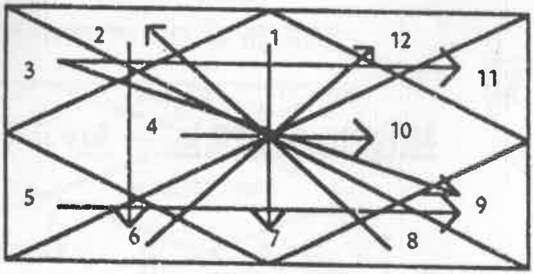

1. कुण्डली के 12 ही घरों में से किसी घर में बैठे हुये ग्रहों की निश्चित रास्तों के जरिये आपसी असर मिलाने की ताकत या नज़र ग्रह दृष्टि (देखना) कहलाती है, जो अँगुली टेढ़ी हो जाये वह अपनी ताकत छोड़ देती है और जिस अँगुली की तरफ झुक जाए, उसी अँगुली का असर पैदा होगा। अँगुली के झुकाव से मुराद यह है कि अँगुली की बनावट में टेढ़ापन होवे न कि ज़ाहिरा झुकाव हो।

2. हस्त रेखा में रेखा की शाखों या रेखा के उतार झुकाव को इल्म ज्योतिष में ग्रह दृष्टि गिनते हैं। रेखा का ऊपर को झुकाव और उठाव तरक्की या नेक असर और नीचे को झुकाव बुरा असर बताता है। यही हाल शाखों के ऊपर को या नीचे को निकल जाने से गिना है। रेखा का ऊपर को उठाव या झुकाव से मुराद होगी कि इसमें उस ग्रह का असर मिल रहा है जिस ग्रह के पर्वत की तरफ को रेखा उठ रही है। दूसरे शब्दों में समाप्त होने से पहले ही दूसरी रेखा का शुरु हो जाना। जैसे रेखा में ——— यह निशान रेखा का टूटना नहीं होता बल्कि तबदीली हालात ज़ाहिर करता है। चाहे वह तबदीली बुरी तरफ होवे चाहे भली तरफ को जाने लगे। अगर ऐसी तबदीली बुरी तरफ को जाती मालूम होवे तो दान से रिहाई व नेक असर होगा।

कुण्डली में तीर शुरु होने वाले घर के ग्रह तीर समाप्त होने वाले घर के ग्रह पर असर डालते हैं। समाप्त होने वाले घर के ग्रह शुरु होने वाले घर के ग्रह पर असर नहीं डाल सकते।

नीचे की तालिका में आपसी दृष्टि का अलग-अलग असर खानों के हिसाब से दर्ज है।

ख़ाना	नज़र	आपसी मदद	आम हालत	टकराव	बुनियादी	धोखा	मुशतरका ग्रह	अचानक चोट ↓
1	क	5	7	8	9	10	2	3 7 11
	ख	9	7	6	5	4	12 – 10	
2	क	6	8	9	10	11	3	4
	ख	10	8	7	6	5	1	
3	क	7	9	10	11	12	4	1
	ख	11	9	8	7	6	2	
4	क	8	10	11	12	1	5	10 – 6
	ख	12	10	9	8	6	3 – 1	
5	क	9	11	12	1	2	6	7
	ख	1	11	9	6	7	4	
6	क	10	12	1	2	3	7	4
	ख	2	12	11	10	9	5	
7	क	11	1	2	3	4	8 – 10	1 – 5 – 9
	ख	3	1	12	11	10	4 – 6	
8	क	12	2	3	4	5	9 – 2	10
	ख	4	2	1	12	11	7	
9	क	1	3	4	5	6	10	7
	ख	5	3	2	1	12	8	
10	क	2	4	5	6	7	1 – 11	4 – 8 – 12
	ख	6	4	3	2	1	7 – 9	
11	क	3	5	6	7	8	12	1
	ख	7	5	4	3	2	10	
12	क	4	6	7	8	9	1	10
	ख	8	6	5	4	3	11	

क : देख सकता है – ख़ाना को । ख : देखा जा सकता है – ख़ाना नम्बर से ।

(अ) ख़ाना नम्बर 2-8; 2-9; 2-10; 11-8; 3-8; 3-5 मुशतरका गिने जाते है ।

(आ) नर ग्रह बोलते जुफ्त के घर में, स्त्री बोलते ताक में है ।

बुध है बोलता 3-6 में तो, 'पापी' नहीं बोलते 2 में हैं ।

फ़रमान नम्बर - 109

ग्रहों की दोस्ती दुश्मनी

नम्बर	ग्रह	बराबर ताकत ग्रह.	दोस्त ग्रह	दुश्मन ग्रह
1	वृहस्पत	राहु, केतु, शनि	सूर्य, मंगल, चन्द्र।	शुक्र, बुध
2	सूर्य	बुध जों सूर्य के साथ चुप होगा।	वृहस्पति, मंगल, चन्द्र ।	शुक्र, शनि, राहु से ग्रहण, केतु से मध्यम।
3	चन्द्र	शुक्र, शनि, मंगल, वृहस्पति।	सूर्य, बुध ।	केतु से ग्रहण, राहु से मध्यम।
4	शुक्र	मंगल वृहस्पति ।	शनि, बुध, केतु ।	सूर्य, चन्द्र, राहु ।
5	मंगल	शुक्र, शनि, राहु अब मंगल के साथ चुप होगा ।	सूर्य, चन्द्र, वृहस्पति।	बुध, केतु ।
6	बुध	शनि, केतु मंगल वृहस्पति	सूर्य, शुक्र, राहु ।	चन्द्र ।
7	शनि	केतु, वृहस्पति	बुध, शुक्र, राहु ।	सूर्य, चन्द्र, मंगल।
8	राहु	वृहस्पति, इससे चन्द्र मध्यम होगा।	बुध, शनि, केतु ।	सूर्य, शुक्र, मंगल ।
9	केतु	वृहस्पति, शनि, बुध, सूर्य मध्यम।	शुक्र, राहु ।	चन्द्र मंगल ।

(1) चन्द्र और शुक्र बराबर हैं मगर चन्द्र दुश्मनी करता है, शुक्र से ।

(2) वृहस्पति और शुक्र बराबर हैं मगर शुक्र दुश्मनी करता है, वृहस्पति से ।

(3) मंगल और शनि बराबर हैं मगर मंगल दुश्मनी करता है, शनि से ।

(4) चन्द्र और बुध दोस्त हैं मगर चन्द्रमा दुश्मनी करता है, बुध से ।

(5) राहु के साथ वृहस्पति चुप होगा, मगर गुम न होगा ।

(6) ख़ाना नम्बर 2 में राहु या वृहस्पति हो, तो राहु वृहस्पति के मातहत होगा ।

(7) बुध चाहे वृहस्पति का दुश्मन है मगर ख़ाना नम्बर 2, 4 में बैठा हुआ बुध या चन्द्र, चाहे चन्द्र बुध का दुश्मन है (चाहे बुध, वृहस्पति या चन्द्र बुध मुशतरका)

दुश्मनी की बजाए पूरी मदद करेगा । माली मदद के लिए ।

फ़रमान नम्बर - 110

मुशतरका असर ग्रहों का

निम्नलिखित ग्रह चाहे टेवे में किसी भी घर में इकट्ठे हो जायें तो इन मुशतरका ग्रहों से उनके सामने दिये हुये ख़ाना नम्बर का असर पैदा होगा या वह असर (ख़ाना नम्बर का) इन मुशतरका ग्रहों में जरुर बहाल रहेगा । यानि सूर्य मंगल के लिए ख़ाना नम्बर 1 में जो असर लिखा है या बगैर किसी ग्रह के संबन्ध से ख़ाना नम्बर 1 का जो प्रभाव लिखा है या निश्चित है, वह सूर्य मंगल मुशतरका के असर में ज़रुर ख़ानदानी खून की तरह बहाल लेंगे । चाहे वह दोनों मुशतरका ग्रह किसी भी घर में और किसी भी तरह कितने ही मंदे क्यों न हों ।

नम्बर	ग्रह मुशतरका	ख़ाना नं० जिसका असर बहाल रहेगा ।
1	सूर्य, मंगल	1
2	शुक्र, वृहस्पति	2
3	बुध, मंगल	3
4	मंगल, शुक्र	4
5	सूर्य, बृहस्पति	5
6	बुध, केतु	6
7	शुक्र बुध	7
8	मंगल, शनि, चन्द्र	8

(अ) वृहस्पति सूर्य, वृहस्पति बुध, वृहस्पति शनि, सूर्य बुध, सूर्य शनि, बुध शनि इकट्ठे पड़े होने के समय माता-पिता का सुख सागर और जायदाद जद्दी के सुख से कोई संबन्ध न होगा । बल्कि सिर्फ ज्ञाति गृहस्थी सुख से मुराद होगी । चाहे अकेले-अकेले यह सब ग्रह टेवे में अपनी-अपनी संबन्धित अशया, कारोबार, या रिश्तेदार ग्रह सम्बन्धों में कैसे ही क्यों न हों ।

(आ) स्त्री ग्रह (चन्द्र या शुक्र या दोनों मैअ बुध) के साथ जब नर ग्रह हों तो नेक फल होगा ।

(इ) जब दो या दो से ज्यादा ग्रह एक ही घर में इकट्ठे बैठे हों तो उनमें आपसी दुश्मनी वाले ग्रह अपनी-अपनी दुश्मनी छोड़ देंगे मगर आपसी दोस्ती न छोड़ेंगे, चाहे **वह** कितने **ही दुश्मनों** के साथ एक ही घर में अपने दोस्तों से मिलकर बैठे हों ।

(ई) बुध अपने पक्के घर (ख़ाना नं० 7) में बैठा हुआ और नर ग्रहों (सूर्य, मंगल, बृहस्पति) या शनि में से कोई भी बन्द मुट्ठी के खानों (1, 4, 7, 10) में आया हुआ या धर्म मन्दिर (ख़ाना नं० 2) या गुरुद्वारा (खाना नं० 11) के अन्दर बैठा हुआ टेवे वाले की सेहत जिस्मानी, असर (मौत) न देगा बशर्ते कि इन घरों में बैठा होने के वक्त शनि के साथ स्त्री ग्रहों (चन्द्र या शुक्र) का सम्बन्ध या साथ न हो जावे ।

फ़रमान नम्बर - 111

राशियाँ खास नम्बर

इल्म सामुद्रिक में ग्रहों को राशि के घरों में रोशनी जलते हुये लैम्प माना गया है । कुण्डली में राशियों के घर हमेशा के लिए निश्चित हैं जबकि ग्रह इन राशियों में घूमते हुये अपने पक्के मुकाम (या राशि) या किसी दूसरे मुकाम (या राशि) जो ग्रह का पक्का घर नहीं है, में हो सकते हैं । ग्रह का अपने पक्के घर या राशि में असर किसी दूसरे घर या राशि में होने के असर से अलग होगा । लेकिन हर ग्रह अपनी निश्चित राशि में नेक फल देगा बेशक उसकी वह राशि किसी दूसरे ग्रह का पक्का घर निश्चित हो चुकी है । ऐसी खास राशियों का नम्बर 2, 3, 5, 6, 7, 8 व 11 हैं ।

इन राशियों की तालिका नीचे है ।

राशि नम्बर	किस ग्रह की राशि है	किस ग्रह का पक्का घर निश्चित हो चुकी है	इस राशि नम्बर में किस ग्रह का नेक असर होगा।
2	शुक्र	वृहस्पति	शुक्र का नेक असर होगा।
3	बुध	मंगल	बुध का नेक असर होगा बशर्ते कि मंगल नेक होवे।
5	सूर्य	वृहस्पति–सूर्य मुशतरका	सूर्य का नेक असर होगा।
6	बुध, केतु	केतु	बुध का उत्तम। केतु का खुद केतु की चीज़ों पर मन्दा मगर दूसरों पर अच्छा। अगर दोनों मुशतरका हों तो बुध का और बुध की चीज़ों पर अच्छा मगर केतु व दूसरों का मंदा होगा।
7		शुक्र – बुध	शुक्र का नेक। बुध दूसरों को भी मदद देवे।
8	शुक्र मंगल	मंगल, शनि, चन्द्र	अगर तीनों में से हर एक अकेला–अकेला होवे तो अच्छा फल। वरना मंदा फल होगा।
11	शनि	वृहस्पति	शनि का नेक। बाकी ग्रह वैरी (शनि का वृक्ष) के गला घोंटने वाले पीर। मगर झाग के पताशें, यानि धोका और अमूमन मंदा असर।

फ़रमान नम्बर - 112

तमाम उमर पर असर (आम वर्ष फल)

किस साल से	असर ग्रह	किस साल से	असर ग्रह
1 से 6	शनि	60 से 62	शुक्र
7 से 12	राहु	63 से 68	मंगल
13 से 15	केतु	69 से 70	बुध
16 से 21	वृहस्पति	71 से 76	शनि
22 से 23	सूर्य	77 से 82	राहु
24	चन्द्र	83 से 85	केतु
25 से 27	शुक्र	86 से 91	वृहस्पति
28 से 33	मंगल	92 से 93	सूर्य
34 से 35	बुध	94	चन्द्र
36 से 41	शनि	95 से 97	शुक्र
42 से 47	राहु	98 से 103	मंगल
48 से 50	केतु	104 से 105	बुध
51 से 56	वृहस्पति	106 से 111	शनि
57 से 58	शुक्र	112 से 117	राहु
59	चन्द्र	118 से 120	केतु

ग्रहों का 35 साला चक्र

वृहस्पति	6
सूर्य	2
चन्द्र	1
शुक्र	3
मंगल	6
बुध	2
शनि	6
राहु	6
केतु	3
कुल	35

ग्रहों का 35 साला चक्कर

कोई भी ग्रह अपना चक्कर तब शुरु करता है जब वह ख़ाना नं० 1 में आ जाये या जब वह सिंहासन का मालिक हो जाये । 35 साल के बाद सब ग्रह अपना चक्कर पूरा कर लेते हैं । चक्कर में अलग–अलग ग्रहों की अवधि वृहस्पति 6, सूर्य 2 बगैरा ऊपर तालिका में दी है, जो ग्रह पहले चक्कर में बुरा असर करते हैं, वह अपने दूसरे चक्कर यानि 35 साल के बाद दूसरी चाल में बुरा असर न देंगे । ग्रहों का 35 साला चक्कर और इन्सान की उमर का 35 साला चक्कर एक प्राणी की तमाम 120 साला औसत उमर में ज्यादा से ज्यादा 3 बार आ सकते हैं ।

35 – साला चक्कर में हर ग्रह की अवधि में मध्य ग्रहों की अवधियाँ निम्नलिखित है ।

दौरा होवे	बृ. का 6 साल	सू. का 2 साल	चं. का 1 साल	शु. का 3 साल	मं. का 6 साल	बु. का 2 साल	श. का 6 साल	रा. का 6 साल	के. का 3 साल
शुरु	केतु 2 साल	सूर्य 8 माह	बृहस्पति 4 माह	मंगल 1 साल	मंगल 2 साल	चन्द्र 8 माह	राहु 2 साल	मंगल 2 साल	शनि 1 साल
दरम्यानी	बृहस्पति 2 साल	चन्द्र 8 माह	सूर्य 4 माह	शुक्र 1 साल	शनि 2 साल	मंगल 8 माह	बुध 2 साल	केतु 2 साल	राहु 1 साल
आखिरी हिस्सा	सूर्य 2 साल	मंगल 8 माह	चन्द्र 4 माह	बुध 1 साल	शुक्र 2 साल	बृहस्पति 8 माह	शनि 2 साल	राहु 2 साल	केतु 1 साल

फ़रमान नम्बर - 113

एक दिन व सप्ताह में ग्रह की अवधि

सूर्य निकलने का बाद दिन का पहला हिस्सा बृहस्पति का समय कहलाता है । दिन के पहले भाग के बाद मगर दोपहर से पहले सूर्य का समय होगा । तमाम चाँदनी रात को चन्द्र का समय कहेंगें ।

कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष की मध्य या अमावस्या की रात शुक्र का समय होगा ।

पूरी दोपहर का समय (दिन के ठीक मध्य) मंगल का समय लेंगे ।

दोपहर के बाद मगर पूरी शाम से पहले का समय बुध का समय होगा ।

काली रात या घने काले बादल का दिन शनि का समय कहेंगे ।

पूरी पक्की शाम मगर रात से पहले का समय राहु का समय लेंगें ।

सुबह मगर सूर्य निकलने से पहले का वक्त केतु का होगा ।

सारे दिन का ग्रह उस दिन के नाम के अनुसार होगा । जन्म के समय का ग्रह दिन के हिस्से के ग्रह के मुताबिक होगा । दोनों नीचे तालिका में लिखे हुए है ।

ग्रह दिन का	वार सप्ताह का	कुण्डली में ख़ाना नं०	(जन्म वक्त) दिन का हिस्सा
वृहस्पति	वीरवार	9	सूर्य निकलने के बाद दिन का पहला हिस्सा ।
सूर्य	रविवार	1	दिन के पहले हिस्सा के बाद मगर दोपहर से पहले।
चन्द्र	सोमवार	4	चाँदनी रात ।
शुक्र	शुक्रवार	7	अमावस्या की रात ।
मंगल	मंगलवार	3	पूरी दोपहर 11 से 1 बजे ।
दोनों	बुधवार	7	दोपहर के बाद ।
बुध	शनिवार	10	काली रात, घने बादल का
शनि	वीरवार की पक्की	12	दिन।
राहु	शाम।	6	पूरी शाम मगर रात से पहले।
केतु	रविवार की सुबह		सुबह मगर सूर्य निकलने से पहले।

फ़रमान नम्बर - 113 (ए)

ग्रह की अवधि सालों में

नम्बर शुमार	नाम ग्रह	गिनते दिन	आम साल	उमर के साल	महादशा साल	आम दौरा के साल	असर का वक्त	असर की रफतार मानिन्द
1	वृहस्पति	32	16	75	16	6	दरम्यान	शेर बबर
2	सूर्य	22	22	100	6	2	शुरु	रथ
3	चन्द्र	24	24	85	10	1	आखिर पर	घोड़ा
4	शुक्र	50	25	85	20	3	दरम्यान	बैल
5	मंगल-नेक	24	13	90	3	2	शुरु	चीता
			15-28		4 - 7	4 - 6	शुरु	हिरण
6	मंगल-बद	68	34	80	17	2	हमेशा एकसा	मेंढ़ा
7	बुध	72	36	90	19	6	आखिर पर	मछली
8		40	42	90	18	6	आखिर पर	हाथी
9	शनि	43	48	80	7	3	आखिर पर	सूअर
	राहु							
	केतु							
	मीज़ान	364/367			120	35		कुत्ता

एक दिन भर ग्रह का पक्के तौर पर निश्चित समय की यूनिट के लिए फ़ी यूनिट का समय चालीस मिनट लेंगे ।

1. हर ग्रह अपनी अवधि के चौथाई भाग की अवधि में भी अपना असर ज़ाहिर कर दिया करता है ।
2. राहु की 42 तो केतु की 48 मगर दोनों की मुशतरका अवधि 45 होगी ।
3. ग्रहण के वक्त (सूर्य राहु मुशतरका = सूर्य-ग्रहण; चन्द्र केतु मुशतरका = चन्द्र-ग्रहण) की उमर 3 साल होगी ।
4. शनि उमर के 10 वें, 19वें 37 वें साल के पास नेक असर देगा और 9 (धन दौलत), 18(पिता), 27 (माल मकान मवेशी) पर मंदा असर देगा । 36 से 39 साला उमर में साधारण असर देगा ।
5. जैसा कि टेवे के मुताबिक इस वक्त हो, किस्मत-उदय के लिए बुध 23, मंगल 31 साला उमर में । बाकी हर ग्रह अपनी-अपनी अवधि पर असर देंगे ।

(मैदानी इलाका में मृग से मुराद हिरण होती है और पहाड़ी इलाके में चीते को मृग बोलते हैं । मगर ग्रह-चाली हालत में हिरण (चाहे मामूली चाहे बारह सिंगा) को मंगल बद गिनते हैं और चीता को (दरिंदा-ए-इन्सानी को फाड़ डालने वाला) मंगल नेक लेंगे ।

फ़रमान नम्बर - 114

नेष्ट ग्रह का उपाय

नेष्ट हो चुके ग्रह या बहालत पितृ ऋण व औलाद बगैरा के लिये निम्नलिखित उपाय तालिका में है ।

किस ताकत में	किस्म ग्रह	नम्बर ग्रह	नाम ग्रह	रंग ग्रह	उपाय वास्ते औलाद व दीगर बजूहात	उपाय की आम चीज़ें
ब्रह्मा जी	नर ग्रह	1	बृहस्पति	ज़रद	हरि पूजन	दाल चना, सोना।
विष्णु भगवान	नर ग्रह	2	सूर्य	गन्दमी	कथा हरिवंश	गन्दम, सुर्ख ताँबा।
शिवजी	स्त्री ग्रह	3	चन्द्र	दूध का	आराध्य पूजन	चावल, दूध चाँदी।
लक्ष्मी जी	स्त्री ग्रह	4	शुक्र	दही का	लोगों की पालना	घी, दही, काफूर, मोती सफेद।
हनुमान जी	नर ग्रह	5	मंगल	सुर्ख	गायत्री पाठ	दाल मसूर, लाअल।
दुर्गा जी	मुखन्नस (नपुंसिक)	6	बुध	सब्ज	दुर्गा पाठ	मूंग सालम, ज़मुर्द
भैरों जी	नपुंसिक	7	शनि	स्याह	राजा की उपासना	माश सालम, लोहा।
सरस्वती जी	नपुंसिक	8	राहु	नीला	कन्या दान	सरसों, नीलम।
गऊ माता	नपुंसिक	9	केतु	चितकबरा (काला-सफेद)	दान कपिला गाय	तिल।

जो ग्रह नीच फल देवे, इस ग्रह के बचाव के लिये ऊपर दिया हुआ दान करें। अवधि उपाय कम अज़ कम 40 दिन और ज्यादा से ज्यादा 43 दिन होगी। दौरान उपाय में नागा हो जाने पर चाहे 39 वें दिन ही भूल जायें, सब कुछ किया करया निष्फल होगा और दोबारा नये सिरे से उपाय करना मददगार होगा। उपाय का समय सूर्य निकलने से सूर्य छिपने तक दिन का समय है। बेहतर होगा कि रात के समय कोई उपाय न किया जाये।

(नेष्ट ग्रह) बृहस्पति

शुक्र से नीच हो तो धन दौलत खराब न होगा मगर चाल चलन व शारीरिक नुक्स होगा।

(नेष्ट ग्रह) सूर्य

(1) शुक्र से नीच हो तो स्त्री का गुलाम हो। कबूतर बाजी। प्राकृतिक, रुहानी नुक्स।

(2) राहु से नीच होवे तो राजदरबार से खराबी, आमदन खराब, खर्चा बुरे कामों में । खुद अपने दिमाग़ की अपने आप पैदा की हुई ख़राबियां ।

(3) केतु से मध्यम होवे तो सफर में नुक्सान, दूसरे के सलाह मशवरे से नुक्सान, पाँव की पैदा की खराबियाँ ।

(नेष्ट ग्रह) चन्द्र

(1) मंगल – बद ख़ाना 8 से नीच हो तो माता की मौत, बीमारी, मौत, दिल की ख़राबी, बीमारी बगैरा । लोगों से दुश्मनी की खराबी । मिर्गी बगैरा बीमारी ।

(2) केतु ख़ाना 6 से नीच होवे तो माता की कूआँ लगने के बाद फौरन मौत । **औलाद** की मौत । दरियाई समुन्द्री सफर में नुक्सान । दूसरा कोई आदमी गुमराह कर देवे ।

(3) राहु से मध्यम होवे तो खुद अपना ही दिल खराबी करा दे ।

(नेष्ट ग्रह) शुक्र

कन्या राशि में नीच होवे जब वहाँ केतु न होवे । यानि औरत बाँझ होवे या लड़कियाँ ही हों ।

(नेष्ट ग्रह) चन्द्र

चन्द्र की राशि 4 व घर – तो कम रोब होवे । मामूली आदमी सख्त दुश्मन हो बैठे ।

(नेष्ट ग्रह) बुध

शनि की राशि 10 व घर – तो अकल में शरारत की वजह से दुश्मनी खड़ी होवे और आँख के इशारे में नुक्सान पैदा होवे । शराब, कबाब का चस्का बर्बाद करें ।

(नेष्ट ग्रह) शनि

मेष ख़ाना नं० 1 सूर्य का घर ऊँच व मंगल का मकान – बद दयानत, झगड़ालू, धोखेबाज, औलाद का दुःख, आमदन खराब, हर तरफ़ मुँह पर स्याही फिरती जावे । और नज़र में नुक्स पैदा होवें ।

(नेष्ट ग्रह) राहु

(1) धनु राशि ख़ाना नं० 9 – कर्म धर्म से दूर रहने वाला । बेधर्म । दिमागी ख़राबी धर्म से नीचे गिरा दे । मज़हब का नीच हो जावे, औलाद भी नालायक होवे ।

(2) मीन राशि ख़ाना नम्बर 12 – गृहस्थ का सुख, पैसे रुपये का सुख व औरत का सुख, बाकी साथियों का सुख बगैरा सब बुरे नतीजे देवें मगर अपनी उमर पर कोई खराबी न होवे ।

(नेष्ट ग्रह) केतु

(1) कन्या राशि का अपना घर – मामाँ बर्बाद, सफर हमेशा बिना–मतलब । दुश्मन बिन बुलाये पैदा होवें । मगर अपने लिए ऐसा बुरा न होवे ।

(2) मिथुन राशि 3 – मर्द औरत की आपस में जुदाई । दोस्तों से दुश्मनी बिना कारण होवे । औरत के झगड़े या किसी दूसरे सलाहकार की गलत सलाह खेती बाड़ी व दौलत का सुख खराब होवे ।

ग्रह के नेष्ट होने की निशानियाँ

1. **वृहस्पतिः** सोने का नुकसान, झूठी अफवाहें, तालीम बन्द करना बगैरा – वृहस्पति समाप्त हुआ ।
2. **सूर्य :** लाल गाय या भैंस का मर जाना या घर से चले जाना – सूर्य समाप्त हुआ ।
3. **चन्द्र :** घर से दूध चला जावे । घोड़े मौत । तालाब कूँआ खुशक हो जाये । माता समाप्त होवे ।
4. **शुक्र :** गाय, बैल, धन व दौलत की चोरी या गुम हो जाना ।
5. **मंगल :** बच्चा पैदा होकर समाप्त हो जाये । आँख कानी हो जाये । मंगल बद आया और मंगल नेक समाप्त हुआ।

6. बुध : फक़ीर की बद्दुआ हो जाये । तोता गुम हो जाये । दोस्त से झगड़ा हो जाये । जुबान तुतलाये ।

7. शनि : मकान गिर जाये । आग लगे । भैंस मर जाये तो शनि बुरा हो गया ।

8. राहु : स्याह कुत्ता घर से चला जाये या गुम हो जाये । बिल्ली रोवे । स्याह रंग रिश्तेदार की नज़र में फरक हो जाये ।

9. केतु : दो रंगा कुत्ता, कान की सुनने की ताकत, छिपकली का गिर पड़ना, अपने लिये तो अच्छा मगर भाई बन्धुओं, औलाद (लड़के) के लिए मनहूस ।

सूर्य के बगैर मंगल का असर मंगल बद का ही होता है । मंगल बद सबका ही दुश्मन है । मंगल बद का असर ज़हमत, बीमारी, झगड़ा और धर्म के खिलाफ कार्यवाही होता है । सूर्य चन्द्र को तो ऊँच करता है । मगर सूर्य को कोई ऊँच नहीं करता और न ही सूर्य और चन्द्र को कोई नीच कर सकता है । इनका फल अपने लिये उत्तम होता है । 'पापी' ग्रहों का बुरा असर ज़रुर साथ हो जाया करता है ।

फ़रमान नम्बर - 115

मुशतरका ग्रहों की अवधि

नाम ग्रह	किस ग्रह के साथ हो तो	उमर होगी जितने साल
राहु	किसी भी ग्रह के साथ	42
	सिवाय मंगल नेक के साथ	0 (सिफ़र)
केतु	सिवाय केतु के साथ	4
	किसी भी ग्रह के साथ	48
	सिवाय वृहस्पति के साथ	40
	सिवाय सूर्य के साथ	40
	सिवाय सूर्य या शनि या मंगल नेक	24
	राहु के साथ ।	45

वृहस्पति	किसी भी ग्रह के साथ होगा।	16
सूर्य	किसी भी ग्रह के साथ	22
	सिवाय राहु के साथ	0 (सिफ़र)
	सिवाय केतु के साथ।	11
चन्द्र	किसी भी ग्रह के साथ	24
	सिवाय वृहस्पति, शुक्र, बुध, राहु के साथ	12
	मगर शनि के साथ।	8
शुक्र	किसी भी ग्रह के साथ	25
	सिवाय वृहस्पति के साथ	60 (वास्ते दौलत)
	सिवाय सूर्य के साथ	34
	सिवाय मंगल-नेक के साथ	8
मंगल - नेक	किसी भी ग्रह के साथ	13
मंगल - बद	किसी भी ग्रह के साथ	15 कुल 28
बुध	किसी भी ग्रह के साथ	34
	सिवाय सूर्य या मंगल	17
शनि	किसी भी ग्रह के साथ	36
	सिवाय वृहस्पति (वालिद की उमर)	18
	सिवाय वृहस्पति (धन दौलत)	27
	सिवाय सूर्य के साथ	24
	सिवाय मंगल या शुक्र के साथ	12
	सिवाय बुध के साथ	45

फ़रमान नम्बर - 116

राशि के असर की अवधि एक साल के अन्दर

[सूर्य 360° के कोण को 365 दिन 6 घंटे में पूरा करता दिखाई देता है। हकीकत में पृथ्वी सूर्य के गिर्द इतनी ही अवधि में घूमती हुई जाती है। पर बोल-चाल में कहते है कि सूर्य राशि - पथ (Zodiac) को एक साल में पूरा करता है। इस तरह राशि-पथ का हर एक हिस्सा जिसे राशि कहते है सूर्य लगभग 9 महीने में पूरा करता दिखाई देता है। पूरा एवः महीना सूर्य एक ही राशि में चढ़ता दिखाई देता है। हर एक राशि के साथ महीने का संबन्ध है जिनके नाम बैशाख, जेठ, असाड़, सावन बगैरा है। चूँकि पृथ्वी अपनी धूरी पर 24 घंटे में घूम

जाती है, इसलिये 12 राशियों को 24 घंटे में देख लेती है। इस तरह हर एक राशि की अवधि हर दिन बदलती रहती है और एक महीने में सूर्य का संबन्ध एक राशि से दूसरी में हो जाता है। सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में जाने के दिन को सक्रान्ति या सगरौंद कहते है। यह पुण्य काल माना है। नीचे एक तालिका में यही दिखलाया है।]

जब सूर्य होवे :-

नम्बर राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अवधि सूर्य प्रति राशि प्रति दिन (1) घंटे-मिनट	1-12	1-36	2-00	2-24	2-24	2-24	2-24	2-24	2-24	2-00	1-36	1-12
(2) घड़ी	3	4	5	6	6	6	6	6	6	5	4	3
नाम महीना	वैशाख	जेठ	असाढ़	सावन	भादों	असूज	कार्तिक	मँघसर	पोह	माघ	फागुन	चैत्र

खुलासा :

राशि नम्बर 1, 12 = 3 घड़ी	4, 9
2, 11 = 4 घड़ी	8, 5
3, 1 = 5 घड़ी	7, 6

(अ) पुण्य काल = असूल वक्त सूर्य का राशि निश्चित में। दाखिल होने का। हर एक 6 घड़ी।

(आ) एक घड़ी बराबर होती है 24 मिनट के।

(इ) जोड़ कुल : एक दिन में 60 घड़ियाँ।

फरमान नम्बर - 117

पर्वत (ग्रह) और राशियाँ

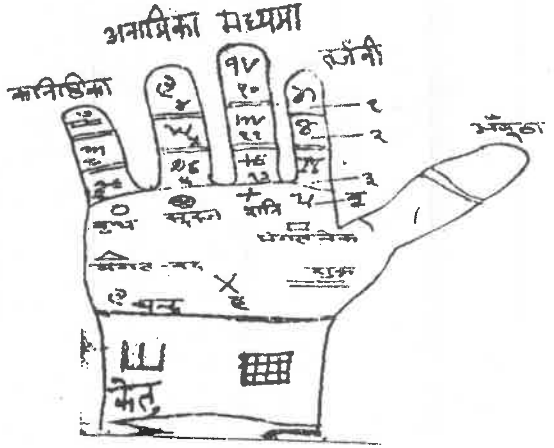

शनि का हैटक्वाटर

ग्रह	निशान ग्रह	राशि	नम्बर	निशान राशि
वृहस्पति	५ इन्द्रिय ||| खड़े ख़त	धनु	9	H
वृहस्पति	⊙ चक्कर @ शंख @ सदफ	मीन	12	[illegible]
सूर्य	* सितारा, शाखदार खत [illegible]	सिंह	5	W
चन्द्र	आधा (/∪) टेढ़ा ख़त	कर्क	4	(०)
शुक्र	♀ , लेटे ख़त —	वृष	2	8
शुक्र	———	तुला	7	[illegible]
मंगल नेक	०+ , चौकोर □	मेष	1	n
मंगल बद	^<^ ; मुसँलस्स Δ	वृश्चिक	8	m
बुध	☿ , O दायरा	मिथुन	3	II
शनि	+ त्रिशूल [illegible]	कन्या	6	[illegible]
	विसर्ग:	मकर	10	℩V
	का कोई बुर्ज नहीं है। मुशतरका	कुम्भ	11	m
मुंदरजा ज़ैल	⊞ जाल, साया सिर।	राशियाँ दो है।		[illegible]
राहु	चारपाई ⊓ , [illegible]	मीन	12	[illegible]
केतु	साया घड़का, ⊔ उलटी चारपाई	कन्या	6	

चन्द्र की लकीर / जब सिरे पर छड़ी के समान हो जाये या दो शाखी का साथ हो, तो चन्द्र नीच या मंगल–बद का निशान होगा । यानि चन्द्र ख़ाना नम्बर 8 का और मंगल ख़ाना नम्बर 4 का होगा ।

यह ज़रुरी नहीं कि हर एक ग्रह अपने सीमा की लकीरों से बने। हाथ पर रेशों से भी वही मुराद होगी। मिसाल : ☐ चारों तरफ की लकीरों से मिलकर मंगल बना। यही शक्ल अगर |||||||| बारीक-बारीक रेशों से हाथ के बाक़ी रेशों से अलग हो जाये तो भी मंगल-नेक होगा।

फ़रमान नम्बर - 118

नोट : शनि का हैड-क्वार्टर जहाँ उमर-रेखा और सेहत रेखा आपस में कट जावें उमर का आखीर या मौत का मुकाम होगा।

कुण्डली में 12 ख़ानों की तफ़सील

ख़ाना नम्बर (1) सूर्य का घर गिना गया है।

शरीर- आखीर उमर तक तमाम अंग क़ायम। रुहानी ताकत दिल की सच्चाई, धर्म, ईमानदारी दुनियावी (पैसा धेला में) खुद अपनी कमाई से दौलत जमा व जायदाद पैदा करे। रूपये का 1/4 परोपकारी हो। मन्दिर कुएँ, धर्म अर्थ काम पुरानी रसूमात को चलाने वाला हो। इल्म व अक्ल का साथ रहे। मगर स्वभाव में गुस्सा। औलाद नेक होवे। औरत का सुख होवे। पिता की उमर का लम्बा साथ होवे। चौपाया का सुख रहे। खुद अपनी उमर लम्बी (100 साल पूरा उत्तम सूर्य)। राज दरबार से संबन्ध ज्यादा समय और नेक रहे। अगर सूर्य रेखा व किस्मत रेखा न हों या आपस में न मिलें तो सब कुछ नाश होवे। खुदकुशी तक नौबत आये।

अवधि का असर :- सूर्य के उत्तम असर के समय चन्द्र, शुक्र व बुध का कभी बुरा असर न होगा। चन्द्र व शुक्र अपनी तमाम

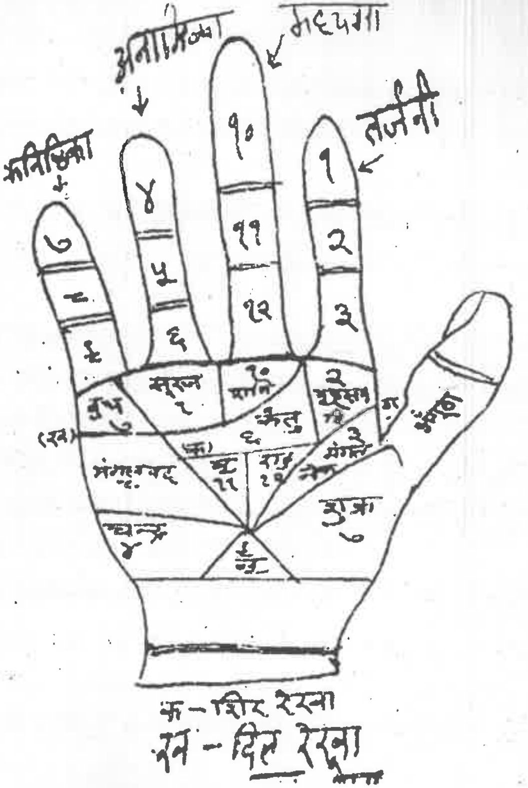

हाथ पर जन्म कुण्डली के खाने

अवधि, मगर बुध सूर्य के साथ चलने के वक्त का चौथाई भाग (17=34/2) साल तक बिल्कुल चुप रहेगा । बाद में अपना असर शुरु करेगा। बाक़ी ग्रह पूरा-पूरा समय शनि अपनी अवधि का $^2/_3$ या 24 साल दौलत व आमदन पर और ½ या 18 साल पिता की आमदन पर असर करेगा । यानि अगर 22 से शुरू हो तो खुद उस पर 22+27=49 साल और 22-1=40 साल पिता की उमर तक आमदन पर अपना अच्छा या बुरा, जो भी हो, असर करेगा ।

सितारा सूर्य व सूर्य रेखा का सविस्तार हाल व असर अलग जगह पर लिखा है । ऐसे व्यक्ति का बुढ़ापा **निहायत** उमदा होगा । मगर मौत अचानक होगी ।

हाथ पर जन्म - कुण्डली के ख़ाने

सूर्य का पर्वत कुण्डली का ख़ाना नम्बर 1 है मगर सूर्य ख़ाना नं० 1 में तब ही होगा जबकि सूर्य के पर्वत पर बुध की तरफ सूर्य का सितारा क़ायम हो । वरना सूर्य ख़ाना नम्बर 5 का होगा । सूर्य-रेखा या सेहत-रेखा ख़ाना नम्बर 11 के आखिर तक ।

ख़ाना नम्बर (2) पर्वत बृहस्पति का है । उमर 75 साल । इज्जत व दौलत अज़ सुसराल व दूसरे दुनिया के साथी बज़रिया ऊर्ध रेखा ।

श्रेष्ठ रेखा, गृहस्थ रेखा या धन रेखा बगैरा-किस्मत का असली मक़सद यानि न आँख लगे न हाथ, दौलत खुद व खुद हवा की तरह आवे और आराम होवे । यह ग्रह अपने समय का चौथाई हिस्सा या 8 साल हमेशा अच्छा फल ज़रुर देगा । इसके असर के समय चन्द्र (12 साल), अपना चौथाई केतु (8 साल), मंगल-बद (8 साल) इसके समय की चौथाई-चौथाई अवधि असर देंगे । बाकी ग्रह अपनी पूरी-पूरी अवधि । शुक्र दुश्मन है लेकिन जब अकेला इस पर्वत पर हो तो सारी उमर आराम । 60 साल दौलत की आमदन होवे । शनि के असर में सेहत हल्की रहे ।

ख़ाना नम्बर (3) का असर । पर्वत मंगल का है । उमर 90 साल ।

(1) नेक-मंगल :- दोस्त, भाई-बन्धु, ससुराल व ससुराल खानदान, औलाद का सुख मददगार मुतअल्लका दुनिया । हौसला । नज़र बीनाई । आदिलाना तबीयत ।

(2) मंगल-बद :- दुश्मन-दूसरे भाई, ताये, चाचे मामाँ, मामाँ खानदान । जंगो जदल शरारत-खूनी हौसला ।

नोटः- सूर्य के बगैर मंगल को मंगल-बद ही गिनते हैं जो बीमारी, मौत का असर देगा । सिर-रेखा के सही होने पर मंगल-बद का असर न होगा ।

अवधि में असर :- इसके असर के वक्त शुक्र (8 साल), शनि (12 साल), मंगल-बद (5 साल) तीनों ½ अवधि अपने वक्त का; केतु (24 साल) और बुध (17 साल) ½ अवधि अपना और राहु बिल्कुल चुप होगा । असर नदारद । बाकी की पूरी-पूरी अवधि असर होगा । मंगल अगर मृग हिरण हो तो बुज़दिल और अगर चीता हो तो शेर से भी ज्यादा खून पीने वाला होगा ।

कुण्डली में ख़ाना नम्बर (4) । पर्वत चन्द्र का है । उमर 85/96 साल होगी । माता, जायदाद जद्दी, खेती की ज़मीन, गैबी मदद । बाग, बगीचे, बालाई आमदन । कुआँ, पानी, समुन्दर, दूध, दिली शांति, सफर, मकान रिहायशी, तह-ज़मीन, रुहानी ताकत और खुदाई पहुँच। खुशी-गमी की रेखा ।

शुक्र और बुध इसकी चौथाई अवधि और ताकत भी चौथाई ज़ाया कर देते है । मगर खुद अपनी ताकत पूरी रखते है । बाकी ग्रह पूरा-पूरा असर करते है । चन्द्र का, सूर्य के साथ मिलने पर, सूर्य का फल हो जाता है । दोनों का ही फल उत्तम होगा । सूर्य के समय चन्द्र अपनी अलग रोशनी ज़ाहिर नहीं करता और सूर्य से ही रौशनी लेगा ।

कुण्डली में ख़ाना नम्बर (5) ''वृहस्पति औलाद'' बहुत बड़ा वृहस्पति शुक्र होगा । इल्म व औलाद का सुख होगा, जो खूबसूरत व नेक होगी । मामों का सुख, जंगल पहाड़ का संबन्ध, आग का खौफ़ । जौ का निशान चूँकि अँगूठे पर सूर्य का घर है, इस लिये शुक्र और बुध का कभी बुरा असर न होगा, क्योंकि सूर्य के सामने शुक्र व बुध दोनों चुप होंगे ।

कुण्डली में ख़ाना नम्बर (6) केतु का है । उमर 80 साल । दुश्मन-मामाँ-खानदान को सुख । देश-प्रदेश की जिन्दगी । अपनों से मुहब्बत । नर औलाद । दौलत की आमद पर आमद । अपने लिये अच्छा होगा । मगर दूसरों पर अपना बुरा असर देगा । जब उत्तम हो और वृहस्पति का साथ हो । यह बुध की राशि और केतु का निवास है ।

कुण्डली में ख़ाना नम्बर (7) पर्वत शुक्र का है । उमर 85/96 साल । औरत का संबन्ध, गिनती और सुख । अज़ीज़ों से मुहब्बत और सारी उमर आराम । (जब अकेला वृहस्पति पर हो, 60 साल दौलत आवे) । खेती से संबन्धित सामान, गाय बैल का सुख और उत्तम फल । सवारी का सुख । चौपाया का लाभ । राग से मुहब्बत । शायर। हर दो मुहब्बत-हक़ीकी और गैर-हकीकी । इसके असर को सूर्य, चन्द्र, राहु, शुक्र के मुताबिक देते है । जैसा शुक्र वैसा ही इनका फल । चक्की के गड़े पत्थर (यानि वास्ते रिज़क व फालतू धन) अटल फैसला होता है, ग्रह-फल का ।

ख़ाना नम्बर (7) में बुध फूल और शुक्र फल या बीज है । बुध शुक्र के बगैर खराब बुद्धि वाला होगा ।

कुण्डली में ख़ाना नम्बर (8) पर्वत मंगल बद का है । उमर 90 साल । ख़ाना नम्बर 8 को मौत का हैड-क्वार्टर भी कहते है । यह अदल यानि 'अदले का बदला' का भी घर है। यहाँ बैठे ग्रह इसी असूल पर अमल करते है ।

अगर ख़ाना नम्बर 8 में सूर्य, वृहस्पति या चन्द्र में से कोई भी अकेला-अकेला या दोनों ही मिलजुल कर बैठ जावें तो ख़ाना नम्बर 8 का असर अपने तक ही सीमित माना जायेगा ।

शनि, मंगल या चन्द्र अकेले-अकेले इस घर में हमेशा अच्छा असर देते है, मगर जब कोई दो या तीनों इकट्ठे हों तो शनि मौतों का भण्डारी, चन्द्र दौलत व सेहत को बर्बाद करने वाला और मंगल में नम्बर 2, 6 का मंदा असर शामिल होगा । यानि मंगल बद-मंगल और हर तरह की लानत का देवता होगा । बुध नम्बर 8 में हमेशा ही मन्दा है । मंगल नं० 8 में अमूमन बुरा मगर मंगल, बुध दोनों मुशतरका नम्बर 8 में उत्तम होंगे । जब तक नम्बर 2 में शनि न हो ।

ख़ाना नम्बर (11) का ग्रह वर्षफल के अनुसार ख़ाना नम्बर 8 में आ जाये तो ख़ाना नं० 11 में बैठे हुये ग्रह की संबन्धित नई चीज़ घर में लाने पर सेहत व दौलत दोनों बर्बाद होंगे । नम्बर 8 की मन्दी हालत की जड़ ख़ाना नम्बर (4) मारफत ख़ाना नम्बर (2) होगा ।

कुण्डली में ख़ाना नम्बर (9) पर्वत वृहस्पति का है । उमर 75 साल । नौवाँ घर नौ ग्रहों की जड़ या बुनियाद है । जैसे धरती की धूरी है वैसे ही ख़ाना नम्बर (9) कुण्डली का केन्द्र है । किस्मत का असल ख़ाना नम्बर 9 का ग्रह होगा । ख़ाना नम्बर 9 जब ख़ाना नं० 3, 5 खाली हों तो ख़ाना नम्बर 2 की मारफत जाग पड़ेगा ।

जन्म कुण्डली का सोया हुआ ग्रह जब कभी वर्षफल के अनुसार खाना नं० (9) में आने पर जाग पड़े तो वह ग्रह अपनी उमर के ज़माने तक नेक असर देगा । उदाहरण-सूर्य नं० 9 में हो तो 22 साला उमर से 22 साल तक यानि 44 साला उमर तक नेक असर देगा । मंगल-बद, शुक्र या बुध इस घर में मन्दा असर देते है । शनि, केतु या नर-ग्रह उमदा है । नं० 9 के ग्रह की संबन्धित वस्तु को तिलक की जगह लगाने से ख़ाना नम्बर 9 का असर पैदा होगा ।

जब ख़ाना नम्बर (10) में परस्पर लड़ने वाले कोई भी ग्रह बैठे हों तो वह टेवा ''अंधे ग्रहों'' का टेवा होगा । यानि वह ग्रह हूबहू ऐसे ही ढंग पर असर देंगे जिस तरह कि दुनिया में एक अंधा प्राणी चलता फिरता है । ऐसी हालत में फैसला चन्द्र की हालत पर होगा । यानि अगर चन्द्र अच्छा तो असर अच्छा वरना मन्दा फल देंगे । अगर ख़ाना नम्बर (10) खाली हो तो ख़ाना नम्बर (4) ग्रहों का कोई नेक फल न हो सकेगा । राहु, केतु व बुध तीनों ही इस ख़ाना में हमेशा ''शक्की ग्रह'' होंगे, जो शनि की हालत पर चला करते है । यानि अगर शनि अच्छा हो तो दुगना अच्छा और अगर शनि मंदा हो तो दुगना मंदा असर देंगे ।

कुण्डली में ख़ाना नम्बर (11) घर या पर्वत शनि का है पर यह दरबार वृहस्पति का है। जैसे घड़े में भरे पानी का वर्तावा वृहस्पति कर रहा हो। इस ख़ाना को गुरु स्थान भी कहते हैं। यह इन्साफ करने कराने की जगह या मुकाम है पर खुद इन्साफ नहीं है।

इन्सान का ज़ाती हाल (आमदन-कमाई-जन्म वक्त) या इन्सान का कुल दुनिया से संबन्ध और सबकी मिलीजुली किस्मत का मैदान या माथा हर व्यक्ति अपने साथ लिये फिरता है। इस ख़ाना में केतु होने पर चन्द्र बर्बाद और चन्द्र होने पर केतु बर्बाद। इसी तरह ही इस ख़ाना में वृहस्पति होने पर राहु बर्बाद और राहु होने पर वृहस्पति बर्बाद होगा। अगर ख़ाना नम्बर (3) में बृहस्पति के दोस्त (सूर्य, चन्द्र, मंगल) हों तो ख़ाना नम्बर (11) के ग्रह हमेशा नेक असर देंगे। इसी तरह ख़ाना नं० (3) में केतु के दोस्त (शुक्र, राहु) हों तो ख़ाना नम्बर (11) हमेशा नेक असर देगा।

ख़ाना नम्बर (11) के ग्रह सिवाय पापी ग्रहों के बे-एतबारी हालत के होंगे। अगर ख़ाना नं० (3) खाली हो तो अमूमन नेक फल तखत में आने के दिन से शुरू करेंगें और ख़ाना नं० (8) में आने पर मंदा असर देंगे ख़ाना नम्बर (11) के ग्रह ख़ाना नम्बर (8) में 7, 20, 34, 45, 53, 67, 79, 92, 97, 113 साला उमर में आयेंगे।

ख़ाना नं० (11) के ग्रह ख़ाना नं० (1) तख़त पर 11, 23, 36, 48, 57, 72, 84 94, 105 साला उमर में आयेंगे।

कुण्डली में ख़ाना नम्बर 12 या पर्वत वृहस्पति का है। इसे आराम अवस्था की जगह, ख़्वाब अवस्था और इन्सान के सिर से संबन्धित मानते है। इससे देखते हैं सुख गृहस्थी, ख़र्चा ज़ाती, दिमाग़ की हरकत, व्यापार, पराई दौलत की हिफाज़त व सुख-दु:ख।

असर : यह वृहस्पति का घर है जिसमें राहु का निवास है। इस घर में मंगल होने पर राहु चुप-चाप रहेगा। खर्चा कबीलदारी के कामों में होगा। मगर बहुत ज्यादा होगा। व्यापार, सट्टा के लिए भी बुध के असर से यह नीच होगा। यानि बुध की हाज़री में व्यापार उत्तम न होगा। यानि धन खर्च होगा। पर व्यापार उत्तम न होगा क्योंकि राहु, बुध दोस्त हैं।

साँझी टिप्पणी

हर एक ग्रह अपने वक्त के निसफ व एक-चौथाई में भी अपना असर पूरा-पूरा करता है।

फरमान नम्बर -119 'ए'

वृहस्पति

(1) किस्मत रेखा की जड़ पर चहार शाखा ख़त हो । सूर्य के बुर्ज पर बतरफ बुध एक चक्कर हो । वृहस्पति का अपना खास निशान या दोनों हाथों को इकट्ठा गिनकर अँगुलियों पर गिनती में सिर्फ एक शंख या एक चक्कर या एक सीधा खत वृहस्पति के अपने पर्वत पर पाया जावे तो वृहस्पति को मिलेगा कुण्डली का ख़ाना नं० (1)

(2) 2 सदफ या वृहस्पति के पर्वत पर 2 सीधे ख़त–तो वृहस्पति को मिलेगा कुण्डली का खाना नं० (2) ।

(3) 3 सदफ, 7 चक्कर या 7 सीधे खत या गृहस्थ रेखा वृहस्पति के पर्वत पर तो वृहस्पति को मिलेगा कुण्डली का ख़ाना नम्बर (3) ।

(4) 4 सिप्पी या 4 शंख या 4 ख़त या 2 चक्कर, शंख होवे सिर्फ एक, चन्द्र रेखा वृहस्पति के पर्वत पर समाप्त होवे तो वृहस्पति को मिलेगा कुण्डली का ख़ाना नं० 4 ।

(5) 5 सिप्पी, 5 चक्कर या 5 ख़त तमाम अँगुलियों पर हों या सेहत रेखा नीचे जाकर किस्मत के शुरु हिस्सा में मिल जावे यानि कलाई से किस्मत रेखा निकल कर सेहत रेखा से मिल जावे तो वृहस्पति को मिले ख़ाना नं० (5) ।

(6) 6 चक्कर या किस्मत रेखा की जड़ में केतु का निशान हो या वृहस्पति से शाख़ ख़ाना नं० (6) हाथ की आयात (Rectangle) में खत्म होवे तो कुण्डली में वृहस्पति को मिलेगा ख़ाना नं० (6) ।

(7) 3 चक्कर, 3 शंख या 3 सिप्पी, 3 ख़त; 6 ख़त, 4 चक्कर, 5 शंख या शुक्र का वृहस्पति होवे यानि या तो वृहस्पति का पर्वत बहुत बड़ा होवे या नरम हाथ का वृहस्पति होवे, औलाद रेखा शादी रेखा को काटे । किस्मत रेखा की जड़ पर बुध का दायरा (०) हो । शुक्र के पर्वत पर भाइयों की रेखा लम्बी–लम्बी और टेढ़ी होवे । सिर रेखा उमर रेखा से अलग होकर वृहस्पति के पर्वत का रुख करे तो वृहस्पति को कुण्डली में मिले ख़ाना नम्बर (7) ।

(8) 2 शंख, 8 सीधे ख़त, गृहस्थ रेखा मानिन्द अलिफ (1) हो। 8 चक्कर या 11 चक्कर जब 6 अँगुलियाँ हों। किस्मत रेखा सुर्य रेखा से न मिले, वृहस्पति का पर्वत बिल्कुल न होवे। हाथ पर त्रिकोण Δ हो। किस्मत रेखा या दिल रेखा दो शाखी ‹ हो या किस्मत रेखा की जड़ पर त्रिकोण का (Δ) निशान हो तो वृहस्पति को कुण्डली में मिले ख़ाना नं० (8)।

(9) किस्मत रेखा सीधी डंडे की तरह शुरु होकर खड़ी होवे तो वृहस्पति का कुण्डली में ख़ाना नम्बर (9) होगा।

(10) सूर्य के पर्वत पर बतरफ बुध एक सिप्पी हो। 10 चक्कर हों या उमर रेखा चन्द्र पर खत्म हो यानि पितृ रेखा बनी हो, ऊर्ध रेखा पाई जाये तो वृहस्पति का कुण्डली में ख़ाना नं० (10)।

(11) वृहस्पति और शनि के पर्वत 2 शाखी रेखा से मिले हों। 9 चक्कर या सिर की श्रेष्ठ रेखा होवे तो कुण्डली में वृहस्पति जाये ख़ाना नम्बर (11) में।

(12) 3 ख़त 6 शंख 12 चक्कर (जब अँगुलियाँ 6 हों)। किस्मत रेखा की जड़ पर राहु का निशान हो या मच्छ रेखा शुक्र के पर्वत पर या शुक्र व चन्द्र दोनों पर्वतों में दरम्यान मुँह ऊपर को किये हुए और ऊर्ध रेखा या उमर रेखा इसके मुँह में हो तो वृहस्पति का होगा ख़ाना नं० (12)।

नोटः अँगुली की पोरियों से लिया हुआ वृहस्पति सिर्फ राशि नम्बर का होगा। पर्वत नम्बर का न होगा। हाथ की हथेली से लिया हुआ वृहस्पति पर्वत के ख़ाना नम्बर का होगा बशर्ते कि वृहस्पति के निशान चक्कर, शंख, सदफ (सिप्पी) से न लिया हुआ होवे। क्योंकि ऐसे निशानों से लिया हुआ वृहस्पति भी राशि नम्बर का होता है। सिर्फ वृहस्पति की रेखा या वृहस्पति का खास निशान ᒉ इन्द्रिया से लिया हुआ वृहस्पति पर्वत नम्बर का होगा।

फ़रमान नम्बर - 119 'बी' सूर्य का ग्रह	कुण्डली का ख़ाना नं0
(1) शुक्र बुध दोनों सूर्य की सेहत रेखा से मिल जायें और सूर्य रेखा बज़ाते-खुद कुण्डली का ख़ाना नं० दरुस्त हालत में बुर्ज नं० 1 में पाई जावे । सूर्य का सितारा सूर्य के अपने पर्वत पर ठीक बुध हो । सूर्य का पर्वत कुण्डली का ख़ाना नं० (1) में तब ही होगा जबकि सूर्य पर बुध की तरफ सूर्य का सितारा क़ायम हो वरना सूर्य ख़ाना नं० (5) का होगा। (.सूर्य रेखा या सेहत रेखा ख़ाना नं० 11) के आखिर तक ।	1 वा 5
(2) किस्मत रेखा या सूर्य रेखा जब वृहस्पति का रुख करे । मगर शनि के पर्वत पर न हो ।	2
(3) सूर्य रेखा से शाख मंगल-नेक को	3
(4) सूर्य के पर्वत से शाख चन्द्र के पर्वत को मगर मंगल-बद का संबन्ध न हो । चन्द्र और सूर्य के पर्वतों के बीच की रेखा दोनों पर्वतों को मिलाती मालूम होवे मगर वास्तव में मिलावे न । शराफत रेखा जब मध्य से ऊपर को उठी हो और सूर्य रेखा दिल रेखा पर खत्म होवे ।	4
(5) सूर्य रेखा बिल्कुल सीधी सूर्य के पर्वत पर ही हो और सूर्य के अपने घर में ही मालूम होवे और सूर्य का पर्वत कायम होवे । सेहत रेखा बुध से चलकर हथेली में ख़ाना नं० (11) तक खत्म होवे ।	5
(6) सूर्य रेखा हाथ की बड़ी आयताकार (Rectangle) में खत्म होवे ।	6
(7) शुक्र के पर्वत से शाख सूर्य के पर्वत को । शुक्र का पतंग हथेली पर कायम हो (ख़ाना नं० 7 में जो बुध का भी घर है । बुध अलग असर नहीं करता।)	7
(8) सूर्य के पर्वत से शाख मंगल बद को । किस्मत रेखा न होवे । सूर्य रेखा न होवे या किस्मत रेखा और सूर्य रेखा दोनों परस्पर न मिलें ।	8

(9) क़िस्मत रेखा की जड़ पर चार शाख ख़त होवें। 9

(10) सूर्य रेखा शनि के पर्वत पर हो । 10

(11) सूर्य रेखा हथेली पर ख़ाना नं० (11)-बचत-में खत्म होवे। 11

(12) सूर्य रेखा हथेली पर ख़ाना नं० (12)-ख़र्च-में खत्म होवे। 12

चन्द्र का ग्रह

फ़रमान नम्बर - 119 'सी'

(1) चन्द्र से सूर्य को रेखा 1

(2) मुहब्बत रेखा, किस्मत रेखा, चन्द्र से शुरु होकर वृहस्पति पर खत्म होवे। 2

(3) मंगल नेक से शाख चन्द्र को हो या चन्द- रेखा मंगल नेक के पर्वत पर खत्म होवे। 3

(4) धन-रेखा जब चन्द्र से शुरु हो या सिर-रेखा के नीचे त्रिकोण Δ हो। 4

(5) दिल रेखा सूर्य के पर्वत की जड़ तक ही खत्म होवे। चन्द्र के पर्वत से शाख सेहत रेखा में जा मिलें। 5

(6) चन्द्र-रेखा जब सिर-रेखा को पार करके हाथ की बड़ी आयताकार (Rectangle) में खत्म होवे। 6

(7) दिल रेखा जब कनिष्ठिका की जड़ या बुध के पर्वत पर ही खत्म हो जावे। चन्द्र- रेखा सिर-रेखा से मिलकर खत्म हो जावे। तो उमर खत्म मालूम होगी। ऐसी हालत में फ़क़ीरी-रेखा, नशा-बाज़ी की रेखा-शराफत रेखा-सिर और दिल-रेखा मिल जावें। सेहत-रेखा, दिल-रेखा को काटे। 7

(8) सिर-रेखा के ऊपर त्रिकोण Δ हो। मंगल-बद से चन्द्र को रेखा पितृ-रेखा या किस्मत-रेखा चन्द्र के पर्वत पर Δ त्रिकोण सी बना दें। उमर-रेखा या किस्मत-रेखा दो शाख़ी < ∧ हो जावें, कलाई की तरफ़ ख़ाना नं० (9) के क़रीब परस्पर मिलकर। 8

(9) किस्मत-रेखा चन्द्र के पर्वत से कलाई पर शुरू हो । 9

(10) दिल-रेखा, मध्यमा की जड़; शनि के पर्वत तक हो । उमर-रेखा, दिल-रेखा से मिल जावे । सिर, उमर, दिल रेखा तीनों मिल जावें । 10

(11) चन्द्र या दिल-रेखा वृहस्पति को जा निकले मगर वृहस्पति तक न हो या हथेली पर ख़ाना नम्बर (11)-बचत-में ही खत्म हो जावे । 11

(12) चन्द्र-रेखा हथेली पर ख़ाना नम्बर (12)-खर्च-में खत्म हो जावे । 12

फ़रमान नम्बर - 119 'डी'

शुक्र का ग्रह

(1) शुक्र के पर्वत पर अँगूठे की जड़ में सूर्य का सितारा हो । शुक्र से शाख सूर्य के पर्वत को हो । शुक्र का पतंग पूरा हो । 1

(2) अकेली शुक्र-रेखा वृहस्पति के पर्वत पर वाक्या हो । मुहब्बत-रेखा, औलाद-रेखा, शादी रेखा को काटे । भाइयों की रेखा लम्बी-लम्बी टेढ़ी वृहस्पति को हो । 2

(3) गृहस्थ रेखा मंगल-नेक से शुक्र के पर्वत में अँगूठे की जड़ (तक) में झुक जाये । धन-रेखा शुक्र के पर्वत से शुरू होकर मंगल नेक पर खत्म हो । 3

(4) फ़कीरी-रेखा, नशा-रेखा, शराफत-रेखा, सीधी लकीर लेटी हुई चन्द्र शुक्र को मिलावे । 4

(5) सेहत-रेखा या सूर्य की तरक्की-रेखा शुक्र से चलकर बुध पर खत्म होवे । 5

(6) सेहत-रेखा या सूर्य की तरक्की-रेखा जब शुक्र से चलकर हथेली की मुसततील (Rectangle)

ख़ाना नं० (6) में खत्म होवे। शुक्र पर राहु का निशान होवे। 6

(7) सेहत रेखा बुध से चलकर शुक्र के पर्वत की जड़ में खत्म होवे या शुक्र के पर्वत पर बुध का दायरा O हो। 7

(8) शुक्र से मंगल-बद को शाख 8

(9) धनु राशि से कोई ख़त आकर शादी रेखा को काट देवे 9

(10) शुक्र का पतंग या शुक्र रेखा शनि के पर्वत पर मध्यमा की जड़ में वाक्या हो। 10

(11) शुक्र से शाख हथेली पर ख़ाना नं० (11)-बचत-में खत्म होवे । 11

(12) शुक्र से शाख़ हथेली पर ख़ाना नं (12)-खर्च-खत्म होवे। या हाथ में मच्छ-रेखा हो। 12

फ़रमान नम्बर - 119 "(ई)"

मंगल-नेक का ग्रह

(1) सूर्य के पर्वत पर चौकोर □ हो। मंगल नेक से शाख सूर्य के पर्वत में चली जावे। 1

(2) गृहस्थ रेखा वृहस्पति के पर्वत में जा निकले। 2

(3) मंगल नेक पर चौकोर या गृहस्थ रेखा मंगल-नेक के अन्दर-अन्दर खत्म 3

(4) श्रेष्ठ धन रेखा या पितृ-रेखा चन्द्र से शुरू होकर मंगल नेक पर खत्म होवें। 4

(5) मंगल-नेक से शाख जब सेहत रेखा को काटे 5

(6) मंगल-नेक से शाख जब आयताकार (Rectangle) हथेली के ख़ाना नम्बर (6) में खत्म हो। 6

(7) 7 मंगल-नेक से गृहस्थ रेखा जब शुक्र में खत्म हो । मंगल-नेक से जब शाख बुध में जा निकले । 7

(8) मंगल-नेक से शाख मंगल-बद को । 8

(9) किस्मत-रेखा की जड़ में चौकोर □ हो । 9

(10) गृहस्थ-रेखा शनि पर खत्म होवे । 10

(11) मंगल-नेक से शाख ख़ाना नम्बर (11)-बचत-में होवे । 11

(12) मंगल-नेक से शाख ख़ाना नम्बर (12)-खर्च-में होवे । 12

फ़रमान नम्बर - 119 ''एफ''

मंगल-बद का ग्रह

(1) मंगल-बद से शाख सूर्य के पर्वत को । 1

(2) मंगल-बद से शाख वृहस्पति के पर्वत को । 2

(3) मंगल-बद से शाख मंगल-नेक को । 3

(4) मंगल-बद से शाख चन्द्र को । 4

(5) मंगल-बद से शाख सेहत-रेखा को काटे या कलाई-रेखा हथेली के अन्दर घुस जावे । 5

(6) मंगल-बद से शाख ख़ाना नम्बर (6) आयताकार (Rectangle) में हो । 6

(7) मंगल-बद से शाख शुक्र में या शुक्र से शाख मंगल-बद में या सिर-रेखा मंगल-बद में या सिर-रेखा आख़िर में दो शाखी < । 7

(8) सिर-रेखा के ऊपर त्रिकोण Δ हो । 8

(9) किस्मत-रेखा की जड़ में त्रिकोण हो या दो-शाखी < ∧ होवे । 9

(10) उमर-रेखा दो शाखी < ∧ मंगल-बद से शनि के पर्वत को रेखा चले । 10

(11) मंगल-बद से शाख ख़ाना नम्बर (11)-बचत-में होवे । 11

(12) मंगल-बद से शाख ख़ाना नम्बर (12)-खर्च-में होवे । काग-रेखा मंगल-बद की पूरी निशानी होगी । 12

फ़रमान नम्बर - 119 ''जी''

बुध का ग्रह

(1) सूर्य के पर्वत से बुध के पर्वत को रेखा । 1

(2) सिर-रेखा जब उमर-रेखा से अलग होकर वृहस्पति के पर्वत का रुख करे । 2

(3) सिर-रेखा मंगल-नेक में खत्म होवे । 3

(4) दिल-रेखा और सिर-रेखा मिल जायें । सेहत-रेखा दिल-रेखा को काटे सिर-रेखा झुक कर चन्द्र के पर्वत में खत्म होवे । 4

(5) सेहत या तरक्की-रेखा कायम हो जरुरी नहीं कि शुक्र के पर्वत की जड़ तक होवे । सही हालत यह होगी कि हथेली में ख़ाना नं० (11) की जड़ तक ही हो । 5

(6) बुध से शुक्र तक सेहत-रेखा कायम हो । सिर की श्रेष्ठ-रेखा मौजूद होवे । 6

(7) सिर-रेखा की लम्बाई सेहत-रेखा की हद तक होवे । शादी-रेखा बुध पर गिनती में 2= हों । 7

(8) सिर-रेखा मंगल-बद पर खत्म हो या आखिर पर दो-शाखी होवे । 8

(9) धनु राशि से शाख बुध पर या किस्मत-रेखा की जड़ में बुध का निशान दायरा O हो । 9

(10) बुध का दायरा शनि के पर्वत पर होवे । 10

(11) बुध से शाख ख़ाना नं० (11)-बचत-में होवे । 11

(12) बुध से शाख ख़ाना नं० (12)-खर्च-में होवे । 12

फरमान नम्बर - 119 ''एच''

शनि का ग्रह

(1) सूर्य का सितार शनि के पर्वत पर या सूर्य के पर्वत पर बतरफ़ शनि हो । या शनि से शाख सूर्य के पर्वत को चली जावे । 1

(2) शनि-रेखा वृहस्पति के पर्वत से शुरू होवे । 2

(3) शनि से शाख उमर-रेखा को काटकर मंगल-नेक में, गृहस्थ-रेखा शनि के पर्वत पर । 3

(4) शनि-रेखा और दिल-रेखा मिल जावें । 4

(5) शनि से शाख सेहत-रेखा को काटे । 5

(6) शनि से शाख आयताकार (Rectangle) में जावे । 6

(7) शनि-रेखा और सिर-रेखा मिली हों या शनि से शाख सिर-रेखा पर या शुक्र के पर्वत में होवे। 7

(8) मंगल-बद से शाख शनि में । शनि का हैड-क्वार्टर ख़ाना नं० ८ होता है । 8

(9) किस्मत-रेखा की जड़ पर त्रिशूल Ψ हो । ऊर्ध रेखा होवे ।	9
(10) शनि के पर्वत पर अपनी रेखा । अच्छा ।	10
(11) वृहस्पति शनि पर्वतों के बीच की जगह ख़ाना नं० (11) होगा । बुरा ।	11
(12) मच्छ-रेखा जब उमर रेखा या ऊर्ध-रेखा मछली के मुँह में होवे ।	12

फ़रमान नम्बर - 119 ''आई''

राहु केतु

इन ग्रहों की कोई रेखा निश्चित नहीं है । सिर्फ निशान निश्चित है । जहाँ निशान मिले वही घर कुण्डली का होगा । अगर निशान भी न हों तो दोनों ग्रह अपने-अपने घर के होंगे । यानि राहु ख़ाना नं० (12) में होगा और केतु ख़ाना नम्बर 6 में होगा ।

मिली जुली टिप्पणी

जब कोई रेखा एक पर्वत से दूसरे में चली जावे तो जिस पर्वत से चली थी, इस तरफ के पर्वत का घर कुण्डली में वह होगा, जहाँ जाकर वह रेखा खत्म हुई । यानि अगर चन्द्र से शनि को रेखा होवे तो कुण्डली में शनि को ख़ाना नम्बर 4 मिलेगा और चन्द्र को ख़ाना नम्बर (10) मिलेगा ।

बाक़ी जिस ग्रह का निशान, जिस पर्वत पर पाया जावे वह ग्रह इसी नम्बर पर कुण्डली में होगा । यानि अगर चोकोर ☐ शनि के पर्वत पर हो तो मंगल ख़ाना नम्बर (10) में होगा । बगैरा-बगैरा ।

फ़रमान नम्बर - 120
पर्वतों का बयान

वृहस्पति

(1) असर के लिये यह पर्वत और ग्रह हवा के नाम से याद किया गया है । जिसका रंग बसंती है । इंसान हवा का पुतला है और इसी हवा से इसका आखीर गिना जाता है । जब यह हवा आना-जाना बन्द कर लेती है तो इन्सान ज़माना की हवा से अलग गिना जाता है । यही हवा ग्रहों में 'गुरु' और फ़ी ज़माना एक गैस गिनी गई है जो बेशक ज़हरीली ही क्यों न हो, फायदामन्द है । यानि वृहस्पति में बेशक शुक्र का बीज होने से इसका असर ज़हरीला हो जाये, फिर भी इसमें शुक्र, जिसे औरत माना है, छिपी हुई है । जो सबके बीज की परवरिश करती है । इसी असूल पर बीज मिट्टी से बाहर हवा को ढूँढने आता है और सब चीज़ें पैदा होती है । जिसे वृहस्पति का साम्राज्य कह सकते है ।

अगर वृहस्पति के जरद रंग जमाने के शेर ने इनसानी गुरु के चरणों में
सोने (नींद) से दुनिया को सोना (धात) बख्शा
केसर ने खुशी से दुनिया की मौत सिखलाई
(केसर) की खुराक से खुशी की हद में मदहोशी होती है।

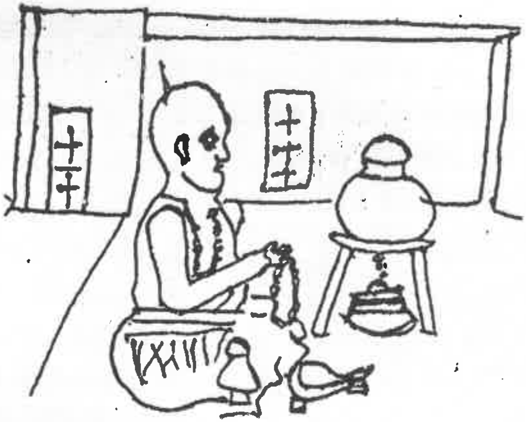

इस ग्रह के असर के समय इन्सानी बजूद को धन, दौलत, मान, इज्जत, औलाद, जायदाद और उमर की तरक्की के लिए न तो हाथ से कमाई करनी पड़ती है और न ही आँख की होशयारी और दुनियाँ की चालाकी और मक्कारी का सहारा लेना पड़ता है । खुद वखुद ही सब काम बनते चले जाते है । प्रथम तो बाप जायदाद बना देगा, वरना ससुराल से जायदाद मिल जायेगी । लाटरी, दवा दवाया हुआ माल या किसी लावल्द की जायदाद ही हाथ लग जायेगी। हर हालत में सब काम वा-आसानी और उमदा नतीजा पैदा करने वाले हो जायेंगे । अगर वृहस्पति नीच भी हो जाये याने वृहस्पति का ज़रद रंग सोना अगर शुक्र से मिट्टी भी हो जाये तो आम मिट्टी से कीमती होगा । शुक्र का बैल इसी कारण से रात-दिन अपनी मिट्टी के काम में व्यस्त रहता है कि किसी तरह से फिर वृहस्पति का सोना पैदा हो जाये ।

(2) बहुत बड़ा वृहस्पति - जब तर्जनी की जड़ वृहस्पति के पर्वत की चरवी मंगल-नेक को भी आ दबाए तो वहुत वड़ा वृहस्पति होगा । नरम हाथ का वृहस्पति शुक्र का ही काम देता है और इश्क व मुहब्बत में दर्जा कमाल का कामयाब पाया जाता है ।

(3) शुक्र और वृहस्पति बराबर है । वृहस्पति तो किसी से दुश्मनी नहीं करता मगर शुक्र की कानी औरत (शुक्र की एक आँख मानी गई है और स्त्री ग्रह है । वृहस्पति नर-ग्रह है) वृहस्पति के ज़रद रंग सोने या शेर-नर से शत्रुता करती है और इन्सान के रास्ते में इश्क की लहर से रुकावट पैदा करती है । इसी बजह से वहुत बड़ा शुक्र औलाद से महरुम रखता है और अगर औलाद पैदा भी होवे तो वृहस्पति व शुक्र की आपसी दुश्मनी से मर जाती है ।

(4) बुध के पर्वत पर शादी-रेखा के ऊपर जो सीधे ख़त खड़े हाते हैं, वह औलाद है । जब यह ख़त शादी-रेखा को काटने लग जायें या ऊपर धनु राशि में घुसने लगें तो बुध वृहस्पति का दुश्मानाना असर जिसके घर पर यह औरत या शादी-रेखा लेटी रहती है और वच्चे देती है, ज़ाहिर

शादी व औलाद रेखायें

धनु राशि से रेखा बुध को

होने लग जायेगा, क्योंकि धनु राशि वृहस्पति का घर है । शुक्र की रेखा ने वृहस्पति के घर की बजाए बुध के स्थान को शादी और औलाद के लिये पसन्द किया है, इसलिये बुध शुक्र का दोस्त बना बैठा है । मगर वृहस्पति के बीच शुक्र और दुनियावी बीज़ औलाद को अपने ही घर बिठाये रहता है, इसलिये वृहस्पति से यह दोनों बुध व शुक्र ग्रह दुश्मनी पर गिने गये है ।

(5) धनु राशि से अगर कोई और ख़त जो दर-असल औलाद रेखा न हो, बुध में चला जाये तो भी गृहस्थ की तकलीफ़ और शादी में रुकावट होगी । धनु राशि में राहु व केतु ही असर कर सकते है । यानि केतु ऊँच करता है और राहु नीच करता है, इसलिये ऐसी रुकावट के वक्त राहु के असर से दिमागी गतिविधि और अपनी सोच-विचार काम ने देगी । चाल या लोगों का सलाह मशवरा सुनना ऊँच फल देगा और दुःख दूर करेगा । जिससे शादी की उलझन और औलाद के मरने का दुःख दूर होगा ।

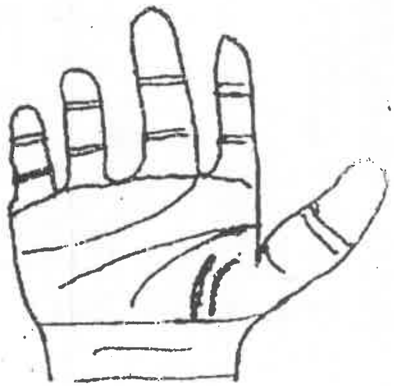

भाईयों की मुखालिफ रेखा

(6) शुक्र के पर्वत पर वृहस्पति की लम्बी और टेढ़ी लकीरें शुक्र और वृहस्पति की दुश्मनी का दूसरा सबूत है। ऐसी हालत में भाईयों से कोई फायदा न होगा। इनके दुःख से तंग आकर इंसान देश-प्रदेश की जिन्दगी बसर करेगा ।

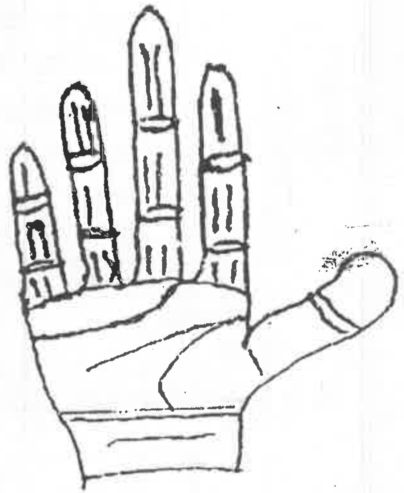

आराम या हराम या मुफत की रोज़ी
धर से निर्धन हो ।

(7अ) अँगुलियों पर वृहस्पति के सीधी खड़ी लकीरें ।।।। आराम या हराम की रोज़ी के मिलने की दलील है । यानि प्रथाम तो ऐसे व्यक्ति को किसी सख्त परिश्रम के काम से वास्ता ही न पड़ेगा और अगर किसी कारण से कहीं फँस भी गया तो न हाथ की मेहनत करेगा, न आँख से काम लेगा । मुफत में अपने पेट की रोज़ी खा जाएगा या उसे अपने पेट के भरने के लिये काफी अनाज मिल ही जायेगा ।

(7 ब)

अगर यह ख़ता बिल्कुल न हों या लेटे हुये = अँगुलियों पर वाक्या हों तो जब तक ऐसा आदमी अपने पेट में जाने वाले अनाज की कीमत के बराबर वह मेहनत न करे तो रोटी नसीब न होगी । चाहे घर से वह लखपति हो । यानि वह लाखपति होता हुआ भी परिश्रम का आदी होगा ।

फरमान 120 - 7 ब

चाहे घर से लखपति हो।

(8अ) वृहस्पति के अपने पर्वत में -

8-अ

(वृ)हस्पति के अपने पर्वत पर

दिल-रेखा का आखीर मुहब्बत-रेखा के नाम से गिना गया है या यूँ कहो कि जब दिल-रेखा वृहस्पति के

पर्वत पर चली जावे तो शुक्र अपनी आशिकाना कार्यवाहियाँ करने लग जायेगा और दर्जा कमाल पर होगा । संक्षेपतः वृहस्पति शुक्र की औरत का दूसरे के साथ मिली हुई और लेटी हुई हालत में देखकर अपना उत्तम फल न देगा ।

(8ब) लेकिन अगर अकेला शुक्र या कानी औरत का खत बिल्कुल अलग ही वृहस्पति के घर आ जावे तो वृहस्पति या कुल ज़माना की हवा उसे उत्तम गिनेगी और असर भी नेक होगा । सारी उमर (60 साल) आमदन व दौलत होगी, क्योंकि ग्रह ख़ाना नं० (2)

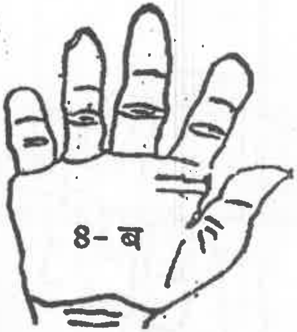

दर-असल वृष राशि नं० (2) के घर का मालिक शुक्र है ।

(9) शुक्र पर औलाद रेखा

अँगूठे की जड़ में सीधे खड़े ख़त |||| वृहस्पति का असर या औलाद ज़ाहिर करते है । दाँए अँगूठे में मर्द की तरफ से औलाद और बाँए अँगूठे की जड़ में औरत की तरफ से औलाद ज़ाहिर होगी । यह ज़रुरी नहीं है कि ऐसी औलाद मर्द की अपनी औरत से हो या औरत की अपने मर्द के संबन्ध से हो ।

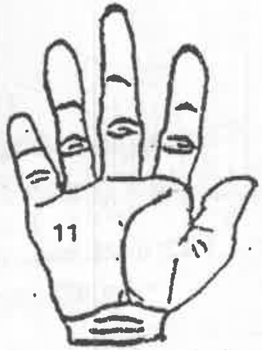

किस्मत रेखा सीधी वृहस्पति को

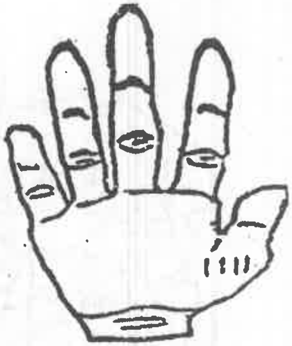

चार शाखा किस्मत रेखा :-

(10) किस्मत-रेखा की जड़ में चार-शाखा ख़त निहायत मुबारक है । शाखदार रेखा सूर्य का निशान है । किस्मत-रेखा वृहस्पति की लकीर है । गोया सूर्य वृहस्पति की जड़ में बैठा है। यानि उमर लम्बी होगी और पूरी होगी, जो अंदाज़ से 100 साल गिनी गई है ।

(11) किस्मत रेखा सीधी वृहस्पति को :-

किस्मत-रेखा भी अगर किसी दूसरे पर्वत में से न गुज़रे और सीधी वृहस्पति के पर्वत पर चली जावे तो सबसे उत्तम होगी, क्योंकि अकेला वृहस्पति हमेशा मदद देगा, जिसका कोई साथी न हो, उसे वृहस्पति की मदद होगी ।

(12) यह ग्रह अपने समय के मध्य में असर करता है । यानि जवानी में या उठती जवानी में या

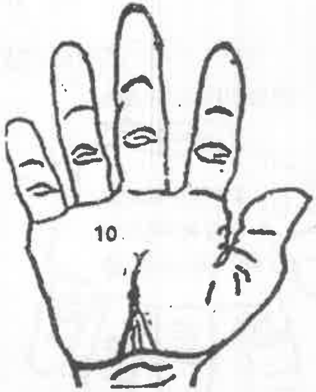

चार शाख किस्मत रेखा

पौधे के पैदा होने के बाद और ज़माना की हवा लगाने से पहले (इसी असूल पर कनक, जौ के पौधे और वृक्ष के पत्ते भी निकलते ही ज़रद रंग होते है।) बन्द बरतन में पैदा शुदा पौधे इस बात को साफ करते है । ज्यों -ज्यों हवा लगेगी, बुद्धि आयेगी और ज़रद से सब्ज करेगी मगर वृहस्पति की मदद कम होती जायेगी । इस बुध के सब्ज रंग से मिली हुई बुद्धि से ही इन्सान धन दौलत के कमाने की धुन और लगन में रात-दिन मरते फिरना सीखेगा, क्योंकि बुध वृहस्पति से दुश्मनी पर है माँ कहती है, कि बच्चा बड़ा हुआ । मगर वृहस्पति की उमर घटती जायेगी । पैदायश के समय वृहस्पति पूरी उमर का था । हर तरह से साफ था । ज़माना की हवा से कई रंग बनने लगे । ज़रद से सब्ज हुआ तो राहु साथ मिला । गोया दिमाग़ में गतिविधियाँ पैदा हो गई । नेकी के साथ बदी करने का बीज पैदा हो गया, तो आखिर कहाँ तक! यह सब ज़माना उलझन हो गया । फिक्रोगम खड़े हुये मगर शुकर का मुकाम है, कि राहु व वृहस्पति बराबर है और परस्पर कभी दुश्मन नहीं होते । दोनों के मिलाप से सब्ज पैदा हुआ, तो बुध आ निकला और ज़रद बिल्कुल ही जाता रहा। बुद्धि पूरी हुई तो ज़माना की हवा का ऐतबार उठ गया । "हीले रिज़क बहाने मौत" का मसला खड़ा हो गया और फ़रिशता का नविशता या 'कुदरत का लिखा' भूल ही गया । यहाँ तक ही नहीं, जब इस बुध बुद्धि का गोल दायरा वृहस्पति के पर्वत पर आया तो वृहस्पति की हवा का वह चक्कर बँधा, कि उसे निकलने को सिर्फ वही आकाश खाली जगह बाकी रह गया । किस्मत की हवा के बाव-बगोले बनने लगे और आसमान की तरफ उठने लगे ।

संक्षेप में अब किस्मत का एतबार न रहा ।

(13) उमर रेखा के साथ शुक्र पर विसर्ग : का निशान ।

उमर-रेखा भी वही नेक है, जो वृहस्पति की जड़ से शुरु हो । ऐसा आदमी ढीला-ढाला और भद्दा सा मालूम होगा मगर कुशाग्र बुद्धि और हर बात को फौरन समझने वाला होगा । बात को मुँह से निकलती हवा से ही ताड़ लेगा । अगर ऐसी उमर रेखा खत्म भी चन्द्र पर होवे तो पितृ-रेखा कहलायेगी और इससे पिता का सुख ज़रुर होगा । इस उमर रेखा पर शुक्र के पर्वत में अगर विसर्गः का निशान हो तो आँखें खराब और स्त्री झगड़ों से ज़िन्दगी तबाह होने की दलील है ।

(14) चन्द्र की रेखा वृहस्पत पर समाप्त

चन्द्र की रेखा भी अगर वृहस्पति पर खत्म हो तो अवश्य ही उत्तम असर होगा ।

यानि पिता पर थोड़ा वृहस्पति पर चन्द्र या बाप की हालत का बेटा होगा ।

(15) गृहस्थ रेखा वृहस्पति के चरण में

गृहस्थ-रेखा वृहस्पति की शरण या चरण-चुम्बन से ससुराल से जायदाद दिलवायेगी । ससुराल लावल्द नहीं होंगे । बल्कि अमीर होंगे और जायदाद आयेगी ।

(16) सिर-रेखा वृहस्पति का रुख

सिर-रेखा, जो बुध की रेखा कही गई है, जब वृहस्पति का रुख करेगी कोई नेक असर वृहस्पति के फल के लिए न देगी ।

(17) वृहस्पति साँस या हवा से अपेक्षा रखता है और हर साँस के आने और जाने में इन्सान की किस्मत का संबन्ध होता है । इसलिये कोई बुद्धिमान, बुध का मालिक यह नहीं दावा बाँध सकता कि एक के बाद दूसरा साँस आयेगा या नहीं । मगर हरदम यही इच्छा करता है कि अगर एक साँस बाहर को गया हुआ है तो दूसरा मेरे अन्दर ही आये ।

यानि अगर दायें ने किस्मत को हार दी है तो बाँया ही मदद करे । यही दाँया-बाँया करता रात-दिन में-24 घंटे में- 1 राशि × 7 ग्रह =84 लाख साँस पूरे कर लेता है । इस दुनिया की नरक चौरासी या बारह राशियों में सातों ग्रहों या बुर्जों की ज़रब या चोट को सहारता चला जा रहा है । अगर यह साँस हवा या वृहस्पति न हो तो सब चौरासी (का खेल) खत्म ।

****

फ़रमान नम्बर - 121

वृहस्पति के पर्वत पर रेखा और वृहस्पति की अपनी रेखा

मुहब्बत-रेखा

ब - वृहस्पति रेखा द - दिल रेखा

म - मुहब्बत रेखा

(1) दिल रेखा के नाम से ही ज़ाहिर है कि मुहब्बत दिल से होगी या दुनियावी लगन और स्त्री का शौक होगा । दिल के लिये चन्द्र या दिल रेखा और स्त्री के लिए शुक्र या गृहस्थ रेखा याद आयेगी । जब दिल रेखा वृहस्पति के घर चली जाये (गुरु के पास चली जाये) और उस के चरण पकड़े; यानि सीधी वृहस्पति में ही जाकर खत्म हो जाये तो कोई असर बलिहाज़ किस्मत न होगा, क्योंकि वृहस्पति गुरु या उस्ताद की हैसीयत से किसी से भी शुत्रता नहीं करता । बल्कि चन्द्र वृहस्पति के बराबर है और आपस में यह दोस्त है ।

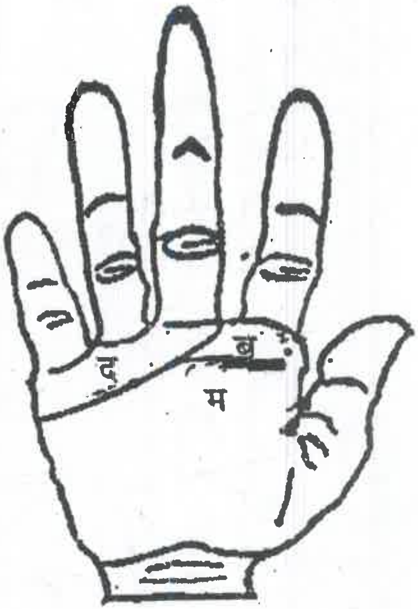

गोया दो दोस्त और शक्ति में बराबर और उस पर तुर्रा यह कि दोनों ही आकाशीय दिव्य शक्ति के स्वामी । पानी और हवा इकट्ठे होंगे तो दिल दरिया और समुन्द्र की लहरें हवा मददगार से दुगनी होंगी । जो दिल चाहे करे । गोया वृहस्पति बहुत बड़ा हो गया और बहुत बड़ा वृहस्पति शुक्र का फल देता है । इस हालत में चन्द्र शुक्र से शत्रुता करेगा । यानि अब यह मुहब्बत जो पवित्र थी अब स्त्री-संयुक्त होकर अपवित्र हो जायेगी । गन्दी मुहब्बत होगी या ऐसा आदमी औरत की कबूतर बाज़ी पर या लट्टू हो जायेगा और अपनी निजी स्त्री के अलाव पराई नार (फारसी में नार = आग) में मद होश होगा। और अपना बहुत सा रुपया इस संबन्ध से बर्बाद पायेगा । मगर वह अपने इश्क में नाकाम न होगा । ज़न मुरीदी (स्त्री-पूजा), जिनाकारी (अनाचारी सम्भोग) आम रवैय्या होगा । अगर ऐसे व्यक्ति का सूर्य का पर्वत भी कायम न हो तो वह इस लगन में एक पतंग या परवाना ही होगा । जिसे अपनी जान की भी परवाह न होगी । ऐसे आदमी से किसी को भी फ़ायदा न होगा । जब होगा तो हानि ही होगी ।

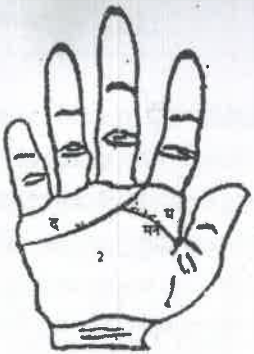

(2) जब दिल-रेखा खातमा पर वृहस्पति की जड़ को झुके तो ऐसा व्यक्ति-मुहब्बत से घृणा करेगा और दिल का बहुत छोटा होगा । मन - मंगल नेक पर्वत द - दिल रेखा , म - मुहब्बत रेखा

(3) तर्जनी की जड़ से वृहस्पति खत तर्जनी अँगुली की जड़ से वृहस्पति के ख़त भी यही असर (प्रभाव) देंगे क्योंकि मिथुन राशि जो तर्जनी की जड़ है बुध का घर है और बुध

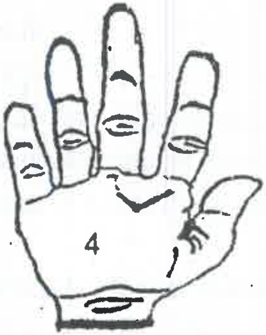

वृहस्पति से शत्रुता करता है ।

(4) शनि और वृहस्पति के मध्य से वृहस्पति पर आकर मिलने वाली सीधी शाखों का इश्क संयमी या मोतदिल इश्क होगा । (तर्जनी की जड़ से शाख वाला इश्क में प्रथम कोटि या दर्जा प्रथम था ।) ज़ाहिर दारी तो कम करेगा पर आन्तरिक तौर पर मुहब्बत का पक्का होगा । ऐसे आदमी की दोस्ती से लाखों का भला होगा और हर एक को लाभ भी होगा । लोहे को पारस का काम देगा । खुद चाहे वह एक कौड़ी की हैसीयत का न हो क्योंकि शनि और राहु वृहस्पति के दोस्त तो नहीं मगर बराबर के हैं शत्रु हरगिज़ नहीं । यह इश्क इश्के हकीक़ी या ईश्वरीय प्रेम की तरफ को ज्यादा होगा ।

(5) वृहस्पति के घर पर जब शुक्र होवे तो बहुत उच्च फल देता है । दूर बैठ शुक्र वृहस्पति से दुश्मनी करता था । संक्षेपतः शुक्र (स्त्री) जब गुरु के घर आ बैठी तो गुरु ने तो दुश्मनी करनी ही नहीं । शुक्र व स्त्री भी उच्च फल देता है और गृहस्थ में उत्तम वास्तविक फल देगा।

(6)गृहस्थ-रेखा जब मंगल-नेक से उछलकर वृहस्पति या गुरु के चरणों में आ जाये तो परिवार की परवरिश, पालन-पोषण, के लिए उसे ज़रूर दौलत का हिस्सा मिल जाता है मगर ऐसी दौलत ससुराल से आयेगी या इसके ससुराल वाले दौलतमंद होंगे ।

(7) वृहस्पति रेखा, सीधे ख़तों, चक्र, शंख, सदफ (सिप्पी) व अन्य निशानों का सविस्तार वर्णन आगे आएगा ।

(8) सिर-रेखा या बुध रेखा का वर्णन बुध के पर्वत में सविस्तरा लिखा है ।

(9)उमर-रेखाः- यह भी वृहस्पति या गुरु के चरणों की दासी है । जिसका सविस्तार वर्णन शनि के पर्वत में है ।

शरीर को गति देने वाली चीज़ का नाम दिल है, जो चन्द्र कहलाया । दिमाग़ या मस्तिष्क का मालिक बुध हुआ, जिसमें विचारों के उ[illegible] चढ़ाव की लहर पैदा करने की ताकत का नाम राहु रखा गया । मगर राहु सिर का मालिक और चन्द्र दिल का मालिक परस्पर शत्रु है और जिस्म व सिर के इकट्ठे मिलकर काम न करने की हालत में इंसान न दिल का मालिक होगा और न सिर की ताकत का भंडारी । यानि दीवाना या पागल होगा । दोनों के बीच एक हवा चलती है जो किसी से शत्रुता नहीं करती और दोनों को ही इकट्ठे करके काम करवाती है । इस हवा का नाम वृहस्पति है । यानि जब चन्द्र और राहु दोनों में वृहस्पति का साथ हो तो कोई हानि न होगी । अगर दुनियादारों को दोस्ती पर मिलाने के लिये बुध हुआ तो लोक (मौजूदा दुनिया) और पर-लोक को मिलाने वाला वृहस्पति हुआ । मगर वृहस्पति व बुध परस्पर दुश्मन है । इन दोनों को मिलाने वाली रोशनी का नाम सूर्य है । मगर सूर्य कभी गुम नहीं होता । इसलिये दुनियाँ भी पायेदार या स्थाई हुई

और चन्द्र, राहु व बुध बज़रिया वृहस्प की दोस्ती भी अटल हुई ।

फ़रमान नम्बर - 122

(1)

उमर-रेखा तो बचपन में गुरु के चरणों में रहती है मगर किस्मत रेखा बुढ़ापे में आखिर तक गुरु या वृहस्पति के चरणों की इच्छुक रहती है । यानि उमर-रेखा और किस्मत-रेखा बिल्कुल उल्ट पहलू में हवा करती है या यूँ कहो कि जिस तरह उमर-रेखा वृहस्पति से दूर होती जाती है उसी तरह ही ज़्यादा किस्मत-रेखा वृहस्पति या गुरु गद्दी के नजदीक या समीप आ जाती है । शरीर हवा या वृहस्पति के बिना इंसानी ज़िन्दगी कच्ची कहानी निरर्थक और सिर्फ ख़ाना-पूर्ति का नाम है ।

जिस तरह शरीर को रुह (आत्मा) मिली
और
रुह को स मिला,
इसी तरह ही मनु को किस्मत मिली
और
इसके साथ सूय का संबन्ध हुआ ।

किस्मत रेखा

किस्मत रेखा क की हद बन्दी सालों में
किस्मत रेखा क कलाई से ऊपर को चली है।

द - दिल रेखा
स - सिर रेखा
सू- सूर्य रेखा
च - चन्द्र रेखा
वृ - वृहस्पति रेखा
मं नेक- मंगल नेक
मं बद- मंगल बद
श- शनि
बु- बुध

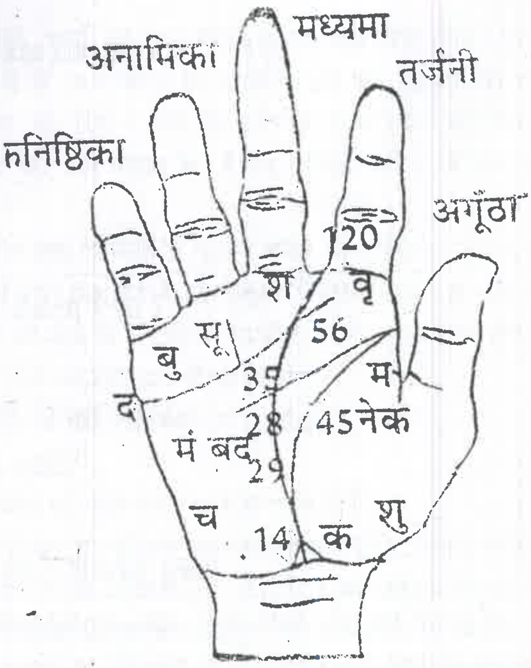

स - सूर्य रेखा
गुरु चरणों को जाती किस्मत रेखा

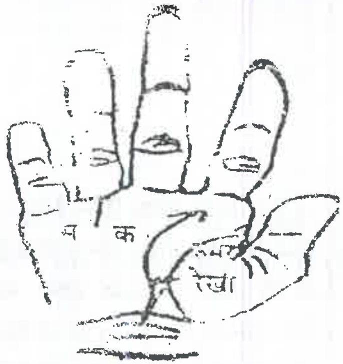

अगर सूर्य का पर्वत क़ायम नहीं और सूर्य-रेखा हाथ में प्रकट नहीं या सूर्य या तरक्की-रेखा किस्मत-रेखा से नहीं मिली तो भी किस्मत की लाख लानत नसीब हुई। (2) ज़बरदस्त या बलवान किस्मत-रेखा वह है जो कलाई से चलकर वृहस्पति पर खत्म होवे और शाखदार होवे। रास्ते में किसी भी पहाड़ या पर्वत की मिट्टी का असर इसमें न पड़े। इस सारी की सारी में सोना ही सोना (वृहस्पति की धात) नज़र आता हो और हर तरफ लोक-परलोक के मालिक राजा इन्द्र या वृहस्पति की हवा मौजज़न या प्रवाहित हो।

प्रबल किस्मत रेखा कलाई से वृहस्पति को

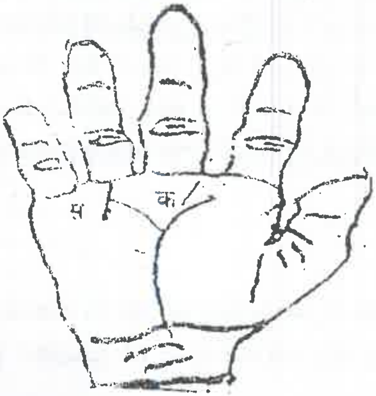

हाथ की हथेली के मैदान की जिस तरह ज़्यादा गहराई होगी, बहाव तेज़ होगा उतना ही किस्मत-रेखा या वृहस्पति की लहर क्या है ? सिर्फ रुहानी (आत्मिक) व नूरानी (तैजस) हवा का एक बड़ा गोला है जिसमें बसन्ती रंग रमा हुआ है। आम तौर पर उमर-रेखा जिस पहाड़ से निकलती है, किस्मत रेखा उस पर्वत श्रृंखला में समाप्त होती है।

ह -- शनि रेखा ,
उ- उमर रेखा क - किस्मत रेखा
क - किस्मत रेखा

जिस समुन्द्र में आयु-रेखा गिरती है उसी समुन्द्र से किस्मत की हवाई लहर निकलती है । संक्षेप से कहें तो किस्मत एक ऐसी चीज़ है जो दुनयावी कारोबार में न हाथ की मदद ढूँढे और न ही इसमें आँख को काम करना पड़े । हर काम का परिणाम स्वयमेव नेक हो जावे ।

"धन्ने भगत की गऊँआ राम चरावे"

उमर-रेखा और किस्मत-रेखा एक ऐसे स्थान पर मिलती है जो शनि का हैड-क्वार्टर गिना गया है । जिसका वर्णन पर्वत में दिया गया है । इस स्थान पर उमर-रेखा तो बन्द हुई मगर किस्मत-रेखा चलती रही । यह बड़ा ख़न्दक (पाताल) शनि की ख़न्दक या ऊर्ध-रेखा कहलाती है । अब किस्मत-रेखा को इसमें से होकर गुज़रना है । हैड-क्वार्टर का मालिक शनि इस सोच में रहता है कि इस बड़ी नहर में ही सब दरिया आ मिलें और वह किसी दरिया के पानी को आगे न जाने दे और अगर किस्मत की हवा इस भंवर में न पड़े तो इसमें शक नहीं कि वह शनि से तो बच निकलेगी मगर [illegible] भक्त की किस्मत अपने [illegible] के लिये साथ में क्या तोहफा (उपहार) ले जायेगी । (अपने लिये खुराक "तोशा" और दूसरों [illegible] के लिये उत्तम वस्तु "[illegible]" होती है)। जब अकेली ही चलेगी तो अपना 'तोशा' इकट्ठा करने के लिये अकेली को ही सब [illegible] ओं से पानी चुराने के लिये [illegible] परिश्रम करना पड़ेगा । इसी बुनियाद (नींव) पर माना गया है कि जब किस्मत-रेखा अकेली डंडे [illegible] तरह उमर-रेखा से बिल्कुल [illegible] लग ही शुरू हो तो ऐसे आदमी को अपनी किस्मत बनाने के लिये सब दुनिया के विरुद्ध कठिन संघर्ष [illegible] पड़ेगा और वह निजी यत्न [illegible] सफल होगा । उमर का कोई साथी मददगार न होगा ।

यानि :-

> भिक्षु ने भिक्षा माँगी, हमने की हमदर्दी ।
> दिल का महरम कोई न मिलया, जो मिलया अलग़र्जी ॥

ऐसे आदमी से फ़कीर या किसी सवाली ने सवाल किया तो उसने खुदाई तरस पर उसे रोटी खाने को दे दी । फक़ीर ने रोटी खाकर बदले में हाय-हाय करनी शुरू करदी कि 'ज़हर दे दी', 'ज़हर दे दी' । उल्टा उसे और रुपया पैसा देकर मिन्नत-समाजत करके नाहक़ पुलिस के डंडे से बचाव करवाया ।

(3) किस्मत-रेखा अगर कलाई से शुरू होकर सिर-रेखा पर ही समाप्त हो जाये तो ऐसा आदमी स्वयं अपनी मूर्खता या सिर की ताकत से अपना ज़माना खराब करेगा और खराबी का समय जवानी के दिन होंगे । बुध शत्रु होगा । यानि 34 साला उमर से बर्बाद होगा । अपनी ही नाव का स्वयं बेड़ी डबोने वाला खेवट होगा ।

(4) अगर किस्मत-रेखा कलाई की बजाये आरम्भ ही सिर-रेखा से होवे तो जवानी में यानि बुध के समय या 34 साला उमर से ही आराम होगा मगर अपने निजी परिश्रम से । यानि अपनी ही बुद्धि से भगवद् कृपा होगी ।

(5) अब अगर सिर-रेखा से शुरू होकर दिल-रेखा पर ही खत्म हो जावे यानि बुध और चन्द्र मिल जावें तो नतीजा खराब ही होगा। (**चन्द्र बुध से शत्रुता करता है**) । दिल या चन्द्र की ज़हर या गुलबा-ए-इश्क से तबाह हो जायेगा ।

(6) **किस्मत-रेखा** जब कलाई से शुरू हो और दिल रेखा को पार करके ऊपर जा निकले तो जिस पर्वत की तरफ झुके उसी पर्वत का असर पाया जायेगा ।

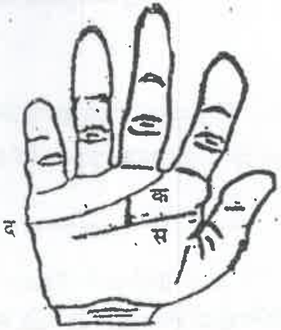

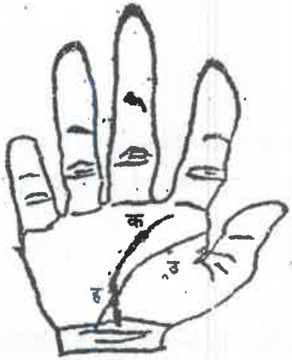

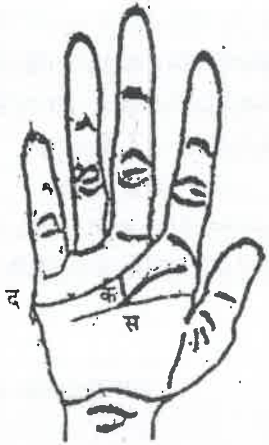

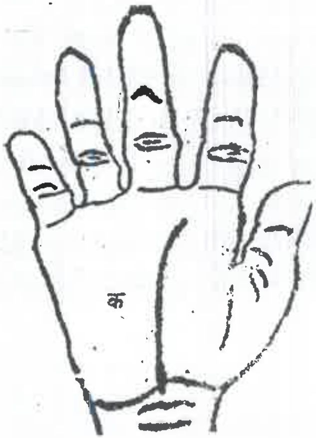

(7) किस्मत-रेखा अगर कलाई से शुरू होकर दिल-रेखा में मिलकर ही समाप्त हो जाये तो निहायत नेक असर होगा क्योंकि वृहस्पति और चन्द्र (दिल-रेखा) एक दूसरे के बराबर और परस्पर दोस्त है । यानि पानी की नाव हवाई ज़हाज़ का काम देगी।

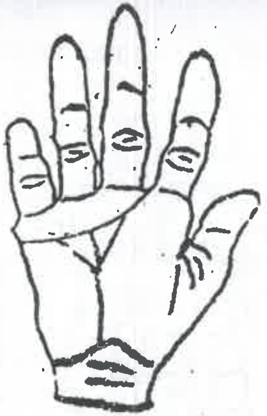

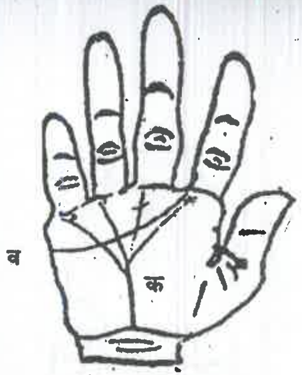

(8) अगर कलाई से शुरू होकर किस्मत-रेखा ऊपर मध्यमा में जा चढ़े तो राज छोड़ फकीर हो जावे । माया पर पेशाव की धार मारने वाला होगा ।

(9) किस्मत-रेखा अगर कलाई से शुरू होकर हाथ को दो भागों में बाँटती हुई शनि पर जा निकले मगर मध्यमा पर न चढ़े तो ऊर्ध-रेखा के नाम से जानी जायेगी । ऐसा व्यक्ति दुष्ट-भगवान होगा । कुत्ते को रोटी का टुकड़ा और चिंटी को आटे के कण भी नसीब न होने देगा । इस का विवरण शनि के पर्वत में दिया है ।

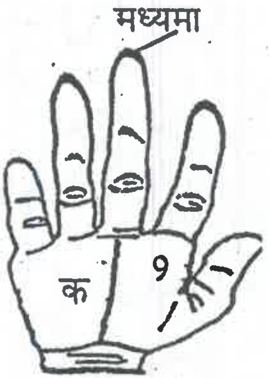

(10) जब किस्मत-रेखा शुरू में उमर-रेखा से मिलकर शुरू होती मालूम हो, तो इसकी उमर में किस्मत का असर होने का वक्त इस रेखा के झुकाव के लिहाज़ से होगा। यानि अगर किस्मत-रेखा का झुकाव कनिष्ठिका की तरफ हो तो बुध के असर के सालों में यानि 34 साल के करीब; अनामिका और कनिष्ठिका के बीच की तरफ हो तो 22 साल; अनामिका की तरफ हो तो 25 साल; अनामिका और मध्यमा के बीच की तरफ हो तो 45 साल, मध्यमा की तरफ हो तो 60 साल और वृहस्पति की तरफ हो तो 16 साल में खुद कमाई करने लग जायेगा।

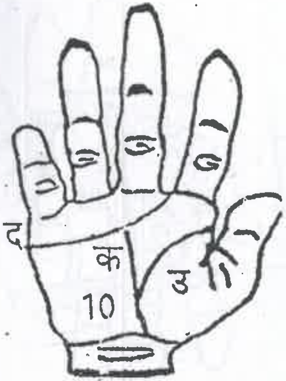

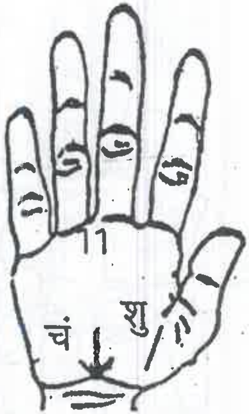

किस्मत रेखा का आरम्भ

(11) किस्मत रेखा की बुनियाद (नींव) पर हर पर्वत के निशान का अलग-अलग असर होता है। बुनियाद (नींव) का अर्थ वह स्थान है जो वास्तव में शुक्र और चन्द्र की ठीक दरम्यानी हद है। इस हद पर निम्नलिखित निशानात अज़ 12 से 23 अपना-अपना असर देंगे।

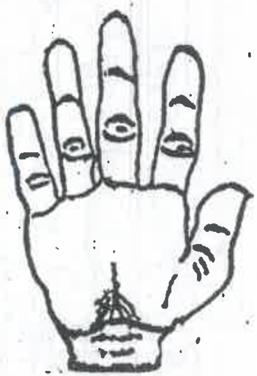

(12) वृहस्पति के सीधे ख़त |||| निहायत मुबारक है बशर्ते कि ठीक दरम्यानी हद पर हों। अगर शुक्र की तरफ हों तो स्त्री भाग की तकलीफ और अगर चन्द्र की तरफ हों तो मातृ भाग मदद की निशानी है। अगर ऐसे ख़त दोनों ही तरफ फैले हों यानि शुक्र और चन्द्र दोनों तरफ तो किस्मत अजीब रंग दिखलायेगी कभी अमीरी का दरया ठाठें मारेगा और कभी गुरीबी की रेत की चमक भी न होगी।

(13) सूर्य की शाखदार रेखा ⺮ शुभ निशान है। जो माता पिता का

रोज़ी रोटी का साधन सरकारी दरबार ज़ाहिर करता है। शुक्र की तरफ का भाग स्त्री भाग में मद्धम असर मगर चन्द्र की तरफ नेक असर। ऐसा आदमी (चार शाखा रेखा वाला) लम्बी उमर वाला होगा।

(14) बुनियाद पर चकौर : मंगल नेक □ जंगी खून और शाही शान से शाहाना पालन पोषण। स्वयं भी इसी पेशा वाला और शाहाना हालात वाला होगा। इसे सम्बन्धित दुनिया में राज्य करने का अवसर और धन जमा करने का बहुत समय मिलेगा। इस निशान के शुक्र की तरफ होने या चन्द्र की तरफ होने का बुरा प्रभाव न होगा। हर हालत में जंगल में मंगल होगा।

(15) नींव पर मंगल बद व शुक्र का निशान : शुक्र व मंगल-बद Δ। ऐसे व्यक्ति के जन्म में कुछ भेद की बात होगी। जिसका प्रकट करना कठिन होगा।

(16) नींव पर मंगल-बद दो शाखी : मंगल-बद ∧ दो शाखी। पैदा होने के समय माता-पिता की आर्थिक स्थिति कमज़ोर हावे। जितने साल की सीमा रेखा पर दोनों शाखें मिलें, उस साल में परिस्थिति ठीक होने को होवे।

(17) बुध के गोल दायरा O का वही प्रभाव होगा जो त्रिकोण Δ का था।

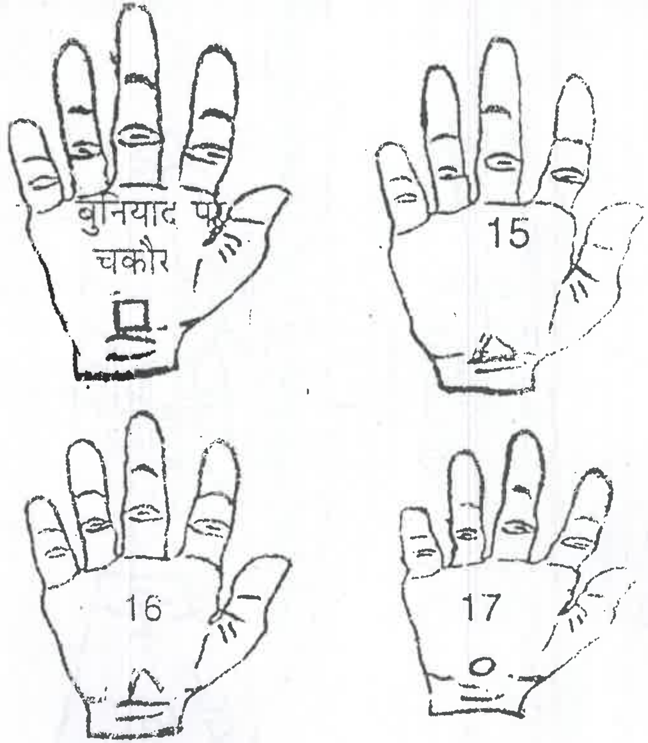

(18) नींव पर शनि चिन्हः शनि का चिन्ह + केवल मध्य में व शुक्र की ओर शुभ। चन्द्र की तरफ खराब या नेष्ठ होगा।

(19) नींव पर राहु का चिन्ह : राहु ▦ राहु का चिन्ह केवल मध्य की सीमा पर शुभ है। धन का खर्च सदा परिवार की उन्नति में होगा। ऐसे व्यक्तियों को अपने निजी रक्त-संबन्धियों से सहमति रखने में बरकत होगी। मस्तिष्क की स्तता साधारण बातं होगी।

(20) नींव पर केतु का चिन्ह : केतु ⊔, ⊓, ┌┴┐ दरम्यान और शुक्र की तरफ शुभ। दौलत पर दौलत आवेगी। चन्द्र की तरफ केतु का निशान अति अशुभ। मामों की ओर भी बुरा प्रभाव होगा। साधारण यात्रा से वास्ता बना रहेगा। भाईयों से दूर प्रदेश में अधिक रहे। मगर अपने लिये शुभ।

(21) नींव पर मच्छ रेखा : मच्छ रेखा - अति शुभ। विस्तृत विवरण शनि के पर्वत में हुआ है।

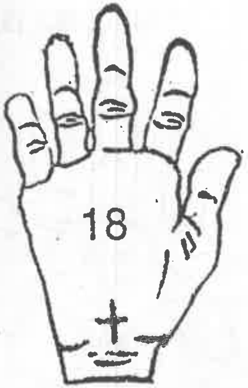

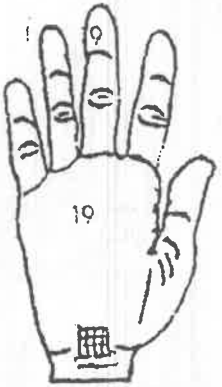

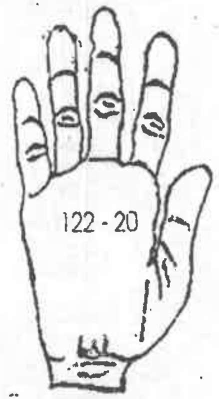

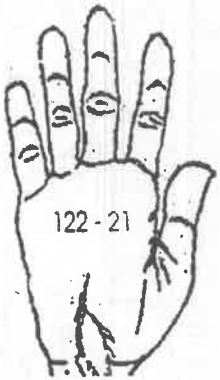

(22) नींव पर काग रेखा : मछली की दुम परों की ओर से खर्चें काग-रेखा - वही प्रभाव जो मंगल-बद ∧ का है ।

(23) नींव पर चार शाखी ख़त : चार शाखा वाली रेखा ⚶ - आयु लम्बी होवें ।

(24) किस्मत-रेखा के आखिर पर ऊपर-वर्णित निशानों का वही असर होगा जो पहले लिखा है मगर आयु के अन्तिम भाग में प्रभाव देंगे ।

(25) दोनों भोहों के मध्य, जहाँ तिलक लगाते है, अगर मंगल बद ∧ या केतु ┌┴┐ का निशान हो तो शासक व स्मृद्धिशाली होगा ।

किस्मत-रेखा की शाखें

(26) इ - इज्जत रेखा, क- किस्मत रेखा : वृहस्पति से या वृहस्पति को । निहायत शुभ होगी । इस रेखा का नाम इज्ज़त-रेखा भी रखा गया है । जो दुनियावी मान-सम्मान का नेक सरोवर होगी और वृहस्पति का पूरा असर देगी ।

(27) म- मच्छ रेख, श- शाख, क-किस्मत रेखा : - शनि को शाख जब बुनियाद (नींव) पर मच्छ-रेखा हो - अति उत्तम फल होगा । जायदाद वाला या भूमि-पति या भारी सम्पन्न जायदाद का स्वामी हो ।

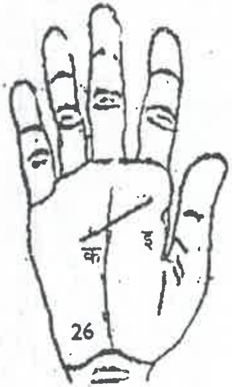

(28) बुध को शाख जब बुनियाद (नींव) में मच्छ-रेखा हो – तो कामुक स्त्री-प्रेमी व भोग-लिप्त होगा । अन्य अवस्थाओं में जीभ का चस्का आदि आम होगा ।

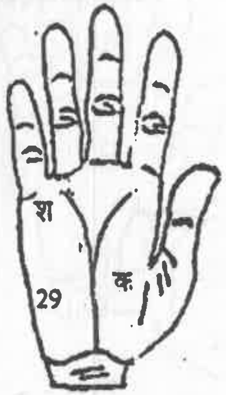

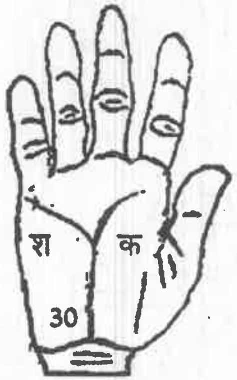

(29) श- शाख सूर्य को, क- किस्मत रेखा : सूर्य से या सूर्य को । राजदरबार से शुभ संबन्ध उन्नति व प्रगति हो मगर किस्मत की बागडोर किसी अन्य के हाथ में हो ।

(30) श- शाख बुध को : बुध को या बुध से । अचानक सम्पन्न व अचानक निर्धन ।

(31) श- शाख मंगल नेक को : मंगल नेक को या बुध से । परिश्रम करने पर ईश्वरीय सहायता सदैव उपलब्ध ।

(32) श - शाख मंगल बद को - मंगल-बद से या मंगल बद को । मनुष्यों से शत्रुता । दु:ख व कष्ट । रिश्तेदारों की मौते व सोग ।

(33) चन्द्र व शुक्र से रेखायें : शुक्र से शाख । स्त्रियों से संबन्ध व सहायता ।

(34) चन्द्र व शुक्र से रेखायें : चन्द्र से शाख । यात्राओं से बासता पड़े ।

(35)एक शाख चन्द्र से और एक शाख शुक्र से एक शाख चन्द्र से और दूसरी शुक्र से , किस्मत का विचित्र रंग होगा । कभी धनवान, कभी निर्धन । कभी शाह, कभी मलंग । कभी खुशहाल, कभी तंग होगा ।

(36) अल्प-आयु वाला मवेशियों के सुख से वंचित रहे । अल्प आयु वालों का आयु के हर आठवें साल 8, 16, 24, 32, 40, 48, 56, 64 हाल तंग हो ।

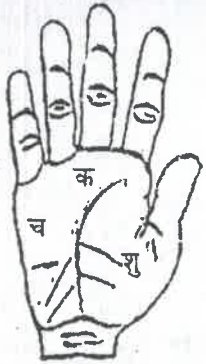

33-34

(37)चन्दग से खत किस्मत रेखा को : चन्द्र से ख़त या शाख । माता-पिता की जायदाद, खेती की भूमि, दिव्य अथवा आकाशीय गुप्त सहायता और ऊपर की आमदन से तात्पर्य होगा ।

(38) सीधे ख़त (लकीरें), चक्कर, शंख, सदफ (सिप्पी) आदि सबका सविस्तार विवरण आगे लिखा हुआ है ।

(39) इज़्ज़त-रेखा-दुनियावी मान-सम्मान देगी ।

(40) हथेली के मध्य ख़ाना नं० 11 के क़रीब किस्मत-रेखा के साथ ही दूसरा ख़त (लकीर), जो किस्मत-रेखा के साथ ही चल रहा हो, अपना भाई ज़ाहिर करता है जो कारोबार में साथ मिलेगा और किस्मत जगा देगा ।

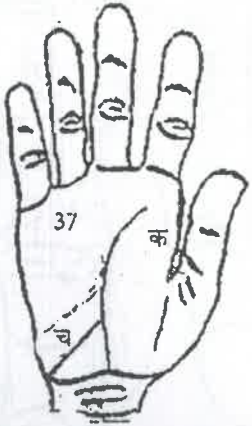

फ़रमान नम्बर - 123

वृहस्पति के ख़त (लकीरें)

औलाद रेखा

बु - बुध,
वृ - वृहस्पति
सू - सूर्य,
चं - चन्द्र
श - शनि,
म न-मंगल नेक
शु - शुक्र,
म ब- मंगल बध
इ - इज्जत रेखा ।

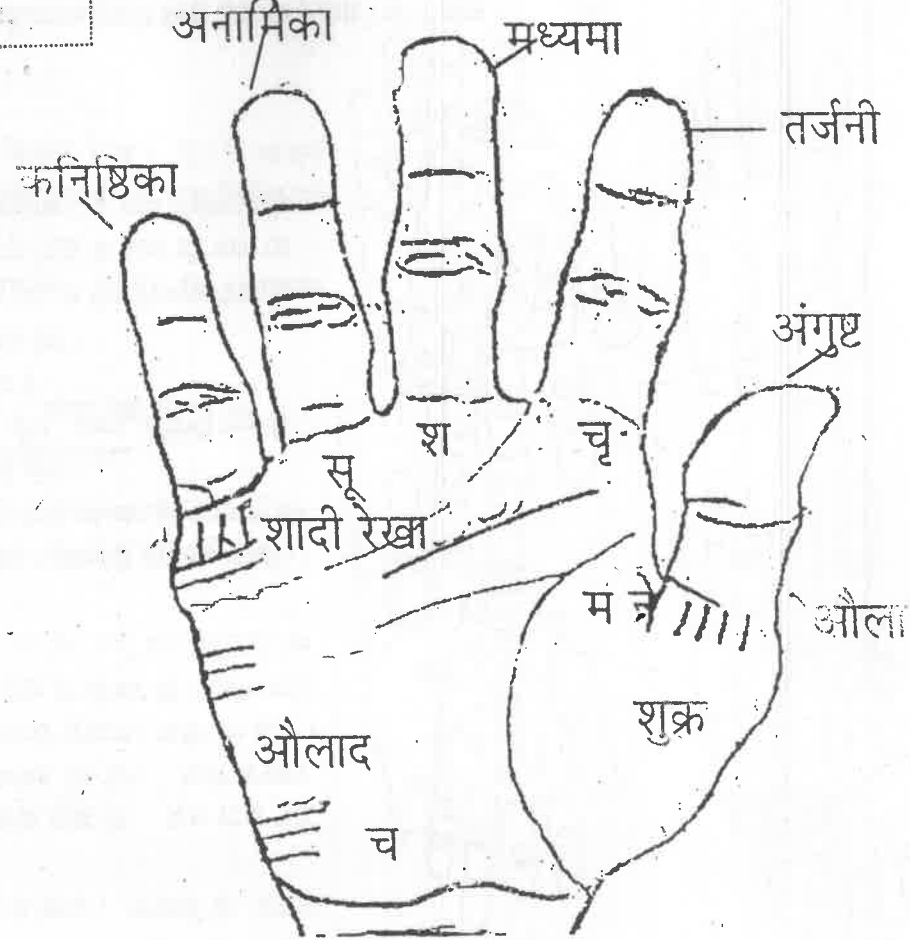

(1) मंगल बद पर रेखायें सन्तान को बताती है चाहे स्त्री हो या न हो :- बृहस्पति के सीधे खड़े ख़त बुध के पर्वत पर शादी-रेखा के ऊपर औलाद की कुल संख्या बतलाते है । यही ख़त दाँए हाथ के अँगूठे की जड़ में पुरुष के सम्बन्ध से औलाद और बाँए अँगूठे की जड़ में स्त्री की औलाद । मंगल बद के पर्वत के किनारे सहायक **औलाद** और चन्द्र के पर्वत के किनारे लम्बी आयु वाली **औलाद** ज़ाहिर करते है ।

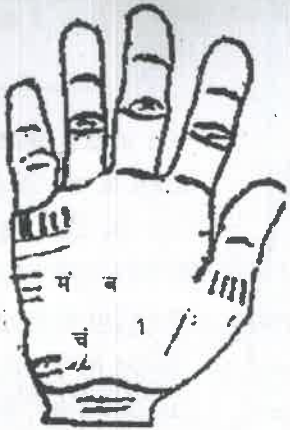

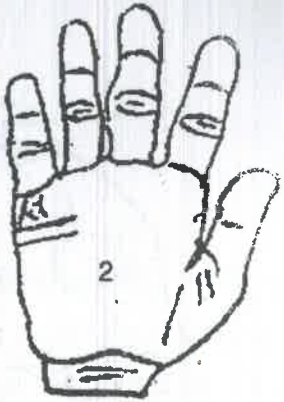

(2) शादी रेखा पर दो - शाखी लकीरें - लड़कियाँ - शादी-रेखा के ऊपर बहुत बारीक-बारीक सीधे ख़त लड़के और दो शाखी लकीरें लड़कियाँ । यही नियम नर, मादा औलाद देखने के लिए हर पर्वत पर होगा । साफ, ठीक और सीधी लकीरें जीवित संतान और मध्यम और कटी हुई लकीरें शीघ्र मर जाने वाली संतान को बतलाती हैं ।

(3) क - कलाई रेखा हथेली के अंदर गई हुई - कलाई की रेखा अगर हथेली के अन्दर घुस आवे और आन्तरिक शराफत रेखा जैसा आकार हो जावे या स्त्री की पिंडलियाँ मोटी हों तो संतान कम होने या न होने या देर बाद होने या अन्य रुकावट-औलाद या संतान के मर जाने की

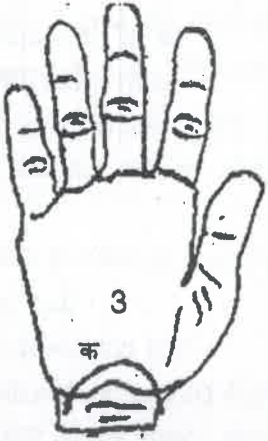

आशंका और शक होगा। कलाई की रेखा के हथेली के अन्दर घुस आने के साथ ही यदि शुक्र का पर्वत भी बहुत बड़ा होवे तो निसंतान (लावल्द) होने की पूरी निशानी है।

(4) **अधिक संतान-** पाँव की अँगुलियाँ यदि क्रमशः एक से दूसरी बड़ी होती जायें तो अधिक संतान वाला होगा।

(5) **लड़के -** स्त्री के पाँव में (दोनों पाँव इकट्ठे) जितने चक्र, पद्म साफ गहरे पब (पाँव की हथेली) पर हों, उतने ही लड़के होंगे।

(6) **लड़कियाँ-** जितने चक्र या पदम नरम व बारीक लकीर के हों, उतनी ही लड़कियाँ होंगी।

(7) **बाँझ -** स्त्री के पाँव की पीठ यदि बहुत बड़ी हो तो बाँझ निस्संतान होगी।

(8) **सन्तानोत्पत्ति का समय -** संबन्धित ग्रहों व उच्च फल देने वाले ग्रहों के प्रभाव का समय सन्तान के उत्पन्न होने का समय होगा। नीच ग्रह व संतान के विरुद्ध रेखा का प्रभाव ज़रुर देखना पड़ेगा।

(9) **संतान का सुख -** मंगल रेखा या आयु सहायक रेखा (जिसका वर्णन उमर रेखा के साथ शनि के पर्वत में है) यदि सही और ठीक हो तो औलाद का सुख निश्चित है।

(10) स्त्री के पेट और छाती पर बाल हों तो वह अपने लड़के का सुख (पहली औलाद लड़का) अवश्य भोगेगी और यदि इन बालों में भंवरी (चक्कर गोल दायरा सा) हो तो पहली औलाद लड़का ही होगा।

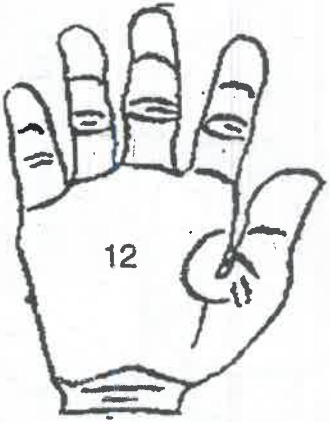

(11) पुरुष के दाँए पैर का अँगूठा यदि छोटा और इसी पाँव की तर्जनी अँगुली बड़ी हो तो वह व्यक्ति अपने पहले लड़के का सुख न भोगेगा। य ह मतलब नहीं कि पहला लड़का मर ही जायेगा। केवल आपसी सुख दुःख देने का मतलब है। अगर अँगूठा व तर्जनी या कनिष्ठिका व अनामिका बराबर हों तो भी संतान का सुख संदिग्ध होगा।

(12) **गृहस्थ- रेखा** - यदि पूरी, गहरी, कमानदार और शुक्र के पर्वत में अँगूठे की ओर झुकी हो तो वह व्यक्ति बड़े परिवार वाला, धनी और सम्पन्न होगा। दुनियाँ, स्त्री व संतान का सुख भोगेगा। अगर गृहस्थ-रेखा ऊपर की तरफ दिल-रेखा को काटकर मध्यमा तक

चली जाये तो अपनी संतान के अलावा संतान की संतान पोते पड़ोते वाला होगा और बड़े कुल वाला (अपने वीर्य से उत्पन्न) और सुखी होगा।

(13) बहुत बड़ा वृहस्पति व नरम हाथ का वृहस्पति शुक्र का काम देता है, परन्तु बहुत बड़ा शुक्र संतान से वंचित रखता है।

फ़रमान नम्बर - 124

पर्वत-वृहस्पति का प्रभाव ख़ाना नं० 2

उच्च वृहस्पति ख़ाना नं० 4 का होगा है, जिसमें वृहस्पति का बहुत उत्तम फल होगा।

(1) **वृहस्पति को गुरु माना है।** इसका प्रभाव साँसारिक संबन्धियों से शुभ संबन्ध, धन–दौलत की आमदन, बड़े भँडार, सुन्दर संतान, औलाद का सुख, पिता का सुख विशेषकर के माता के लिए, आयु में लाभ, आमदन, साँसारिक मान–सम्मान, धर्म में स्थिरता व अबाध गति, साधारण व्यवहार में प्रसन्नता व न... स्त्री को सुख और स्त्री का सुख, पिता का आराम अर्थात ज़माने की हवा का पूरा शुभ लाभ और राजा के समान लोक–परलोक का स्वामी और सुख लेने वाला हो। न आँख की होशयारी से धन कमाना और न स्वयं हाथ से कमाई करनी पड़े। लक्ष्मी स्वयमेव पाँव पकड़ती फिरे।

(2) दल-रेखा के सही होते हुए शुक्र का बुरा प्रभाव न होगा ।

(3) नीच वृहस्पति - *शुक्र के संबन्ध से (अर्थात पराई स्त्री, प्रेमिका, कुल्टा आदि)। संतान का दुःख । माता को पिता का दुःख (माता पर स्वयं इसका कोई प्रभाव न होगा ।), भाईयों से मन-मुटाव, संबन्धियों से शोकातुर एवं शत्रुता । धर्म में विरोध, आय में सोने से मिट्टी मिलेगी और हवा के समान आई लक्ष्मी क्षण में हवा हो जाएगी । पाँव की मिट्टी शुक्र सिर चढ़ जाएगी या सिर में ख़ाक या सिर पर स्वाह पड़ जाएगी । ऐसा व्यक्ति कोई साधु अथवा सिद्धि-सम्पन्न पुरुष न होगा । बल्कि तीसरी श्रेणी का साधु या फ़कीर ही होगा ।*

"तीजी पिच्छा मुड़-मुड़ बेखदी"		व्याख्या से :-
(1)	इक फ़कीरी लेख दी ।	(भाग्य की)
(2)	दूजी होवे भेस दी ।	(पोशाक की)
(3)	तीजी पिच्छा मुड़ मुड़ बेखदी	

(फ़कीरी या संन्यास लेकर भोग लिप्सा) हर साँस में (वृहस्पति की हवा में) यही होगा कि "आता है याद मुझको गुजरा हुआ ज़माना"। मगर अब तीसरी फ़कीरी क्या करे ? नं० 3 मिथुन राशि बन गया। जिसके घर का मालिक बुध है। शुक्र की धरती अब बुध के सहारे गोल (बुध का निशान गोला O) हो गई । जो पीछे थे वह आगे हुए। एक शत्रु शुक्र से छूटा तो दूसरा बुध आ खड़ा हुआ।

(4) बुध के सम्बन्ध से चतुराई भागी । बोलने में भी शर्म आने लगी । माता-पिता का सुख न देख सकी । स्वयं अनाथ हुआ और अपना भाग्य देखने की बजाए सब का भाग्य देखने लगा । एक का तो सिफर (शून्य) हुआ । ख़ाना नं० (10) शनि का अभ्यर्थी हुआ (उच्च शनि

वृहस्पति का फल देता है पर दोबारा भगवान दुष्ट-भगवान ही होगा)

जिनको भिक्षा व सेवा में दान देता या शनि के समय उनसे छीनना पड़ेगा। जिनको दान देता था और सूर्य के कलंक को भी धोता था (सूर्य-ग्रहण के दिन दान) इनसे अब धान (रोटी का गुज़ारा चावल की भी छाल) लेना पड़ेगा। अपने बाप को जो खुशी से बाप न करता था अब हर एक को ही **'मेरा माई बाप है।'** कहता फिरेगा। गोया वृहस्पति की हवा बदली तो ज़माना की हवा भी सहायक न रही। वृहस्पति टुकड़े हुआ तो न वश अपना-आप काबू रहा और न 'पत' (इज्जत) ही पाई गई।

फ़रमान नम्बर -125

पोरियों व हथेली पर वृहस्पति के सीधे खत या लकीरें :-

वृहस्पति के सीधे ख़त । । । । अँगुलियों की पारियों पर यह दर्शाते है कि जीवन आराम का और रोज़ी मुफ्त या हराम की होगी। यानि प्रथम तो कठिन परिश्रम के काम से वासता ही न पड़े और यदि पड़े भी तो वह करे कराये कुछ न। मुफ्त में अपने पेट का पालन कर लेवे। मगर हथेली पर यह लकीरें हों तो केवल एक ही पर्वत पर हों।

हथेली की सीधी रेखाओं का प्रभाव

रेखा-संख्या	कुण्डली का ख़ाना नं०	प्रभाव लकीर (ख़त) का
1	1	–दयालु व दानी होगा ।
2	2	–नेकी के काम बहुत करे । असहायों का सहायक हो।
3	12	–बुद्धिमान पर पेशे की दक्षता से ऐसा लाभ न हो ।
4	4	–उत्तम चन्द्र के प्रभाव का पूरा लाभ हो ।
5	5	–शासक या नेता हो ।
6	7	–जवानी में खूब आराम पावे ।
7	3	–आँख की होशयारी अधिक हो । वीर हो ।
8 या अधिक	8	–जीवन ख़ाना–पूर्ति का नाम हो ।

फ़रमान नम्बर –126 **पोरियों व हथेली पर चक्कर के निशान**

वृहस्पति के निशान – चक्कर का प्रभाव

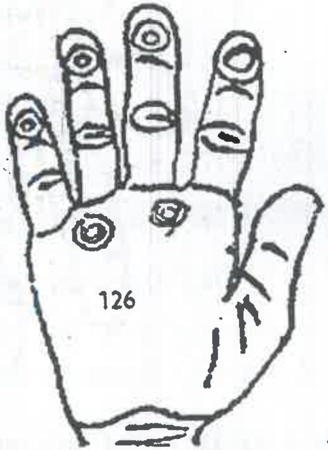

अँगुली की पोरी (नाखून वाला भाग) पर चक्कर अपना पूरा प्रभाव देगा । दाँए हाथ की हथेली पर मध्यम फल और बाँए हाथ पर नेष्ट फल होगा ।

पाँच से अधिक अँगुली वाले के हाथ पर चक्रों की संख्या दस से अधिक हो सकती है । वैसे तो हथेली पर भी चक्कर हो सकते हैं ।

चक्रों का प्रभाव

चक्र संख्या	कुण्डली का ख़ाना नं०	चक्र का प्रभाव
1	1	–राजा या शासक होवे।
2	4	–हुनर मंद हो।
3	7 बुध	–ब्रह्मज्ञानी हो।
4	7	–निर्धन हो।
5	5	–सुख सम्पन्न होवे।
6	6	–कामी व भोगासक्त हो।
7	3	–वीर व हौसले वाला हो।
8	8	–सदा रोगी रहे।
9	11	–धनी हो।
10	10	–जीवन सुखमय हो।
11	8	–अल्प आयु व भाग्य हीन हो।
12	12	–नेक स्वभाव, दीर्घ आयु व सुखी हो।

फरमान नम्बर – 127

शंख - हथेली व पोरियों पर ।

शंख

हथेली और अँगुलियों पर वही प्रभाव होगा जिसका वर्णन चक्र में दिया है ।

शंख संख्या	कुण्डली का ख़ाना नं०	प्रभाव शंख का
1	1	–सदा आराम पावे ।
2	8	–दलिद्री, निर्धन हो ।
3	7 बुध	–ब्रह्मज्ञानी हो ।
4	4	–विद्या युक्त हो ।
5	7	–तपस्वी परन्तु निर्धन हो ।
6 या अधिक	12	–बहुत धनवान हो ।

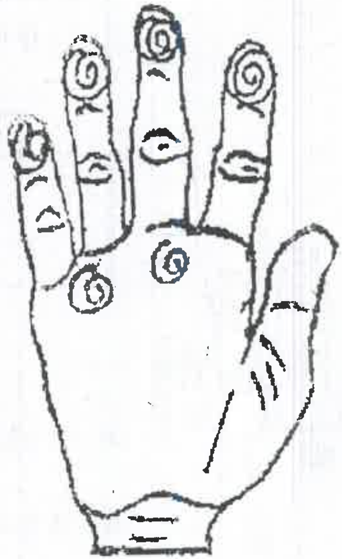

फ़रमान नम्बर - 128

सदफ (सिप्पी) हथेली व पोरियों पर ।

सदफ

हथेली व अँगुली का वही दर्जा असर होगा जिसका वर्णन चक्र, शंख में पहले दिया है ।

शंख संख्या	कुण्डली का ख़ाना नं०	प्रभाव सदफ का
1	10	-निर्धन हो ।
2	2	-विद्वान हो ।
3	3	-धनी हो ।
4	4	-प्रसिद्ध हो ।
5	5	-बड़ा मान-सत्कार पावे ।
6 या अधिक		

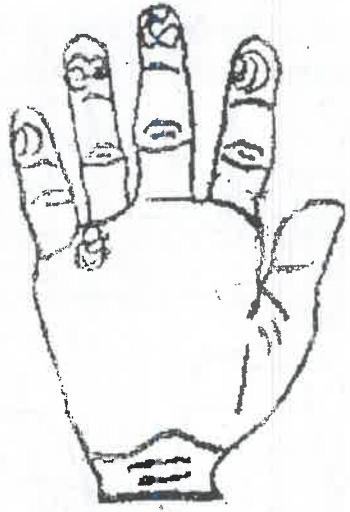

फ़रमान नम्बर – 129

सदफ का हथेली पर प्रभाव

सदफ यदि सूर्य के पर्वत पर बुध की ओर स्थित हो और अनामिका की जड़े से जुड़ी हो तो सूर्य के नेक प्रभाव में खराबी होगी । यानि अदालत में जाने वाले दीवानी झगड़ों के न्यायाधीश व समय के शासक से शत्रुता होगी । परन्तु निर्णय अपने हक में होगा । जितना यह निशान या अन्य निशान चक्र, शंख बुध की तरफ होते हुये दिल-रेखा के समीप होतें जाये, उतना नेक प्रभाव बढ़ेगा । अनामिका की जड़ कन्या राशि बुध का घर है जो वृहस्पति का शत्रु है । दिल-रेखा चन्द्र की रेखा है जो वृहस्पति का मित्र है और यह निशान वृहस्पति के है । स्थान सूर्य का है जो वृहस्पति का मित्र है । इसलिये दूरी व समीपता अवश्य अच्छे और बुरे प्रभाव का दर्जा निश्चित करने में सक्षम होगी ।

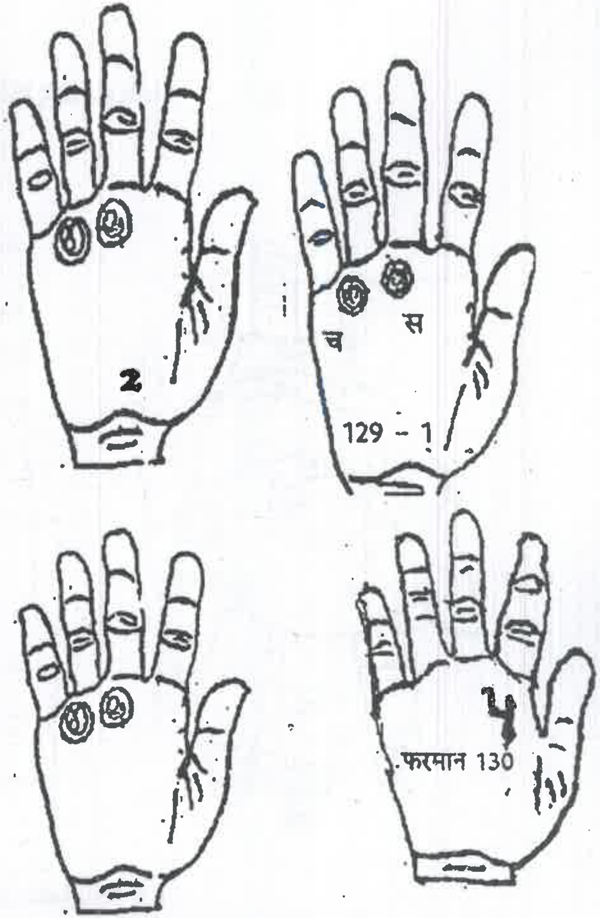

यदि सदफ की बजाये शंख स्थित हो तो कर्म-धर्म झगड़ों का कारण होगा । यदि चक्र हो तो अन्य सरकारी संबन्ध झगड़ें का कारण होंगे । यदि सूर्य का सितार स्वयं ही वहाँ स्थित हो तो सबसे प्रबल होगा परन्तु वह भी झगड़ा पैदा करेगा । पर यह झगड़ा अपने से बड़ों के साथ ही होगा । निर्णय के लिये सदफ, शंख, चक्र, सितारा क्रमशः

ऊपर को प्रबल होंगे । यानि सदफ वाला सितारा वाले का मुकाबला न कर सकेगा । अर्थात सितारा वाला विजयी होगा ।

(1) कान के आकार के दायरे में वैसा ही दायरा 'सदफ' है ।

(2) गोल दायरा में अलग गोल दायरा 'चक्र' है ।

(3) एक ही लकीर से दायरा में दायरा 'शंख' है ।

(4) बहुत बारीक गोल दायरा में गोल सितारा सूर्य का निशान है ।

चक्र, शंख सदफ और सितारा-सूर्य यदि सूर्य के पर्वत पर स्थित हों और बुध की तरफ की बजाए शनि की तरफ हों तो अब शनि का साथ होगा, जो चन्द्र (दिल-रेखा) व सूर्य के पर्वत दोनों का ही शत्रु है । अत: अब निर्णय पक्ष में होने का संतोष न होगा । शेष प्रभाव वह ही होगा जिसका पहले वर्णन किया है ।

फरमान नम्बर - 130

हथेली पर वृहस्पति का निशान

वृहस्पति का असल निशान इन्द्रीयाँ ㄣ है जो सबसे उत्तम है और अकेले वृहस्पति के प्रभाव का है । वृहस्पति धनु राशि (9) का हो तो आयु 75 वर्ष । वृहस्पति मीन राशि (12) का हो तो आयु 90 वर्ष । यह राहु का भी घर है ।

उच्च वृहस्पति कर्क राशि (4) का होता है और यह चन्द्र का घर है ।

फ़रमान नम्बर - 131 व .

फरमान नम्बर - 132

राशि या पर्वत पर वृहस्पति के निशान और उनका प्रभाव

ख़ाना नम्बर (1)

(1) **सूर्य के पर्वत पर** :- दोनों ग्रहों (सूर्य व वृहस्पति) का मैत्री पूर्ण, अपना-अपना, अलग-अलग और उत्तम फल होगा ।

(2) **कुण्डली में मेख राशि पर :-**

मेष राशि (मेंढा) घर का मालिक मंगल (हिरण) है। जो वृहस्पति का मित्र है। सूर्य (रथ) ऊँच करता है जो वृहस्पति का मित्र है। शनि (मगर मच्छ) नीच करता है जो स्वयं वृहस्पति का मित्र है। इसलिए चारों ग्रहों का (मंगल-हिरण, सूर्य-रथ, शनि-मगर और वृहस्पति-शेर) और मेख या मेंढा का बर्ताव व प्रभाव मित्रता पूर्ण होगा। उत्तम होगा और उच्च होगा। चाहे शत्रु अधिक होंगे पर सभी काबू में होंगे। राजदरबार, धन-सम्पत्ति, लड़ाई-झगड़ा, मुकद्दमा, जायदाद, मकान आदि-सबका उत्तम फल होगा। संतान 8 वर्ष होती रहे। आयु 75 साल होगी। सूर्य का रथ हिरण, शेर, चीता चलायेगा और शनि (मगर) की आँख सर्वेक्षण करेगी। मित्रता-पूर्ण या काला सांप भी सिर पर छाया करने वाला शेष नाग होगा। विद्या वाला होगा पर स्वभाव में उग्रता। साफ दिल, चालाकी को तुरन्त समझने और रोकने वाला होगा। दृष्टि-शक्वि उत्तम व शरीर स्वस्थ होगा। पिता का साथ व संतान सुख होगा। प्रियजनों से स्नेह करने वाला और उनका स्नेह पात्र होगा। हर अवस्था में लाल+पीला=पक्का पीला होगा अर्थात वृहस्पति का ऐसा शुभ और पक्का असर होगा जो उतरेगा नहीं। अन्य ग्रहों की अविध, आपसी संबन्ध, प्रभाव अलग-अलग या साँझा, मित्रता-शत्रुता आदि अलग-अलग जगह दर्ज है।

ख़ाना नम्बर (2)

(1) वृहस्पति के अपने पर्वत पर :- सविस्तार अलग लिखा है।

(2) कुण्डली में वृख राशि पर :-

वृष राशि बैल। घर का मालिक शुक्र है, सफेद झण्डा लिये। जो वृहस्पति का शत्रु है। मगर ज़माना की हवा या वृहस्पति इससे शत्रुता नहीं करता। बहुत बड़ा वृहस्पति हो तो शुक्र का ही फल देता है। यह वृहस्पति का असल स्थान है। चन्द्र उच्च करता है जो वृहस्पति का मित्र है। इस राशि को नीच करने वाला कोई ग्रह नहीं। (वृहस्पति को इसीलिए गुरु माना है और सामुद्रिक में सब ग्रहों में प्रथम या प्रभाव देने की चाल में नम्बर एक माना है।) वृहस्पति के सभी निशानों का पूरा-पूरा फल होगा। हर काम में होशयार और नेक असर होगा। 27 वर्ष राज दरबार से शुभ संबन्ध होगा और हर तरफ बसन्त का शेराना (शेर जैसा या मीठा फल होगा।) ज़माना की सारी हवा सहायता करेगी।

ख़ाना नम्बर (4)

(1) मंगल बद व नेक के पर्वत पर :-

दोनों ग्रहों का मैत्रीपूर्ण, साँझा उत्तम फल होगा । युद्ध के संघर्ष में बहादूर परन्तु दूसरों का माल छीनने वाला हो ।

(2) कुण्डली में मिथुन राशि पर :-

मिथुन राशि- पुरुष व स्त्री का जोड़ा । घर का स्वामी बुध मेंढा जो वृहस्पति रूपी शेर या जमाने की हवा का शत्रु है । राहु **हाथी** ऊँच करता है जो वृहस्पति के बराबर का है । प्रभाव के लिये यह घर मंगल का है । जिसकी उपस्थिति (विद्यमानता) में राहु चुप रहता है । जबकि मंगल नेक का पर्वत □ चौकोर मौजूद होवे । जो और भाई-बन्धुओं सगी ससुराल, दृष्टि, संतान को सुख और संतान की आयु से सम्बन्धित होगा । अतः बुध की शत्रुता केवल मामा की संतान से संबन्ध रखेगी । (बुध मंगल व केतु का मित्र है।) स्वयं वह व्यक्ति विद्वान और बुद्धिमान होगा । 20 साल प्रिय जनों से स्नेह बना रहेगा और आराम पायेगा । राज दरबार से आय होगी और शुभ प्रभाव रहेगा । वृहस्पति व बुध में शत्रुता नीला रंग है (नीला=पीला+हरा) जो राहु है और ऊँच करता है ।

मंगल-बद का पर्वत ऐसा शुभ फल न देगा । युद्ध के संघर्ष में वीर होगा पर दूसरों का माल छीनने वाला होगा । भाग्यहीन, झगड़ालु होगा । हरदम गला झगड़ें में या झगड़ा गले लगा रहेगा । नटखट पर कायर होगा । 31 वर्ष रोग से पीड़ित रहे ।

ख़ाना नम्बर (4)

(1) चन्द्र के पर्वत पर :-

परस्पर मित्रतापूर्ण, साँझा और उत्तम फल होगा । राज दरबार से लाभ । धन सम्पत्ति की बढ़ौती । हर प्रकार की शांति रहे ।

"शेर सीधा तैरता है वक्ते रफतन आब में" । शेर पानी की तेज़ धार में सीधा ही तैरता है ।

(2) कुण्डली में कर्क राशि पर :-

कर्क राशि (केकड़ा) । घर का स्वामी चन्द्र सफेद घोड़ा है । वह वृहस्पति का मित्र है । मंगल (हिरण) नीच करता है । वह भी **वृहस्पति का मित्र है** । वृहस्पति स्वयं इसे उच्च करता है, इसलिये वृहस्पति का शुभ प्रभाव होगा और यह चन्द्र के फल का पूर्ण उत्तम **भंडार होगा** । राजदरबार से लाभ । धन-सम्पत्ति भी बढ़ेगी । सुन्दर भवन व मकान । 24 साल शिक्षा व विद्या का शुभ लाभ अर्थात हर प्रकार

से शांति रहे ।

ख़ाना नम्बर (5)

राशि सिंह । शेर नर । घर का स्वामी सूर्य (रथ) है । इस राशि को कोई ग्रह ऊँच या नीच नहीं कर सकता । अब वृहस्पति का शेर अपने शेर के घर में है । वृहस्पति के संतान संबन्धी निशान अपना पूरा नेक असर देंगे । संतान की ओर से धन सम्पन्न होगा । अन्यथा मामों को सात वर्ष कष्ट हो ।

ख़ाना नम्बर (6)

राशि कन्या (लड़की) । घर का स्वामी बुध मेंढा है । इस घर में केतु (सूअर) का निवास है । केतु वृहस्पति के बराबर का है पर बुध जो केतु के बराबर का है, वृहस्पति का शत्रु है । मगर वृहस्पति बुध का शत्रु नहीं है और बुध के बराबर का है । राहु (हाथी) और बुध उच्च करते है जो दोनों वृहस्पति के बराबर है । केतु और शुक्र नीच करते है, जिसमें शुक्र तो वृहस्पति के शत्रु है मगर केतु बराबर का । इस तरह से बुध और शुक्र दोनों ही वृहस्पति के शत्रु हुये । बुध घर का स्वामी और इस राशि को उच्च करता है । इसलिए ... अपने घर की सुरक्षा के लिए इस घर की बर्बादी न करेगा । यानि मामों की ओर से सब सम्पन्न होंगे । पर खुद अपने लिये 40 वर्ष श... होंगे। वृहस्पति किसी से शत्रुता नहीं करता । साँस या वृहस्पति की हवा बेशक (केतु) तूफानी हो और (शुक्र) मिट्टी मिली हुई हो तो ... हर व्यक्ति की सहायता करेगी । इसलिये वह व्यक्ति पुण्यात्मा व दानी होगा और अपने पास धन जमा न रखेगा ।

ख़ाना नम्बर (7)

(1) शुक्र के पर्वत पर :- दोनों ग्रह बराबर शक्ति के है । वृहस्पति तो कुछ नहीं करता मगर शुक्र वृहस्पति से शत्रुता करता है । इसलिए शुक्र का अपना फल तो अच्छा होगा परन्तु वृहस्पति का शुक्र के विष से हल्का व शत्रुता का होगा । दैवी और सांसारिक सहायता तो अवश्य होगी । यात्रा से जीवन उन्नत होगा, परन्तु पिता व संतान का सुख हल्का । भाईयों से कष्ट हो ।

(2) कुण्डली में तुला राशि पर :-

तुला राशि तराज़ू के दो पलड़ों में शुक्र बैल व बुध मेंढा बराबर तुल रहे है । यह दोनों वृहस्पति के शत्रु है परन्तु वृहस्पति किसी ...

शत्रुता नहीं करता । शनि, मगरमच्छ या मछली, उच्च करता है । शनि वृहस्पति के बराबर का है । लेकिन सूर्य नीच करता है और सूर्य वृहस्पति का मित्र है । इस प्रकार सूर्य की विद्यमानता में शुक्र और बुध (वृहस्पति के दोनों शत्रु) चुप ही रहेंगे ।

संतान सुन्दर और सुख लेने वाली होगी मगर सुख देने वाली न होगी अर्थात व्यक्ति भाई-बन्धु, पिता, संतान और स्त्री के सुख से वंचित रहेगा । वह सब तो सुख लेंगे पर व्यक्ति को सुख देंगे नहीं ।

(3) बुध के पर्वत पर :-

यदि वृहस्पति रेखा । । । । शादी रेखा को काटे तो संतान बर्बाद । यदि बुध पर सूर्य के पर्वत की ओर वृहस्पति का निशान । । । । हो तो सांसारिक अनुभव में कुशल व ज्योतिष विद्या का ज्ञाता होगा । शुक्र कामुकता व भोग की ओर ले जाएगा । 4 वर्ष खूब भोग-विलास करेगा । फिर संयमी होगा ।

ख़ाना नम्बर (8)

कुण्डली में वृश्चिक राशि पर :-

वृश्चिक, बिच्छू । घर का स्वामी मंगल □ है जो वृहस्पति का मित्र है । यह स्थान प्रभाव के लिये शनि का है । शनि वृहस्पति के बराबर का है । चन्द्र नीच करता है और वृहस्पति का मित्र है । इस आठवीं राशि (मृत्यु के घर) को कोई उच्च नहीं कर सकता । यदि मौत से बचे तो धन होगा परन्तु अधिक नहीं । फिर भी यदि मंगल-बद का सम्पर्क हो तो बीमारी तो अवश्य घेरेगी ।

ख़ाना नम्बर (9)

कुण्डली में धनु राशि पर :-

धनु राशि – नील गाय-सिर मनुष्य का और टाँगे चौपाया की । घर का स्वामी स्वयं वृहस्पति । केतु उच्च करता है जो वृहस्पति के बराबर का है। राहु नीच करता है । वह भी वृहस्पति के बराबर का है । वृहस्पति केतु पर भी प्रभावी होगा । अकेला राहु विरोध करेगा । जिससे व्यय में अधिकता हो तो भी धन-दौलत आएगा खूब । विचार कुछ-कुछ धर्म के विरुद्ध होंगे । पिता को 12 वर्ष (राहु का ¼) कष्ट होगा ।

ख़ाना नम्बर (10)

(1) शनि के पर्वत पर :- दोनों ग्रह बराबर के है, इसलिए दोनों का अपना-अपना मगर शनि का नेष्ट प्रभाव होगा। धन सम्पत्ति वाला होगा । परन्तु कामुकता व भोग-लिप्सा से तंग-हाल हो जाए ।

(2) कुण्डली में मकर राशि पर :- मकर राशि-मगरमच्छ - स्वयं शनि स्वामी है, जो वृहस्पति के बराबर का है । मंगल जो वृहस्पति का मित्र है, इसे उच्च करता है । इस घर को वृहस्पति स्वयं नीच करता है मगर शनि भी बलवान है, इसलिये 12 वर्ष तो धन साथ रहे, वह भी शनि की आँख से । पश्चात रोटी का सवाली होगा । वृहस्पति का धन साथ न देगा । कामुकता भोगेच्छा आदि से प्रभाव बुरा ही होगा ।

ख़ाना नम्बर 11 - कुम्भ राशि पर :-

कुम्भ राशि :- पानी से भरा हुआ घड़ा । घर का स्वामी शनि है । वह वृहस्पति के बराबर का है । इस राशि को ऊंच-नीच कोई नहीं कर सकता । प्रभाव के लिये वृहस्पति का भी घर है, इसलिये केवल वृहस्पति व शनि का संबन्ध रह गया । अत: 12 वर्ष धन आयेगा । पश्चात रोग से अटूट संग । कामुकता आदि से फल निकृष्ट ही होगा ।

ख़ाना नम्बर 12 - मीन राशि पर :-

मीन राशि-मछली:- घर का स्वामी स्वयं वृहस्पति परन्तु घर में राहु का निवास है । और राहु वृहस्पति के बरावर का है । शुक्र व केतु उच्च करते है । अर्थात शुक्र अब मित्रता का फल देगा । बुध राहु नीच करते है। बुध शुक्र मित्र है । बुध राहु भी मित्र है । इसलिये अब शत्रुता का भाव कम होगा । वृहस्पति अब युक्तियों का माहिर मन्त्री होगा । शुक्र की 25 वर्ष की अवधि में धन का सुख होगा परन्तु राहु सदा ही खर्चा खड़ा रखेगा । वह खर्चा परिवार-जनों की भलाई में ही होगा । पर बचत विशेष न होगी ।

फ़रमान नम्बर - 132 'ए'

वृहस्पति का प्रभाव-विशेष विवरण

वृहस्पति की किसी से शत्रुता नहीं परन्तु बुध व शुक्र (शादी-रेखा बुध पर, भाई-रेखा शुक्र पर) स्वयं शत्रुता करते है । वृहस्पति जब अपने पर्वत के अतिरिक्त किसी भी दूसरे पर्वत चला जाये यानि वहाँ वृहस्पति के निशान पाये जायें तो वृहस्पति अपना शुभ प्रभाव उस पर्वत को दे देगा, जिसमें कि वह चला गया है । परन्तु जब शत्रु ग्रह वृहस्पति के पर्वत पर हो तो शत्रुता पूर्ण फल उत्पन्न होगा, तो भी वृहस्पति अपनी कुल अवधि का आधा अर्थात 8 साल अवश्य शुभ फल देगा । अकेला शुक्र वृहस्पति पर बुरा प्रभाव न देगा । बल्कि गुरु की सारी आयु सेवा करेगा । आखिर शुक्र स्त्री ही है । परन्तु बुध का निशान दायरा O या सिर-रेखा या बुध से शादी-रेखा को काटती हुई ऊपर धनु राशि को ख़त (लकीर) सदैव कुप्रभावकारी होंगे ।

कुण्डली के बाकी ख़ानों में दूसरे ग्रहों की दृष्टि के प्रभाव की भी निगरानी करता है ।

सूर्य -

रंग गंदमी, बुध के गोल पहिये। चन्द्रमा की गोलाई के समुद्री घोड़ों वाला सूर्य का रथ । न खड़ा हुआ न पीछे हटा। किरणों से अंधेरे का नाश और समस्त ब्राह्मण की आश का मालिक हुआ। पर सूर्य की प्रति दिन आने जाने की तपस्या की सीमा का पता न लगा।

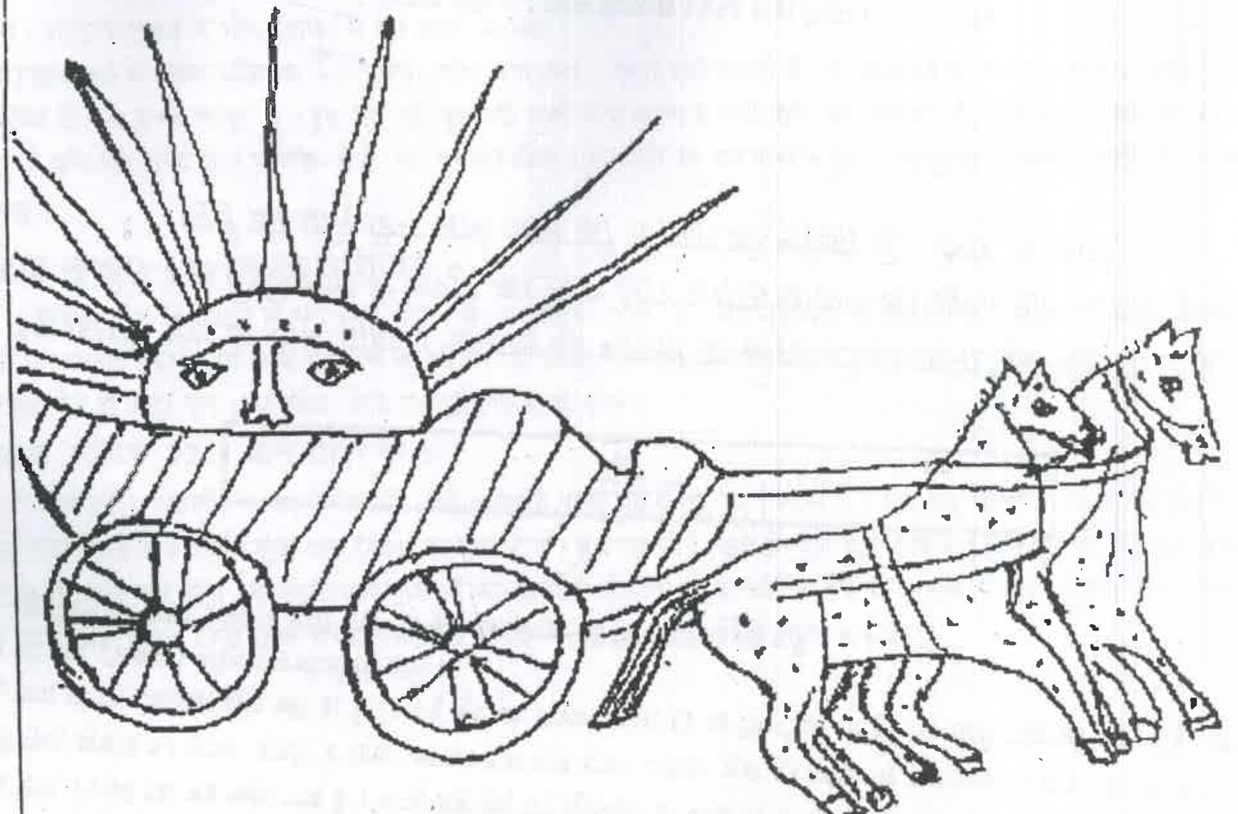

फ़रमान नम्बर - 134

सूर्य के पर्वत पर रेखा और सूर्य रेखा

(1) द - दिल, स - सूर्य रेखा, सूर्य पर्वत पर ।

सूर्य रेखा - यह रेखा अपने पर्वत पर ही होती है और सूर्य के नाम से ही याद की जाती है । यदि यह उपने पाँव की दासी चन्द्रमा या दिल रेखा तक न पहुँचे तो साधारण प्रभाव की होगी और यदि दिल रेखा से जा मिले तो दिल की शाँति होगी और बुढ़ापा अति उत्तम होगा।

(2) श - सिर रेखा, स- सूर्य रेखा, द- दिल रेखा -

जब सूर्य रेखा नीचे को सिर रेखा तक चली जाये तो जवानी से किस्मत जागेगी क्योंकि यह रेखा ऊपर से नीचे कलाई को जाती है । सिर रेखा बुध की आयु 34 साल होगी । सूर्य और बुध का मेल शुभ है ।

(3) स- सूर्य रेखा, क - किस्मत रेखा,

यदि सूर्य रेखा किस्मत रेखा से न मिले या यदि यह रेखा हाथ में न ही हो । या इस रेखा का पर्वत या सूर्य का पर्वत ऊँचा न हो । या यदि सूर्य रेखा तो हो पर किस्मत रेखा न हो तो इन सभी अवस्थाओं में परिणाम अशुभ ही होगा । बिना सूर्य अँधेरे का जीवन होगा ।

(3अ) यदि सूर्य रेखा अपने सूर्य के पर्वत से चलकर सूर्य के

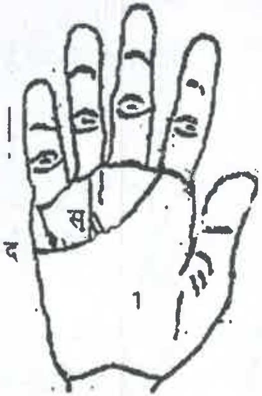

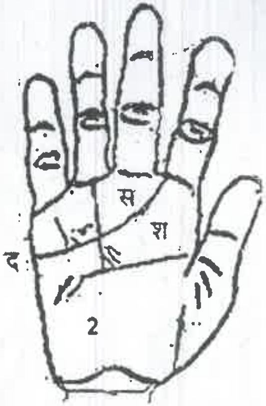

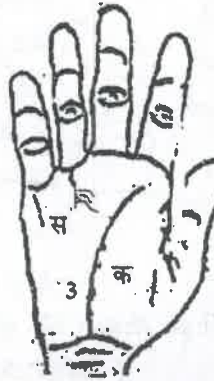

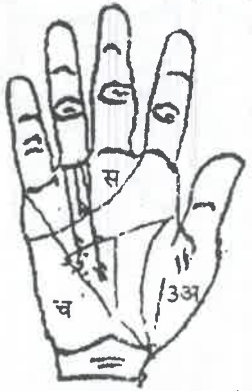

पर्वत पर ही समाप्त हो तो सूर्य का प्रभाव ख़ाना नं० 5 (सूर्य का अपना घर) का होगा ।

और यदि सूर्य रेखा दिल–रेखा पर समाप्त हो तो ख़ाना नं० (4) का प्रभाव होगा ।
यदि मुसततील (rectangle) में समाप्त हो तो प्रभाव ख़ाना नं० (6) के संबन्ध का होगा ।
यदि सिर रेखा पर समाप्त होवे तो सूर्य बुध ख़ाना नं० (7) का संबन्ध होगा ।
यदि और आगे बचत के ख़ान नं० (11) में समाप्त हो तो वृहस्पति का सम्बन्ध होगा ।
यदि और आगे चलकर चन्द्रमा पर समाप्त हो तो ख़ाना नं० (4) फिर वही चन्द्रमा का संबन्ध होगा।

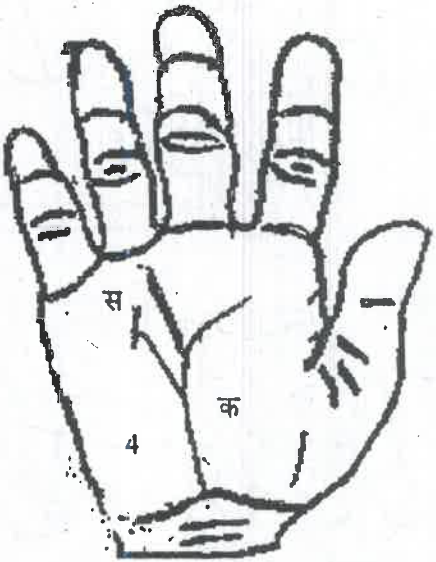

हर एक अवस्था में यदि शनि की ऊर्ध रेखा का संबन्ध होवे तो आग की दुर्घटनायें होंगी । यदि किसी कारण वश ऐसी प्रवल रेखा किसी साधारण हाथ में स्थित हो तो भी सूर्य और शनि का साँझा प्रभाव अशुभ होगा । लेकिन यदि सोने, चाँदी या आग के कारोबार वाला होवे तो शुभ होगा । फिर भी प्रबल सूर्य आग उत्पन्न करेगा जिसमें शनि का सामान तो स्याही का प्रभाव देगा । मगर सूर्य, चन्द्रमा और वृहस्पति उत्तम फल देंगे । बिना सूर्य रेखा बाजारी किस्मत मानुषी जीवन की न होगी । वह स्त्री-पूजग कामुक होगा । और यदि साथ ही सूर्य का पर्वत भी कायम न हो तो प्रेम, मुहब्बत, इश्क के सिवा उसे दुनिया में कुछ और नज़र ही न आयेगा।

(4) स - सूर्य रेखा, क - किस्मत रेखा से जा मिले । जब यह सूर्य रेखा किस्मत रेखा से मिल जाये तो सफलता अवश्य होगी । परन्तु अपने उद्योग से । यदि किस्मत रेखा न मिले तो किस्मत की चमक न होगी । और यदि किस्मत रेखा

न ही हो तो हर काम में कष्ट होगा । यानि कि बिना सू रेखा हर तरह से असफलता होगी । और जीवन का आनन्द न होगा। बल्कि जीवन केवल ख्रान पुरी का नाम होगा ।

(5) सूर्य रेखा यदि चाँद के पर्वत पर जा निकले तो सफलता की कोई तसल्ली नहीं । अत्यन्त बुरा जीवन होगा ।

(6) सूर्य रेखा का सम्बन्ध (सूर्य के पर्वत पर) शिक्षा से है। लम्बी लकीर का अर्थ पूर्ण शिक्षा प्राप्ति से है ।

(7) कनिष्ठिका व अनामिका के मध्य सूर्य की लम्बी रेखा साँसारिक अनुभव, कार्य दक्षता का परिचय देती है । चाहे ऐसा व्यक्ति पढ़ा लिखा हो या न हो ।

(8) अनामिका की जड़ पर यही रेखा साधारण स्कूल की शिक्षा को बतलाती है । अनामिका और मध्यमा के बीच स्कूल की शिक्षा के अतिरिक्त दूसरी विभागीय प्रशासनिक शिक्षा, विशेषकर भवन निर्माण आदि, को दर्शाती है ।

(9) इसी तरह ही कनिष्ठिका और अनामिका के मध्य गणित विद्या (छोटी सी रेखा) और अनामिका और मध्यमा के मध्य ज्योतिष विद्या (छोटी सी लकीर) को बताती है ।

(10) यह सूर्य रेखा जितनी शाखदार होगी (:::::::) सूर्य की किरणों की शक्ति और प्रभाव की दृढ़ता उतनी ही अधिक होगी ।

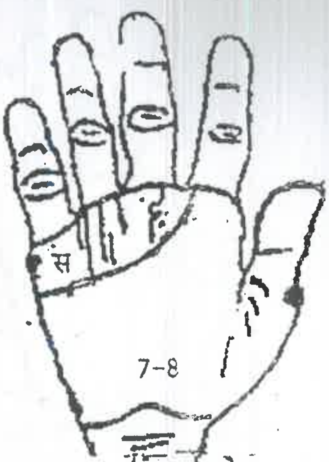

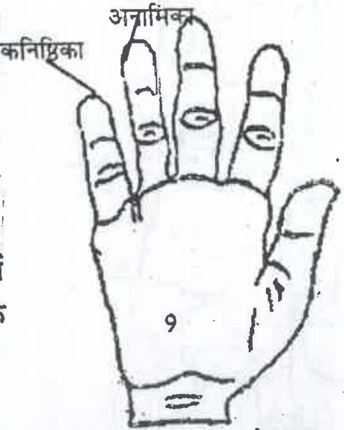

(11) स,व द को मिलाती त्रिकोण -- सूर्य रेखा और चन्द्रमा या दिल रेखा को मिलाने वाली त्रिकोण Δ मंगल-बद का प्रभाव देगी । जिसका परिणाम ह्रदय की शक्ति पर होगा ; चाहे बुरी तरफ हो और चाहे भली तरफ । तो दिल की शक्ति अधिक होगी।

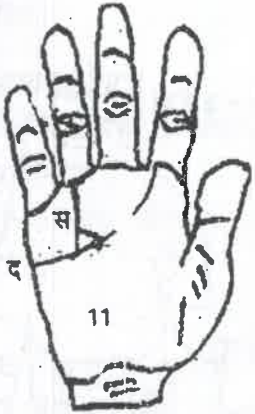

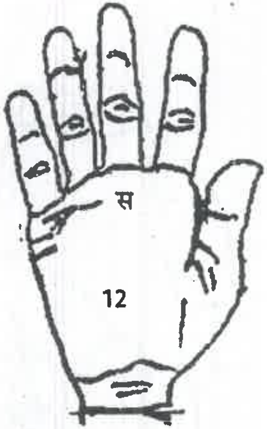

(12) सूर्य रेखा से शाखें :- सूर्य के पर्वत से बुध की तरफ को शादी रेखा तक गई हुई शाख से पता लगता है कि पत्नी अमीर व सम्पन्न कुल से होगी । और सूर्य के समान अपने गुणों में पूर्ण होगी । बाकी अलग-अलग पर्वतों से शाखें और इनका प्रभाव पहले पर्वतों की साँझी शाखों में हो चुका है ।

(13)सेहत रेखा शनि के हैडक्वार्टर ह से बुध पर्वत को -

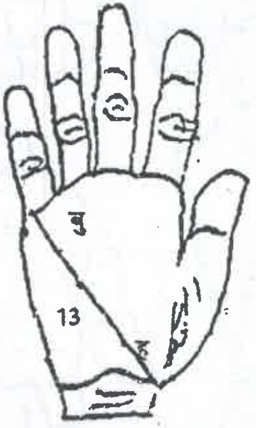

सेहत या उन्नति रेखा :- सूर्य आत्मा और शरीर का स्वामी है इस लिये इसकी दूसरी रेखा का नाम सेहत रेखा या तरक्की रेखा रखा गया है । यह रेखा हथेली में शनि के हैड-क्वार्टर से ऊपर सूर्य की तरफ बुध के पर्वत को जाती है यानि सूर्य का प्रभाव बुध (मस्तिष्क) में पहुँचाने जाती है । इस रेखा का हाथ में न होना कोई बुरा प्रभाव नहीं देता बल्कि उत्तम स्वास्थ्य का द्योतक है । हाथ में इस रेखा का होना उत्तम स्वास्थ्य के अतिरिक्त आयु, सिर और दिल रेखा की टूट फूट के बुरे प्रभावों से बचाता है । सेहत-रेखा चन्द्रमा और मंगल-बद को हथेली से अलग करती है । शनि के पर्वत का अधिक ऊँचा न होना या हाथ में शनि रेखा का न होना

भी उत्तम स्वास्थ्य दर्शाता है ।

मोटा शरीर और स्वास्थ्य दो अलग-अलग बाते है परन्तु यह सब सेहत से संबन्धित है । हाथ के नाखून सेहत की अच्छाई या बुराई व अन्य परिणामों को नौ महीने पहले ही ज़ाहिर करे देते है । जिस जगह यह रेखा उमर रेखा से जाकर मिलती है वह जगह सेहत का आखिरी या उमर-रेखा का आखिरी समय या मृत्यु का स्थान है ।

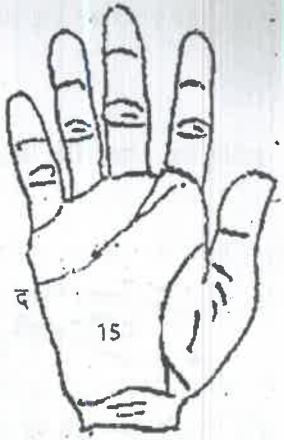

(14) सेहत रेखा, सिर रेखा, उमर रेखा से बड़ी त्रिकोण त :- हथेली के मध्य में सेहत, उमर और सिर रेखा एक त्रिकोण बनाती है । इस त्रिकोण के कोण यदि स्पष्ट हों तो:-

(1) सेहत रेखा- उमर रेखा कोण - चित्त की दृढ़ता बताता है ।

(2) सेहत रेखा- सिर रेखा कोण - उत्तम स्वास्थ्य बताता है।

(3) उमर रेखा - सिर रेखा कोण - दूसरों से सहानुभूति, माता-पिता की आपसी अनुकूलता या माता-पिता के होने के सुख-सागर का पता देता है ।

सेहत रेखा बुध से चलकर शुक्र की जड़ में समाप्त हो तो धन दौलत खूब आवे । व्यापार में लाभ हो । सूर्य ग्रहण के समय भी सूर्य का उत्तम प्रभाव बना रहे ।

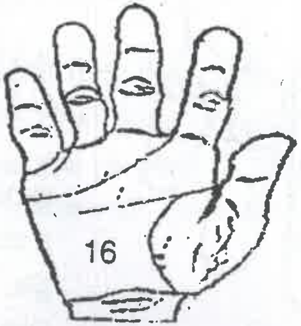

(15) दिल रेखा दो शाखी दिल व आयु रेखा - (चन्द्रमा) और

उमर रेखा (शनि) का अन्त में दो-शाखी होना या इन दोनों के साथ < मंगल का मिलना बुढ़ापे में सेहत के हल्के होने का शक है । यानि बुढ़ापे में आँखों की कुछ कमी या कमज़ोरी होगी । क्योंकि उमर रेखा का तो स्वामी ही शनि है और दिल रेखा का आखिर भी शनि के चरणों में शनि के घर या शनि के पर्वत पर होता है । और शनि आँख का स्वामी है । मंगल दृष्टि (नज़र) का स्वामी है । मंगल आरम्भ में फल दे चुका है । और शनि ने आखिर पर असर देना है । वैसे भी शनि और मंगल बराबर के है । चन्द्रमा तो मित्रता करता है पर मंगल चन्द्रमा से कोई मित्रता नहीं करता । इसलिये इन दोनों रेखाओं के आखिर पर दो-शाखी होने से दृष्टि या नज़र में कदरे कमज़ोरी हो सकती है । उमर रेखा के आखिर पर की दो-शाखी से तो नज़र की खराबी निश्चित ही है ।

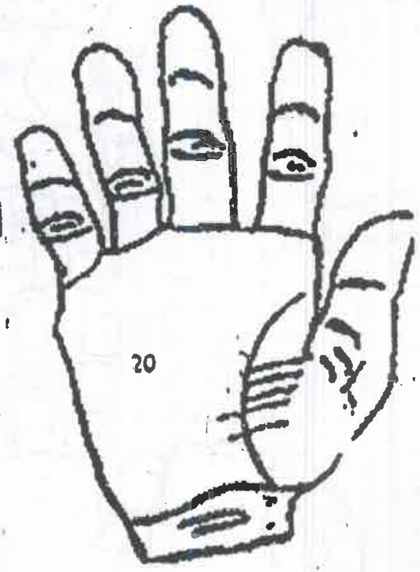

(16) दिल, सिर या उमर रेखा पर शनि का आँखों का निशान विसर्ग (:) आँखों के रोग या अंधापन ज़ाहिर करता है । विसर्ग जब उमर रेखा पर शुक्र के पर्वत पर हो तो स्त्री को झगड़ों से जीवन नष्ट हो ।

(17) उमर-रेखा में जज़ीरा (द्वीप) .... बीमारी (मंगल-बद)

लाल रंग के निशान .... शारीरिक दुर्बलता (सूर्य)
पीले रंग के निशान .... प्राकृतिक दुर्बलता (बृहस्पति) ।
नीले रंग के निशान ...... ईर्ष्या व वैर । राहु ।
सफेद रंग के निशान ...... सिर और आँखों के रोग (चन्द्रमा)

(18) उमर रेखा यदि बहुत चौड़ी और लाल रंग की हो तो शारीरिक बल उत्तम होवे ।

(19) उमर रेखा यदि चौड़ी और पीले रंग की हो तो रोग व अपवित्र विचारों को बतलाती है ।

(20) शुक्र के पर्वत पर उमर रेखा को काटने वाली लकीरें रोग की आशंका दर्शाती है । सेहत रेखा जिस स्थान पर खराब या टूटी फूटी हो, रोग का वह समय होगा ।

सेहत रेखा यदि दिल रेखा से मिल जाये तो मानसिक आघात होंगे ।

(21) सूर्य के पर्वत पर सीधे ख़त (रेखायें), चक्र, शंख, सदफ (सिप्पी) त्रिकोण, चौकोर आदि अन्य ग्रहों का वर्णन पहले हो चुका है ।

(22) चन्द्रमा के पर्वत पर सूर्य रेखा यात्रा ज़रुर ज़ाहिर करती है ।

(23) शुक्र के पर्वत पर सूर्य रेखा यात्रा से वापिसी बतायेगी ।

फ़रमान नम्बर - 135

पर्वत-सूर्य का प्रभव - ख़ाना नं० (1)

(1) दुनिया का लाभ (धन की आमद), राज दरबार से शुभ संबन्ध, जीवन स्तर उत्तम, सांसारिक मान सम्मान, हर जगह उन्नति व प्रगति, शरीर और सेहत उत्तम, अन्त तक सब शारीरिक अंगों की शक्ति क़ायम, सम्पत्ति वाला, यात्रा से संबन्ध व यात्रा से लाभ, आत्मिक शक्ति का शुभ प्रभाव, दुनिया का ईमानदार (पैसे धेले का संबन्ध), स्वयं सच्चा व सत्य-प्रिय, न काला न गोरा रंग ।

पहली संतान लड़का होगी जिसका जन्म समय दिन का या आधी रात के बाद प्रातः की ओर होगा । भलाई के काम में सबसे आगे होगा । निर्बल का सहायक । गन्दी प्रेम क्रियाओं से घृणा करने वाला होगा । पिता का प्यार का साया देर तक कायम रहे । संतान की संख्या थोड़ी, गिनती की ही होगी । स्वभाव में साँप को क्रोध होगा । यानि सुनने की बजाए देखने पर भरोसा करेगा । (साँप के कान नहीं होते ; आँखों से ही कान का काम लेता है।) दिल-रेखा के ठीक होने पर शुक्र का बुरा प्रभाव न होगा ।

(2) नीच अवस्था

सूर्य स्वयं नीच नहीं हो सकता परन्तु नीच ग्रह से नीचों का पड़ोसी अवश्य हो सकता है । शुक्र के संबन्ध से स्त्री-भोग रत व कुकर्मी होगा । शनि के संबन्धा से झूठ का पुतला बनेगा और कृतघ्न भी होगा । निर्धन कंगाल होगा । राहु के प्रभाव में मस्तिष्क की गड़बड़, पागलपन आदि होंगे । किस्मत रेखा या सूर्य रेखा के अभाव में आत्मघात कर लेगा । पर फ़क़ीर नं० 3 (एक फ़कीरी लेख दी, दूजी फ़कीरी भेष दी और तीजी फ़क़ीरी मुड़-मुड़ बेख़दी) न बनेगा । साँप को दूध ही पिलाएगा । शनि (काला साँप) का पिता ही कहलाता चला आया है । और कहलाता आएगा । (शनि सूर्य का पुत्र है ।)

(3) सूर्य पिता की सब कमाई अपनी पैदा की हुई सम्पत्ति व धन दौलत होगी । वह न वृहस्पति की आशा रखेगा और न शनि की सहायता ढूँढेगा । यानि न वृहस्पति पिता और शनि बेटा का भरोसा रेखेगा । स्वयं ही सब अर्जित करेगा । और धन पायेगा । लाल ताँबे के समान (यह सूर्य का रंग है) जितनी चोटें खाएगा उतना ही बढ़ता चला जायेगा । सूर्य क़ायम वाले को जितना कोई दबाएगा, वह उतना ही और ऊँचा हो जाएगा । अर्थात इसको नष्ट करने के अभिप्राय में मारने वाला स्वयं ही नष्ट हो जाएगा । और नीच सूर्य वाला बिना किसी को मारने के ही अपने आप को मारेगा । क्योंकि स्त्री-आशक्ति सूर्य पर शुक्र का प्रभाव गिना गया है ।

फ़रमान नम्बर - 136

सूर्य का सितारा

कुण्डली में ख़ाना नं० (1) सूर्य के पर्वत पर बुध की ओर :-

धनवान, राजदरबार से शुभ संबन्ध । उत्तम सूर्य का पूरा लाभ । चूँकि यह सितारे का आकार * चक्र से संबन्ध रखता है और हथेली पर स्थित है, इसलिये झगड़ा-रगड़ा तो अवश्य पैदा करेगा । जिस पर्वत पर यह आकार होगग उसे प्रभावित करेगा। चक्र और सितारा के प्रभाव में अन्तर यह है कि चक्र का प्रभाव-स्तर सितारा से कम होगा । सितारा सदैव अपने लिये शुभ होगा । झगड़ा सूर्य के पर्वत पर होने के कारण राजदरबार से होगा और सदैव अपने से बड़े से होगा । परन्तु निर्णय सदा ही इसके पक्ष में होगा ।

यदि सूर्य का सितारा सूर्य के पर्वत पर बुध की ओर न होकर शनि की ओर हो तो निर्णय की अपने पक्ष में ही होने का पूरा आश्वासन न होगा; क्योंकि शनि शत्रु है ।

यदि सितारा पूरा न होवे, तो आयु के जिस वर्ष की आमदन पता करनी हो, उतने साल की आयु से 21 घंटा दें क्योंकि 22 साल से सूर्य का प्रभाव होना माना गया है । घटाने पर शेष को 10 से गुणा करें । उत्तर मासिक आय होगी । यह प्रभाव 22 वर्ष तक स्थिर रहेगा । पूरे सूर्य का प्रभाव कम से कम 22 × 22 रुपये मासिक होगा ।

यह सूर्य का सितारा जितना ऊपर अनामिका की जड़ (या कन्या राशि जो केतु का घर है।) की ओर होता जाये उतना ही इसका प्रभाव कम हो जाए । क्योंकि केतु सूर्य को मध्यम करता है ।

सितारा के क़ायम होने से सूर्य मेख राशि का होगा। इसकी आयु 90 वर्ष की होगी। चाहे सूर्य सिंह राशि (5) के घर का स्वामी है और इसे कोई भी नीच या उच्च नहीं कर सकता (आयु 100 वर्ष) तो भी उच्च का सूर्य मेख का है। इसलिये आयु कम से कम वर्ष 90 अवश्य होगी। परन्तु मृत्यु अकस्मान ही होगी।

शरीर व ग्रह का संबन्ध

शत्रु पार्टी	शनि, सूर्य, शुक्र, वृहस्पति, बुध, चन्द्रमा, केतु, मंगल-बद
मित्र पार्टी	सूर्य, चन्द्रमा, वृहस्पति, मंगल-नेक, राहु, बुध, शनि, शुक्र

ग्रहों में उपरोक्त शत्रु पार्टी के ग्रह क्रमशः एक दूसरे के शत्रु है जिनका नेता राहु है।
ग्रहों में उपरोक्त मित्र पार्टी के ग्रह क्रमशः एक दूसरे के मित्र है जिनका नेता केतु है।

अर्थात राहु सिर का नेतृत्व, केतु पाँव चक्र का स्वामी है।

मनुष्य शरीर में :- जिगर (मंगल), दिल (चन्द्रमा), धड़ (केतु) के सलाहकार है। मस्तिष्क व जिह्वा (बुध), देखना भालना (शनि) सिर (राहु) के सलाहकार है। सिर (राहु) धड़ (केतु) दोनों को मिलाने वाली गर्दन के साँस का स्वामी वृहस्पति है। अतः वृहस्पति व्यष्टि में शरीर और समष्टि में जगत यानि लोक और (दिव्य जगत=सारे ग्रहों की साँझी शक्ति) पर लोक का स्वामी है। इसी कारण वृहस्पति किसी से भी शत्रुता नहीं करता।

फ़रमान नम्बर - 137

सूर्य के निशानों का प्रभाव

सितारा सूर्य का

ख़ाना नं० (1)

(1) सूर्य के पर्वत पर :- जुदा सविस्तार वर्णित है।

(2) कुण्डली में मेष राशि पर :

मेष राशि- घर का स्वामी मंगल जो सूर्य का मित्र है । स्वयं सूर्य इसको उच्च करता है । शनि नीच करता है जो सूर्य का शत्रु है । मंगल–नेक के प्रभाव से धनवान व सम्पत्ति वाला होगा । और हर प्रकार से उत्तम परन्तु शनि की शत्रुता की अवधि में 15 साल शारीरिक कष्ट होगा ।

ख़ाना नं० (2)

(1) वृहस्पति के पर्वत पर :-

धनवान, धर्मार्थ मन्दिर, कूएँ और भवन निर्माण करवाये । पुरानी परम्पराओं का पोषक, सेना का नेता, शुभ प्रसिद्धि । सूर्य का सितारा यदि तर्जनी की जड़ में हो तो स्त्री–प्रेम में रत, स्वार्थी व कामुक हो । यानि बहुत बड़ा वृहस्पति शुक्र का प्रभाव उत्पन्न करता है । यदि सूर्य का सितारा भी साथ में हो तो स्त्री–प्रेम व कामुकता चरम सीमा पर पहुँचती है । परन्तु वृहस्पति व सूर्य मित्रता में है । इसलिये यह कामुकता भगवद्–प्रेम में शीघ्र बदलती है । फिर प्रेम गन्दा न होगा ।

(2) कुण्डली में बृष राशि पर :-

बृष राशि - बैल का आकार । घर का स्वामी शुक्र बैल–जो वृहस्पति का शत्रु है । प्रभाव में-वृहस्पति का पर्वत सूर्य का मित्र है । चन्द्रमा उच्च करता है जो सूर्य का मित्र ही नहीं अपितु उसी से प्रकाश प्राप्त करता है । वृहस्पति के घर को सूर्य उच्च करे तो दोनों के होने से इस राशि को नीच कोई नहीं कर सकता । सूर्य का रथ शुक्र के बैल को सदा अपने आराम में लगाये रखेगा । या शुक्र–बैल सदा अपनी गर्दन नीची किए रहेगा । इसलिये चौपाया का सुख होगा । जब कभी (1) सूर्य मध्यम हो (2) सूर्य रेखा वृहस्पति पर गई मध्यम हो (3) या सूर्य का सितारा तर्जनी अँगुली की जड़ में मिथुन राशि (जिसे राहु उच्च कर रहा हो) स्थित हो तो कामुक शुक्र और राहु का पूरा बुरा प्रभाव होगा । और 17 वर्ष हानिकारक होंगे ।

ख़ाना नं० (3)

(1) मंगल के पर्वतों पर :-

दोनों ग्रह मित्र है । बिना सूर्य के मंगल को मंगल-बद या अशुभ मंगल कहा है । दोनों का प्रभाव अपना-अपना और मंगल-नेक का उत्तम व मंगल-बद का नेष्ट होगा । मगर सूर्य का प्रभाव उत्तम व प्रबल होगा ।

सूर्य के सितारा का प्रभाव मंगल-नेक पर बहुत उत्तम होगा । सूर्य के सितारा के मंगल पर होने से व्यक्ति युद्ध-प्रिय, दयाहीन, दुराचारी हो । यदि सितारा हथेली के अन्दर की ओर हो तो युद्ध व संघर्ष में ही मारा जाये ।

(2) कुण्डली में मिथुन राशि पर :-

मिथुन राशि- पुरुष-स्त्री का जोड़ा । घर का स्वामी बुध है । जो सूर्य के समय बिल्कुल चुप-चाप रहेगा । राहु जो सूर्य का शत्रु है स्वयं इसे नीच करता है । केतु जो सूर्य को मध्यम करता है मगर राहु का मित्र है, इसे नीच करता है । इस का संबन्ध मामों से होगा । इसलिए स्वयं गणित व ज्योतिष विद्या में प्रवीण होवे । सूर्य के बगैर मंगल को मंगल-बद गिना है जो बुरा फल देगा ।

ख़ाना नं० (4)

(1) चन्द्रमा के पर्वत पर :-

दोनों ग्रह परस्पर मित्र है । सूर्य उत्तम प्रबल होगा । चन्द्र का प्रभाव भी उत्तम होगा । परन्तु दिखाई बाहर सूर्य का अधिक लगे। राजदरबार से सम्मानित हो । यदि सितारा चन्द्रमा के पर्वत के ऊपरी भाग में हो तो किसी आविष्कार का प्रणोता हो । बहुत लाभ हो ।

(2) कुण्डली में कर्क राशि पर :-

कर्क राशि - आकार केकड़ा - घर का स्वामी चन्द्रमा जो सूर्य का मित्र ही नहीं बल्कि प्रकाश पाने के लिए सूर्य का भिखारी भी है । मंगल नीच करता है जो सूर्य का मित्र है । वृहस्पति उच्च करता है जो सूर्य का मित्र है । यानि सबके संब मित्र । इसलिये चन्द्रमा से सूर्य का रुख करने वाली सभी रेखायें समुद्र की सीप में मोती उत्पन्न करेंगी । लेकिन रेखा यदि मंगल-बद में निकलेगी तो 15 वर्ष ही धन न होने से पीड़ित होगा ।

ख़ाना नं० (5)

(1) कुण्डली में सिंह राशि पर :-

सिंह राशि - शेर नर - सूर्य का अपना घर और वृहस्पति के प्रभाव का ख़ाना जिसे कोई उच्च-नीच नहीं कर सकता । इसलिए दो बलवान सबसे उत्तम फल देंगे । दोनों परस्पर मित्र है । सो, व्यक्ति परोपकारो होगा और राजदरबार से शुभ संबन्ध होगा । यदि सूर्य-रेखा शनि की ओर स्थित हो तो 9 साल भय व हानि की आशंका रहे । (शनि शत्रु) । पहली अवस्था में बुढ़ापा उत्तम व संतान सुख पूरा होगा ।

ख़ाना नं० (6)

(1) कुण्डली में कन्या राशि पर :-

कन्या राशि - आकार कन्या का - घर का स्वामी बुध है जो सूर्य के समय चुप रहता है । इस घर में केतु का निवास है जो सूर्य को मध्यम करता है । राहु (सूर्य को सूर्य ग्रहण) और बुध (सूर्य के समय चुप) ऊँच करते है । शत्रु ग्रह राहु स्वयं इसकी सहायता पर है । इसलिये सूर्य का फल ख़राब होगा । राहु केतु का भी मित्र है । इसलिए राजदरबार से लाभ न होगा । मगर ऐसा बुरा नहीं । शुक्र स्वयं सूर्य से नीच हो जाता है। इसलिए केवल 3 वर्ष खूब आराम से निकलेंगे । सामूहिक रूप से कोई ऐसा बुरा प्रभाव न होगा । मगर मामों की ओर खराब होगा । स्त्री को सुख कम होगा ।

ख़ाना नं० (7)

(1) शुक्र के पर्वत पर :-

सूर्य शुक्र को नीच करता है । परन्तु शुक्र सूर्य को नीच नहीं कर सकता । शुक्र के पर्वत पर उमर रेखा जो पर्वत के किनारे वृहस्पति या वृहस्पति की जड़ से निकली हो अति शुभ है । युक्ति प्रवीण मंगल मंत्री हो । यदि शुक्र पर सितारा अँगूठे की जड़ में हो तो स्त्री का सुख हल्का हो । और पराई ममता या मुसीबत गले लगी रहे । परन्तु अपने लिये उत्तम प्रभाव वाली हो । लाजवन्ती (Touch-me-not) के पौधे की तरह तर्जनी की पहली पोरी (मेख-उत्तम सूर्य) लगते ही मुर्झा जायंगी । अर्थात लाजवन्ती की तरह स्वयं अपनी लाज बचाने वाली स्त्री सुखी रहे । दूसरी को सुख न होगा ।

(2) कुण्डली में तुला राशि पर :-

तुला राशि - तराज़ू के दो पलड़ों में शुक्र व बुध जिनमें से बुध तो चुप और शुक्र सूर्य से स्वयं नीच हो जाता है । शान उच्च करता है जो सूर्य का शत्रु है । सूर्य स्वयं इसे नीच करता है । इसलिए औरत को 25 साल ही या औरत (स्त्री) का 25 वर्ष ही सुख हल्का होगा ।

विशेषः- बुध के पर्वत पर सूर्य के सितारा का प्रभाव :- दोनों ग्रह बराबर के है । मगर बुध अपनी शक्ति सूर्य को ही दे देता है ओर अपने समय के आधे तक बिल्कुल चुप रहता है । दोनों का अपना-अपना और उत्तम फल होगा । धन अधिक परन्तु बुद्धि चुप (मन्द) रहेगी। और कम प्रतीत होगी । यदि सितारा कनिष्ठिका की जड़ में हो तो लोगों में उसके प्रति अविश्वास और लघुता की भावना रहे । यह इस कारण कि बुध की जड़ धनु राशि है और वृहस्पति इसका स्वामी है । वृहस्पति की चमक में बुध लघुता को प्राप्त होगा ।

निष्कर्ष :- सूर्य के ज़ोर के कारण बुध या बुद्धि चुप रहे । धन तो अवश्य होगा पर बुद्धि कम होगी । स्त्री धन अधिक हो व स्त्री सम्पन्न परिवार की हो । यदि सितारे का निशान कनिष्ठिका की जड़ में हो तो धनु राशि वृहस्पति व बुध शत्रु होगे । अविश्वास (लोगों में) बढ़े । यदि सूर्य से बुध को रेखा हो तो संतान बर्बाद हो ।

ख़ाना नं० (8)

(2) कुण्डली में वृश्चिक राशि पर :-

वृश्चिक राशि । आकार बिच्छू का । राशि के घर का स्वामी मंगल । वह सूर्य का मित्र है । और बिना सूर्य के मंगल को मंगल-बद कहा है । चन्द्रमा नीच करता है वह भी सूर्य का मित्र है । यह राशि वास्तव में प्रभाव के लिये शनि का स्थान है जो सूर्य का शत्रु है । इसलिये झगड़े की जड़ होगा । वैसे भी यह घर शनि और मंगल-बद दोनों का साँझा है । इसलिये अदालतों के झगड़ें के कष्ट से मृत्यु होवे । परन्तु सूर्य स्वयं (अपना शरीर) मारक स्थान का न होगा । अब सूर्य से यह ख़ाना मंगल-बद न होगा । मंगल नेक का असर देगा ।

खाना नं० (9)

(2) कुण्डली में धनु राशि पर :-

धनु राशि – नील गाय – घर का स्वामी वृहस्पति जो सूर्य का मित्र है । केतु उच्च करता है । इसने सूर्य को मध्यम करना था । राहु नीच करता है । इसने सूर्य को ग्रहण करना था । अर्थात धन का बहुत व्यय परिवार कल्याण पर होगा । और राज दरबार से संबन्ध न होगा । ऐसा व्यक्ति त वैद्य होगा और परोपकारी भी परन्तु राहु के समय धर्म-विश्वास का कच्चा होगा ।

ख़ाना नं० (10)

(1) शनि के पर्वत पर :-

दोनों ग्रह आपस में शत्रु है । दोनों का अपना-अपना पर शनि का बुरा फल होगा । धनवान तो बहुत होगी परन्तु प्रसिद्धि अच्छे की न होगी । बुरी होगी । अपने कार्यों को स्वयं ही बिगाड़ता फिरेगा । यदि एक की बजाये दो सितारे हों तो अकारण पाप-अभियोग से मारा जायेगा । (शनि नीच) ।

(2) कुण्डली में मकर राशि पर :-

मकर राशि – आकार मगर-मच्छ । स्वामी शनि और शनि का ही पर्वत । शनि सूर्य का शत्रु है । मंगल जो सूर्य का मित्र है इस राशि को उच्च करता है । वृहस्पति भी सूर्य का मित्र है परन्तु वह इसे नीच करता है । वृहस्पति शनि का भी मित्र है इसलिये सूर्य और शनि का झगड़ा प्रबल होगा । मंगल शनि का शत्रु है परन्तु शनि मंगल से शत्रुता नहीं करता अपितु मित्रता बर्तता है । इसलिये उच्च कौन करेगा ? अतः धन कम व 19 साल पिता का सुख हल्का हो । पिता से बिछोड़ा भी हो ।

ख़ाना नं० (11)

(2) कुण्डली में कुम्भ राशि पर :-

कुम्भ राशि – पानी का घड़ा । घर का स्वामी शनि है । शनि सूर्य का शत्रु है । यह घर प्रभाव के लिये वृहस्पति का स्थान है और वृहस्पति सूर्य का मित्र है । अब शनि, सूर्य व वृहस्पति तीनों इकट्ठे होंगे । धन दौलत तो खूब आवे पर शनि के प्रभाव से झूठ का पुतला होवे ।

ख़ाना नं० (12)

(2) कुण्डली में मीन राशि पर :-

मीन राशि – मछली का आकार । घर का स्वामी बृहस्पति है जो सूर्य का मित्र है । इस घर में राहु का भी निवास है । राहु सूर्य के संबन्ध से सूर्य-ग्रहण उत्पन्न करता है । बुध (सूर्य के समय सूर्य का साथ देने वाला) और राहु (सूर्य-ग्रहण) इसको नीच करते है । शुक्र और केतु (दोनों ही सूर्य के शत्रु) उच्च करते है । इसलिये सूर्य-ग्रहण होगा । शुक्र के पर्वत के भाग से आरम्भ हुई सूर्य की सेहत व तरक्की रेखा यदि सूर्य और बुध के मध्यभाग में चली जावे तो धन दौलत ख़ूब आवे । व्यापार में भी लाभ परन्तु हस्त-क्रियाओं से होने वाली आय में तो सूर्य-ग्रहण ही होगा ।

****

फरमान नम्बर – 138

चन्द्र का समुद्री हवाई घोड़ा

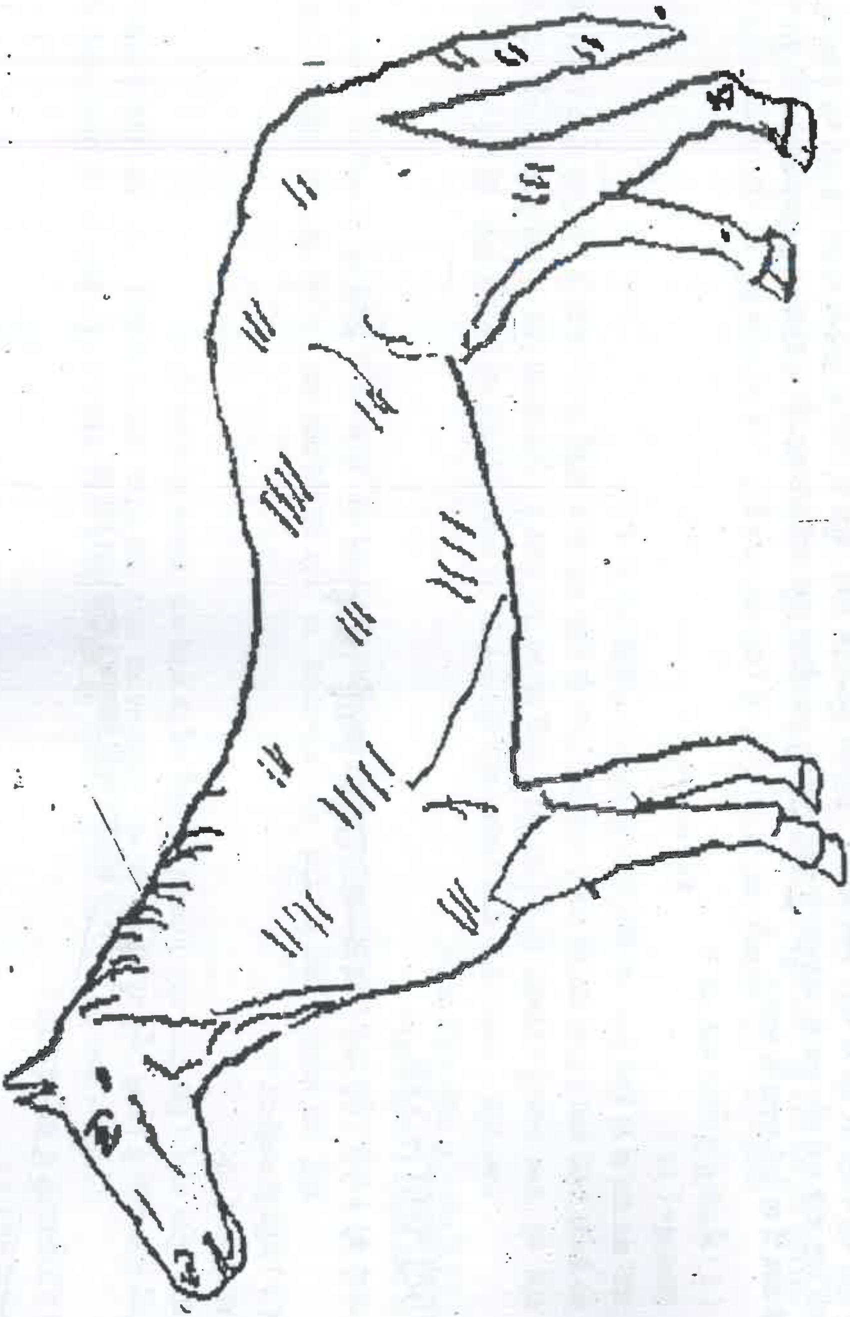

चन्द्र का सफेद रंग (दूध) समुद्री व हवाई घोड़ा अपनी शक्ति की अधिकता के कारण केवल युद्ध –भूमि में स्वामी की मृत्यु और भोजन में कंकर आने पर संसार में केवल तीन बार जागा। इसीलिये नव ग्रह व बारह राशि की नव निधि व 12 सिद्धि का स्वामी हुआ। (मनुष्य की पैदायश 7 महीने, घोड़े की पैदायश 12 महीने ।)

चन्द्रमा

1. सूर्य आकाश पटल पर दृष्टि से ओझल हुआ तो रात आई । आग बुझने और सर्दी उभरने लगी । घबराहट समाप्त हुई और शांति आने लगी । चन्द्रमा चमक रहा है । दिन के थके हारे सोने लगे । रात के आरम्भ में राहु और अन्त पर केतु है । रात में चन्द्रमा का राज है । राहु इसे मध्यम और केतु का कुप्रभाव पाँव पर होता है । कई प्रकार के अनिष्ट होने लगे । चकवा-चकवी चन्द्रमा के भक्त सारी रात ही केतु के कुप्रभाव से एक दूसरे को ढूँढते-ढूँढते रात को समाप्त कर बैठे । आपस में मेल न हो पाया । शनि का साँप, जिससे चन्द्रमा शत्रुता करता है, केतु के प्रभाव व चन्द्रमा की शत्रुता से अपने कान ही लोप करवा चुका है । और वंशी और वीणा की ध्वनि पर मस्त होकर अपनी मृत्यु को टटोलता है परन्तु चन्द्रमा ने इसकी आँखों को ही सुनने की शक्ति प्रदान करवा दी है । इसी कारण साँप के स्वयं मरने व साँप के मारे हुये की आयु चार दिन तक शंकालु है । चन्द्रमा ने चकवे-चकवी का बीज-नाश नहीं होने दिया और आज तक चकवी अपने नर के मिले बिना ही चन्द्रमा के दिनों में अण्डे देते चली आई है। अर्थात उच्च चन्द्रमा वालों का वंश कभी नाश को प्राप्त नहीं होता । जिस प्रकार चन्द्रमा सूर्य से प्रकाश ग्रहण करता है वैसे ही चन्द्रमा चन्द्रगा-रेखा वालों को पैतृक सम्पत्ति व धन से निहाल कर देता है ।

1. चन्द्रमा का शत्रु केवल केतु है । यदि शत्रुता करता है तो चन्द्रमा स्वयं ही करता है । सिर की श्रेष्ठ-रेखा चन्द्रमा के बुरे प्रभाव से बचाती है ।

फ़रमान नम्बर - 139

चन्द्रमा के पर्वत पर रेखा और चन्द्रमा की अपनी रेखा दिल-रेखा

1. म - मुहब्बत रेखा

द - दिल रेखा

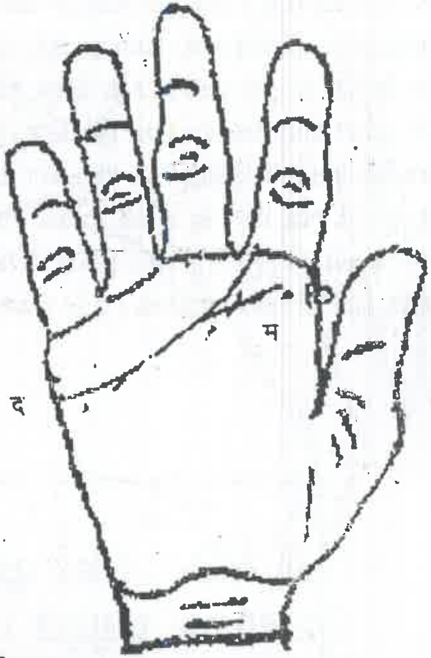

दिल का स्वामी चन्द्रमा है जो सूर्य से प्रकाश लेता और संसार में सूर्य के साम्राज्य में उपाध्यक्ष के पद पर आरुढ़ है । सूर्य चाहे कितना ही गर्म होकर आज्ञा दे चन्द्रमा टसे ठण्डे दिल व शाँति से उस आज्ञा का पालन करता है और सदा ही सूर्य के पाँव में रहना चाहता है । चन्द्रमा का घर हथेली में बेशक सूर्य से दूर है पर दिल-रेखा या दिल का शांति सरोवर सदैव सूर्य के चरणों में ही रहता है । स्त्री (शुक्र), माता (चन्द्रमा), साले और बहनोई (मंगल नेक) और अपने भाई (मंगल बद), गुरु और पिता (वृहस्पति) सबके सब ःसदिल दरिया या चन्द्रमा-रेखा की यात्रा को आते है । जिससे सूर्य की चमक से दबी अ ों (शनि) बुद्धि (बुध) को शांति व ठण्डक (चन्द्रमा का प्रभाव) मिलती है । दूसरे शब्दों मेंकह सकते है इस दरिया या दिल-रेखा के एक किनारे संसार के सब बन्धु बान्धव और दूसरे किनारे मनुष्य की अपनी आत्मा व शरीर (सूर्य) और आँखें व सिर (शनि व बुध) बैठे है ओर दिल रेखा इन दोनों किनारों के बीच बहती हुई दोनों पक्षों को शांति प्रदान करती हुई आयु को बढ़ा रही है । यह भी कह सकते है कि मनुष्य के शरीर को

वृहस्पति की हवा के सांस से गतिशील रेखने वाली वस्तु यह दिल रेखा ही है। इसीलिये कई सामुद्रिक-विशरदों ने दिल रेखा को आयु रेखा भी माना है। और इसके स्वामी चन्द्रमा की चाल से आयु के वर्षों की सीमाएँ भी निर्धारित की है।

2. दिल रेखा पर त्रिकोण : यदि सूर्य के पर्वत पर स्थित सूर्य-रेखा की जड़ में स्थित त्रिकोण दिल रेखा के ऊपर भी हो तो इसका आशय दिल की शक्ति के अधिक **व प्रभावी होने** से है। फिर यह शक्ति चाहे भले में लगे चाहे बुरे में। हर एक स्थिति में ऐसी रेखा वाले में स्वाभिमान व साहस प्रचुर मात्रा में होगा। या फिर वह आक्रामकों के कृत्यों का **डट** कर मुकाबला करने में सहज ही में सक्षम होगा।

3. दिल रेखा दो शाखी :- इसी तरह दिल-रेखा समाप्ति पर दो-शाखी हो जाये तो ऐसा व्यक्ति क्रोधी मन वाला (मंगल का दिल), प्रभाव युक्त और राजनैतिक संबन्धों से लाभ उठाने वाला होगा। बुढ़ापे में स्वास्थ्य आँखों की दृष्टि के संबन्ध से थोड़ा हल्का होने की आशंका भी रहेगी।

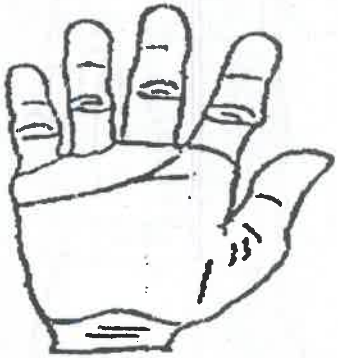

4. दिल रेखा के अन्त पर त्रिकोण

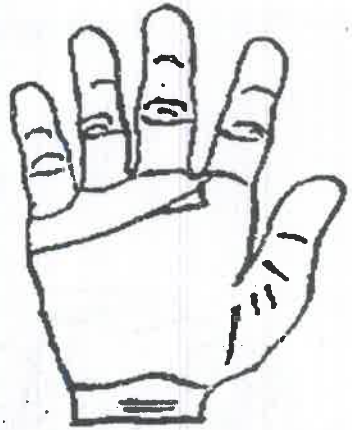

यदि दिल रेखा की समाप्ति पर त्रिकोण हो तो सरकारी सेवा व प्रभाव में क्रोध का अंश होना आवश्यक है ।

(शनि व मंगल बद)

5. दिल रेखा के अन्त पर चौकोर

यदि त्रिकोण की बजाए दिल रेखा की समाप्ति पर चौकोर ◻ हो तो राज्य-कोष से धन की प्राप्ति अवश्य होवे ।

6. **वृहस्पति पर मुहब्बत रेखा म :**

यदि दिल रेखा वृहस्पति के पर्वत पर समाप्त हो तो दिल रेखा का वह भाग जो वृहस्पति के पर्वत में चला गया है । मुहब्बत या प्रेम रेखा के नाम से जाना जाता है । इसका सविस्तार वर्णन वृहस्पति के पर्वत में हुआ है । हाथ

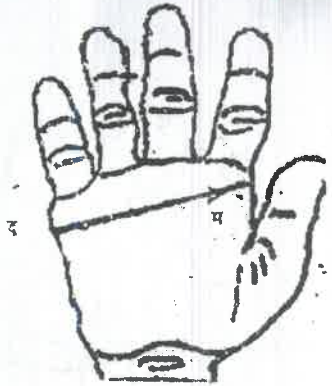

7. **दिल रेखा से ऊपर नीचे जाती शाखे :-**

दिल-रेखा से ऊपर को निकलने वाली शाखें उन्नति व सद् प्रभाव की द्योतक है परन्तु नीचे की ओर निकलने वाली शाखें अवनति व कुप्रभाव को बताने वाली होगी ।

दिल-रेखा की शाखें

8. **वृहस्पति से :-**

वृहस्पति पर जाती दिल रेखा :

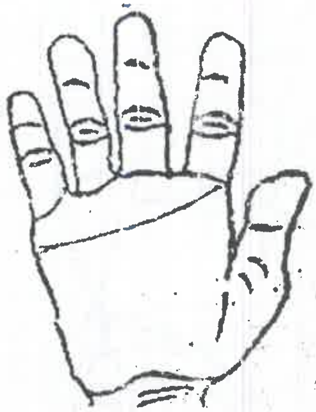

दिल रेखा चूँकि वृहस्पति की ओर ही चलती है इसलिये इसे 'वृहस्पति से शाख' नहीं कहा जा सकता । इसके उल्ट वृहस्पति पर समाप्त होने वाली दिल-रेखा का वृहस्पति पर का भाग मुहब्बत रेखा कहलाता है । इसका वर्णन पहले हो चुका है ।

9. **शनि से :-**

शनि से शाख दिल रेखा को

ऐसा व्यक्ति पराई स्त्रियों की सेवा (विधवाओं की साँसारिक कर्त्तव्य समझकर) या स्त्रियों से प्रेम व कामुकता में अपने धन का व्यय करेगा या धन नष्ट करेगा । चन्द्रमा शनि से शत्रुता करता है । चन्द्रमा और शनि में साँप को दूध पिलाना शुभ है । चन्द्रमा प्रभावी होगा और शनि प्रभाव कम होगा । कूएँ में दूध डालने से चन्द्रमा का अपना निजी प्रभाव उत्तम होगा ।

10. एक शाख वृहस्पति को दूसरी शनि को

यदि एक शाख दिल-रेखा की वृहस्पति पर और दूसरी शनि पर हो तो ऐसे व्यक्ति की मित्रता से सभी को होवे ।

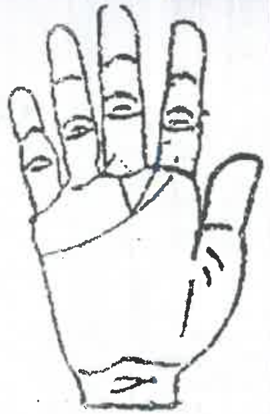

11. सूर्य से :-

सूर्य से शाख दिल रेखा पर

दिल की शक्ति पर सूर्य का शुभ प्रभाव होगा ।

12. बुध से :-

बुध से शाख दिल रेख पर

बुध से आई रेखा यदि दिल रेखा से मिल जाये तो मानसिक आघात होगे ।

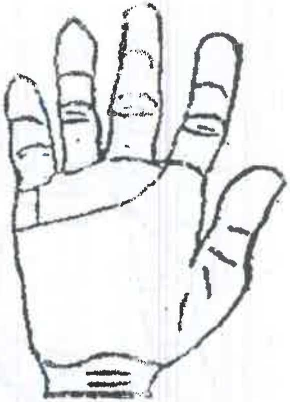

13. सिर रेखा से :-

सिर रेखा से शाख दिल रेखा पर

ऐसा व्यक्ति खूनी हत्यारा होगा । (चन्द्रमा बुध शत्रु)

14. चन्द्रमा से :-
चन्द्रमा से शाख दिल रेखा को
चन्द्रमा का उत्तम व शुभ फल होगा ।

15. शुक्र से :- स्त्रियों के प्रेम से ग्रसित ।
शुक्र से शाखे दिल रेखा को

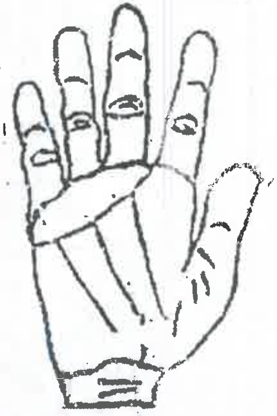

16. मंगल नेक से :-

मंगल नेक से शाख द को
सांसारिक संबन्धों से सहयता मिले ।

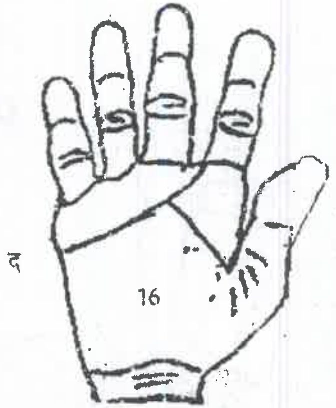

17. मंगल बद से :-

मंगल बद से शाख द को
दुख, शरीरिक कष्ट व वैर विरोध हों ।

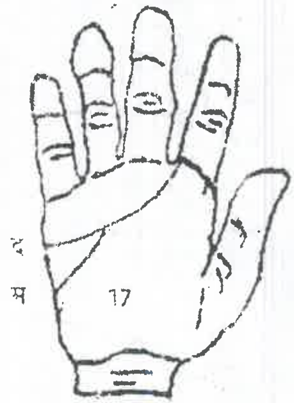

18 (अ) :

जब दिल रेखा परस्पर मिल जायें ।

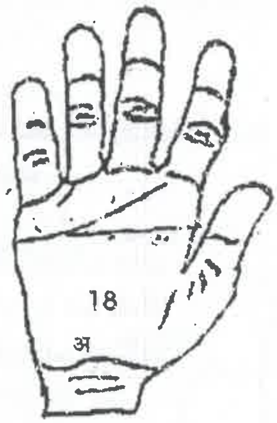

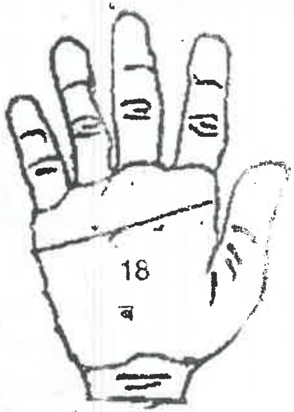

18 (ब) : दोनों रेखाएँ एक ही प्रतीत हो ।

18 (ज) : दिल रेखा और गृहस्थ रेखा कनिष्ठिका के पास मिल जायें ।

18 (द) :

गृहस्थ रेखा से शाख द को मध्यमा के पास
दिल रेखा और गृहस्था रेखा मध्यमा
के पास मिल जायें ।
तो व्यक्ति की मृत्यु मानसिक आघात से होगी ।

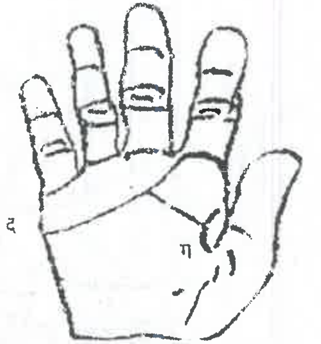

19 (अ) :यदि दिल रेखा स्वस्थ व टूटी फूटी न हो तो शुक्र का बुरा प्रभाव कभी न होगा ।

19 (ब) :यदि सिर रेखा स्वस्थ व टूटी फूटी न हो तो मंगल बद का कुप्रभाव न होगा ।

20 : चन्द्रमा के पर्वत पर हथेली के किनारे हथेली से बाहर रह जाने वाली सीधी लकीरें - माता के भाईबन्धु और दो शाखी :::::: माता की बहिन आदि स्त्री संबन्धी होंगे जो व्यापार आदि में अस्थिरता का कारण हो सकते है । परन्तु सीधी रेखा के अन्त पर बुध को गोल चक्कर रेखा को ::::::: शुभ बनाता है और किसी पुरुष का द्योतक है । ऐसी रो बुध व शुक्र का मिला-जुला शुभ प्रभाव देगी ।

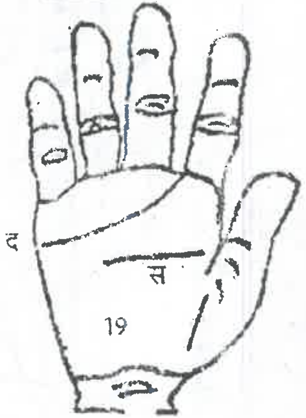

फ़रमान नम्बर – 140 चन्द्रमा की यात्रा रेखा

वि – विरोध शादी रेखा

प – पैतृक सम्पत्ति

म – मामूली सफर

क – कलाई रेखा

व – सफर से वापिसी का जीवन

न – नशाबाजी

अ – आंतरिक श्रेष्ठता

1. **साधारण यात्रा :-** चन्द्रमा को सफेद रंग का घोड़ा (अश्व) माना गया है जो दरयाई या समुद्री कहलाता है । यह घोड़ा समुद्र पर चाँद की चाँदनी के समान दम के दम में घूम फिर आत है । परन्तु धरती या शुक्र के घर से शत्रुता करता है और ठोकरें मारता है ।

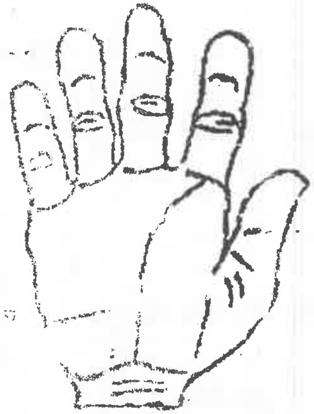

2. **जब चन्द्रमा के पर्वत पर शुक्र रेखा :-**

चन्द्र पर शुक्र रेखा :

स्थित हो तो धरती या शुक्र से संबंधित यात्रायें अवश्य होंगी । या फिर चन्द्रमा के पाँव को धरती का चक्कर लगा रहेगा । चन्द्रमा स्वयं सदा ही यात्रा में लगा रहता है । शुक्र तो शत्रुता नहीं करता, चन्द्रमा ही शत्रुता बर्तता है । इसलिये चन्द्रमा की यात्रा स्वयं अपने लिये कभी हानिकारक न होवी परन्तु यात्रा होगी अवश्य और अधिक करके धरती की ही होगी ।

3. **आवश्यक यात्रा :-**

चन्द्र पर सीधी बृहस्पति लकीर

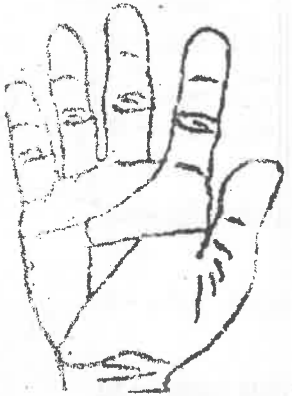

जब चन्द्रमा के पर्वत पर सूर्य रेखा या सीधी लकीर बृहस्पति की । स्थित हो और इसकी दिशा सूर्य की ओर हो तो ऐसी यात्रा समुद्रपार की अति आवश्यक यात्रा होगी । इस यात्रा से राज दरबार संबन्धी कार्यों का मेल होगा । यदि इस रेखा का मुख या रुख बुध की ओर हो तो व्यापार आदि में अमूल्य लाभ एवं वृद्धि होगी । (बुध से जाकर मिली रेखा का वर्णन अलग से दिया है।)

ऐसी रेखा से यात्रा का शुभ फल तभी गिना है जब यह रेखा चन्द्रमा के पर्वत की सीमा में ही रहे । ऊपर सूर्य या बुध में जाकर न मिले वरना शादी व सन्तान का

प्रभाव विरोध का अथवा अशुभ होगा । चूँकि इस रेखा को शुभ तब ही गिना है जब यह सूर्य या बुध का रुख करे, इसलिये इस रेखा से दूसरे कामों क यात्रा के परिणाम नहीं गिनते । रेखा के दूसरे पर्वतों की ओर मुख करने के परिणाम का संबन्ध उन दूसरे पर्वतों से प्रभावति होगा ।

चन्द्र से सूर्य को गई रेखा

फ़रमान नम्बर – 141

बालाई आमदन – छिपी अचानक सहायता – माता का सुख व साथ – खेत खलिहान व अन्य पैतृक सम्पत्ति की रेखा ।

1. चन्द्रमा से रेखा किस्मत रेखा में मिले :

जब चन्द्रमा के पर्वत पर टेढ़ी रेखा / बनी हो तो उपरोक्त सभी परिणाम प्रकट होंगे परन्तु शर्त यह है कि ऐसी रेखा किस्मत रेखा से मिल गई हो और मिलकर के वहीं समाप्त भी हो गई हो ।

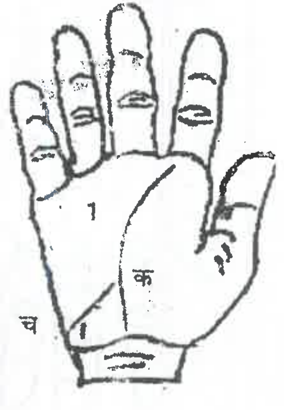

2. **चन्द्रमा से रेखा सिर रेखा में जा मिले :**

यदि ऐसी रेखा आगे बढ़कर सिर रेखा से जा मिले
तो ऐसा व्यक्ति लाखों का स्वामी होता
हुआ भी दुःख पर दुःख ही देखता चला जायेगा ।
और बुद्धि की कोई पेश न जायेगी ।

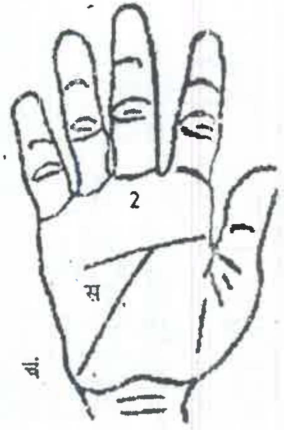

3. **चन्द्रमा से रेखा दिल -रेखा पर मिलती**

यदि यही रेखा और आगे बढ़कर दिल रेखा में मिल जाये तो हृदय की सब कामनाएँ पूर्ण हों और हार्दिक शांति की भी प्राप्ति हो। धरोहर रखने वाला लौटकर न आयेगा और धरोहर इस व्यक्ति के पास ही रह जायेगी ।

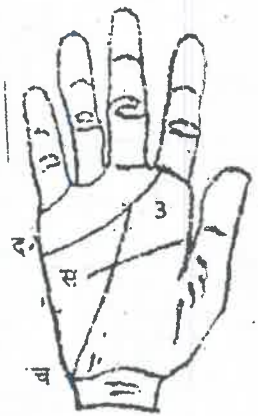

4. चन्द्रमा से रेखा शनि के नीचे श पर ।

चन्द्रमा से निकली हुई रेखा ऊपर दिल-रेखा की ओर चलती हुई जिस स्थान पर शनि के पर्वत के नीचे या साया में जायेगी, वहाँ शनि का बुरा प्रभाव होगा । अर्थात चन्द्रमा के प्रभाव से जो फ़सल खेती आदि होगी, इसमें चन्द्रमा के ख़ज़ाने कुँए आदि सूखने आरम्भ हो जायेंगे । वह बिल्कुल तो नहीं । दूध जो चन्द्रमा की माया है साँप (शनि) की छाया मात्र से विशाक्त या ज़हरीला हो जाता है और मनुष्य का हृदय शनि की स्त्री की शरारती आँख की लहर या इंगित व लट व वेणी के साँप से ही मृत्यु ढूँढता फिरता है ।

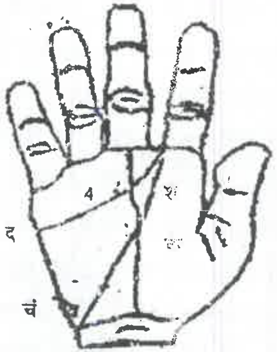

5. चन्द्र से वृहस्पति या सूर्य के पर्वत के साया में :

जब चन्द्रमा से निकली यह रेखा सूर्य या वृहस्पति के पर्वत के साया या सम्बन्ध में हो जाये तो ऐसा सम्बन्ध अति शुभ होगा । सूर्य के प्रभाव से सूखे कुएँ स्वयमेव जल से भर जाये और सुख देने लगें । शर्त यह है कि रेखा पर्वत की छाया में ही रहे । उससे जुड़ या संबन्धित न हो जाये।

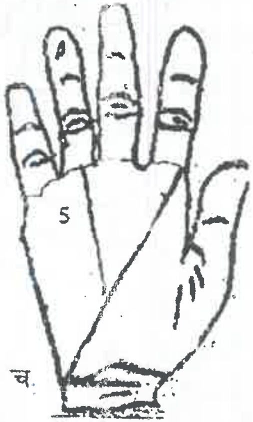

फ़रमान नम्बर - 142

चन्द्रमा से बुध को रेखा जो कनिष्ठिका के नीचे तक बुध के पर्वत में चली गई हो।

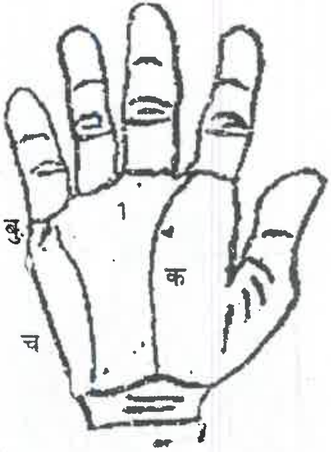

(1) चन्द्र से बुध को रेखा

क - किस्मत रेखा।

चन्द्रमा के पर्वत से बुध की ओर कई रेखायें गई है। एक वह जो केवल चन्द्रमा के पर्वत के अन्दर ही अन्दर रही। इस रेखा से आवश्यक यात्रा कहलाई।

दूसरी सेहत रेखा के नाम से जानी गई।

तीसरी सूर्य के पर्वत और बुध के पर्वत के दरम्यान ऊपर को गई। इससे भी आवश्यक यात्रा बतलाई गई। चौथी चन्द्रमा से चलकर बुध को मंगल के किनारे पर हथेली के अन्दर से गई। इसे अन्दरुनी अकल (आन्तरिक प्रज्ञा) कहा। (इस रेखा के होने से माता अन्धी व पेशा बर्बाद होता है।)

(2) चन्द्र से बुध को जाती रेखा जो शादी रेखा को काटे

पाँचवी रेखा चन्द्रमा से सीधी ऊपर को बुध के स्थान पर शादी रेखा को काटती हुई चली गई। यह रेखा शादी विवाह में रुकावट डालने वाली हुई। इसे रेखा के होने पर बुध और चन्द्रमा का शत्रुतापूर्ण प्रभाव होगा। चन्द्रमा बुध से भी शत्रुता करता है और शुक्र से भी शत्रुता करता है। अब स्थान बुध का है और शादी रेखा शुक्र की रेखा है। चन्द्रमा अब न बुध पर विश्वास करेगा और न शुक्र पर भरोसा करेगा। यह रेखा मंगल-बद के रास्ता ही ऊपर बुध को जा सकती है। अब सब अपना बुरा प्रभाव ही देंगे। पहले तो शादी बुध के बुरे समय यानि 34 साल या उसके

आधे 17 साल सेपहले न होगी। यानि यदि 17 वर्ष में हो भी जाये तो वह शादी न होगी। फिर १७ के उपरान्त 34 साल से पहले 33 तक शादी का कोई अर्थ न होगा। भाई बन्धु ही बर्बाद होंगे। स्त्री पर चन्द्रमा शुक्र से और शुक्र बुध से और बुध मंगल से सब एक दूसरे के विरुद्ध है। पहले तो स्त्री शुक्र से और शुक्र बुध से और बुध मंगल से सब एक दूसरे के विरुद्ध है। पहले तो स्त्री के संतान ही न होगी। यदि होगी भी तो जीवित न रहेगी। यदि जीवित रहेगी तो संतान में लड़कों को मृत्यु ग्रस लेगी। स्त्री की आँख की नज़र नष्ट होगी। शुक्र काना और मंगल अंधापन करेंगे। बुध पेशा बर्बाद और खेती की भूमि पर बुरा प्रभाव करेगा। पहले तो माता ही दुःखी होगी या दुःखी करेगी। और यदि खेती की धरती आ जाये तो माता नष्ट होगी। धरती सम्बंधी झगड़े बर्बाद कर देंगे। ऐसे व्यक्ति की स्त्री यदि जीवित हो तो ज्यों-ज्यों स्त्री बुध की प्रभाव आयु (यानि 34 वर्ष) के समीप होती जायेगी त्यों-त्यों गर्भ-अस्थिरता, गर्भपात व अन्य स्त्री-सम्बन्धी रोगों से ग्रसित होगी। अर्थात स्त्री 34 से पूर्व ओर पुरुष 48 से पूर्व पुत्र-सन्तान का सुख न भोग सकेंगे। ऐसे व्यक्ति को राज्य और व्यापार से भी अधिक लाभ न होगा। बल्कि हानि की आशंका है। चन्द्रमा और मंगल दोनों ही हानिकारक है। अतः दोनों की सेवा आवश्यक है। चन्द्रमा के लिये आराध्य देव पूजन व मंगल के लिये गायत्री पाठ है। राहु केतु का प्रभाव कन्या दान व कपिला गाय के दान से शुभ होगा। अर्थात ऐसा व्यक्ति जब कन्या का विवाह करेगा तो सुख पायेगा। या स्वयं कारोबार के लिये दुर्गा-पाठ करेगा तो सुखी व धन-उपार्जन का समय देखेगा। या हरे रंग के तोते की पालना करे। और काले रंग की मछलियों को सूर्योदय से पहले सफेद आटा (अपनी भोजन मात्रा का 1/10) खिलाया करे। 40 सप्ताह तक और हर सप्ताह केवल एक दिन ऐसा किया करे। दिन कौन सा होवे ? शुक्र की रात और शनि की प्रातः का दरम्यानी समय। ऐसे व्यक्ति की आयु 85वर्ष से अधिक न होगी।

चन्द्रमा की विभिन्न रेखायें

य = यात्रा रेखा

प = पितृ रेखा-आयु रेखा जब वह चन्द्रमा पर समाप्त हो।

चन्द्र पर समाप्त पितृ रेखा

स = सिर रेखा-मातृ रेखा।

अ = अंदरुनी अकल रेखा।

द = दिल रेखा

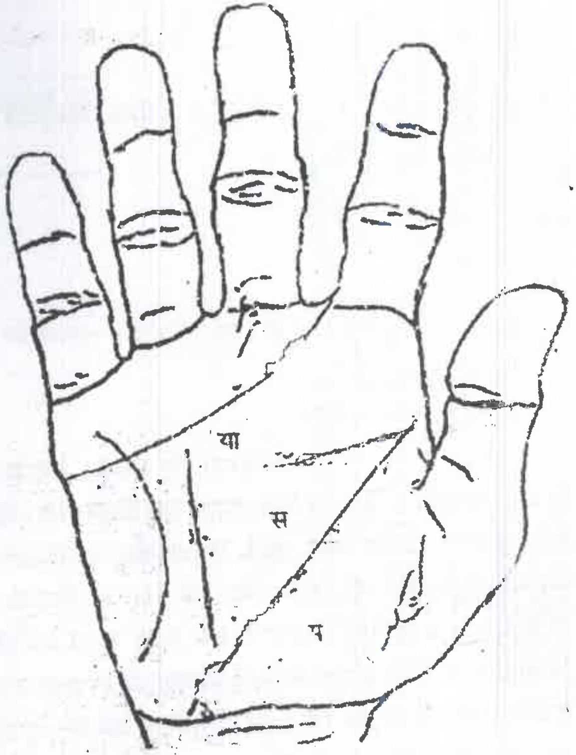

फरमान नम्बर - 143

चन्द्रमा से शुक्र को रेखाये

1. श - शराफत श्रेष्ठता रेखा

अंदरुनी शराफ़त (श्रेष्ठता) रेखा : जब रेखा कलाई से उठकर हथेली के अन्दर उन्नतोदर (convex) आकार की हो। ऐसा व्यक्ति इन्द्रियों को जीतने वाला, कामदेव से दूर, श्रेष्ठता की जीवित मूर्ति होगा।

2. ज्ञानी फकीर रेखा : शु - शुक्र पर्वत

फ - ज्ञानी फकीर रेखा

यह रेखा सीधी शुक्र व चन्द्रमा के पर्वतों को मिलाती है। ऐसी रेखा वाला व्यक्ति या तो सब नशा बाज़ों का पीर और सरदार और या पूर्ण ज्ञानी चमत्कारी फक़ीर होगा।

3. चन्द्रमा से सूर्य को सीधी रेखा :-

चन्द्रमा से निकली रेखा यदि सीधी सूर्य के पर्वत में चली जाये तो ऐसी रेखा वाले की जीवन यात्रा सुखद न होगी । बड़ी कठिनाई से गुज़र होगा ।

4. सिर रेखा चन्द्रमा पर :-

यदि सिर रेखा चन्द्रमा के पर्वत पर चली जाये तो ऐसा व्यक्ति दूसरों की मुसीबत स्वयं ही अपने ऊपर लेकर जीवन बर्बाद करता रहेगा । काल्पनिक आशंकाओं व संशय से प्रभावित हो **आत्म-हत्या** भी कर सकता है।

5. (अ) पितृ-रेखा :- जब आयु रेखा चन्द्रमा पर समाप्त हो तो पितृ-रेखा कहलाती है ।

(ब) यदि पितृ रेखा पर शुक्र के स्थान पर सूर्य का सितारा होवे तो दिन होते हुये इस व्यक्ति की मृत्यु दरिया या नदी से होगी ।

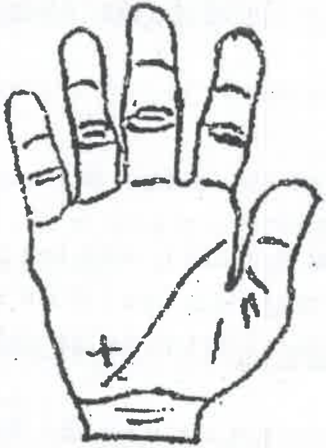

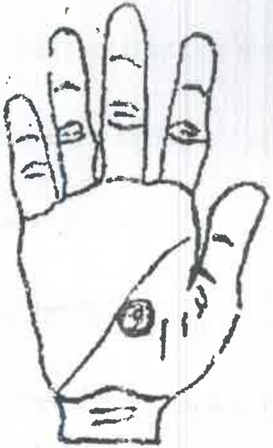

(ज) पितृ रेखा पर यदि चन्द्रमा के पर्वत पर शनि + प्रकट हो तो रात के समय पानी से मृत्यु होगी ।

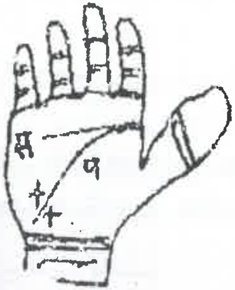

6. धन-रेखा, श्रेष्ठ-रेखा व पितृ-रेखा का वर्णन शनि के पर्वत में हुआ है ।

फरमान नम्बर - [redacted]

कुण्डली में ख़ाना नं० 4

1. संसार में राजकुमार का दिल, दिव्य दैवी सहायता माता व संतान का सुख । खेती वाली धरती-पैतृक सम्पत्ति । समुद्र-पार आवश्यक व अनावश्यक यात्रा लोक व राज दरबार में मान व आदर, कर्म-धर्म में रुचि, इन्द्रिय संयम । घोड़े आदि की सवारी का सुख । शांति व रात का आराम ।
उच्च चन्द्रमा वृहस्पति का ख़ाना नं० 2 बन जाया करता है ।

नीच अवस्था

2. धर्म-कर्म में प्रमाद, दुर्भाग्य ग्रसित, दुःख । उच्च अवस्था की उपरोक्त सब बातें उल्ट होगी । कन्याएँ अधिक होगी । जंगल, पहाड़ की वृथा यात्रा । प्रभाव कम हो ।
वृहस्पति ने तो गुरु रूप से सब से लक्ष्मी की पूजा करवाई । सूर्य ने स्वयं हाथ से कमाया और बाप का साथ लिया । चन्द्रमा ने माता की शरण ली और पैतृक सम्पत्ति प्रदान की ।
वृहस्पति ने हवा, साँस और सोना दिया । सूर्य ने गर्मी, गुस्सा और तेज प्रदान किया । चन्द्रमा ने पानी, चाँदी और शाँति दी ।
3. चन्द्रमा कर्क का स्वामी पर विरख का उच्च है । इसलिये आयु 85 (कर्क) व 96 (बिरख) होगी ।
4. चन्द्रमा के सितारा से चन्द्रमा का ख़ाना नं० 2 हो गया जो उच्च अवस्था में वृहस्पति का ख़ाना नं० 2 उत्तम हो गया ।

फ़रमान नम्बर - 145 , 146

चन्द्रमा के सितारा का प्रभाव

ख़ाना नम्बर (1)

(1) **सूर्य के पर्वत पर :-** दोनों ग्रह परस्पर मित्र है । फल उत्तम होगा । सूर्य को प्रबल प्रकट होगा । राज दरवार में सफलता व सम्मान प्राप्ति ।

(2) **कुण्डली में प्रभाव :-** मेख राशि । घर का स्वामी मंगल है जो चन्द्रमा के बराबर बल का है । और चन्द्रमा का मित्र है । सूर्य उच्च करता है जो चन्द्रमा का मित्र है । शनि नीच करता है । वह भी चन्द्रमा के बराबर बल का है । साधारण सुख 27 साल । औलाद का सुख विशेषकर होगा । आयु 90 वर्ष होगी ।

ख़ाना नम्बर (2)

(1) **वृहस्पति के पर्वत पर :-**दोनों ग्रह बराबर के है और उत्तम फल के । दोनों का एक जैसा और उत्तम फल होगा । धन, माता-पिता और सन्तान का सुख हो । ज़माना की नेक हवा सहायता करे ।

(2) **कुण्डली में प्रभाव :-** बिरख राशि । घर का मालिक शुक्र जो चन्द्रमा के बराबर बल का है । मगर चन्द्रमा इससे शत्रुता करता है । इसे नीच कोई ग्रह नहीं कर सकता । घर के प्रभाव का स्वामी भी वृहस्पति है जो चन्द्रमा के बराबर है और चन्द्रमा का मित्र है । धन लाभ 27 वर्ष । पूर्ण साँसारिक सुख । आयु 96 वर्ष होवे ।

ख़ाना नम्बर (3)

(1) **मंगल के पर्वतों पर :-** दोनों ग्रह बराबर के है । मंगल-नेक से शुभ फल व मंगल-बद से अशुभ फल होवे । मंगल-नेक होने पर युद्धों व संघर्षों में विजय पावे । मंगल-बद होने पर माता से शत्रुता हो जाये परन्तु स्वयं अपने लिये शुभ है ।

(2) **कुण्डली में प्रभाव :-** मिथुन राशि । घर का स्वामी बुध है जो चन्द्रमा का मित्र है । राहु उच्च करता है जो चन्द्रमा को मध्यम करता है । केतु जो चन्द्रमा ग्रहण करता है इसे उच्च करता है । चन्द्रमा के समय केवल 3 साल आराम से कटें । क्योंकि मंगल-नेक चन्द्रमा का मित्र है और मंगल-बद शत्रु । आयु 80 साल हो ।

ख़ाना नं० (4)

(1) चन्द्रमा के अपने पर्वत पर :- अपने घर का जो उत्तम फल हो सकता है, इस सितारा से होवे ।

(2) कुण्डली में प्रभाव :- कर्क राशि, घर का स्वामी स्वयं चन्द्रमा । वृहस्पति इसे उच्च करता है और वह चन्द्रमा के बराबर है । प्र मंगल नीच करता है जो चन्द्रमा के बराबर का है । (मंगल-बद निस्संदेह शत्रु है ।) धरती से लाभ हो और शुक्र नीच से भी लाभ हो । यानि 12 साल औलाद होती रहे । आयु 85-96 वर्ष की होवे ।

ख़ाना नं० (5)

सिंह राशि । घर का स्वामी सूर्य है जो चन्द्रमा का मित्र है । इस राशि को कोई उच्च, नीच नहीं कर सकता । सूर्य के घर में चन्द्रमा का प्रकाश प्रकट नहीं होता । इसलिये कम प्रभाव होगा । जंगल पहाड़ का सैलानी हो । 9 साल यात्रा से झूजना पड़े । आयु 100 वर्ष ।

ख़ाना नं० (6)

कन्या राशि । घर का स्वामी बुध (चन्द्रमा का मित्र और केतु चन्द्रमा-ग्रहण) है । बुध और राहु (चन्द्रमा का शत्रु) उच्च करते है । केतु (चाँद-ग्रहण) इसे नीच करता है । बुद्धि स्थिर व युक्तियों का मलिक । परन्तु कन्यायें अधिक हों । 6 वर्ष तकलीफ हो । आयु 80 साल ।

ख़ाना नम्बर (7)

चन्द्रमा के सितारा का प्रभाव शुक्र के पर्वत पर :- दोनों ग्रह बराबर के है परन्तु चन्द्रमा शुक्र से शत्रुता करता है । इसलिये साँसारिक फल नेष्ट परन्तु आध्यात्मिक फल उत्तम होगा । अर्थात शुक्र की कामदेव की शक्ति नष्ट होगी । फिर भी संसार का पूरा सुख व पवित्र स्त्री से सुख प्राप्ति होगी ।

(1) चन्द्रमा का प्रभाव बुध के पर्वत पर :- चन्द्रमा बुध मित्र है पर चन्द्रमा शत्रुता करता है । बुध का फल खराब कर देगा । मगर चन्द्रमा अपना फल उत्तम रखेगा । राज दरबार से मान, माता व सन्तान का सुख हो । व्यक्ति कविता व ज्योतिष विद्या में निपुण होगा ।

(2) कुण्डली में चन्द्रमा का प्रभाव :- राशि तुला । स्वामी शुक्र है । शुक्र चन्द्रमा के बराबर का है । परन्तु चन्द्रमा स्वयं इससे शत्रुता करता है । शनि उच्च करता है, जो चन्द्रमा के बराबर का है । सूर्य नीच करता है, जो चन्द्रमा का मित्र है । इसलिये चौपाया घोड़ा-गाड़ी आदि का सुख हो । वरना 15 वर्ष मृत्यु जैसे संकट में रहे (शनि का प्रभाव) । आयु 85 वर्ष होवे ।

ख़ाना नं० (8)

वृश्चिक राशि । घर का स्वामी मंगल है जो चन्द्रमा का मित्र है । इस राशि को चन्द्रमा ही नीच करता है । उच्च कोइ नहीं कर सकता । फल बुरा होगा । राजदरबार में शत्रुता अधिक । 6 वर्ष कष्ट । वास्तव में यह घर मंगल-बद और शनि का है जो बुरा फल ही उत्पन्न करते हैं। आयु 90 वर्ष ।

ख़ाना नं० 9

धनु राशि । घर का स्वामी वृहसपति जो चन्द्रमा का मित्र है । केतु (चन्द्रमा ग्रहण) उच्च करता है । राहु (चन्द्रमा मध्यम) नीच करता है। धर्म - कर्म हीन, कामुक । अन्यथा 20 वर्ष धर्म कर्म तीर्थ यात्रा होवे । आयु 75 वर्ष ।

ख़ाना नं० 10

(1) प्रभाव शान के पर्वत पर :- चन्द्रमा शनि समान बली है । चन्द्रमा शनि से शत्रुता करता है । इसलिये दोनों का फल खराब होगा । धन का अभाव । सदा ही रोग व कष्ट । माता से वैर-विरोध । आँख के दुषप्रयोग से समाज में मान-हानि ।

(2) कुण्डली में प्रभाव :- राशि मकर । घर का स्वामी शनि जो चन्द्रमा के तुल्य बल का है । मंगल उच्च करता है । वह भी तुल्य बल का और चन्द्रमा का मित्र है । वृहस्पति नीच करता है । वह चन्द्रमा का मित्र है । 42 वर्ष धन आवे परन्तु ऊर्ध रेखा आदि के ढंग की । आयु 90 वर्ष ।

ख़ाना नं० 11

राशि कुम्भ । स्वामी शनि जो चन्द्रमा के बराबर का है । इस राशि को कोई उच्च नीच नहीं कर सकता । प्रभाव के लिये यह वृहस्पति का घर है । वह चन्द्रमा का मित्र है । अत: शत्रु परास्त व प्रभावहीन. राजदरबार से शुभ सम्बन्ध । 16 वर्ष राजदरबार से धन आवे । आयु 90 वर्ष ।

ख़ाना नम्बर (12)

राशि मीन (मछली) । स्वामी चन्द्रमा का मित्र वृहस्पति । राहु (चन्द्रमा मध्यम) । शुक्र व केतु उच्च करें । यह दोनों चन्द्रमा के शत्रु । राहु, बुध (शत्रु) नीच करें । अत: विद्वान, शास्त्री । पर केवल 45 वर्ष । पानी से भय । आयु 90 वर्ष । धन सम्पत्ति आदि का फल मध्यम।

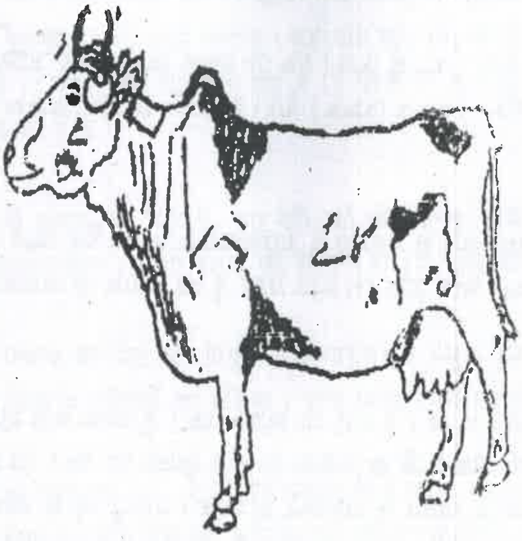

शुक्र

शुक्र – सफेद रंग (दही) – दुनिया की मिट्टी – जमाने की लक्ष्मी – गऊ माता पुरुष की स्त्री ने किसी को नीच न किया। इसलिये हर एक ने इसे पसन्द किया और स्वयँ नीच किया ।

फ़रमान नम्बर - 147

1. वायु से अग्नि हुई । अग्नि से जल । जल से मिट्टी बनी या बच्चा संसार की वायु से गर्मी, सर्दी और आराम का अनुभव करने लगा । शुक्र का समय भोग, आराम और गृहस्थ सुख भोग का समय है । शुक्र को बैल, स्त्री व मिट्टी माना है । इनके हर प्रकार के रंग (अवस्थायें) सम्भव है । यह स्वयं वृहस्पति का शत्रु है। चन्द्रमा और सूर्य इससे शत्रुता रखते है । नीच शुक्र होने से वृहस्पति साँस पर, सूर्य शरीर पर और चन्द्रमा दिल पर बुरा प्रभाव डालेंगे । मिट्टी से मनुष्य बना और अग्नि से देवता। इसलिये सूर्य से मित्रता न हो सकी । चन्द्रमा और वृहस्पति ने, बुरा प्रभाव किया । शुक्र जब तक शनि के कामों से दूर है तब तक नेक व शुभ है । कामुकता के साँसारिक प्रेम के अतिरिक्त भगवद्-प्रेम अवस्था पर भी शुक्र का प्रभाव है । शुक्र को दही से उपमा दी है दही से घी भी बन जाता है । शुक्र से कुम्भ का जन्म व इसके पालन-पोषण का भी आशय है ।

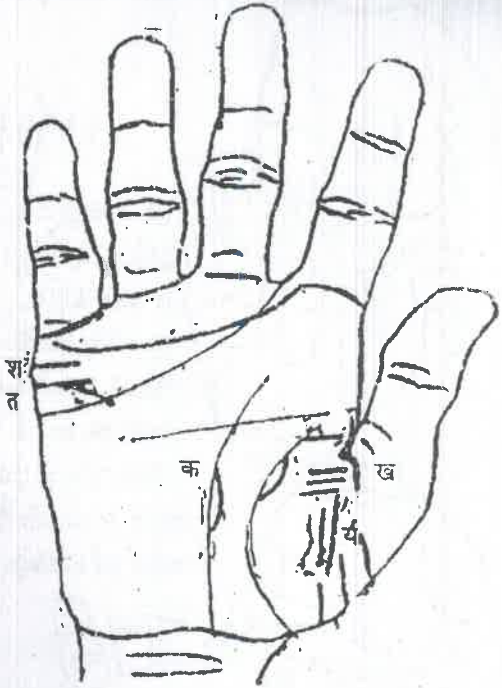

श- शादी रेखा, त - तलाक , जुदाई रेखा
क - किस्मत रेखा, ख-शादी के बाद खाने वालों की रेखा

2. शुक्र का वास्तविक उच्चपन इसकी नम्रमा है । क्रोध शुक्र की नीच अवस्था का द्योतक है ।

फ़रमान नम्बर -148

शुक्र के पर्वत पर रेखा और शुक्र की अपनी रेखा

1. दिल रेखा के ठीक होते हुये शुक्र का प्रभाव कभी बुरा न होगा ।
2. **शुक्र का पतंग : कामदेव रेखा :**

यह रेखा घर में वर्चस्व, भाई बन्धुओं पर शासन व सम आयु वालों में चौधरपने को प्रकट करती है। ऐसा मनुष्य धर्म हीन होने के अतिरिक्त स्त्री के रूप की स्तुति, उसका ही गुणगान व स्मरण में अपने समय को व्यतीत करने के स्वभाव वाला होता है । प्रेमिका को दूर बैठा वाणी से याद करता रहता है । स्वास्थ्य उत्तम, आंखें साफ व वाणी में आकर्षण होता है । अपनी स्त्री या कुटुम्ब की अन्य स्त्रियों से शुभ संबन्ध वाला होता है । परन्तु राजदरबार वालों की कमाई से अपना संबन्ध लगाये रखने वाला होता है । वह कई बार अपने साथियों की हेठी करने व उनको दुःख पहुंचाने वाला भी होता है (नीच शुक्र का फल) गृहस्था कर्मों में भी उसका प्रभाव अशुभ ही होगा । क्योंकि शुक्र व सूर्य परस्पर मित्र नहीं है । इस रेखा का स्वयं इस पर कोई बुरा प्रभाव न होगा । परन्तु टूटी-फूटी रेखा होने से मस्तिष्क की कमज़ोरी, पागलपन आदि होते है । यदि बुध के पर्वत से श नि तक पूरी रेखा हो तो विचारों में व्याकुलता व क्रूरता वनी रहती है ।

3. यदि यह रेखा शनि के पर्वत पर मध्यमा की जड़ पर ही हो तो शनि के बुरे प्रभाव से बचाव होकर स्वास्थ्य उत्तम होता है ।

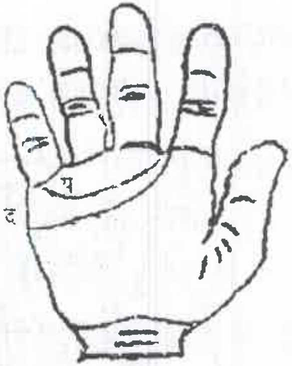

4. यदि यह रेखा **सूर्य के पर्वत पर** अनामिका की जड़ पर ही हो तो स्त्री सुख को थोड़ा हल्का करे परन्तु इससे स्वयं अपना प्रभाव व तेज बना रहे ।

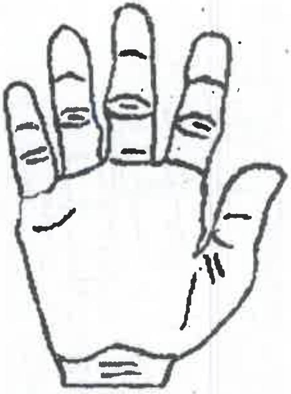

5. यदि यह रेखा **बुध के पर्वत पर** कनिष्ठिका का जड़ पर ही हो तो स्त्री के लिये शुभ प्रभाव व अच्छे गृहस्थ सुख भोग को देती है ।

6. यदि **कनिष्ठिका की जड़** में होने पर रेखा का झुकाव ऊपर की ओर हो जाये तो विवाह सन्तान आदि में गड़बड़ और शत्रु का सा प्रभाव होगा ।

7. इस रेखा वाले को क्रोध विनाश करने वाला और निरपक्ष-निरपक्ष स्वभाव आबाद करने वाला होता है ।

8. आयु की सहायक रेखा का वर्णन शनि के पर्वत में दिया है । शुक्र का अधिक संबन्ध सांसारिक प्रेम व प्रेमिका से ही है ।

फ़रमान नम्बर - 149

शादी (विवाह) रेखा

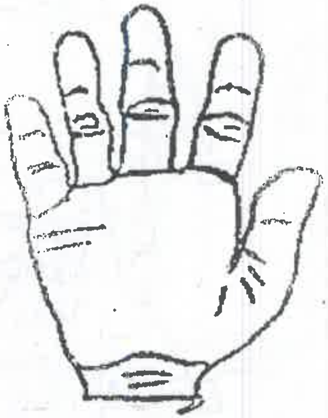

1. यह रेखा बुध के पर्वत पर कनिष्ठिका के नीचे होती है । शुक्र की इस रेखा से विवाह शादी, गृहस्थ सुख आदि का विचार करना होता है ।

2. **दो स्पष्ट और ठीक रेखायें,** बड़ी लकीर ऊपर और छोटी लकीर नीचे । इस अवस्था में विवाह से एक स्त्री अवश्य व शीघ्र होवे । स्त्री गृहस्थ में शुभ फल देने वाली और उत्तम हो । शादी का समय शुक्र के प्रभाव की अवधि अर्थात 25 वर्ष का ½ = 12 ½ वर्ष या 25 का ¾ = 18-19 वर्ष होगा । और शादी स्वयमेव धक्के लगाकर हो जायेगी । किसी दूसरे की व सहायता का भार न उठाना पड़ेगा । दो से अधिक लकीरों की अवस्था में स्त्रियों की अथवा विवाह की संख्या लकीरों की कुल संख्या से एक कम होगी । जैसे 3 लकीरें हों तो स्त्री व विवाह की संख्या 3-1=2 होगी ।

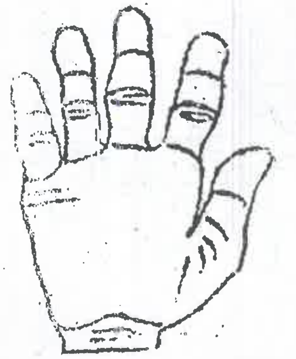

3. **यदि बड़ी लकीर नीचे और छोटी लकीर ऊपर** हो जाये तो विवाह का फल अशुभ गिना है। अर्थात पहले तो शादी हो ही न । यदि होवे भी तो देर के बाद (18-19 वर्ष) हो। और विवाह से सन्तान न हो । यदि सन्तान होनी आरम्भ हो भी जाये तो पुत्र-सन्तान न हो । यदि पुत्र-सन्तान हो भी जाये तो अधिक न जिये । यदि दीर्घायु भी हो जाये तो योग्य न होवे और यदि किसी प्रकार योग्य भी हो जाये तो सुख देने वाली न हो । और यदि सुख देने के संकल्प वाली भी हो तो सुख देने के योग्य ही न हो । संक्षेप से कहें तो स्त्री व विवाह सुख कारक व शुभ न होवे ।

4. **यदि केवल एक ही शादी रेखा हो** तो विवाह देर से यानि 18 के बाद 25 वर्ष तक हो और विवाह होने में कठिनाई हो । इसका कारण धन का अभाव व संयोग के अन्य विघ्न होंगे । इस तरह के विवाह का शुभ फल 28 वर्ष की आयु के उपरान्त ही गिना है । कोई ऐसी रेखा जो किस्मत-रेखा या विवाह-रेखा के साथ चलती हुई फिर आयु (उमर)- रेखा या किस्मत रेखा में ही मिल जजये विवाह के हो जाने पर ही भाग्य जाग उठता है । ऐसी स्त्री लक्ष्मी या भाग्योदय होने का चरण या ज़माना अपने साथ ही लाया करती है ।

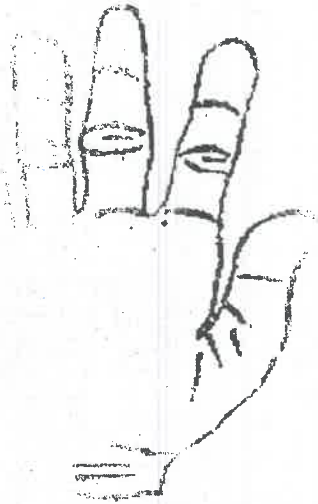

5. **दो-शाखी रेखा :-** यदि शादी अथवा विवाह रेखा दो-शाखी हो जाये तो स्त्री-पुरुष की आपसी कलह, मनोद्वेग, तलाक, जुदाई और आपसी प्रतिकूलता आदि का पता देती है । ऐसी रेखा दाँए हाथ में हो तो उसका कारण स्वयं हाथ वाला ही होता है और यदि बाँएं हाथ में हो तो भूल से अनजाने में की हुई क्रियाएँ कारण होंगी ।

दो-शाखी रेखा का मुँह जितना हथेली के बाहर हाथ की पीठ की ओर होता जाये और दो-शाखी का मुँह हथेली के बाहर होता जाये, उतना ही बुरा - प्रभाव कम होता है । इसके उल्ट मुँह जितना हथेली के अन्दर घुसता जाये या दो-शाखी का मुँह बड़ा होता जायें या दो-शाखी के सिरे नीचे दिल-रेखा की ओर बढ़ते जायें या ऊपर कनिष्ठिका की ओर कनिष्ठिका की सबसे निचली पोरी (धनु राशि) में चले जायें तो विवाह में पुरुष-स्त्री के गृहस्थ के सम्बन्ध खराब होते जायेंगे । ध्यान रहे कि दिल-रेखा बुध की शत्रु है । ऐसी स्थिति में चन्द्रमा और वृहस्पति की पूजा शुभ फल देगी ।

दो-शाखी रेखा की स्थिति में पहले तो पुरुष व स्त्री जुदा-जुदा ही हो जाँएगे और यदि किसी कारणवश इकट्ठे रह जायें, तो स्त्री पुरुष के लिये विवाह का

कोई सुख न देगी । इसकी सुन्दरता से कुटला को बढ़ावा मिलेगा । यदि पवित्र आचरण की भी हो तो रोग व रोग के कारण बृथा धन व्यय होता रहेगा । किसी भी स्थिति में ऐसी स्त्री 12 वर्ष पुरुष को सन्तान सुख न देगी या पुत्र सन्तान न देगी ।

दो-शाखी पुरुष के साथ विवाहित स्त्री यदि किसी अन्य के घर में भी बैठ जाये त भी अशुभ फल शीघ्र न जायेगा । वह स्त्री भी शीघ्र पुत्र-धन प्राप्त न कर सकेगी । ऐसा पुरुष भी दूसरे निवाह से शीघ्र राहत व आराम न पायेगा । अशुभ ग्रहों का प्रभाव अपने समय पर ही जायेगा ।

6. शादी की दोनों लकीरों में से ऊपर की पुरुष की आयु और नीचे की स्त्री की आयु (विवाहित अवधि) बतलाती है । इन लकीरों की लम्बाई में जितना अन्तर हो उतना समय या अविध का अन्तर आयु में होगा । और भाग्य उसी हिसाब से उन्हें अलग कर देगा ।

7. विवाह की रेखा शुभ वह है जिसमें ऊपर नीचे की दोनों रेखाओं की लम्बाई बराबर हो ।

विवाह रेखा की ऊपर नीचे की लकीरों में चौड़ाई का अन्तर पुरुष-स्त्री के स्वभाव का अन्तर बताता है । ज्यादा या कम चौड़ी दूरी व समीपता को क्रमानुसार बताती है ।

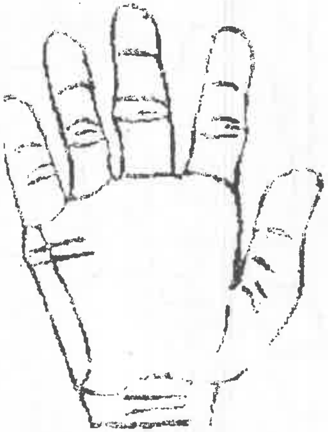

यदि दोनों लकीरों की लम्बाई बराबर होगी तो दोनों की औसत उमर भी बराबर होगी । अर्थात समप्ति के हिसाब से बराबर होगी । इससे कोई अन्तर इससे कोई अन्तर नहीं कि दोनों विवाह में इकट्ठे कब हुये थे । और तब उनकी आयु कितनी थी । इन लकीरों की लम्बाई दोनों के जोड़े के स्थित रहने की अवधि की सीमा होती है । यदि ऊपर की लकीर लम्बी हो तो स्त्री की मृत्यु पहले होगी और यदि नीचे की लकीर लम्बी हो तो पुरुष स्त्री से पहले संसार से विदा लेगा।

8. विवाह रेखा से दूसरी रेखाओं का सम्बन्धः- **चन्द्रमा के पर्वत से रेखा शादी** रेखा को काटती हुई बुध को जाये;

9 **शुक्र के पर्वत से रेखा शादी रेखा**
को काटती हुई बुध को जाये;

10. **मंगल-नेक** से रेखा शादी रेखा को जाये;

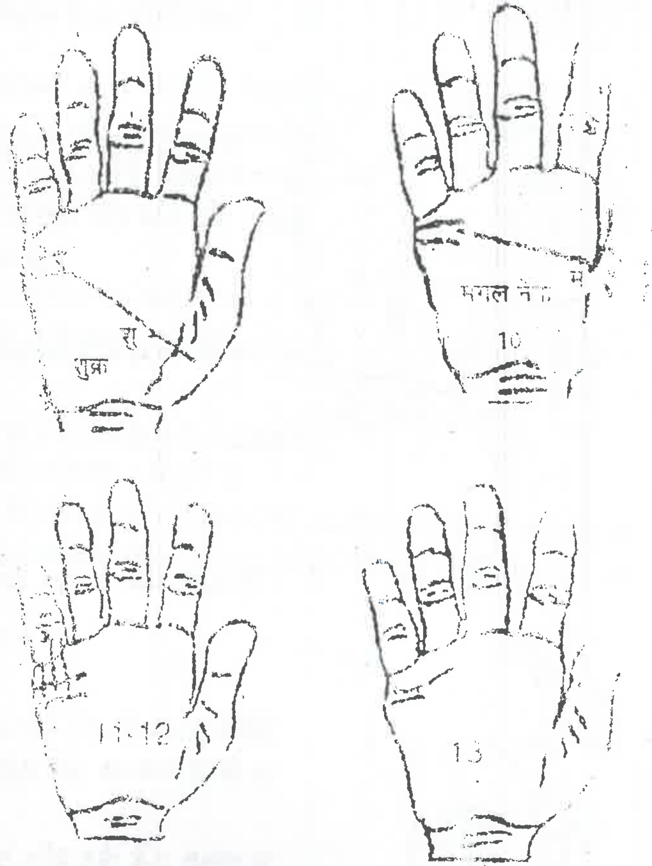

11,12. धनु राशि से शाख शादी रेखा को

"कनिष्ठिका की अन्तिम पोरी (धनु राशि, स्वामी वृहस्पति) से आई रेखा व रेखायें शादी-रेखा को काटे;

इन सब स्थितियों में विवाह में रुकावट, विरोध या अन्य झगड़े कष्ट का कारण बनेंगे।

शुक्र या चन्द्रमा से रेखा होने पर स्त्रियाँ विरोध का कारण होंगी और मंगल (नेक व बद दोनों) से शाख पुरुषों का विरोध बतलाती है।

ऊपर बुध से आई रेखा के होने से अन्य कारण व धन का वृथा व्यय रुकावट का कारण होंगे।

13. सूर्य से शाख शादी रेखा को :

यदि सूर्य के पर्वत से शाख आकर शादी-रेखा में मिले तो स्त्री धनी सम्पन्न कुल से होगी जो सूर्य के समान प्रतापी व उज्जवल होगा।

शादी रेखा का वृहस्पति की संतान या औलाद रेखा से घनिष्ठ संबंध है । इसका व र्णन अलग से हुआ है ।

14. बहुत बड़ा या नरम हाथ का वृहस्पति शुक्र का काम देता है और बहुत बड़ा शुक्र सन्तान से वंचित रखता है ।

15. यदि पुरुष की नाक छोटी हो या जिह्वा व तालु काला हो और आँख भूरी का साथ हो तो दो से अधिक विवाह होवें पर गृहस्थ में सुख फिर भी प्राप्त न हो । और यदि भूरी की ब जाये काली आँख का साथ हो तो स्त्री को गृहस्थ सुख थोड़ा हो ।

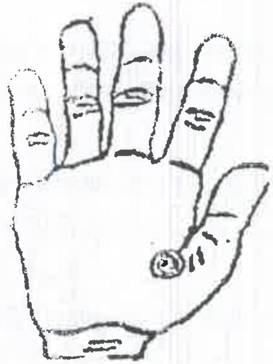

16. अंगूठे की जड़ पर सितारे का चिन्ह :

यदि शुक्र के पर्वत पर अँगूठे की जड़ में सूर्य का सितारा हो तो स्त्री का सुख अल्प हो । पराई ममता हो । परन्तु अपने लिये प्रभाव पूर्ण हो ।

17. प - पितृ रेखा पर जाल - राहु का चिन्ह

पितृ रेखा पर यदि राहु का जाल का चिन्ह हो तो स्त्री सुख अल्प (थोड़ा) होगा । खासकर मीन राशि वाले के लिये तो बहुत ही अल्प होगा ।

18. पाँव की अनामिका या तर्जनी मध्यमा से बहुत ही छोटी हो तो स्त्री का कुल निर्धन अवस्था का होगा । यदि अमीर भी हों तो भी उनका सुख हल्का ही होगा ।

19. पाँव की तर्जनी यदि मध्यमा से थोड़ी छोटी हो तो स्त्री सुख कम हो ।

20. हाथ की कनिष्ठिका अँगुली के नाखून वाले भाग का आखिर या सिरा यदि अनामिका अँगुली के नाखून वाले भाग की जड़ (कर्क वाली राशि की पोरी की जड़) से नीचा रहे जबकि हाथ को खूब अकड़ा कर इन दोनों अँगुलियों को परस्पर मिलाकर देखा जाये तो कनिष्ठिका का सिरा इस उपरोक्त अनामिका की जड़ से जितना छोटा होवे उतना ही स्त्री श्वेतवर्णा, पवित्र आचार व स्वभाव

व हँस मुख होगी और जितना कनिष्ठिका का सिरा अनामिका की पोरी की जड़ से ऊपर उठे, उतना ही उपरोक्त गुण स्त्री में खराब होवें ।

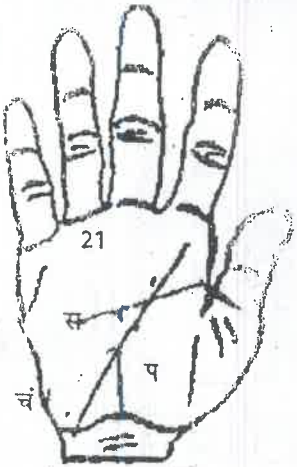

21. पितृ रेखा के अन्त में हथेली पर त्रिकोण :

यदि पितृ–रेखा टेढ़ी होकर सिर रेखा (मातृ–रेखा) को काटकर चन्द्रमा के पर्वत पर हथेली के किनारे त्रिकोण Δ सा बनावे तो ऐसा व्यक्ति पराई स्त्री का मिलापी और खोटे काम करने वाला होगा। या फिर कुकर्मी होगा क्योंकि चन्द्रमा स्वयं बुध और शनि से शत्रुता करता है ।

22. यदि स्त्री का माथा खुला व ऊँचा होवे तो उसका विवाह शीघ्र होवे । पति इसका धनी, मानी व ऊँचे पद पर हो । यदि माथा लम्बा व खुला हो तो वह स्त्री अपने पति के लिये तो शुभ होगी परन्तु पति का पिता (श्वसुर) शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो ।

जिसका माथा खुला व सम (न ऊँचा, न नीचा) हो वह विवाहित जीवन सुख से काटेगी ।

23. पति–हड़पनी स्त्री :- स्त्री के पाँव की अनामिका अँगुली यदि इसकी कनिष्ठिका अँगुली से छोटी हो और इसका नाखून वाला भाग (अनामिका का) धरती को न लगे तो वह स्त्री 'पति–हड़पनी' हो । अर्थात इसका पहला पति मरे तो दूसरा करे । और यदि सारी कनिष्ठिका धरती पर न लगे तो दूसरा मरे, तीसरा करे चाहे चौथा करे–सब के सब ही मरते जायें परन्तु वह स्त्री स्वयं न मरे और न ही आराम व सुख पाये ।

****

फ़रमान नम्बर - 150

शुक्र के पर्वत पर अन्य रेखायें

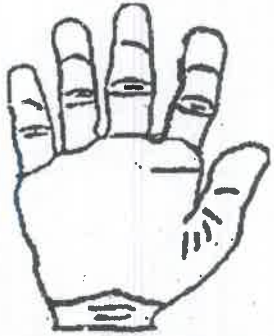

1. चन्द्रमा के पर्वत को .... ज्ञानी अथावा नशाबाज़ फ़कीर ।

2. **वृहस्पति पर शुक्र रेखा :**

वृहस्पति के पर्वत पर दिल-रेखा से एक दम अलग शुक्र-रेखा । अत्यन्त शुभ व उत्तम प्रभाव देती है । गृहस्थ सुख उत्तम । साठ साल उत्तम आय रहे ।

3. **शुक्र की जड़ पर आयु रेखा दो- शाखी**

उमर या आयु रेखा समाप्ति पर शुक्र के पर्वत की जड़ की गोलाई पर दो-शाखां हो जाये और शुक्र की ओर की शाख लम्बी हो तो मृत्यु मातृ-भूमि में होगी । यदि चन्द्रमा की ओर वाली शाख लम्बी हो तो मृत्यु प्रदेश में होगी । हाथ

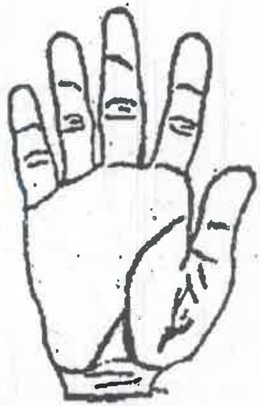

4. शुक्र के पर्वत पर लम्बी-लम्बी और टेढ़ी रेखा भाइयों से प्रतिकूलता दर्शाती है ।
(यह भाईयों की रेखा है ।)
मंगल-बद के पर्वत पर शुक्र रेखा औलाद, बाकी रहने वाली, विधवा स्त्रियाँ व युद्ध व संघर्ष को दर्शाती है ।
5. चन्द्रमा के पर्वत पर शुक्र रेखा साधारण यात्रा बतलाती है ।
6. शुक्र रेखा कलाई पर और अँगुलियों के जोड़ों पर चन्द्रमा का प्रभाव देगी ।
7. मंगल-नेक व शुक्र पर ऐसी रेखा कमाई खाने वाले भाई-बन्दु गिने है ।

8. **शुक्र पर यात्रा - वापिसी रेखा**

शुक्र पर खड़ी रेखा यात्रा से वापिसी का जीवन बतलाती है ।हाथ

****

फ़रमान नम्बर - 151

शुक्र के पर्वत का प्रभाव ख़ाना नं० 7 पर

1. शुक्र के पर्वत का संसार से कोई संबन्ध नहीं । बहुत बड़ा वृहस्पति शुक्र का काम देगा । परन्तु बहुत बड़ा शुक्र सन्तान से वंचित रखेगा । (शुक्र बहुत बड़ा तब गिनते है जब मंगल-नेक बहुत ही छोटा रह जाये या उसके स्थान का अलग से पता ही न लगे) । नरम हाथ का वृहस्पति भी शुक्र ही होता है । दिल-रेखा के ठीक होते हुये शुक्र का बुरा प्रभाव न होगा । शुक्र का पर्वत नीच हो तो बुद्धि में गड़बड़ हो । शुक्र मनुष्य शरीर का बीज भी कहलाता है ।

2. **शुक्र उच्च अवस्था में :-**

परिवार का पोषण करने वाला, स्त्री का प्रिय व स्त्री से सुखी, स्त्रियों द्वारा कार्य का शुभ फल और निर्धनों से लाभ पाने वाला हो। संगीत और कविता का शौकीन । शुभ कार्यों में आगे । उसे गाय, बैल का सुख हो परन्तु बहुत बड़ा होने पर संतान से वंचित करे ।

3. **शुक्र नीच अवस्था में :-**

निर्धनों को धन दे व उनकी सहायता करे । बुद्धि के विरुद्ध कार्य अधिक करे । अपने घर, मकान का लाभ न हो । स्त्री, पराई स्त्री अर्थात स्त्री मात्र से सुख न पावे । अन्तिम आयु में आराम पावे । कन्यायें अधिक हों । यदि केवल एक ही कन्या हो तो 12 साल तक सन्तान का सुख खराब करे ।

4. यदि दिल अथावा हृदय-रेखा ठीक हो तो शुक्र का नीच फल न होगा ।
5. उच्च शुक्र ख़ाना नं० 12 का होता है । वह राशि नं० 2 (बिरख) व राशि नं० 7 (तुला) का स्वामी है । आयु तुला 85 वर्ष व बिरख 90 वर्ष होगी ।

****

फ़रमान नम्बर - 152, 153

शुक्र के निशान का प्रभाव

ख़ाना नम्बर 1

(1) सूर्य के पर्वत पर :- दोनों ग्रह एक दूसरे के शत्रु है । सूर्य प्रबल है और शुक्र को नीच करता है या अधीन रखता है । शुक्र का फल नेष्ट परन्तु स्वयं सूर्य का उत्तम है । शुक्र साँसारिक प्रेम व कामुकता को बढ़ाने वाला है जबकि सूर्य आध्यात्मिकता बढ़ाता है । साँसारिक प्रेम में धर्म को मनाही नहीं है । इसके प्रभाव में मनुष्य धर्म-हीन तो अवश्य होगा पर स्त्री, भाई-बन्धु सब इससे लाभ उठायेंगे । उसे स्वयं इनसे कोई विशेष लाभ न होगा ।

(2) कुण्डली में प्रभाव :- मेष राशि । स्वामी मंगल । मंगल शुक्र के सम है । सूर्य जो शुक्र का शत्रु है इसे उच्च करता है । शनि जो शुक्र का मित्र है, इसे नीच करता है । फल के लिये सूर्य है जो स्वयं कभी नीच नहीं होता । इसलिये स्त्री को तो सुख न होगा पर पुरुष को स्त्री का सुख होगा । 7 वर्ष तो निश्चित ही सुख हो । सवारी, चौपाया (गाय बैल) की सुविधा हो ।

ख़ाना नम्बर 2

(1) वृहस्पति के पर्वत पर :- दोनों परस्पर शत्रु । वृहस्पति की अवस्था बाहर से विरक्तता की और अन्दर से रागात्मक होती है । अर्थात बाहर की वायु स्वच्छ और अन्दर की वायु (बन्द) गन्दी होती है । साँस के समान बाहर की वायु अन्दर और अन्दर की बाहर जाया करती

है। वृहस्पति शत्रुता नहीं करता । सब आराम, स्त्री से प्रसन्नता व सुख का जीवन हो । धन 60 वर्ष परन्तु स्त्री-मात्र, प्रेमिका अथवा विधवा स्त्री नाश का कारण बने ।

(2) कुण्डली में प्रभाव :- बिरख राशि, स्वामी स्वयं शुक्र । चन्द्रमा जो शुक्र के सम है उच्च करता है परन्तु शुक्र का शत्रु है । नीच कोई नहीं करता । प्रभाव के लिये वृहस्पति का पर्वत है जो वृहस्पति के बराबर का है । शुक्र इसका शत्रु है । इसलिये यदि शुक्र अकेला हो तो 60 वर्ष धन, सम्पत्ति का सुख हो । शत्रु परास्त व प्रभावहीन हों । यदि चन्द्रमा आदि (दय रेखा) से साँझा हो तो शुक्र का फल खराब । कामुकता व साँसारिक प्रेम का प्रभुत्व रहे ।

ख़ाना नं० – 3

(1) प्रभाव मंगल के पर्वतों पर :- मंगल व शुक्र परस्पर सम है । दोनों का अपना-अपना फल होगा । मंगल-नेक से शुभ फल व मंगल-बद से अशुभ फल हो । मंगल-बद भी धर्म-कर्म के विरुद्ध है और कामुकता को भी धर्म की परवाह नहीं । मंगल नर व शुक्र स्त्री-ग्रह है । इसलिये बुरा पुरुष व मन्दी स्त्री आपस में खूब प्रसन्न रहें । हिरण का चारा बैल खा जाये । झगड़े व बुरे कामों में लाभ उठावे । अपने मकान का लाभ न हो बुरे पुरुषों व बुरी स्त्रियों से लाभ हो । परन्तु फिर भी कठिनता से गुज़ारा करे ।

(2) कुण्डली में शुक्र का प्रभाव :- राशि मिथुन-घर का स्वामी बुध है । वह शुक्र का मित्र है । राहु उच्च करता है । राहु शुक्र का शत्रु है परन्तु घर के स्वामी बुध का मित्र है । प्रभाव के लिए मंगल है । वह शुक्र के बराबर का है । केतु नीच करता है । वह शुक्र का मित्र है । शुक्र का नेक फल हुनरमन्द (बुध से) और 20 वर्ष तीर्थ यात्रा (शुक्र, केतु) ।

ख़ाना नं० – 4

(1) प्रभाव चन्द्रमा के पर्वत पर :- चन्द्रमा शुक्र परस्पर बराबर परन्तु चन्द्रमा शत्रुता करेगा । शुक्र स्त्री व चन्द्रमा माता । नूँह-सास (बहू-सास) का झगड़ा । सास ही शत्रुता करेगी । परिवार का पोषण करने वाला । लड़कियाँ (केतु) अपनी माँ (बहू) की सहायक व दादी से शत्रुता करें । लड़के माता-पिता दोनों के लिये शुभ । अर्थात शुक्र का प्रभाव स्त्री के लिये शुभ परन्तु पुरुष-समूह के लिये अशुभ होगा । केवल आय के लिये ।

(2) कुण्डली में प्रभाव :- राशि कर्क है । घर का स्वामी चन्द्रमा । वह शुक्र से शत्रुता करता है । वृहस्पति उच्च करता है जिससे शुक्र स्वयं शत्रुता करता है । मंगल नीच करता है जो शुक्र के बराबर का है । इसलिये स्त्रियाँ दो हों । 4 वर्ष खूब आराम होवे । बाग-बगीचे लगवाये । ऐसा वृहस्पति के प्रभाव में जो स्वयं किसी से शत्रुता नहीं करता । और शुक्र भी चन्द्रमा से शत्रुता नहीं करता ।

ख़ाना नं० - 5

सिंह राशि । यह सूर्य का घर है । सूर्य शुक्र को अधीन करता है । उच्च नीच कोइं नहीं करता । 5 वर्ष धन व सम्पत्ति आवे । अथवा लम्पट, कामुक व 'शुक्र के पतंग' के फल वाला होवे ।

ख़ाना नं० - 6

(2) कुण्डली में शुक्र का प्रभाव :- कन्या राशि । घर का स्वामी बुध है । वह और केतु दोनों शुक्र के मित्र है । बुध (मित्र) राहु (शुक्र का शत्रु) उच्च करते है । केतु तो नीच करता है । वह शुक्र का मित्र है । अत: खूब धनाड्य हो, नहीं तो 40 वर्ष शत्रु रहें । स्त्री सुख भी अल्प हो । (राहु का प्रभाव)

ख़ाना नं० - 7

(1) शुक्र के पर्वत पर :- अपना घर । स्त्री भाग्य में फल उत्तम हो । पुरुषों से ऐसे व्यक्ति को व्यापार आदि में हानि हो । धन सम्पत्ति स्त्रियों के अधिक काम आवे ।

(2) बुध के पर्वत पर :- दोनों परस्पर मित्र । विवाह, स्त्री एवं सन्तान का सुख । अच्छे स्वभाव वाला, धनी-मानी होवे । पर शुक्र बुध इकट्ठे हों तो कामुक व स्त्री में अनुरक्त व आसक्त होवे ।

(3) कुण्डली में प्रभाव :- राशि तुला । घर का स्वामी स्वयं शुक्र है । शनि जो मित्र है, उच्च करता है । नीच करने वाला सूर्य है जो शुक्र का शत्रु है । यह बुध का भी घर है जो शुक्र का मित्र है परन्तु सूर्य के प्रभाव में बुध चुप रहता है । इसलिये शुक्र के पर्वत पर शुक्र रेखा होने से उसकी कमाई दूसरे खाने वाले हों और व्यापार में शनि का प्रभाव लायें । परन्तु बुध के स्थान पर शादी-रेखा शुभ है । 37 वर्ष स्त्री से सुख पावे । कवि हो और खूब आराम का जीवन विताये । स्त्री के कारण पर स्त्री को उससे इतना सुख न हो ।

ख़ाना नं० - 8

कुण्डली में शुक्र का प्रभाव :- राशि वृश्चिक - घर का स्वामी मंगल है जो शुक्र का सम है । चन्द्रमा नीच करता है । वह शुक्र का शत्रु है चाहे शुक्र चन्द्रमा से शत्रुता नहीं करता । उच्च करने वाला कोई नहीं । इसलिये मंगल नेक पर प्रभाव तो शुभ परन्तु मंगल बद पर शुक्र होने से कुकर्मी पर-स्त्री गामी हो । शुक्र को थोड़ी सी भी बुराई के लिये सहायता मिले तो फौरन कामुकता व स्त्री संग की भावनाओं को बढ़ा लेता है ।

ख़ाना नं० - 9

कुण्डली में प्रभाव :- धनु राशि । स्वामी वृहस्पति जो शुक्र से शत्रुता नहींकरता स्वयं शुक्र उससे शत्रुता करता है । केतु जो शुक्र का मित्र है, उच्च करता है । राहु नीच करता है वह शुक्र का शत्रु है जिसका प्रभाव स्त्री सुख, धन व खर्चे पर होगा । ऐसा पुरुष राज-मन्त्री के तुल्य उच्च बुद्धि वाला होगा । पर धन केवल 2 वर्ष ही पावे ।

ख़ाना नं० - 10

(1) शनि के पर्वत पर :- दोनों शनि व शुक्र मित्र है । शनि मदिरा से मादक व शुक्र (स्त्री) कामुकता से घायल । दोनों का खूब मेल मिलाप हो । शनि की सहायता से स्वास्थ्य में बचाव । शनि के यौवन में स्त्री काम-श्रृंगार का घर । बुढ़ापे में शनि शुक्र दोनों बैरागी विरक्त हो जाते है और संसार का आराम लेते है । बूढ़े होकर दोनों सुमत दें और आराम दें । वैसे भी बूढ़ी वेश्या उपदेश देने में बहुत कुशल होती है।

(2) कुण्डली में प्रभाव :- राशि मकर । घर का स्वामी शनि । वह शुक्र का मित्र है । मंगल उच्च करता है और शुक्र के बराबर का है । वृहस्पति नीच करता है । वह शुक्र का शत्रु नहीं, पर शुक्र स्वयं उससे शत्रुता करता है । इसलिये 12 वर्ष बहुत धन आये । वरना एकान्त प्रिय हो (शनि हो) ।

ख़ाना नं० - 11

कुण्डली में प्रभाव :- राशि कुम्भ। घर का स्वामी शनि जो शुक्र का मित्र है। ऊँच नीच कोई नहीं करता। प्रभाव के लिये वृहस्पति का घर है। वृहस्पति से शुक्र स्वयं ही शत्रुता करता है। इसलिये धन 12 वर्ष प्रचुर मात्रा में आवे। (शनि का प्रभाव) वरना पुरुषत्व हीन व नपुंसक हो।

ख़ाना नं० - 12

कुण्डली में प्रभाव :- राशि मीन, स्वामी वृहस्पति व राहु। दोनों ही शुक्र के शत्रु है। नीच करने वाला शुक्र का मित्र बुध। राहु शत्रु केतु मित्र। शुक्र स्वयं ही उच्च करे। प्रभाव के लिये वृहस्पति का घर जो किसी का भी शत्रु नहीं है। जो शत्रुता करें, वह स्वयं ही करे। अब शुक्र का ही अपना प्रभाव होगा। स्त्री सुख अल्प होगा। परन्तु राज-दाबार में उच्च पद पर आसीन। शत्रु परास्त हों। हर एक से आराम हो। मच्छ-रेखा शुक्र के पर्वत पर अति शुभ चिन्ह है।

नोट :- शुक्र स्वयं अकेला कभी बुरा फल न देगा। इसे दूसरा ही खराब करता है। सबका आज्ञाकारी और सबका प्रिय है। यदि पेशाब (मूत्र) की धार या पानी की लहर आई तो दब गया। खराब हुआ। सूर्य के ताप से भी नष्ट हुआ। वृहस्पति की वायु से घर से इधर-उधर हुआ और प्रेम में दूसरों की चौखट पर माथे रगड़े। राहु ने चक्कर में डाला। चन्द्रमा ने बहु (शुक्र=स्त्री, चन्द्रमा=माता) बेटी माता तबाह किये। मंगल ने भाइयों से संबन्ध बिगाड़े। अन्ततः बुध ने सहायता की। विवाह (शादी) रेखा को संभाला। और अपना गोल गोला देकर धरती को गोल किया।

शुक्र

शुक्र की मिट्टी ने चन्द्रमा के दरिया समुद्र को अपने ऊपर नीचे स्थान दिया । मिट्टी से मनुष्य बना और अन्त को मिट्टी में ही (जलकर या दबाया जाकर) समाप्त हुआ । शरीर में भोजन को पचाने की शक्ति न रही, तो शुक्र के दही ने ही जान बचाई । दही में घी, स्त्री में सन्तान और मिट्टी में खेती–सब इसने दी । अर्थात शुक्र जब कभी भी ख़ाना नं० 6 में स्वयं नीच हुआ तो इसने मंगल–बद का प्रभाव न दिया । चाहे शुक्र न होने से बुद्धि न रही और बुध ने साथ छोड़ा, स्त्री को कुछ कष्ट हुआ परन्तु धन दौलत गुम न हुये । यानि हालत यह हुई कि

"लल्लू करे कबल्लियाँ, रभ सिधीयाँ पावे" ।

स्पष्ट है कि यदि धन व आय बुद्धि के हिसाब से होते तो नादान तथा मूर्ख से अधिक निर्धन कोई न होता । पर ऐसा है नहीं । यानि कि शुक्र का नीच हो जाना अपने लिये मंदा नहीं होता । इसलिये इस ग्रह का दुनिया से संबंध हो या न हो, इससे कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता । यदि यह प्रेमी न होगा तो त्यागी होगा, इसलिये नहीं कि वैराग्य हो गया, बल्कि इसलिये कि इसमें बुद्धि नहीं।

****

फ़रमान नम्बर - 154

मंगल

मंगल नेक –

लाल रंग। नेक होने पर शरीर में लाल रक्त (आत्मा) की तरह जंगल मे मंगल किया और बुराई से हिरण की तरह भागा। मंगल बद हुआ तो कोई बुराई न छोड़ी और हर एक को तलवार के घाट उतारा पर क्षमा न किया ।

1. गृहस्थ में आराम ढूँढ़ने के समय में युद्ध, संघर्ष, लड़ाई-भिड़ाई के साथियों - भाइयों, ताये चाचा आदि से शुभ व अशुभ संबंधों के प्रभाव बताने वाले ग्रह को मंगल कहा गया है । ह्रदय और दृष्टि में स्पष्ट, अन्दर बाहर से एक, धरती में बहुमूल्य लाल रत्न व निस्संतान के लिये पुत्र, न्याय प्रिय और सबको सम दृष्टि से देखना इस ग्रह का काम है । एक हाथ में रक्तिम भण्डा और हिरण के समान बदी से भागना इसके दो पक्ष है । सूर्य की गर्मी और शनि के स्वभाव के लिये ख़राब रहना इसका आवश्यक भाग है ।

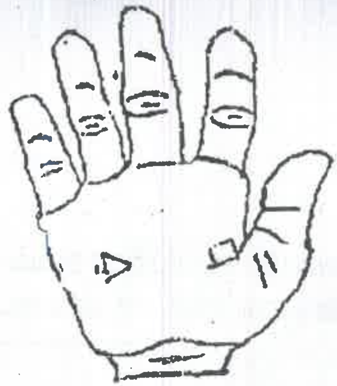

2. **मंगल-नेक - □, मंगल बद - त्रिकोण**

चौकोर सदा शत्रु से बचाता और मंगल-बद सदा शत्रु उत्पन्न करता रहता है । शुभ मंगल या मंगल नेक के बिना सब गृहस्थ बर्बाद होगा, न भाई बन्धु और न ससुराल ही धनी होंगे । मंगल-नेक और पर्वत जंगल में मंगल का प्रभाव पैदा करते है ।

फरमान नम्बर - 155

मंगल नेक

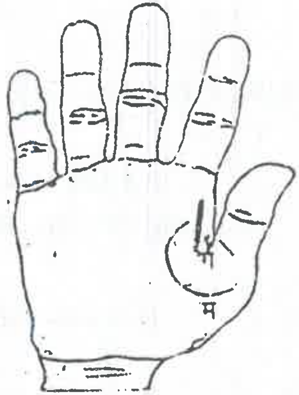

1. **ग - उत्तम गृहस्थ रेखा,**

म - आयु सहायक रेखा या मंगल रेखा ।

आयु-सहायक या मंगल-रेखा । इस रेखा का पूरा वर्णन उमर-रेखा के साथ शनि के पर्वत में हुआ है । यह रेखा गृहस्थ रेखा के साथ मिलती-जुलती सी हुआ करती है । दोनों रेखाओं की अलग-अलग पहचान यह है कि गृहस्थ-रेखा तो धनुष के समान कमानदार होती है यानि धनुष का एक सिरा वृहस्पति की जड़ में तो दूसरा सिरा शुक्र के पर्वत पर अँगूठे की जड़ की ओर हो या झुक जाया करता है । सहायक आयु-रेखा या मंगल रेखा की दिशा उमर-रेखा की दिशा ही होती है ।

मंगल बद से मंगल-नेक को शाख़

2. ऐसी शाख बहुत कम होती है । मंगल--नेक पर्वत का संबंध तो पत्नी--कुल से होता है और मंगल--बद के पर्वत का संबंध माता के खानदान से होता है । यह दोनों कुल अलग--अलग ही रहते है । यदि दोनों पर्वत ऐसी रेखा से जुड़ जायें तो दोनों कुलों में शत्रुता का प्रभाव अथवा फल हो ।
3. यदि मंगल के दोनों पर्वत हथेलो में न हों तो भी शुभ है । ऐसी अवस्था में व्यक्ति अपूर्व साहस वाला होगा ।
4. मंगल--नेक से आयु--रेखा को शाखः-- इसका वर्णन शादी रेखा में किया है ।
5. शुक्र से या शुक्र को रेखा :-- गृहस्थ रेखा का वर्णन ऊपर और मंगल रेखा का वर्णन अन्य स्थान पर किया है ।
6. धन--रेखा या श्रेष्ठ--रेखा का वर्णन जुदा--जुदा और अलग हुआ है । इनका स्थान चन्द्र का पर्वत कहा है ।
7. भाइयों की रेखा का वर्णन शुक्र के पर्वत में हो चुका है ।
8. सिर--रेखा के ठीक होने पर मंगल और शुक्र का बुरा प्रभाव न होगा । दिल--रेखा भी ठीक होवे । मंगल--नेक की सीमा आयु--रेखा रूपी नदी को ही माना है ।

फरमान नम्बर - 156

मंगल-नेक के पर्वत पर रेखा और मंगल नेक की अपनी रेखा

1. गृहस्थ-रेखा :- यह रेखा पत्नी के माता पिता, भाई बन्धु, पुत्र-पुत्रियाँ व अन्य सम्बन्धियों का प्रभाव बताती है । परिवार का पूरा हाल देखने के लिये मच्छ-रेखा (जिसका वर्णन शनि के पर्वत में है) का संबंध जानना आवश्यक है । मंगल नेक पर की गृहस्थ-रेखा की लम्बाई इसकी ठीक पैमाइश है । सारी गृहस्थ-रेखा अर्ध गोलाकार (है ।

2. डँडे के समान सीधी रेखा :

यदि यह रेखा धनुषाकार न होकर सीधी डंडे के समान खड़ी हो तो आय के पुष्कल होते हुये भी व्यक्ति ऋणी रहेगा ।

3. अशुभ गृहस्थ रेखा -

यदि यह रेखा धनुषाकार होकर शुक्र के पर्वत में अँगूठे की ओर झुक जाये तो अति शुभ होती है । ऐसा व्यक्ति बड़े परिवार वाला, धनी, सन्तान, स्त्री व संसार का सुख भोगने वाला होगा । रेखा के इस आकार के विरुद्ध फल नम्बर 10 आगे के अनुसार होगा जो अशुभ है ।

4. गृहस्थ रेखा सिर रेखा को काट कर आगे निकल गई ।

गृहस्थ-रेखा यदि सिर-रेखा से मिलकर समाप्त हो जाये तो व्यक्ति चिन्ता ग्रस्त होकर बहुत दुःख भोगेगा । परन्तु यदि सिर-रेखा को काटकर आगे निकल जाये तो बुरा प्रभाव न होगा । (बुध (सिर-रेखा) मंगल का शत्रु है)।

5. गृहस्थ रेखा आयु रेखा व सिर रेखा के मिलने के स्थान तक। यदि गृहस्थ-रेखा सिर-रेखा और

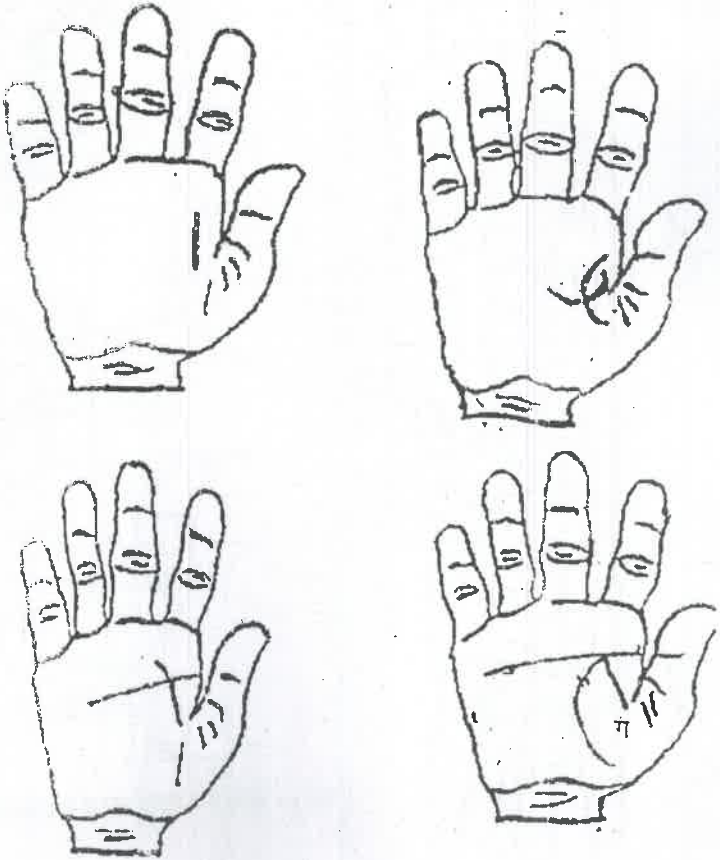

उमर-रेखा के मिलने के स्थान पर से आरम्भ हो, तो भी विचारों में चिन्ता आदि का बुरा प्रभाव अवश्य हो।

6. यदि गृहस्थ-रेखा सिर-रेखा से उस स्थान पर मिले जहाँ वह अकेली है, तो भी प्रभाव बुरा होगा। जब सिर-रेखा को पार करके जाये।

7. **वृहस्पति पर :-** तो धनी हो। ससुराल भी धनी हो उनसे सम्पत्ति प्राप्त हो।

8. **शनि पर :-** तो धनी, बड़े परिवार वाला पोते पड़पोते का मुँह देखे।

9. **सूर्य पर :-** शरीर दृढ़ हो। पत्नी व अन्य कुल की स्त्रियों को धन दौलत खिलाकर तारता रहे।

10. **शुक्र पर :-** यदि गृहस्थ-रेखा का झुकाव या रेखा की पीठ मंगल नेक व अँगूठे की ओर हो तो स्त्री व उसके भाई-बन्धु विरोधी हों। गृहस्थ नष्ट हो। विष की घटनाएँ हों। यह अवस्था ऊपर नं० 3 के विपरीत है।

(अ) यदि मंगल नेक से शाख सिर-रेखा के नीचे नीचे चलकर आखिर सिर-रेखा में ही समाप्त हो जाये तो पत्नी के कुल के आदमी व्यापार में साथी होंगे जिनका कोई लाभ न होगा। केवल खा-पीकर चलते जायेंगे।

मंगल-नेक पर शाखें

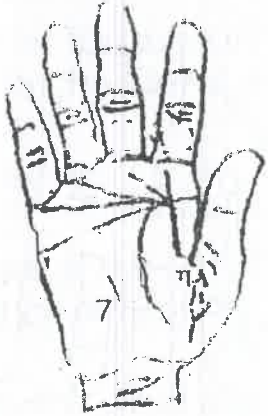

(10 ब) बुध के पर्वत पर :- यदि रेखा सिर-रेखा (जो बुध की ही रेखा है) को पार करके बुध के पर्वत में मंगल नेक से चली जाये तो किसी शुभ फल की आशा न रखनी चाहिये क्योंकि बुध व मंगल सम बल के है और बुध मंगल से शत्रुता करता है। ऐसी अवस्था में झगड़े आदि कड़वी वाणी और अपने ही विचारों के कारण होंगे।

11. मंगल-नेक से आई रेखा का यही हाल होता है यदि रेखा सिर-रेखा को पार करके वृहस्पति, शनि, सूर्य या बुध का रुख करके (उनकी दिशा में होकर) दिल या चन्द्र-रेखा पर ही समाप्त हो जाये, क्योंकि रास्ते में बुध (सिर-रेखा पर) अपना बुरा प्रभाव कर गया था

12. जब मंगल नेक की रेखा वृहस्पति की दिशा की ओर बढ़ी हुई हो तो उमर-रेखा रास्ता में आई जबकि उमर-रेखा के साथ बुध-रेखा या सिर-रेखा मंगल नेक के पर्वत पर पहले ही मिल चुकी थी। ऐसी अवस्था में उमर-रेखा या शनि-रेखा भी मंगल से शत्रुता पर है और बुध या सिर-रेखा भी शत्रुता पर। अब यदि उमर-रेखा व सिर-रेखा दोनों मिली हुई हों तो भी शत्रुता ही होगी। मंगल नेक की गृहस्थ रेखा जब उमर-रेखा व सिर-रेखा

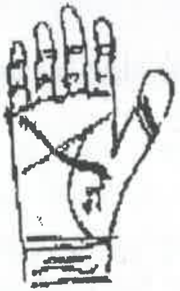
10 ब

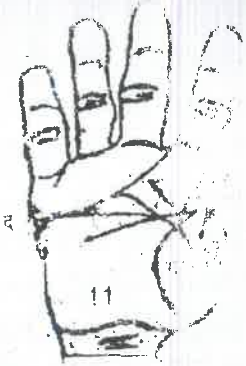

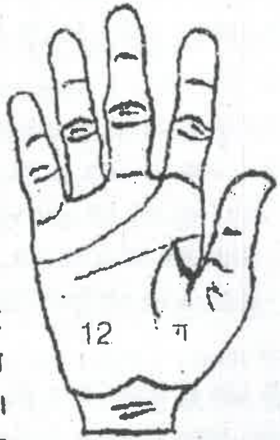

के मिलने के स्थान पर इन दोनों से मिलकर समाप्त हो जाये तो कोई शुभ प्रभाव न होगा।

13. हाँ, जब यह उमर-रेखा व सिर-रेखा के मिलने का स्थान हथेली के अन्दर की ओर ही रह जाये और गृहस्थ-रेखा को ऊपर वृहस्पति की ओर जाने को रास्ता साफ (बिना रुकावट के) मिल जाये तो धन, अमीर ससुराल, ससुराल से सम्पत्ति आदि की प्राप्ति अवश्य हो । कारण कि शनि स्वयं मंगल से शत्रुता नहीं करता, मंगल ही शनि से बैर विरोध करता है ।

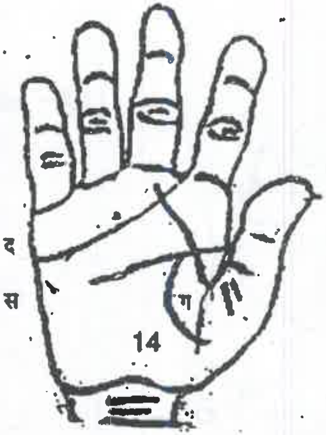

14. इसी प्रकार सिर-रेखा व उमर-रेखा के मिलने के स्थान को पार करके गृहस्थ-रेखा जब शनि में चली जाये तो शुभ फल होगा (क्योंकि शनि तो शत्रुता नहीं करता । मंगल ही करता है यहाँ मंगल तो मंगल नेक ही है ।) अर्थात शनि की देन रोग, मृत्यु, उदासी, तबाही आदि परिवार में न आयेगी । हाँ मंगल-नेक ही कोई बुरा फल दे तो दे अर्थात परिवार के लोग परस्पर झगड़ा करने करवाने में लगे हों तो सम्भव है, पर प्राकृतिक विपदा मृत्यु आदि से सामना न होगा ।

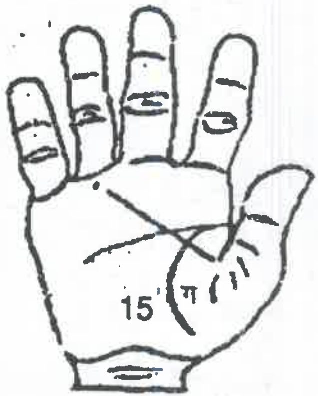

15. **गृहस्थ-रेखा जब सूर्य के पर्वत पर** पहुँची तो सिर (बुध) - रेखा व दिल (चन्द्र) -रेखा तो सूर्य का नाम सुनकर चुप हो गई परन्तु शनि (उमर) -रेखा का बुरा प्रभाव होता ही रहा । शनि सूर्य का पुत्र है परन्तु शत्रुता करता है । सूर्य का शरीर बलिष्ठ है सही, पर इसकी किरणों के मुकाबला में शनि की कुकर्मी कौए की आँख बहुत सावधान है और चारों ओर + (शनि का चिन्ह) बीच में बैठ देखती रहती है और सूर्य से शत्रुता करती है । बोलचाल में भी कहते है कि ''गर्मी इतनी थी कि कौए की आँख निकल रही थी'' या ''गर्मी के मारे कौए की आँख भी आँखों से निकलकर

भाग जाना चाहती थी''।

अब सूर्य की कमाई जितनी बढ़ती जाए, शनि की आँख स्त्री के परिवार को सब कमाया हुआ धन पहुँचा देती है । गृहस्थ-रेखा जब वृहस्पति पर गई तो ससुराल से धन मिला । अब गृहस्थ-रेखा जब सूर्य पर गई तो ससुराल खानदान या स्त्री की आँख ने खा ली । यानि साले, बहनोई या स्त्री की आँख ने जो देखा, वही सूर्य के घर से इनको चला गया । स्त्री की आँख कौए के समान बहुत होशयारी से सूर्य का सारा धन उड़ाती चली गई और सूर्य की कोई पेश न गई । संबन्धित लोग भी ऐसा ही व्यवहार करते रहे अर्थात स्त्री की पूजा आँख की पूजा हो गई और ''आँख है तो जहान है'' की समस्या सामने आती रही । यहाँ स्त्री से तात्पर्य हर उस स्त्री से है जिसकी आँख काली हो । भूरी आँख वाली स्त्री सूर्य के धन को पति के परिवार के पोषण पर लगायेगी । काली आँख वाली स्त्री का पुरुष स्त्री के नैन कटाक्ष व रंग-बिरंगी आँखों के तमाशे देखकर प्रसन्न होगा और सब धन उस स्त्री पर बलिदान कर देगा । शनि को काली आँख वाली मछली, मीन राशि, का स्वामी कहा है । मीन राशि मध्यमा की आखिरी पोरी पर ख़ाना नं० 12 है । इस राशि को बुध नीच करता है यानि काली आँख वाली मछली या स्त्री का साथ बर्बाद करता है । शुक्र, केतु इसे उच्च करते है । यानि वह स्त्री जिसकी आँख काली न हो या वह पुरुष जो यात्रा से अधिक संबंध रखे, बच जाता है । शनि का अपना अस्तित्व देखती है अर्थात चन्द्र की दिल-रेखा का चन्द्र के पानी का दरिया शनि या मछली व मगरमच्छ की आँख को सहायता देगा । निष्कर्ष यह कि गृहस्थ-रेखा के सूर्य पर जाने से स्त्री का ख़ानदान सूर्य की कमाई से मालामाल हो जाता है ।

फरमान नम्बर - 157

मंगल के पर्वत पर प्रभाव ख़ाना नम्बर 3

(1) इस पर्वत के दो भाग है । एक नेक (शुभ) और दूसरा बद (अशुभ) । प्रभाव स्पष्ट है । चौकोर □ नेक और त्रिकोण △ बद होगा । मंगल नेक मेष राशि नं० 1 घर का स्वामी है और उच्च मकर ख़ाना नम्बर 10 का उच्च होगा । इसलिये आयु 90 वर्ष ।

मंगल-बद वृश्चिक राशि ख़ाना नं० 8 का स्वामी है और कर्क नं० 4 का नीच होगा । अतः आयु 85/96 होगी । औसत आयु 90 से अधिक होगी ।

(2) मंगल के पर्वत का प्रभाव - ख़ाना नम्बर 3

पैनी दृष्टि, युद्ध की वृत्ति, सामरिक शक्ति, हर पल रक्तिम झंडा, निर्मम हत्यारा, पराक्रमशाली नेता, कुबेर कृपा-पात्र परन्तु सन्तान कम। स्त्री का सुख अल्प (मंगलीक स्त्री मृत्यु को प्राप्त हो - सन्तान सुख न हो । संबन्धित लोगों व शत्रुओं का संबंध सामरिक प्रयासों में बाधक। धनपति पर अन्यायपूर्वक एक पैसा भी साथ न मिलाये । बिल्कुल शनि के आचार के विरुद्ध । शत्रु चाहे अधिक हो पर सभी को निरस्त करे । ससुराल व ताये चाचे से संबंध भी इसी पर्वत से देखे जाते है ।

मंगल बद - ख़ाना नम्बर 8

पर्वत की सीमाएँ :- दिल (चन्द्र) -रेखा उत्तर में, सूर्य की उन्नति-रेखा या सेहत-रेख़ा पूर्व में और तह पर नीचे चन्द्र का पर्वत । इस पर्वत से ताये, चाचे का परिवार, अपने परिवार के दूसरे भाई-बन्धु आदि का संबंध होगा जब शुक्र की रेखायें इस पर्वत पर हों तो तात्पर्य ताये, चाचे व अन्य पुरुष वर्ग से होगा, जो हर प्रकार से सहायक होगा । यदि यह शुक्र रेखा अन्त में दो-शाखी हो —< >— तो यह स्त्रियों से संबंध होगा । स्त्री वर्ग का संबंध हानिकर कारण हो सकता है । यदि > < , ∧ ∨ का आकार हो तो मंगल-बद का पूरा फल बर्बादी का होगा । ताई, चाची इस बर्बादी का कारण बनेंगी और स्वयं भी बर्बाद होंगी । इस पर्वत से सन्तान का भी संबंध है । अन्तर यह होगा कि हथेली के किनारे पर हथेली से बाहर की ओर की रेखा अर्थात वह रेखा जो हाथ को फैलाकर (हथेली ऊपर आकाश की ओर) धरती पर रखने के समय हथेली से बिल्कुल बाहर ही प्रतीत हों, वह सन्तान को बतलायेंगी और जो हथेली के अन्दर प्रतीत हों वह ताये, चाचे होंगे ।

फ़रमान नम्बर - 158, 159

मंगल-नेक के निशान (चिन्ह) का प्रभाव

ख़ाना नम्बर (1)

(1) सूर्य के पर्वत पर :- दोनों ग्रह परस्पर मित्र; फिर सूर्य के साथ होने से मंगल नेक तो है ही । युक्तियों से भरपूर मन्त्री । चाहे शत्रु अधिक हों प्राकृतिक रूप से उनसे पूरा बचाव होवे और वह परास्त हों । लकड़ी के व्यापार में भी लाभ हो । दोनों ग्रहों का अपना-अपना और उत्तम फल होगा । औसत आय 7 ½ रुपये । उद्योग सेवा की अवधि 28 वर्ष ।

(2) कुण्डली में मंगल का प्रभाव :- मेष राशि। यह मंगल का अपना घर है। सूर्य इसे उच्च करता है। वह मंगल का मित्र है। शनि नीच करता है जो मंगल के बराबर का है। प्रभाव के लिये यह सूर्य का घर है जो मंगल का मित्र है। राजदरबार से लाभ अन्यथा 6 साल शारीरिक कष्ट (शनि) या मंगल-बद का संबंध होगा।

ख़ाना नम्बर (2)

(1) वृहस्पति के पर्वत पर :- मंगल वृहस्पति दोनों मित्र है। धन की पूर्ण प्राप्ति एवं विपुल धन-संग्रह। कुल का अगुआ होवे। दोनों का शुभ अति उत्तम फल होगा।

(2) कुण्डली में प्रभाव :- राशि बिरख। यह शुक्र का घर है जो मंगल के सम है। प्रभाव के लिये यह वृहस्पति का घर है। वृहस्पति मंगल का मित्र है। नीच करने वाला कोई ग्रह नहीं। कुल का अगुआ व मुखिया होगा। धन की पूर्ण प्राप्ति होगी। हर प्रकार से सुख सुविधा। यदि मंगल बद का संबंध हो तो भाग्य-प्रभाप कुछ हल्का होगा। 9 वर्ष रोग आदि का डर रहे। और प्रभाव बुरा ही होवे।

ख़ाना नम्बर (3)

(1) मंगल के पर्वत पर :- मंगल नेक पर, तो ससुराल धनी हो। उनसे लाभ हो। साँसारिक संबंधों से भी लाभ। मंगल-बद पर हो तो युद्ध व सामरिक विद्या में निपुण और बुद्धिमान होवे।

(2) कुण्डली में प्रभाव :- मिथुन राशि। यह बुध का घर है जो मंगल के सम है। यदि मंगल बद हो तो बुध शत्रुता करता है। राहु उच्च करता है जो मंगल के समय चुप रहता है। केतु नीच करता है। यह मंगल-बद का शत्रु है। सामरिक कला में प्रवीण। ससुराल धनी हो और उनसे लाभ हो। यदि मंगल बद (अशुभ) हो तो साधारणतया लोगों से शत्रुता। शरीर तथा सन्तान का सुख कम होवे। यात्रा गले लगी रहे। 15 साल शारीरिक कष्ट हो।

ख़ाना नम्बर (4)

(1) चन्द्रमा के पर्वत पर :- दोनों ग्रह बराबर। दोनों का उत्तम फल पर चन्द्रमा का अधिक प्रबल हो।

(2) कुण्डली में प्रभाव :- राशि कर्क। घर का स्वामी चन्द्रमा है। वह मंगल का मित्र है। वृहस्पति उच्च करता है। वह भी मंगल का पूर्ण मित्र है। मंगल स्वयं ही इसे नीच करता है। मंगल-नेक से शुभ फल व मंगल बद से दुर्भाग्य। 2 साल कष्ट होवे।

ख़ाना नम्बर (5)

कुण्डली में मंगल का प्रभाव :- राशि सिंह । घर का स्वामी सूर्य जो मंगल का वास्तविक मित्र है । इस राशि को कोई उच्च-नीच नहीं कर सकता । स्त्री व सन्तान का सुख होवे । यदि मंगल-बद का संबंध हो तो अग्नि से भय । दृष्टि में हीनता का भी भय रहे ।

ख़ाना नम्बर (6)

कुण्डली में मंगल का प्रभाव :- कन्या राशि । घर के स्वामी बुध व केतु । वह दोनों ही मंगल-बद के शत्रु है । बुध (शत्रु), राहु (चुप रहने वाला) उच्च करते है । केतु जो शत्रु है उच्च करता है । मंगल नेक से सदा ही शुभ फल । (भाई इसके इससे हर हालत में कमजोर हों । यदि आर्थिक रूप से अच्छे हों तो उन्हें एकदम बड़ी भारी हानि का सामना करना पड़े ।) हर तरह का आराम । रागी होगा। स्त्री व मित्रों से सुख प्राप्त होवे । 24 वर्ष संतान उत्पन्न होती रहे । मंगल-बद से फल ख़राब । हर बात में हानि हो ।

ख़ाना नम्बर (7)

(1) शुक्र के पर्वत पर :- दोनों बराबर के है । दोनों का फल उत्तम होगा । बज़ीर या सहायक होवे । रोते को हंसाने वाला हो । "इक्को अँख सुलखनी, झुक-झुक करन सलाम दो-दो अँखियाँ वाले" । अर्थात शुक्र की यदि एक आँख भी होगी तो भी दोनों आँखों वाले झुक-झुक कर नमस्कार करेंगें । गृहस्थ का आराम होगा चाहे स्त्री एक आँख वाली कानी ही क्यों न हो । इसलिये कहा है कि स्त्री चाहे कानी हो रूप व दिल की काली न हो ।

(2) बुध के पर्वत पर :- मंगल और बुध बराबर है परन्तु बुध शत्रुता करता है । इसलिये मंगल के धन को बुध स्वयं ही नष्ट करेगा । परन्तु ऐस हाथ वाला गणित विद्या में निपुण होगा ।

(3) कुण्डली में मंगल का प्रभाव :- राशि तुला । घर का स्वामी शुक्र है । वह मंगल के बराबर है । शनि भी बराबर है । वह इसे उच्च करता है । सूर्य नीच करता है और मंगल का मित्र है । यह घर बुध व शुक्र के प्रभाव का घर है । इसलिये स्त्री से धोका खाये । 17 साल अग्नि से भय । न बुद्धि साथ दे और न स्त्री सहायता करे । ऐसा मंगल-बद के सम्पर्क पर होता है । यदि मंगल-नेक का सम्पर्क हो तो स्त्री का सुख पूरा । मंत्री हो और रोते को हँसाने वाला हो । धर्मात्मा प्रकृति का हो ।

ख़ाना नम्बर 8

(2) कुण्डली में प्रभाव :-वृश्चिक राशि, मंगल-बद का अपना घर । चन्द्रमा नीच करता है । वह इसका मित्र भी है । उच्च करने वा कोई ग्रह नहीं । इसलिये यदि मंगल-बद हो तो 22 वर्ष मृत्यु का भय । यदि मंगल-नेक हो तो विजयी, गृहस्थ में सुखी और आराम हो ।

ख़ाना नम्बर 9

कुण्डली में मंगल का प्रभाव :- धनु राशि । वृहस्पति का घर है जो मंगल का मित्र है । केतु उच्च करता है जो शत्रु है । नीच करने वाला राहु है जो चुप रहता है । यदि मंगल नेक हो तो शुभ फल और यदि बद हो तो बुराई की जीवित मूर्ति ।

ख़ाना नम्बर 10

(1) शनि के पर्वत पर :- दोनों परस्पर शत्रु है और बुराई के सरदार । इसलिये दो शत्रुओं का एक ही नियम पर रहने के कारण फल शुभ होगा । सबको लूट-खसूट कर बड़ी भारी सम्पति बनाने वाला होगा । स्वास्थ्य उत्तम होगा । इस पर्वत पर मंगल-बद Δ भी जादू-मन्त्र जानने वाला होगा ।

(2) कुण्डली में प्रभाव :- मकर राशि । घर का स्वामी शनि जो मंगल के बराबर का है । मंगल स्वयं इसे उच्च करता है । वृहस्पति नीच करता है । वह मंगल का मित्र है । यदि मंगल-नेक हो तो धनवान । मंगल-बद होने पर 15 साल ही कष्ट हो ।

ख़ाना नम्बर 11

कुण्डली में प्रभाव :- कुम्भ राशि । यह शनि का घर है जो मंगल के बराबर है प्रभाव के लिए यह स्थान वृहस्पति का है । ऊँच, नीच वाला कोई ग्रह नहीं । यदि मंगल नेक हो, तो 24 साल धन एकत्र हो । यदि मंगल-बद हो तो संतान से क्लेश व दुःख पाये ।

ख़ाना नम्बर 12

कुण्डली में मंगल का प्रभाव :- मीन राशि । स्वामी वृहस्पति है जो मंगल के बराबर का है । घर का स्वामी वृहस्पति (मित्र), राहु (चुप रहने वाला) शुक्र (बराबर का) और केतु (शत्रु) इसे उच्च करते है । बुध (शत्रु) और राहु (चुप रहने वाला) नीच करते है । यदि

मंगल नेक हो तो फल शुभ हो । स्त्री सुखकारी हो व धन की आमद हो । यदि मंगल-बद हो तो मूर्खता पूर्ण कार्यों में धन का व्यय हो । 5 वर्ष हानि की आशंका रहे ।

नोट

1. **केतु (पापी ग्रह)** । यह कुख्यात अवश्य है पर तबाही न देगा । यानि यदि लड़के न रहने देवे तो लड़कियों की संख्या अवश्य बढ़ा देगा । दो में से एक कर देगा पर शून्य न होने देगा । शुभ हो तो लड़के ही लड़के देगा । रास्ता का छलावा या छलेडा होगा । मगर जान से न मारेगा ।

केतु व राहु दोनों शनि का स्वभाव रखते है पर शनि की शक्ति नहीं ।

(1) जब दो से ज्यादा ग्रह इकट्ठे हो जायें तो शत्रु ग्रह अपनी शत्रुता छोड़ देंगें । परन्तु पारस्परिक मित्रता न छोड़ेगें ।

(2) सूर्य, बृहस्पति, मंगल नर-ग्रह है । वह पुरुषों पर प्रभाव डालेंगे । चन्द्रमा, शुक्र स्त्री-ग्रह हैं, वह स्त्रियों पर प्रभाव डालेंगे । नपुंसक ग्रह नपुंसक वस्तुओं (धातु, खनिज पदार्थ आदि) को प्रभावित करेंगे ।

2. **वृहस्पति :-** किसी ग्रह का शत्रु नहीं । अपनी पहली अर्ध अवधि यानि 8 वर्ष सदा शुभ फल देगा, चाहे अपने घर बैठा हो और चाहे दूसरे शत्रु के घर गया हो परन्तु इसके घर आये पापी ग्रह अशुभ फल देंगे ।

3. **सूर्य :-** स्वयं नीच न होगा । दूसरे शत्रु ग्रहों का फल नीच कर देगा । राहु केतु भी इस के प्रभाव के सम्मुख दीवारें खड़ी कर सकते है । दीवार हटी तो सूर्य का प्रभाव तत्काल नही पहले वाला पूरा हो गया । बुध व चन्द्रमा दोनों अपनी-अपनी शक्ति इसे ही दे देते है ।

4. **चन्द्रमा :-** शत्रु ग्रहों के समय अपना शुभ फल देना स्वयं ही बन्द कर लेता है । मगर दूसरे का फल अवश्य देगा । बाहर से शत्रु भी हो तो दिल से आन्तरिक शुभ फल ही देगा । सूर्य के समय, बुध के समान, अपनी शयित सूर्य को दे देता है । शनि के समान बीजनाश नहीं करता । यदि विरुद्ध भी होगा तो एक व्यक्ति के ही, कुल परिवार के विरुद्ध न होगा ।

5. **शुक्र :-** यह ग्रह किसी के फल को खराब नहीं करता । किन्तु शत्रु के साथ अपनी काम-शक्ति (अथवा अपनी ही बुराई) को बढ़ाकर, खराबी करवाकर, बदनाम हुआ है । केवल एक ही आँख से (काम अथवा मोह) से देखने लग जाता है ।

6. **मंगल :–** नेक मंगल पूरा न्याय–प्रिय व न्याय–निष्ठ होगा । राहु इसके साथ चुप बैठेगा । सूर्य के साथ मंगल नेक – मंगल होगा । बद–मंगल हर प्रकार से क्रूर व दया हीन है । यह सूर्य के साथ न होगा । पूरी स्याही, अँधेरा व मृत्यु देगा ।

7. **बुध :–** जिसके साथ मिला (चाहे भला, चाहे बुरा) उसी की शक्ति बढ़ा दी । सूर्य व मंगल–नेक के साथ अपनी आधी अवधि तक चुप रहेगा । (मंगल–नेक है ही वही जो सूर्य के साथ हो और यह सूर्य के साथ चु होगा) ।

8. **शनि (पापी ग्रह) :–** पाप के समय यह राहु, केतु द्वारा प्रस्तुत बहाना ही ढूँढता है और तत्काल जड़ से बुरा कर देता है । यदि सूर्य प्रकाश का केन्द्रित स्त्रोत है तो शनि अँधेरे की अथाह खाई । अर्थात शनि सूर्य के विरुद्ध चलेगा । यह ग्रह यदि शुभ हो जाये जो सूर्य बृहस्पति आदि से भी बढ़कर होगा । सबके घरों से माल उठवाकर अपने ही घर में लाकर एकत्र कर लेगा । और सबको तार देगा । ऐसी अवस्था मेंदूसरों के लिए बुरा पर अपने लिए शुभ फल देने वाला ही होगा ।

9. **राहु (पापी ग्रह) :–** एक राहु की सहायता के समय व्यक्ति को संसार भर के शत्रुओं की परवाह नहीं । यह सदैव केतु के उल्ट होगा और मंगल–नेक के समय चुप होगा । जब बुध का मित्र हो तो कभी बुराई न करेगा । यह स्वयं न मारेगा परन्तु मारने की शक्ति या मार्ग पैदा कर देगा ।

****

फ़रमान नम्बर - 160

मंगल-बद के पर्वत पर रेखा और मंगल-बद की रेखा

(1) त - बुध को जाती तरक्की रेखा,

च - चन्द्र,

शु - शुक्र का पर्वत,

म - मंगल बद ।

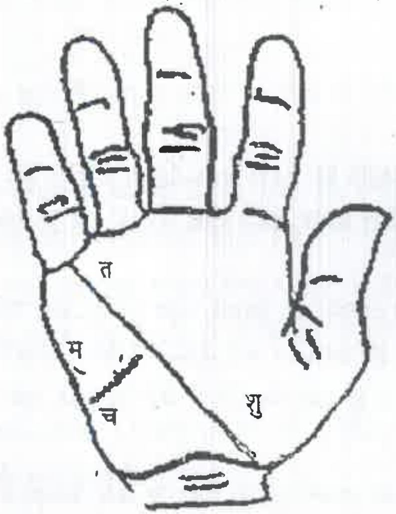

यह पर्वत माता के भाई-बन्धुओं या पिता के भाई-बन्धुओं से संबन्धित है। इस पर्वत से जो रेखा सूर्य की रेखा को (जिसका नाम सूर्य की तरक्की रेखा है और बुध की ओर चलती है) जो काटे तो भाई-बन्धुओं, ताये, चाचे, तपता, औलाद अपनी या भाई की औलाद की मृत्यु को प्रकट करेगी। (मंगल, बुध आपस में शत्रु है)। परन्तु स्त्री, लड़की, मामी या किसी भी स्त्री-लिंग धारी की मृत्यु न होगी। सब नर होंगे। जो मृत्यु का ग्रास बनेंगे।

शुक्र या चन्द्रमा से आई हुई ऐसी शाख स्त्री-लिंग धारियों की मृत्यु की द्योतक होगी यदि रेखा की दिशा बुध की ओर हो यानि मंगल की ओर से चलकर

बुध या सिर रेखा को काटने के उद्देश्य से यह रेखा टेढ़ी हाती जा रही हो।

(2) मंगल नंक 'न' से सीधी रेखा मंगल बद 'ब' को और यदि मंगल बद Δ से सीधी ही मंगल नेक ◻ की ओर भागने की दिशा करती हुई शुक्र रेखा हो तो मौतें तो न होंगी मगर पेशा या कारोबार में विराध अवश्य होगा। हो सकता है कारोबार नष्ट ही हो जाये।

(3) क - किस्मत रेखा , स - सेहत रेखा

यदि टेढ़ी या सीधी लकीर (जिनका वर्णन ऊपर हुआ है) किस्मत रेखा को आ काटे तो मौतें या रुकावट अपने सगे संबन्धियों की अपने की कारोगार में विरोध होगग। और यदि सेहत या सूर्य की तरक्की रेखा को काटें तो समीप के संबन्धियों पर बुरा प्रभाव होगा।

(4) मंगल - बद : सिर रेखा यदि बहुत ही लम्बी बढ़कर मंगल-बद में पहुँच जाये तो स्वयं तो कुशाग्र बुद्धि व मेधावी होगा पर मामे और मामूँ ख़ानदान बर्बाद होगा। पहले तो मामें होंगे नहीं और यदि जीवित हों तो सन्तानहीन होंगे। बुरा प्रभाव ही होगा।

(5) त्रिकोण की ओर दो शाखी सिर रेखा : यदि सिर-रेखा मंगल-बद की ओर दो शाखी हो जाये तो भी बुरा ही

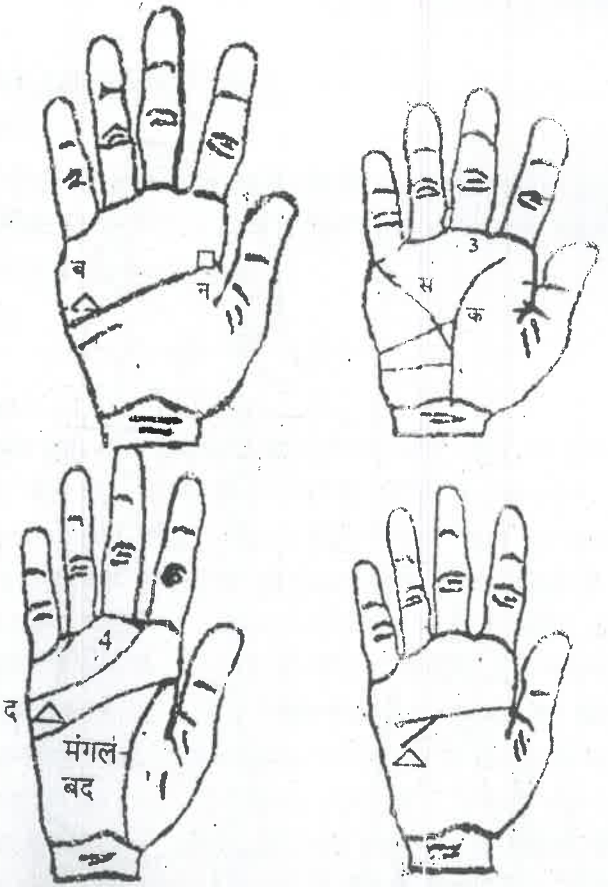

प्रभाव है । अर्थात बुध के वाण को मंगल -बद का मुँह लगा है । यह मामूँ ख़ानदान को मृत्यु का ग्रास बनाये बिना न रहेगा । और उनकी भावी सन्तान को नष्ट कर देगा ।

(6) सिर रेखा सेशाख त्रिकोण को :

यदि सिर रेखा से कोई शाख मंगल-बद को जावे तो जिस आयु में ऐसा व्यक्ति होश संभाले और मंगल के प्रभाव का समय 7, 14, 21, 28 इत्यादि होवे तो उस साल से मामूँ घर से बाहर होगा । यानि साधु आदि हो जाये या गुम हो जाये । ऐसी प्रबल संभावना है । ऐसी स्थिति में मामूँ सिर में स्वाह (राख) डालकर ही बच सकता है मगर वह भी अपने घर में नहीं बच सकता । और यदि घर में जीवित होवे तो मरे हुये के समान ही होवे । कारोबार में उतार-चढ़ाव व नौकरी से निकाला जाना जो भी कहो सच है ।

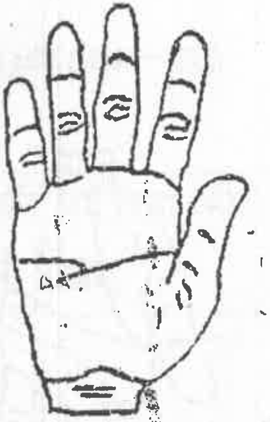

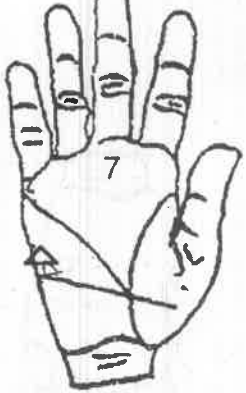

(7) त्रिकोण से रेखा शुक्र को ।

यदि मंगल-बद से रेखा शुक्र और बुध को जाये तो प्रभाव बुरा क्योंकि शुक्र की ओर उमर (शनि) रेखा शत्रु है और बुध या सेहत रेखा का बुध शत्रु है ।

(8) त्रिकोण से रेखा सूर्य को, एवं वृहस्पति को एवं चकौर को ।

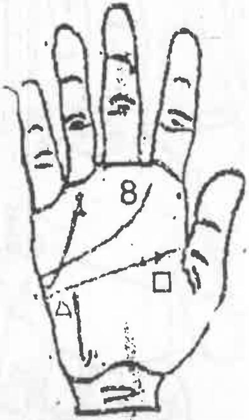

यदि मंगल-बद से रेखा मंगल नेक को जाये तो शुभ है बशर्ते कि रास्ते में बुध (सिर) -रेखा या शनि (आयु) रेखा का संबन्ध या प्रभाव न हुआ हो । यही हाल वृहस्पति और सूर्य को चली जाने वाली शाख से होगा।

चन्द्रमा को शाख अति उत्तम प्रभाव देगी । शनि को शाख बुरा फल देगी ।

(9) किस्मत रेखा या सेहत रेखा की शाखों का वर्णन पहले हो चुका है । उमर और सिर रेखा से मंगल-बद का मिलाव अशुभ परिणाम उत्पन्न करेगा ।

(10) मंगल बद के पर्वत पर हथेली के किनारे हथेली के बाहर के भाग पर सीधी लेटी रेखायें ताये, चाचे और दो-शाखी लेटी रेखा के मुँह पर की शाखें ऐसी औरत के लड़के गिने जायेंगे । यह रेखायें विधवा ताई चाची को भी बतायेगी जो किसी न किसी पुरुष की मृत्यु का कारण होगी । इस स्त्री को नमस्कार करना 'पाँव लागूँ' कहना और आर्शीवाद प्राप्त करना बचाव में सहायक होगा ।

फ़रमान नम्बर - 161

कुण्डली में मंगल-बद का प्रभाव

1. मंगल-बद सूर्य के बिना एक ऐसा कायर हिरण होता है जिसके साथ यदि कुत्ता अपना मुँह छुआ भी दे, पकड़े या न पकड़े, तो हिरण स्वयं ही दिल छोड़ देगा और लेट जायेगा । परन्तु हिरण (मृग) जब पहाड़ी चीता होगा तो सिंह से भी अधिक फुर्तीला व शैतान होगा । मंगल-बद का मित्र शनि इसलिये मृत हिरण की खाल-मृगछाल-पर विषैला साँप (शनि) कभी न चढ़ेगा । इसलिये योगी ध्यानी मृग छाला लेते है । मंगल-बद के हृदय में जो वृत्ति उठती है वह कुवृत्ति ही होती है । यह कुवृत्तियाँ सदा ही मन को चलायमान या अस्थिर रखती है । और व्यक्ति को सद्-मार्ग की बजाये कुमार्ग में लगाती है । इसी नियम के अनुसार मंगल-बद (अशुभ मंगल) सब पर्वतों की शक्ति को क्षीण करता है । हर समय वही खरगोश की तीन टाँगें दिखलाता है । जब खरगोश बैठता भी है तो भी अगली दोनों टांगों को ऐसे जोड़कर बैठता है कि दो की बजाये एक ही टांग प्रतीत होती है । अर्थात यदि ऊपर एक है तो नीचे दो होती है । यही तीन कोना तीन काने का खेल दिखलाता है । इसी प्रकार 13 न दिखलाकर 3 ही दिखलायेगा । संसार में रहा तो संसार को त्रैलोकी कहलवाया और एक के तीन टुकड़े कर दिये । संसार में रहा तो संसार को त्रैलोकी कहलवाया और एक के तीन टुकड़े कर दिये । संसार से निकलकर देवताओं में गया तो जगत के स्वामी शिवजी, भोले नाथ जी की नरमी का लाभ उठाया और आँखे दो की तीन कर दीं । त्रिलोकी को देखने वाला हुआ तो शिवजी को ब्रह्मा, विष्णु के बाद मारने वाला तीसरी आँख वाला तीसरा देवता बना दिया । यही आँख कुण्डली के ग्रहों में शनि या सबकी आँख (शनि

को आँख माना है)। पर फिर प्रकट हुआ । अब बाहर की आँख बन्दकर के संसार को सहारा दिया तो क्या हुआ ? पहले नम्बर 3 पर जो
मंगल-नेक था, अब 3 के अंक के तीनों निशान मिलाकर 3 से 8 हुआ और ख़ाना नम्बर 8 हुआ । और वृश्चिक राशि-बिच्छू बन गया । मृत्यु
का घर हुआ । मृतकों को भी वे आराम करने लगा । (कहते है बिच्छू मृत को भी जीवित कर लेता है । अन्त में बुरी ख्याति से बचने के
लिये बड़े भाई मंगल के चरणों में पड़ा अर्थात $\wedge$ से Δ त्रिकोण ही सामुद्रिक में जाने लगा । मतलब यह कि इसने अपना बुरा स्वभाव न
छोड़ा । बड़े भाई (मंगल नेक) ने तो शनि के साथ मिलकर यानि शनि के पर्वत के ख़ाना नं० 10 के अंक से 3 जमा 10 = 13 या 'पग
बारह' का नाम पाया । अर्थात त्रिशूल पर गिलाफ दे दिया और शनि के बुरे प्रभाव से सबको बचाया । यानि चौकोर (त्रिकोण के साथ चौथी
लकीर) हुआ । चार कोने वाला हुआ । इसी कारण तय हुआ कि तीन कोना मकान सब से बुरा और चार कोण सबसे उत्तम है । हथेली में भी
चौकोर का शुभ परिणाम ही कहा है । मंगल नेक के साथ सूर्य अवश्य होता है नहीं तो, मंगल, मंगल बद ही रह जाता है । यानि सूर्य साथ
मिले तो मंगल का फल शुभ होगा । साथ मिलने का ही नाम जमा होना या 3 जमा 13 होना है ।

मंगल नेक ने तंग आकर इसका साथ छोड़ा । और इससे घर ही जुदा कर लिये । और हथेली में दाईं ओर जा बैठा । अर्थात दोनों भाइयों
ने हथेली रूपी उपमहाद्वीप को दो भागों में बाँट दिया । एक ओर 13 और दूसरी ओर 3 । दोनों का अन्तर बीच का स्थान 10 का अंक रह
गया । जो बाकी सबका भाग्य है । इसलिए कहा जाता है **''न तीन में न तेरह में, न टोकरी के बेरों में''** । शून्य रूपी बुध का
गोल दायरा शुक्र की सारी धरती को गोल किये हुये है । और 1 का अंक शनि की आँख को सीधी लकीर से मिलाये हुये 'ऊर्ध रेखा'
कहलाती है । इस ऊर्ध रेखा की दाईं ओर की शाखें शुभ परिणाम देने वाली और बाईं ओर की शाखें अशुभ परिणाम देने वाली होती है ।
यानि ऊर्ध रेखा से दाईं ओर शाखें हो तो मकान इत्यादि बनेंगें दुनियाँ बढ़ेगी । बाईं को हो तो शनि सूर्य के हिस्सा के नीचे आ जायेगा । और
सूर्य के प्रकाश पर काजल या कालख पोतता रहेगा । या भाग्य के लिखे को मिटाता जायेगा । मकान आदि बनने बन्द हो जायेंगे । बने हुये
मिटा देगा । या बिकवा देगा । क्योंकि मंगल-बद बुरे को बुराई की ओर चलने में सहायता देगा । हथेली का ऊर्ध रेखा के हिसाब से दाँया
बाँया, दोनों मंगल, नेकी बदी मिली मिलाई शक्ति राहु केतु उत्पन्न हुये । वृहस्पति वाले कोने से चन्द्रमा वाले कोने तक फैली शुक्र की मिट्टी
में परिस्थिति इतनी बिगड़ी कि बुध के शून्य गोल दायरा में समाई मिट्टी या धरती का बोझ सम्भालने वाली कीली या अँगूठा इस हथेली से
दूर अलग जा खड़ा हुआ । अँगूठा अपने घर (धरती) से तो निकाला गया पर उसने साहस न छोड़ा । इसीलिये समस्त प्राणी समूह व संसार

आशा पर ही जीता है । इस प्रकार शुक्र (गोल धरती) से बुध की सूर्य रेखा सूर्य के ख़ाना नं० 1 का शुभ प्रभाव ख़ाना नं० 11 में ले जाने लगी । अर्थात मंगल (सूर्य का मित्र) के पेट पर छूरियाँ फिरने लगीं । अर्थात मंगल (सूर्य का मित्र) के पेट पर छूरियाँ फिरने लगीं (अब मंगल ⊠ के पेट पर । । । या डालें या मंगल का पेट काटें तो 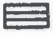 या या (जाल) या राहु बन गया जो इस वृहस्पति के घर (ख़ाना नं० 11) में गुम हुई वस्तु के मिलने के समान स्वयमेव पैदा हो गया) । मगर मंगल ऐसा नहीं जो पेट पर छूरियाँ फिरावा ले और राहु पैदा करवा ले । मंगल के होते हुये राहु होता ही नहीं या राहु का प्रभाव नहीं हुआ करता । यानि मंगल वही है जिसमें राहु पैदा न हो । अर्थात चौकोर ⊠ का पेट खाली हो । इसी मंगल के सहारे साँसारिक पुरुष फिर पेट संभाले दुनियाँ में आ निकलता है । चाहे फिर आकर घोड़ा या मुसाफिर ही क्यों न बन जाये । ओ! मंगल-बद! यदि तू ने दुनियाँ को बर्बाद किया तो धर्म-ईमान भी तुझसे न बच सका । तूने न तो गुरु वृहस्पति का धर्म-कर्म छोड़ा और न ही चन्द्रमा-माता की धार्मिक वृत्ति । हरदम सबको खोटे कर्मों में लगाया । जब सूर्य के कलंक (बदनामी का धब्बा) लगा तो शुक्र बेचारे की मिट्टी (स्त्री का सतीत्व) कहाँ बच सकी । कामुकता रूपी प्रेम ने तो जिस घर में सिर उठाया, उसे ही नष्ट किया मगर तूने तो मंगल नेक से बच्चा पैदा होते ही अपने लाल रंग से उसे लाल (मणि) पैदा हुआ कहलवाया । और लाल हलवान से मृत्यु का झण्डा याद दिलवाया। यदि पुरुष को तूने मृत्यु का ख़ाना नं० 8 दिया तो बेचारी स्त्री (शुक्र) को अठारह के रोग का उपहार दिया । इस बेचारी का कोई बच्चा 8 मास, 8 साल या यदि भाग्य का अंक 10 साथ मिल गया तो 10+8=18 वर्ष से अधिक जीवित न रहने पाया । इस 8, 18, 13(3+10), 3 सब अशुभ ।

2. यदि सिर-रेखा (बुध-रेखा) ठीक-ठाक हो तो मंगल-बद का उपरोक्त प्रभाव न होगा ।

3. मंगल-बद Δ का प्रभाव पर्वतों पर

ख़ाना नं० 1. सूर्य का पर्वत : अशुभ, कायर, भाग्यहीन ।

ख़ाना नं० 2. वृहस्पति का पर्वत : मंद–भाग्य, झगड़ालू, झगड़ा हवा के समान उड़कर गले लगा रहे ।

ख़ाना नं० 3. मंगल–नेक का पर्वत : सभी साधारण जनों से विरोध ।

ख़ाना नं० 4. चन्द्रमा का पर्वत : कुकर्मी ।

ख़ाना नं० 5. औलाद । अठराह का रोग ।

ख़ाना नं० 6. केतु, दोनों का प्रभाव बुरा ।

ख़ाना नं० 7. बुध का पर्वत : दुराचारी, मंद–भाग्य, दूसरों के कार्य बिगाड़ता फिरे ।

ख़ाना नं० 8. यदि उमर रेखा पर हो तो बुरी मृत्यु हो ।

ख़ाना नं० 9. सदा धर्म के विरुद्ध रहे ।

ख़ाना नं० 10. शनि का पर्वत : शनि का मित्र । यदि मध्यमा की जड़ में हो तो जादू–मन्त्र का जानने वाला।

ख़ाना नं० 11. माता–पिता की आर्थिक स्थिति कमजोर ।
यदि किस्मत रेखा की जड़ में हो तो ऐसे व्यक्ति के जन्म में कुछ ऐसा भेद अवश्य हो जिसे प्रकट करना कठिन हो ।

ख़ाना नं० 12. खर्च के लिये Δ का वर्णन अलग से दिया है (अन्य स्थान पर) । यदि ∧ का ही आकार हो, तो सुख, धन व दृष्टि–शक्ति मन्द ।

विशेष

1. यदि सिर-रेखा ठीक हो तो मंगल-बद का प्रभाव न होगा ।
2. यदि मंगल के दोनों पर्वत ही स्थित न हों तो ऐसा एक ही व्यक्ति लाखों से टक्कर लेने की शक्ति रखता है ।
3. मंगल नेक का हर जगह का नेक या शुभ प्रभाव । यदि मंगल बद हो तो सदा और हर स्थान पर वहाँ का प्रभाव नष्ट करने वाला होता है ।
4. यदि सूर्य ख़ाना नं० 8, जो मृत्यु और मंगल-बद का घर है, में हो तो मंगल-बद को मंगल नेक ही लेंगे क्योंकि अब सूर्य साथ है । ऐसा सूर्य कभी मारक स्थान का न होगा ।

****

बुध

बुध – हरा रंग – तोता मैना, भेड़ बकारी– सिर और वाणी की स्वामी। हर स्थान पर गोल व हरा (चाटने से जिह्वा के रास्ते मनुष्य मरे।) हीरा सब को काटे पर इतना नरम की स्वयँ , कली से कट जाये ।

फ़रमान नम्बर - 162

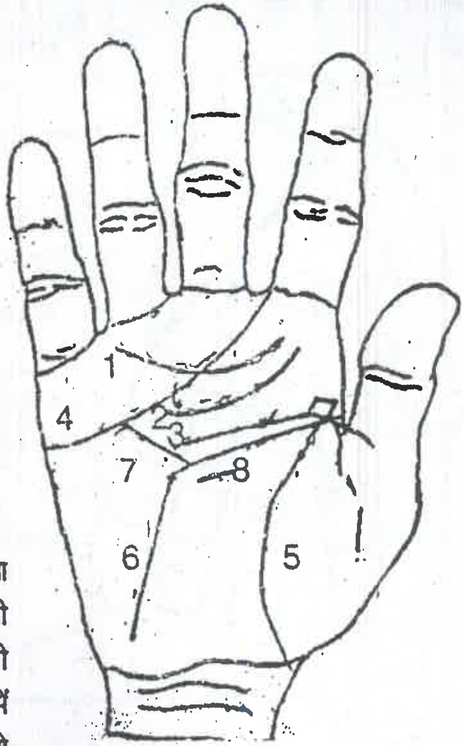

बुध की रेखायें

1,2,3, - सिर की श्रेष्ठ रेखा

4 - दिल रेखा, चन्द्र रेखा

5- शनि की आयु रेखा

6- आत्म हत्या रेखा

7- खूनी रेखा

8- सिर रेखा बुध की

बुद्धि, वाणी, सिर और मित्रता आदि का निर्णय बुध के गोल दायरा में आता है। दो शत्रु ग्रहों के शुभ व अशुभ फलों कोबदलने की नाली का वास्तविक स्वामी बुध ही है। या दो विरोधियों के बीच रहने वाला और शुभ कार्य करने वाला बुध ही है। शनि में भी यह गुण है मगर बदी के कामों में। तोता इत्यादि इन कामों में इसकी शक्ति का प्रमाण होंगे। शुक्र बुध का मित्र है। यदि वह नीच हो जाये तो बुध की अपनी शक्ति क्षीण हो जाती है। मंगल-बद के प्रभाव से भी बुध बचाता है।

फ़रमान नम्बर – 163

बुध के पर्वत पर रेखा और बुध की अपनी रेखा

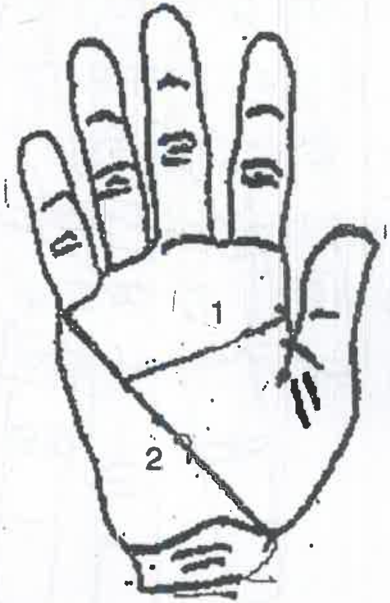

1. सिर रेखा :-

1- सिर रेखा

2- सेहत रेखा

मंगल नेक से सेहत रेखा की सीमा तक इस रेखा की ठीक लम्बाई है । यदि अन्त में दो-शाखी हो जाये तो स्वयं हाथ वाले के लिये तो शुभ है मगर मामूँ परिवार के लिये हानिप्रद है । इसका विस्तार से वर्णन मंगल-बद के पर्वत के वर्णन में है ।

2. सिर रेखा यदि आरम्भ में आयु रेखा से जुदा हो तो पिता का सुख खराब होगा । विस्तृत विवरण वही मंगल-बद के पर्वत में दिया है ।

3. सिर रेखा यदि आरम्भ में आयु रेखा से मिली हुई हो तो शुभ है । ऐसी रेखा वाला व्यक्ति सहानुभूतिपूर्ण होगा क्योंकि बुध व शनि मित्र व बराबर के है ।

4. सिर रेखा यदि इकहरी, अकेली और बिना शाख के होवे तो ऐसा व्यक्ति लोभी व देश-विदेश में घूमने वाला होगा।

5. सिर रेखा यदि आरम्भ में आयु रेखा से जुदा हो तो न केवल पिता का सुख खराब

होगा बल्कि परिवार का बोझ इस पर अधिक होगा । परन्तु वह परिवार पोषक व अच्छे स्वभाव का होगा चाहे ऐसा करते हुये कभी बहुत अहंकारी सा भी प्रतीत होवे । वह अपने भाग्य का निर्माता स्वयं ही होगा । अकेला सर सबसे मुकाबला करने और जीतने में सक्षम होगा ।

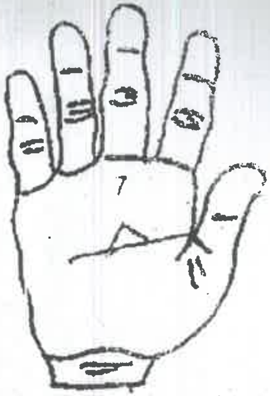

6. - मातृ रेखा या सिर रेखा

सिर रेखा का दूसरा नाम मातृ रेखा भी है । चाहे चन्द्रमा बुध से शत्रुता करता है तो भी जब इस रेखा में मातृ भाव हो जाये तो चन्द्रमा के पर्वत का सम्बन्ध शुभ होगा । चन्द्रमा और बुध रेखा का परस्पर मिल जाना निश्चित रूप से शत्रुता का प्रभाव देगा ।

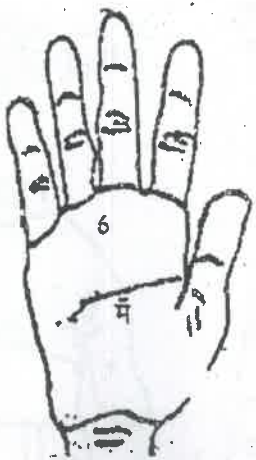

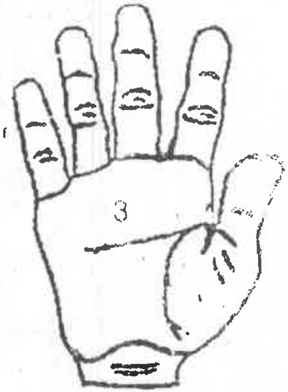

7. मातृ रेखा के ऊपर यदि त्रिकोण Δ

हो, जो मंगल-बद का चिन्ह है, तो ऐसे व्यक्ति की माता पहले मर जाये क्योंकि मंगल न केवल बुध का शत्रु है बल्कि चन्द्रमा से भी शत्रुता का व्यवहार करता है ।

8. यदि यह त्रिकोण सिर या मातृ रेखा के नीचे की ओर हो तो माता के जीवित रहते वह व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त होगा क्योंकि मंगल-बद का अब केवल बुध पर प्रभाव होगा।

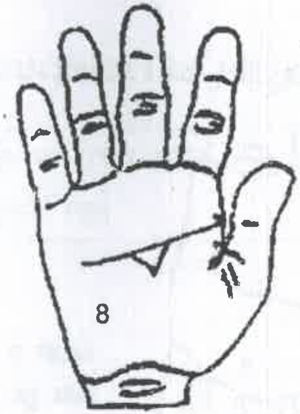

8

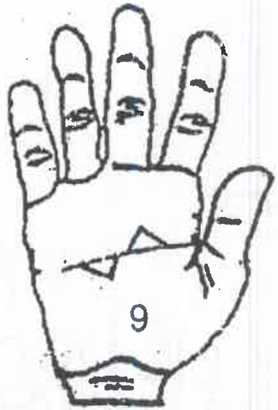

9

9. **यदि ऊपर 7 व 8 वाली स्थिति में** दोनों जीवित हों तो दोनों को आपसी सुख न होगा। एक के लिये दूसरा मृतक से भी अधिक दुःखदायी होवे।

10. यदि मातृ-रेखा गहरी व स्पष्ट न हो तो मातृ-सुख कोई निश्चित बात नहीं। यदि चन्द्रमा का पर्वत ठीक हो तो माता की आयु दीर्घ और उसका सुख अधिक होगा।

11. दिल-रेखा और सिर-रेखा का आपस का अन्तर जितना कम होगग उतना ही चन्द्रमा या दिल-रेखा का कुप्रभाव अधिक होगा और ऐसा व्यक्ति संकुचित हृदय का होता जायेगा।

12

12. यदि सिर रेखा के आरम्भ में वृहस्पति के पर्वत के पाँव में मंगल नेक का चौकोर ⌧ का निशान हो तो बौद्धिक योग्यता से ऐसे व्यक्ति को लाभ व धन की पूरी प्राप्ति होगी।

13. सिर रेखा पर विसर्ग .., :, .. का निशान हो तो दृष्टि हीन अथवा अँधा होवे ।

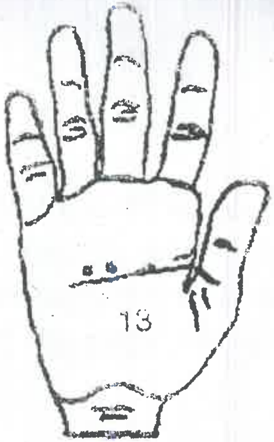

14. सिर रेखा यदि आयु रेखा या पितृ रेखा का साथ छोड़कर वृहस्पति के पर्वत की ओर मुँह करे तो बुध अपना बुरा प्रभाव करेगा अर्थात वृहस्पति के पर्वत की ओर मुँह करे तो बुध अपना बुरा प्रभाव करेगा अर्थात वृहस्पति या पिता का सुख न होगा । या पिता वृहस्पति के प्रभाव के समय 16 वर्ष से आरम्भ होने के पश्चात् 3 वर्ष या कुल 19 वर्ष के लगभग मर जावे और यदि जीवित हो तो मृत्यु से अधिक दुःखी हो । कुछ भी हो, पिता का सुख न मिलेगा ।

वृहस्पति और बुध बराबर है इसलिये सिर या मातृ रेखा या माता पर कोई बुरा प्रभाव न होगा । वह अपनी पूरी आयु भोगेगी । 80 वर्ष के लगभग, क्योंकि बुध मिथुन और कन्या राशि का स्वामी है ।

ऐसा व्यक्ति थोड़ा अहंकारी, सत्य वक्ता, सरल ह्रदय और आत्म-विश्वासी होगा । परिवार का भारी बोझ उस पर होगा और वह भाग्य को आप ही बनायेगा ।

****

फ़रमान नम्बर - 164

शाखें

1. सिर की श्रेष्ठ या उत्तम रे खा :-

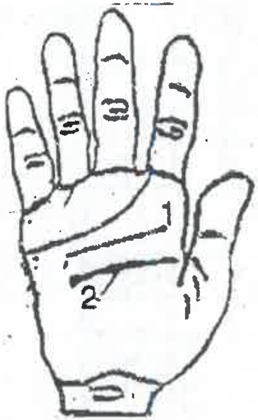

1 श्रेष्ठ रेखा, 2 सिर- रेखा

सिर-रेखा के ऊपर और दिल-रेखा के नीचे या सिर-रेखा और दिल-रेखा दोनों के मध्य यदि सिर-रेखा के साथ-साथ दौड़ने वाली एक और सिर-रेखा होवे तो वह सिर की श्रेष्ठ-रेखा कहलायेगी । ऐसी रेखा वाला व्यक्ति अनैतिकता व अधर्म से इकट्ठे किये हुये धन सम्पत्ति से घृण करेगा या वह उसे फलेगी नहीं । वह मस्तिष्क से नेक कमाई करेगा । इसमें उसे बरकत मिलेगी और वह फले-फूलेगा । मस्तिष्क की शक्ति दुगनी होगी । अच्छा वक्ता व लेखक होगा । अथवा मस्तिष्क और वाणी की शक्ति अति उत्तम हागी । और मृत्यु के समय भी लाणी कार्य करती रहेगी । मस्तिष्क द्वारा निर्धारि कार्य में धोखा न खायेगा । हुनरमंदी या हाथ की कारीगरी वाले व्यवसायों की अपेक्षा व्यापार, लेखन, भाषण आदि से अधिक धन व प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा ।

2. सिर रेखा के ठीक होने पर व्यक्ति पर मंगल-बद का कोई बुरा प्रभाव न होगा । अर्थात झगड़े आदि में सदैव विजयी होगा ।

3. ''सिर की श्रेष्ठ-रेखा चन्द्रमा के बुरे प्रभाव से बचाती है साधारणतया ऐसे व्यक्तियों की माता छोटी आयु में मर ही जाती है । पश्चात् सौतेली माँ हो तो वह भी नीच फल देगी ।'' ऐसी स्थिति से सिर की श्रेष्ठ-रेखा रक्षा करती है । अर्थात यदि चन्द्रमा का पर्वत नीच भी हो जाये तो भी चन्द्रमा की बर्बादी से बच जायेगा । चन्द्रमा नीच होने के समय बेशक माता का सुख न होगा परन्तु खेती व नदीपार जीवन से हानि न होगी ।

शुक्र का पर्वत यदि स्थित न हो तो बुद्धि-भ्रष्ट होगा ।

4. श्रेष्ठ रेखा वृहस्पति से बुध को

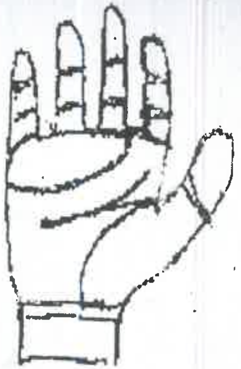

सिर की श्रेष्ठ-रेखा यदि वृहस्पति से बुध पर चली जाये तो पुस्तक व्यवसाय, मस्तिष्क वाले कार्य, मुद्रण कार्य, आदि से व्यापार के सदृश ही लाभ और बुध के हर प्रकार से क़ायम रहने का फल प्राप्त होगा । यह रेखा भी "राजयोग" होती है । इसके गुणकारी और प्रभावी होने के समय का पता किस्मत रेखा से चलता है । यदि यह श्रेष्ठ-रेखा वृहस्पति से सूर्य पर जावे तो राज-दरबार या सरकारी अफ़सरों से खूब लाभ होगा । इसका कारण मस्तिष्क व लेखन आदि की योग्यता होगी ।

यदि श्रेष्ठ-रेखा सूर्य की बजाये शनि पर ही समाप्त हो जाये तो अचल सम्पत्ति पैदा करे । हर स्थिति में न्यायपूर्वक अर्जित शुभ आय होगी ।

5. यदि सिर रेखा के ऊपर की बजाए नीचे की ओर शनि की तह के समीप कोई दूसरी रेखा हो तो सिर-रेखा.इस रेखा या लकीर को लट्टू की सूई के समान अपनी धुरी बना लेगी । अर्थात ऐसा व्यक्ति क्षण-क्षण अपने विचारों को बदलता रहेगा । इसका चाहे कारण मस्तिष्क की कमज़ोरी, निर्णय लेने की अक्षमता, दीर्घसूत्री होना आदि कुछ भी हो।

छोटी शाखें

6. यदि कोई शाख सिर-रेखा से निकलकर ऊपर दिल-रेखा में समाप्त हो तो चन्द्रमा दिल पर बुरा प्रभावकारी होगा । या दिल की खराबी से बुरे काम करेगा । या ऐसा व्यक्ति हत्यारा होगा । (चन्द्रमा बुध का शत्रु है) ।

7. यदि सिर-रेखा नीचे चन्द्रमा की ओर झुकती चली जाये तो भी मस्तिष्क द्वारा बुरे कार्य होंगे । परन्तु ऐसी स्थिति में सिर स्वयं शरीर को मारेगा । पराई मुसीबत को अपने ऊपर लेकर वृथा बर्बाद होगा । अथवा काल्पनिक कुविचारों द्वारा अपने मस्तिष्क की दुर्बलता को प्रकट करेगा । यदि सिर-रेखा चन्द्रमा के पर्वत में ही चली जाये तो आत्म-हत्या भी कर सकता है ।

8. सिर-रेखा (जो इकहरी या अकेली हो) से यदि कोई शाख बुध को चली जावे तो व्यापार में लाभ होगा। परन्तु ऐसा व्यक्ति लोभी होगा और झूठा होने के कारण देश प्रदेश में मारा-मारा फिरेगा।

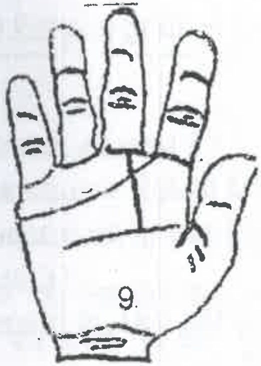

9. सिर रेखा से शाख – शनि के पर्वत पर

यदि सिर-रेखा से शाख शनि के पर्वत को जाये तो निकृष्ट अशुभ जीवन के कारण मृत्यु का भय हो। कारण, बीच में दिल-रेखा रूपी चन्द्रमा की नदी चल रही है। चन्द्रमा बुध और शनि दोनों का शत्रु है।

9. (अ) रेखा मंगल-बद को :- बुरा प्रभाव होगा जिसका विवरण मंगल-बद में है।

10. सिर रेखा से शाख मंगल नेक को

2- दिल रेखा - 30 सिर रेखा

रेखा मंगल नेक को :- सिर-रेखा को इस शाखा से माता-पिता का सुख पूर्ण हो। भाग्य से सदा सहायता मिले। गुजारा अच्छा होगा।

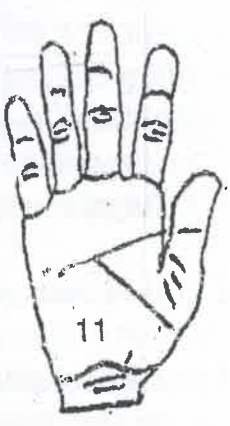

11. शाख शुक्र को :- सिर रेखा से शाख शुक्र को

स्त्रियों से सहायता मिले और गृहस्थ का पूरा सुख मिले यदि सिर रेखा से उसका मिलाप सूर्य के पर्वत की जड़ से इधर मंगल-

नेक की ओर या शनि के पर्वत की तह की सीमा तक ही रहे । यदि शुक्र के पर्वत से शाख सिर-रेखा के साथ सूर्य के पर्वत की तह में मिले तो स्त्रियों से विरोध होगा । (सूर्य शुक्र का शत्रु है) ।

12. सिर रेखा से शाख चन्द्र को

शाख चन्द्रमा को :- बुध का चन्द्रमा शत्रु है । अतः प्रभाव बुरा होगा ।

13. सिर रेखा से शाख वृहस्पति को

शाख वृहस्पति को :- बुध वृहस्पति का शत्रु है । इसलिये प्रभाव बुरा होगा ।

14. दिल रेखा व सिर रेखा के मध्य दो-शाखी रेखायें :

ऊपर को दो शाखी रेखा :- सिर-रेखा से ऊपर को दो-शाखी रेखा की हर दो शाखें जिस-जिस पर्वत पर हों, वहाँ शुभ फल देंगी । यह केवल बुध, सूर्य और शनि के पर्वतों के लिये कहा गया है । वृहस्पति पर हो तो बुरा प्रभाव होगा । कारण वृहस्पति बुध में परस्पर मित्रता नहीं है ।

14. (अ) यदि सिर-रेखा की एक शाख बुध के पर्वत पर हो और दूसरी शाख सूर्य की ओर या सूर्य पर हो तो व्यापार में सफलता हो । बौद्धिक योग्यता से व्यक्ति सूर्य के समान चमके ।

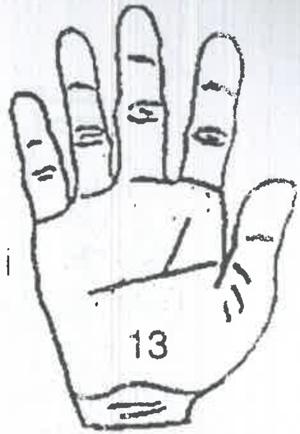

15. यदि सिर-रेखा की एक शाख सूर्य की ओर या सूर्य के पर्वत पर हो और दूसरी शनि की ओर या शनि पर हो तो अचल सम्पत्ति मिले और स्वयं भी बनाये ।

16. यदि सिर-रेखा की एक शाख बुध पर और दूसरी शनि पर हो तो उपरोक्त फल होगा ।

17. बुध के पर्वत पर शादी-रेखा, सन्तान रेखा, सूर्य से बुध को रेखा (शुक्र का पतंग), चन्द्रमा से शाख बुध के पर्वत को (आन्तरिक बुद्धि रेखा) आदि का अलग-अलग वर्णन पहले हो चुका है ।

18. धन और श्रेष्ठ रेखा का वर्णन शनि के पर्वत में है ।

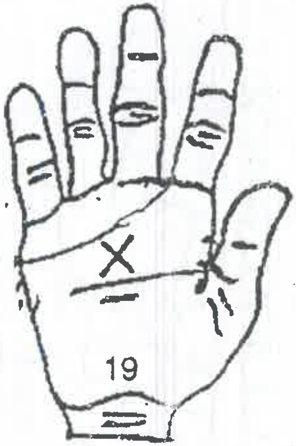

19. सिर-रेखा या मातृ-रेखा के ऊपर और दिल-रेखा के नीचे या दिल और सिर-रेखा की चौकोर ⌧ में शनि व सूर्य के पर्वतों के नीचे "काटे" का चिन्ह × हो तो ऐसा व्यक्ति कार्य को गुप्त रखने की प्रबल शक्ति रखेगा । परन्तु इसकी मृत्यु सिर कटने से होगी । यदि यह चिन्ह केवल सिर रेखा पर हो । यदि यह निशान सिर-रेखा पर स्थित हो ओर अपनी दोनों शाखों से सूर्य और शनि को मिलाता हो तो ऐसे व्यक्ति के जीवन में अद्‌भुत फेर-बदल हो । अर्थात वह सूर्य के समान चमकता हुआ भी शनि के काले भूत जैसा हो जाये । धन का सिंहासन दुर्भाग्य की लकड़ी में बदल जाये । सोने के थाल मिट्टी के रोटी पकाने के तवे में बदल जायें । परन्तु यदि 35 और 42 वर्ष के मध्य कोई ऐसा पुत्र घर में हो जो मस्त मलंग हो या निरा बुद्धू हो तो वह लड़का अपनी 9 साल, 18 साल और आखिर 36 साल की आयु में वही सोने का थाल फिर बना देगा । वास्तव में ऐसा पुत्र सब संकटों से बचा जाता है और स्वयं कष्ट में रहता है ।

20. सिर रेखा के नीचे ठीक "काटे" के चिन्ह की सीमा-रेखाओं में यदि छोटी सी लकीर हो तो व्यक्ति अपने विचारों को बदल लेने वाला होगा । चाहे इसे दुर्बलता कहो चाहे शनि की चालाकी ।

फ़रमान नम्बर - 165

बुध के पर्वत का प्रभाव ख़ाना नम्बर 7

नीच बुध

1. गोलाकार शून्य - हर पल स्वभाव अथवा वृत्ति की गोलाई पर घूमने वाला ।

उच्च बुध

2. मुनशी, कनिष्ठ मन्त्री, लेखक, मस्तिष्क से काम करने वाला, लेख, निबन्ध लेखक, व्यापारी, वैद्य पर लोभी, सरस्वती वाणी पर । पहली सन्तान कन्या ।
3. राशि नम्बर 3 मिथुन के घर का और नम्बर 6 राशि कन्या के घर का उच्च है । अतः आयु 80 साल होगी ।

फ़रमान नम्बर - 166

बुध के निशान का प्रभाव

ख़ाना नं॰ 1

(1)सूर्य के पर्वत पर :-

स्वयं अपनी शक्ति सूर्य को देकर सूर्य की शक्ति बढ़ा देता है । दोनों बराबर का फल देने वाले है । बुध अपने समय का आधी अवधि तक जुदा फल नहीं देता । पश्चात् जुदा फल देगा पर जुदा फल उत्तम ही होगा । राज दरबार से लाभ होगा परन्तु ऐसा व्यक्ति प्रेम रहित निर्मोही होगा ।

(2)कुण्डली में बुध का प्रभाव :-

राशि मेष, स्वामी मंगल जो बुध का शत्रु है । नीच करने वाला शनि इसके बराबर का है । प्रभाव करने और उच्च करने वाला सूर्य है जिसके सामने बुध चुप रहता है । बल्कि अपना शुभ प्रभाव सूर्य को ही दे देता है । शनि के कारण व्यक्ति खाने-पीने वाला शराबी कबाबी होगा । परन्तु 11 साल अच्छी ख्याति वाला सम्मान वाला होगा । सूर्य व बुध की तुलना में मंगल का प्रभाव तो कम होगा मगर शनि अवश्य प्रभावकारी होगा ।

ख़ाना नं० 2

(1)वृहस्पति के पर्वत पर :-

दोनों शत्रु । वृहस्पति का प्रभाव तो उत्तम होगा पर बुध स्वयं फल खराब करेगा । अर्थात बुध अपना फल अच्छा (=खराब का खराब) देगा । वृहस्पति बुध की दौलत की परवाह न करेगा । इसके गिर्द दायरा डालकर वृहस्पति की हवा के बाऊ गोले बनायेगा । ज्ञानी **उपदेशक** होगा । सुख पूर्वक जीवन-यापन होगा । परन्तु बहुत ज्यादा धनी न होगा । और न ही विशेष निर्धन ।

(2) कुण्डली में प्रभाव :-

बिरख राशि । घर का स्वामी शुक्र है । वह बुध का मित्र है । चन्द्रमा उच्च करता है जो बुध का शत्रु है । नीच कोई नहीं । प्रभाव के लिये वृहस्पति का घर है । वह बुध के बराबर का है परन्तु बुध स्वयं वृहस्पति का शत्रु है । ऐसे व्यक्ति के पास धन 36 वर्ष तक आवे परन्तु ऐसा व्यक्ति पर-स्त्री गामी होगा ।

ख़ाना नं० 3

(1) मंगल के पर्वतों पर :-

दोनों बराबर परन्तु बुध शत्रुता करता है । मंगल के अच्छे प्रभाव को बुध स्वयं खराब करता है । लड़ाई झगड़े में नाम पायेगा ।

(2) कुण्डली में बुध का प्रभाव :-

मिथुन राशि । घर का स्वामी स्वयं बुध है । राहु उच्च करता है । वह बुध का मित्र है । केतु नीच करता है, बुध जिसके बराबर है । यदि मंगल नेक होवे तो 12 वर्ष धन आदि व पिता का सुख मिलता रहे । मंगल व बुध का सम्पर्क बुरा प्रभाव उत्पन्न करे ।

ख़ाना नं० 4

(1) चन्द्रमा के पर्वत पर :-

चन्द्रमा शत्रुता करता है । दिल-रेखा पर शनि के नीचे गोल दायरा दिल की शक्ति को आधा करता है । दिल सदा झगड़े में रहे । प्रसन्नता रूपी माता सहायता न करे । यदि तोते के पास से ही बिल्ली निकल जाये तो तोता अपने अअप मर जायेगा । चाहे बिल्ली तोते को छूए भी न । सफेद चन्द्रमा के प्रभाव से तोते का दिल चलना स्वयमेव बन्द हो जाएगा और वह मृत घोषित हो जायेगा।

(2) कुण्डली में प्रभाव :-

कर्क राशि । घर का स्वामी चन्द्रमा है । वह बुध का शत्रु है । वृहस्पति उच्च करता है । बुध स्वयं उसका शत्रु है मगर वृहस्पति नहीं दोनों बराबर के है । मंगल नीच करता है । बुध इसके बराबर का और शत्रु है । यात्रा सदैव पीछे लगी रहे और व्यर्थ भी हो । वृहस्पति की कृपा से 22 वर्ष धन की आमद हो ।

ख़ाना नं० 5

कुण्डली में प्रभाव :-

सिंह राशि । घर का स्वामी सूर्य है जो बुध का वास्तविक मित्र है । ऊँच नीच करने वाला कोई नहीं । अपनी स्त्री व अपने लिये अति उत्तम परन्तु पिता के लिये मन्द ही गिना है ।

ख़ाना नं० 6

(1)शुक्र के पर्वत पर :-

दोनों परस्पर मित्र । दोनों का अपना-अपना और उत्तम फल । सदैव स्त्री के प्रेम व कामना में डूबा रहे । और उसे सुख दे । इसी कारण बुध ने स्त्री की शादी रेखा अपने पर्वत पर बनाई हुई है । और गोल सिर (बुध) ने भी धनाढ्य कुल से ही स्त्री का चयन किया है । धरती मिट्टी की अवस्था में भी गोल होकर धरती की प्रत्येक गोलाई पर उपस्थित है । अर्थात धरती (भू) गोल है । यह वाणी और सिर का तो प्रेमी होगा पर इसके धड़ (केतु) का मित्र नहीं । इसके बराबर का है । यानि कामदेव का कीड़ा न होगा । परन्तु स्त्री के लिये धन खर्चने में साहसी व निडर है ।

ख़ाना नं० 7

(1) बुध के पर्वत पर :- अपना ही पर्वत है । व्यापार, तिजारत में लीन होगा ।

(2) कुण्डली में प्रभाव :- तुला राशि । घर का स्वामी शुक्र है जो बुध के साथ इस घर में रहता हुआ इसका पड़ौसी है । शनि उच्च करता है जो इसका मित्र है । और बराबब का है । सूर्य (वास्तविक मित्र बुध का) भी उच्च करता है । इसलिये 22 वर्ष स्त्री का सुख व मिलाप हो । कला में प्रवीण पर शनि के प्रभाव से मंदिरा आदि में डूबा । शनि सदा ही अपना फल देता रहता है । शुक्र व बुध के एक ही घर में इकट्ठे रहने से कामी व पर-स्त्री गामी होगा । सूर्य व शुक्र के मिलाप से बुध पैदा होगा । मगर बुध व शुक्र के मिलाप में सूर्य की वर्ष-अवधि 22 वर्ष से प्रभाव आरम्भ हो जायेगा ।

ख़ाना नं० 8

कुण्डली में प्रभाव :-

वृश्चिक राशि । स्वामी मंगल है । बुध मंगल का शत्रु है । चन्द्रमा नीच करता है। बुध चन्द्रमा का भी शत्रु है । इस राशि का उच्च है ही नहीं । कठिनता से गुज़ारा हो । 14 वर्ष कष्ट में कटें ।

ख़ाना नं० 9

कुण्डली में प्रभाव :- धनु राशि । घर का स्वामी वृहस्पति जिसका बुध शत्रु है । केतु उच्च करता है जो बुध के बराबर को है । राहु नीच करता है जो बुध की अवधि में कोई फल ही नहीं देता । परिवार का पोषण करने वाला हो अन्यथा 29 वर्ष पिता दु:खी रहे । जिस्वा में थथलाहट हो ।

ख़ाना नं० 10

(1) शनि के पर्वत पर :- दोनों परस्पर मित्र । बुध शनि से मित्रता करता है । आँख को गोल किया और शुक्र की धरती के समान दृष्टि के लिये आँख की पुतली बना । मगर शनि मित्रता नहीं करता । आँख का गोलक ठीक परन्तु कई बार देखने की शक्ति होती ही नहीं । शोक व कष्ट हो । पिता की इच्छा हो तो सुख देवे, इच्छा न हो तो सुख न दे । कोई निरिचत नहीं ।

(2) कुण्डली में प्रभाव :- मकर राशि । घर का स्वामी शनि जो बुध के बराबर का है । मंगल उच्च करता है । बुध मंगल का शत्रु है । वृहस्पति नीच करता है । बुध वृहस्पति का भी शत्रु है । इसलिये 42 वर्ष शस्त्र आदि का डर । शत्रु अधिक हों ।

ख़ाना नं० 11

कुण्डली में प्रभाव :- कुम्भ राशि । घर का स्वामी शनि जो बुध के बराबर का है । ऊँच-नीच कुछ नहीं । प्रभाव के लिये यह वृहस्पति का स्थान है । साधारणतया कुकर्मी होगा । यदि शनि उच्च हो तो 45 वर्ष धन की आमद ।

ख़ाना नं० 12

कुण्डली में प्रभाव :-

मीन राशि । घर का स्वामी वृहस्पति । बुध वृहस्पति का शत्रु है और राहु चुप रहने वाला है । शुक्र (मित्र) और केतु (सम-बल) उच्च करते है । बुध स्वयम् ओर राहु (चुप रहने वाला) नीच करते है । इसलिये धन, सम्पति व्यापार आदि का कोई सुख न होगा । केवल पराये धन का राखा या निगरान होगा । बस दूसरों के लिए ही जोड़ेगा ।

फ़रमान नम्बर - 167

बुध का दायरा या गोला :-

बुध का पर्वत तो किसी का मित्र और किसी का शत्रु होगा पर बुध का दायरा या चक्कर हर एक पर्वत की शक्ति को चक्कर में डाल देता है । यदि यह दायरा या चक्कर दिल–रेखा पर शनि के नीचे हो तो दिल की शक्ति को आधा कर देता है । यदि किस्मत रेखा की जड़ में हो तो ऐसे व्यक्ति के जन्म में कोई भेद की बात हो । जिसका प्रकट करना कठिन हो । यह ग्रह बुरे के साथ मिलकर उसकी बुराई को बढ़ा देता है, बलवान के साथ मिलकर उसका बल अधिक करता है । यह हर तरफ मिल जाता है । और हर तरफ गोलाई पकड़ जाता है । अकेला बुध खाली ग्रह होगा और केवल नपुंसक अवस्था में प्रभाव देगा ।

****

शनि

शनि

शनि–काला साँप–मृत्यु का यमदूत –
स्वयँ उड़े, दूसरों को उड़ा दे।
इच्छाधारी हो तो सब को तारे।
काला रंग सब पर चढ़े
परन्तु काले रंग पर कोई न चढ़े।
नेश (डंक) से गणेश होवे।
मछली, मगर मच्छ का पेट ।
परिवार बढ़े उलटे तो मरे ।

फ़रमान नम्बर - 168

1. **पापी ग्रह - काला यम - अँधेरी रात- सूर्य का पुत्र होते हुये सूर्य के विरुद्ध चलने वाला** । न धर्म की परवाह और न संसार में लज्जा का भय-सब पर प्रबल व प्रभावी । काले पत्थर के सुरमे और तुच्छ पत्थर को ज्योति-पर्वत में बदलने वाला । औरों को जादू की आँख पर चलाने वाला और भृकुटि के एक ही तेवर से सर्वस्व स्वाह करने की शक्ति वाला, निर्मम, क्रुर, काली वस्तुओं पर विद्युत के समान मृत्युकारी प्रभाव डालने वाला-काले साँप की आँख का स्वामी । कल्याण करने-तारने के समय इच्छा धारी साँप और शेषनाग के समान सहायता करने वाला । आयु-रेखा, ऊर्ध-रेखा, धन से प्राप्त सुखऐश्वर्य का स्वामी, शनि है । ऊर्ध रेखा इसकी एक खाली खाई है जिसका अन्तिम स्थान वह है जहाँ सेहत-रेखा आयु-रेखा को काटने के लिये आने के समय स्वयं कट जाये । यह स्थान इसका मुख्य स्थान, हैड-क्वार्टर है जिसमें जो पड़ा, वह मरा ।

इस पर्वत का ऊँचा न होना शुभ है । रोग से बचाता है । यदि पर्वत हो ही न तो काल्पनिक भय, मिथ्या विश्वास निर्धनता आदि से पीड़ित हो ।

इस स्थान का दूसरा नाम मृत्यु स्थान भी है जिसका निरीक्षक यह स्वयं है । हर एक के कमाये धन से ऊर्ध रेखा रूप खाली खाई को पाटने की चिन्ता में रहता है । राहु, केतु को हथेली में कहीं पक्का स्थान न मिला पर इस खाई रूपी नाली के द्वारा वह मन चाहे किसी पर्वत पर भी जा सकते है । इसका शरीर मगरमच्छ का, भूख मछली की और आँख शिवजी की है ।

2. **कुम्भ-पानी से भरा घड़ा** - संसार के सब शुभ कामों के लिये शुभ शकुन है। इसे भी इसने अपने घर रखकर दूषित व अपवित्र कर दिया है । इसी कारण मृत्यु के पश्चात् खाली घड़ा मृत शरीर के सिर की ओर फोड़ते है कि शनि के भाग्य का घड़ा तो फूट गया । अब भी यदि प्राण (जान) शेष है तो दूसरों के भाग्य के लिये ही वापिस घर चलो । या इसके पिता सूर्य को मुँह दिखलाकर ही वापिसी की सलाह है जो न्यायकारी सबका पिता है ।

फ़रमान नम्बर - 169

शनि की रेखा और शनि के पर्वत पर रेखा

पितृ-रेखा

1. उमर रेखा का दूसरा नाम पितृ-रेखा है यदि इसका अन्त चन्द्रमा के पर्वत पर हो। उमर रेखा का आरम्भ बृहस्पति की जड़ से ही होता है। यह पिता का स्थान है। चन्द्रमा का पर्वत माता का स्थान है। बृहस्पति को हवा (वायु) का स्थान गिना है और हवा की नाली होने के कारण इस रेखा को उमर रेखा या पितृ-रेखा कहा है।

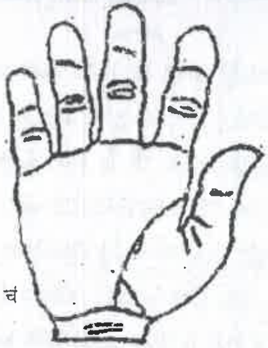

2. (अ)

म - मातृ रेखा, प- पितृ रेखा

पितृ-रेखा यदि मातृ-रेखा से मिली हुई हो तो माता पिता का आपसी संबन्ध शुभ होगा और उनका सुख व उनकी छत्रछाया चिरकाल तक रहने वाली होगी। ऐसा व्यक्ति सहानुभूति पूर्ण होगा।

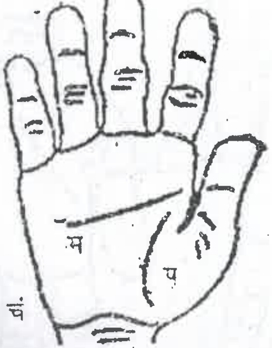

2. (ब) म - मातृ रेखा, प पितृ रेखा,

चं - चन्द्रमा का पर्वत   यदि मातृ-रेखा, से आरम्भ में न मिले या जुदा रहे तो पिता का जीवन संकट में रहे। इस का विस्तार पूर्वक वर्णना बुध के पर्वत में हुआ है।

3. पीठ में ऊर्ध रेखा हो, तो आयु 70 वर्ष ।

4. ऊर्ध-रेखा :-

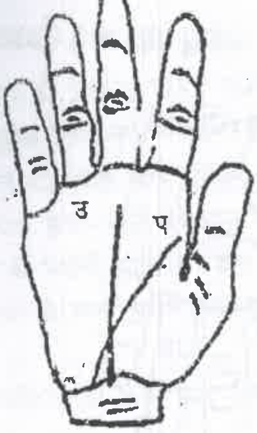

उ - उर्ध रेखा, प - पितृ रेखा

जब आयु-रेखा चन्द्रमा के पर्वत में चले या जा पहुँचे तो पितृ-रेखा कहलाती है । और जब पितृ-रेखा (साधारण उमर रेखा नहीं) और किस्मत रेखा आपस में चन्द्रमा पर मिल जायें और हथेली को दो बराबर भागों में बाँट दे अर्थात इन दोनों के मिलने के स्थान से यदि ऊपर शनि की ओर एक रेखा बिल्कुल सीधी शनि के पर्वत में जाती मालूम होवे तो वह ऊपर जाती रेखा ऊर्ध रेखा के नाम से जानी जाती है । ऐसी रेखा वाले व्यक्ति में शनि की आँख की चतुराई व चपलता की पूरी शक्ति विद्यमान होगी । यानि, वह ठगी से, आँख की होशयारी से धन दौलत बड़ी सम्पत्ति वाला या अन्य माया के स्रोतों का स्वामी होगा । चूँकि ऐसी कमाई में परिश्रम, इस अँगुलियों या अपने हाथों द्वारा अर्जित धन का कोई अंश न होगा, इसलिये ऐसा व्यक्ति दुष्ट ही गिनेंगे । परन्तु अपने लिये बड़ा भाग्यवान व धनी होगा । आम निर्धनों में जैसे रुपये पैसे वाला धनी गिना जाता है वैसे ही ऐसा व्यक्ति धनियों में धनी होगा । धन-कुबेर होगा । इसे न किसी अन्य से सहानुभूति होगी और न किसी की परवाह । अपने बाप की भी नहीं । पूरा शनि के स्वभाव का होगा । ठगी और धोखे से धन इकट्ठा करेगा। इसकी आयु भी लम्बी होगी । मगरमच्छ के समान सब छोटी मछलियों को खाने वाला होगा । किसी का तो एक विचार से चित्त का एक भाग ही काला होगा, इसका तो सारे का सारा दिल ही काला होगा । इसकी आँख सब देखने वालों के मुँह पर स्याही फेर जायेगी । या वह अन्दर बाहर दिल और आँख दोनों ओर से ही काला होगा इसे न दिन के प्रकाश का लिहाज़ होगा और न रात की स्याही का भय । भोजन में से लहू, दिल व दिमाग और दिमाग में से ममयाई निकालने वाला क्रूर व निर्मम होगा । न धर्म से मित्रता और न जीवन में उसका कोई स्थान निजी स्वार्थ में ही हर क्षण लगा रहे । जो इसके हैडक्वार्टर के सम्पर्क में आया वह मृत्यु

को प्राप्त हुआ । यानि ऊर्ध-रेखा से आगे न उमर-रेखा बढ़ी न सेहत या तरक्की रेखा बढ़ी । यही मिलने का स्थान सबका अन्तिम स्थान बना । न चन्द्रमा चल सका, न सूर्य का आकार रहा । न वृहस्पति की हवा या सांस बाकी बचा । संक्षेप से कहें तो इस स्थान को मृत्यु का स्थान ही कहेंगे । बुध पीछे रहा, मंगल इस स्थान तक पहुँच ही नहीं पाया । केवल राहु केतु या चित्रगुप्त द्वारा लिखित शुभ व अशुभ कर्मों के वृत्तान्त ही शेष रहे । अर्थात राहु का अंधेरा हुआ और केतु से दूसरे जन्म का इशारा हुआ।

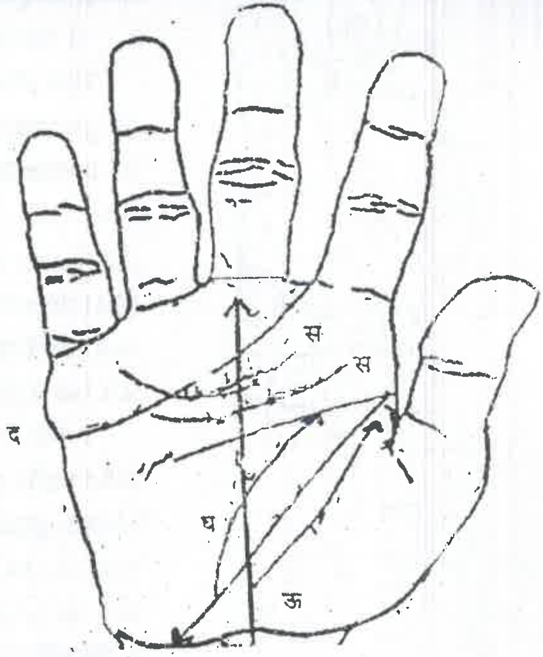

स, स - सिर की श्रेष्ठ रेखा

ध - धन की श्रेष्ठ रेखा

ध - धन रेखा

इस स्थान से डरकर किस्मत रेखा तो अपने गुरु या पिता वृहस्पति की ओर भागी । शनि अथवा ऊर्ध रेखा से निकला या उत्पन्न धन या धन रेखा और इस धन से रंजित श्रेष्ठता के विषय में श्रेष्ठ-रेखा का प्रश्न खड़ा हो गया ।

5. **ध - धन रेखा** अँगूठे की जड़ के पास मंगल - नेक की ओर ।धन-रेखा- शनि द्वारा उत्पन्न धन इस मृत्यु-स्थल से धन-रेखा के रूप में ऊपर की ओर-उमर या आयु रेखा के आरम्भ की ओर-चल भागा । शुक्र के पर्वत पर यानि सब गृहस्थियों, स्त्रियों आदि से निकलकर अन्य भाई-बन्धुओं के मुँह लगता हुआ मंगल-नेक के पर्वत पर फिर गुरु की शरण में जा गिरा । या वृहस्पति की जड़ में आयु रेखा के आरम्भ में जा मिला । इस प्रकार माया द्वारा कलकित मुख वाली धन रेखा को (शनि रेखा को) आयु के सिवसय कोई रेखा न मिली। यानि उसे वापिस आने के लिये शनि की आयु रेखा के पाँव की मिले । पर धन फिर भी न हटा और शनि की नदी या आयु-रेखा की चलती नाव पर चढ़ गया । उमर लौटने का दृश्य देखने लगा । जिस स्थान पर आयु-रेखा रूपी नदी कम गहरी और चौड़ी हुई वहीं धन रूपी पर्यटक पर चोरों डाकुओं का आक्रमण हुआ और धन की हानि हुई । ऐसे समय में नाव की गति मध्यम हो गई और आक्रमणकारी संबन्धित मंगल-नेक व शुक्र के पर्वत के लोग ही हुये। यानि ऐसा धन स्त्री, स्त्री के परिवार या दूसरे मित्रों आदि के ही काम आया ।

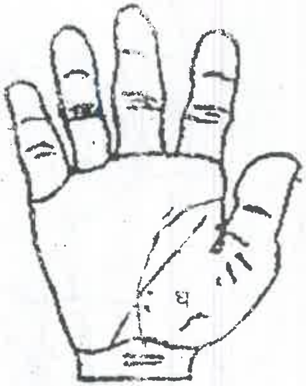

5. (ब) इस कष्ट से तंग आकर धन देवता फिर अपनी माँ के पास भागा । और अब शुक्र या मंगल के पर्वत की बजाय आयु रेखा के दूसरी ओर चन्द्रमा के पर्वत से (जो इसकी माता थी) फिर अपने पिता शनि की ओर भागा । ऐसा व्यक्ति बहुत बड़ा धनवान हुआ । अब इसने किसी का ध्यान न किया और सीधा शनि की गोद में जा बैठा । ऊर्ध रेखा का भी वही परिणाम हुआ । यानि व्यक्ति दुष्ट भाग्यवान या दुष्ट भगवान हुआ ।

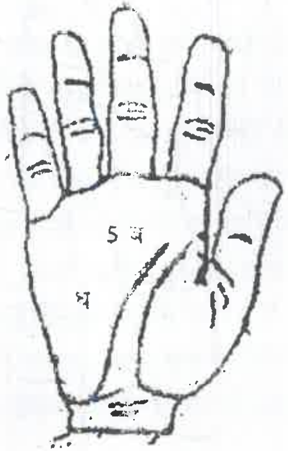

इस दोबारा हतक या अपमान से दुःखी होकर पिता शनि की अँगुली मध्यमा पर जा चढ़ा। यहाँ क्या था ? फिर उदासी व संन्यास गले पड़ा । ऐसा व्यक्ति जिसकी मध्यमा अँगुली पर धन या ऊर्ध रेखा चढ़ गई थी धन के बोझ के मारे संसार से विरक्त हो राज-पाट छोड़

साधु-फ़कीर हो गया। ऐसा व्यक्ति उदास हो धन से घृणा ही करने लगा। यानि धन को अब कोढ़ (गलित अँगों का रोग) लग गया। इसी दुःखी अवस्था में फिर माता चन्द्रमा के पास पहुंचा। आज्ञा हुई शुभ व नेक मार्ग अपनाओं। चोरों व कुकर्मियों से बचने के लिये दृढ़ता से स्पष्ट होकर चलो। सब ओर से ध्यान रखकर चलो। अब हथेली के खाली मैदान से (जिसमें किसी पर्वत का साथ न था) चल पड़ा। अब धन रेखा इधर-उधर होता चली। जहाँ टूट-फूट हुई धन की हानि **हुई**। यह आवश्यक नहीं कि चोरों से।

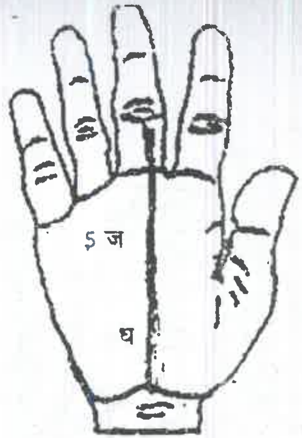

5.(ज) मध्यमा पर चढ़ी धन या ऊर्ध रेखा

अब यदि रेखा बैठी रहती है तो मृत्यु का हैडक्वार्टर खा जाने का भय देता है। बन्द एकत्रित माया पर बिच्छू (वृश्चिक राशि जिसे धन देवता की माता चन्द्रमा उच्च करती है) काल साँप शनि (इच्छाधारी साँप) आ बैठते है और आराम करते है। धन बन्द किया हुआ भी चल पड़ता है। यानि साँप को मिट्टी या शुक्र (स्त्री) भी मार्ग दे देती है। इस अवस्था में धन देवता के सिर पर मिट्टी का भार आ पड़ा और माता की कोठरी (मिट्टी-शुक्र) में ही बन्द रहा। परन्तु दुनियाँ से तो फिर भी **दूर रहा**। माता की कोठरी से बाहर आकर बढ़ता हुआ ऊँचा ऊपर को चलता है।

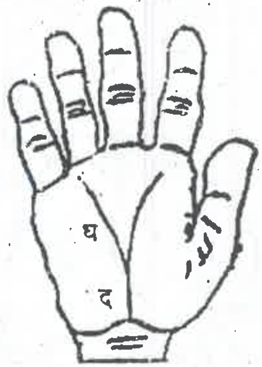

अब ऊपर जाती धन रेखा यदि झुक जाती है :-

5.(द) सूर्य की ओर :- तो धनवान व्यापारी या ग्रन्थों का रचयिता हो जिससे दूसरों को भी लाभ हो।

5.(र) बुध की ओर :- व्यापर में बहुत लाभ हो।

5.(स) वृहस्पति की ओर :- ससुराल से धन मिले। धनवान, बुद्धिमान , विद्वान होवे।

5. (क) शुक्र की ओर :- यदि शुक्र में झुक जाये तो बढ़ना बन्द हो जायेगा। इसलिये माना है कि यदि शुक्र से शाख धन रेखा में आ मिले तो व्यक्ति विरक्त उच्च योगी, ईश्वर भक्त व यति होगा क्योंकि उमर-रेखा (शनि), धन रेखा (स्वयं चन्द्रमा का पुत्र) और शुक्र इस स्थिति में परस्पर शत्रु है। अर्थात शुक्र से शाख वाला व्यक्ति धन-देवता से पूरा परिश्रम करवायेगा। नहीं तो, धन रेखा के प्रभाव से व्यक्ति माया के मद में मस्त सब नशा बाज़ों का नेता (सरदार) होगा।

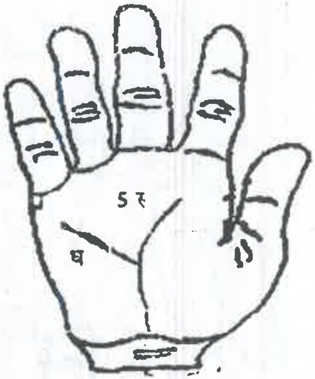

6. चन्द्रमा :- इस रेखा के निकलने का स्थान गिना है।

7. शनि :- पहले विस्तृत वर्णन हो चुका है।

8. धन रेखा का आखिर मंगल नेक -

मंगल-नेक :- धन-रेखा का अन्तिम स्थान या दोबारा जन्म लेने को स्थान गिना है । अर्थात संबन्धित लोगों से शुभ परिणाम होगा । या इस रेखा या धन से सभी लोगा सहायक हो जायेंगे ।

9. मंगल-बद :- भाई-बन्धु सब धन की आशा रखने वाले होंगे। वे सहायक भी हो सकते है और विराध में भी । परन्तु बराबर होंगे । परन्तु व्यक्ति के अपने लिये रुखा हानिकारक न होगी । संघर्ष व युद्ध में सेनापति होने की भी द्योतक हो सकती है ।

10. उत्तम धन वह है जिसमें श्रेष्ठता की लहर हो ।

11. ध- धन की श्रेष्ठ रेखा -

गं - गृहस्थ रेखा

श्रेष्ठ रेखा :- (1) यह रेखा कभी कलाई से आरम्भ होती है । अर्थात वही धन रेखा जो मध्यमा अगुँली के मार्ग से विरक्त हो संसार से भागी थी, अब दूसरा जन्म लेकर कलाई के मार्ग से फिर संसार में आ जाती है ।

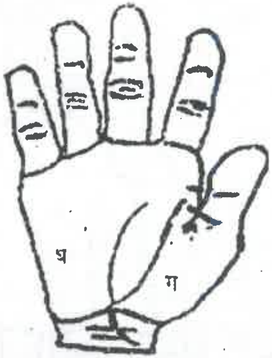

(2) कभी धन रेखा के नीचे से निकलकर गृहस्थ रेखा के साथ (हथेली के ख़ाली मैदान से घूम घुमाकर) जा मिलती है । कई बार धन रेखा या गृहस्थ रेखा से अलग भी देखी गई है ।

जब धन रेखा से मिली हुई होवे तो व्यक्ति बुद्धिमान, युक्ति-युक्त,

सम्मानित व उच्च पदासीन होगा । और हर प्रकार से प्रभाव-युक्त होगा ।

जब श्रेष्ठ रेखा कलाई की बजाये चाँद के पर्वत से आरम्भ होकर सिर रेखा से जा मिले और इसका झुकाव होवे :-

12 धन की श्रेष्ठ रेखा चन्द्र से वृहस्पति को

वृहस्पति की ओर :- सबसे श्रेष्ठ या उत्तम लक्ष्मी या माया होवे ।

13. **सूर्य की ओर :-** राजयोग व राज्याधिकारी होवे

14. **बुध की ओर :-** व्यापरी, विद्वान व अतिबुद्धिमान होवे ।

15. **शनि की ओर :-**शनि का पूरा नीच फल मिले क्योंकि यह रेखा शनि से पूरी शत्रुता पर है । यानि पशुओं (विषैले, मारक, हिंसक) से दुःख, भय, मृत्यु की आशंका रहे । ऐसा व्यक्ति हठी, मुर्ख और हर तरह से संसार में मन्द-भाग होगा ।

16. चन्द्रमा :- इसे इस अवस्था में रेखा का उद्गम स्थान गिना है।

17. मंगल-नेक :- इसे रेखा का अन्त का स्थान या सिर रेखा से मिलने का स्थान माना है । या

18. शुक्र व मंगल नेक :- पूरा शुभ प्रभाव होगा ।

19. मंगल-बद :- जब इस ओर हो जाये तो धन रेखा का प्रभाव होगा । श्रेष्ठ रेखा बाकी सब परिस्थितियों में धन-रेखा सा ही प्रभाव देती है ।

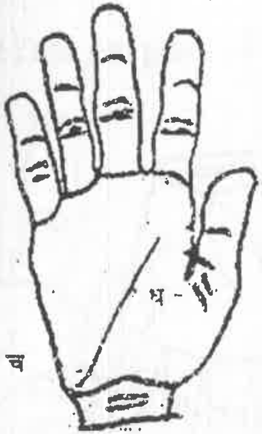

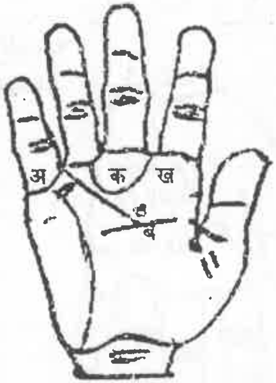

20 क-ख :- शनि के पर्वत के अन्दर अन्दर सूर्य के पर्वत को रेखा : सूर्य का उत्तम फल देगी । परन्तु शनि के पर्वत से बाहर पर शनि की तह में सूर्य को शनि का बुरा फल देगी ।

20 अ-ब :- ऐसी स्थिति में यह रेखा समीप के संबंधी, लड़के, भतीजे आदि के सरकारी नौकरी में जाने की द्योतक होगी । परन्तु वह संबंधी बचाकर कोई धन न देगा ।

फ़रमान नम्बर - 170

काग-रेखा व मच्छ-रेखा,

मच्छ-रेखा बनावे-काग-रेखा उड़ावे (सब कुछ)

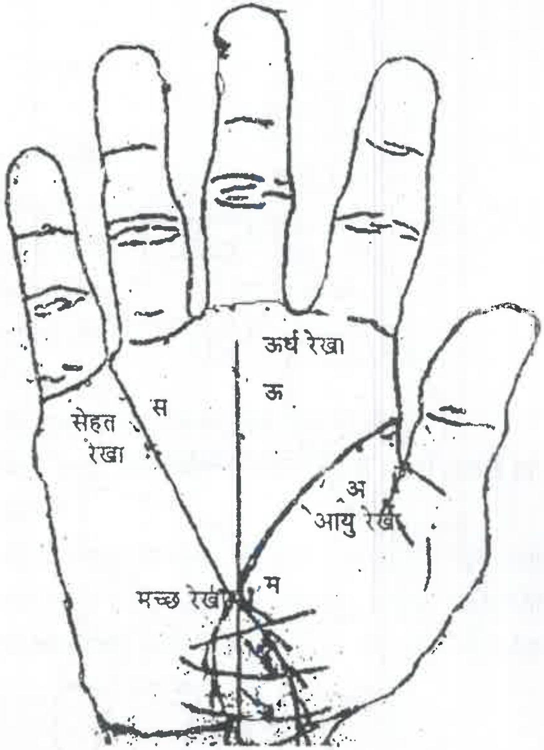

काग रेखा व मच्छ रेखा दोनों का आकर मीन अर्थात मछली जैसा होता है । अन्तर यह है कि काग-रेखा में मछली की दुम (पूँछ) परों की ओर से खुली होती है और मच्छ रेखा में परों की ओर से खुली नहीं होती है । प्रभाव में काग और मच्छ रेखाये एक दूसरे से उल्ट है । जहाँ मच्छ रेखा सुख, समृद्धि व सम्पन्नता के आने की निशानी है वहाँ पर काग-रेखा इनके जाने की निशानी है । काग-रेखा उसी परिवार के सदस्य के हाथ में पहले मच्छ रेखा रह चुकी हो ।

कुण्डली में यदि शुक्र-शनि पहले घर में बैठे हो और 7 वाँ व दसवाँ घर खाली न हो तो काग-रेखा कहलाती है । इसी प्रकार यदि शुक्र पहले घर में हो और 7 वें घर में इसके शत्रु सूर्य, चन्द्रमा व राहु हों तो भी काग रेखा

कही जाती है और शुक्र के पतंग का फल होता है।

काग-रेखा का आकार मनुष्य के गले में लटकते माँस के टुकड़े कौए जैसा है । गले के इस काग के दाँई ओर राहु, बाँई ओर केतु और बीच में शनि गिनते है। यदि पहले घर में बैठे शनि व शुक्र को सूखी लकड़ी गिनें और चौथे में बैठे राहु या केतु को आग गिनें तो शनि रूपी काग-रेखा मन्दे राहु केतु द्वारा सब कुछ भस्म कर देती है क्योंकि काग-रेखा सभी ग्रहों पर प्रभावी होके उन्हें निर्बल कर देती है । काग-रेखा के होते या होने वाले प्रभाव से अधार्मिकता, अनैतिकता, अन्यायपूर्ण क्रियायें, काल्पनिक अशुद्ध विचार आदि मृत्यु का कारण होंगे ।

मच्छ-रेखा :- शनि व शुक्र पहले घर में बैठे हो और 7 वां, 10 वां घर खाली न हों तो काग-रेखा कहलाती है परन्तु यदि शनि शुक्र पहले घर में हों, तो 7 वां व 10 वां घर खाली हों और मंगल छटे से बारहवें तक किसी घर में हो तो काग-रेखा के स्थान पर मच्छ रेखा कहलाती है । परन्तु यदि मंगल 7-12 न हों तो 7 वें व 10 वें घर के खाली होते हुये भी काग-रेखा ही रह जायेगी, मच्छ रेखा न होगी ।(1) मच्छ रेखा बरकत बढ़ाने वाली शुभ रेखा है । इसके स्थान मणिबंध रेखा के पास, शुक्र के पर्वत पर, चन्द्रमा के पर्वत पर है या शुक्र कायम, चन्दमा-कायम, मंगल-कायम तीन अवस्थाओं के है । रेखा के एक पार्शव को यदि पीठ गिनें तो दूसरे पार्शव को पेट गिनेंगे ।

मच्छ रेखा निर्धन को धनी और धनी को राज्याधिकारी बना देती है । यदि वृहस्पति व शनि कुण्डली में 7 वें घर में हों और शुक्र, चन्द्रमा व मंगल उच्च हों, कायम हों तो मच्छ रेखा उत्तम प्रभाव दे और खूब बढ़े ।

शुक्र उच्च से स्त्री के संबंध व निजी स्वतंत्रता से बढ़े ।

चन्द्रमा उच्च से माता, अपने भाई-बन्धओं के सम्बंध से बढ़े ।

मंगल उच्च से चन्द्रमा या शुक्र के अप्रभावी होने से बढ़े ।

इस प्रकार परिवार की आमदन और गृहस्थ में हर प्रकार से मंगल व बरकत हो । लोह लंगर सवाया हो । अनाज को खाने वाले और अनाज पैदा करके लाने वाले (कमाऊ) दिन-प्रतिदिन बढ़ते चले जायें । पुरुषों की इतनी बरकत हो कि यदि अपने घर के साथी पास न हों तो भोजन प्राप्त करने वाले अतिथि ही उपस्थित हो जायेंगे । मतलब यह कि रोटी पकाने का लोह, भंडारा व लंगर सदा चलता रहे और सवाया होता रहेगा । शनि का उत्तम प्रभाव पूर्ण होगा । यह प्रभाव तभी पूर्ण उत्तम होगा जब उमर रेखा या ऊर्ध रेखा मछली के मुँह में होवे । परन्तु जब मछली के मुँह में उमर रेखा वऊर्ध रेखा के स्थान पर सूर्य की तरक्की (उन्नति) रेखा या बुध की सेहत रेखा गिर रही हो तो ऐसा व्यक्ति-कामी, पर-स्त्री गामी व सुख-प्रिय प्रमादी होगा । जिह्वा के चसके से बर्बादी होगी । भाई-बहनों की संख्या 7+2=9 या कुछ कम होगी । बुध का वह प्रभाव न होगा, जो शनि का उत्तम फल था ।

मच्छ-रेखा का मुँह जब ऊपर को हो, तो जितने वर्ष किस्मत-रेखा के हिसाब से गिनकर मच्छ-रेखा का शरीर समाप्त होता जावे, इस वर्ष के उपरान्त भाई-बहन की संख्या में बढ़ौतरी होना या उनका पैदा होना बन्द हो जायेगा या इस वर्ष के पश्चात् इसका भाई या बहन और उत्पन्न न होगा । बल्कि इसकी शादी होगी और स्वयं इसके बाल-बच्चे शुरू हो जायेगें और भावी आयु में भी हर प्रकार से कुशल-क्षेम बना रहेगा ।

(2) यह सब रेखा के पीठ की ओर का प्रभाव हुआ । अब पेट की ओर या चन्द्रमा के पर्वत का प्रभाव देखें । यह बिल्कुल न होगा । शुक्र तो चन्द्रमा से शत्रुता नहीं करता परन्तु चन्द्रमा शुक्र का शत्रु है । अब माता चन्द्रमा के समय यानि 24 वर्ष में शुक्र या स्त्री के आने के समय चल आयेगी । (यह सब मच्छ-रेखा वाले पुत्र के हिसाब से गिनते है ।) और पिता बुध के असर के साथ (बुध मच्छ रेखा का शत्रु है जो वृहस्पति की रेखा है) यानि 34 या 17 वर्ष की (मच्छ-रेखा वाली की) आयु में साथ छोड़कर इस संसार से विदा लेगा ।

(3) यदि मच्छ-रेखा का मुँह ऊपर के स्थान पर नीचे को हो तो जितने वर्ष तक किस्मत रेखा के हिसाब से मछली का आकार फैल रहा हो, मंगल होगा । इसके पश्चात् हर प्रकार से न्यूनता होनी आरम्भ हो जायेगी ।

(4) मच्छ-रेखा की पीठ यदि चाँद की ओर हो तो चन्द्रमा का उत्तम प्रभाव होगा । अर्थात माता का प्रभावपूर्ण और इसके होते हुये चन्द्रमा का हर प्रकार पूर्ण, शुभ न उत्तम फल होगा । माता की सन्तान-भाई बहन आदि-सब मंगल से होंगे । शुक्र का कोई विशेष प्रभाव न होगा । कारण, शुक्र चन्द्रमा से शत्रुता नहीं करता है परन्तु वृहस्पति का शत्रु है । इसलिये विवाह के समय से जो शुक्र की अवधि के बाद 25 साल होगी, सन्तान में विशेष बढ़ौती न होगी । भाई बहन तो अवश्य बरकत में होंगे । वह भी उस अवस्था में जब मछली का मुँह ऊपर को हो । और उमर या पितृ-रेखा मछली के मुँह में हो । माता की आयु लम्बी होगी । परन्तु पिता वृहस्पति के प्रभाव में जो 16 वर्ष है, समाप्त होगा । इस आकार में भी यदि मछली के मुँह में सेहत या तरक्की रेखा हो तो व्यक्ति स्त्रीगामी, लम्पट और आरम प्रिय होगा । क्योंकि चन्द्रमा बुध का शत्रु है । अतः पिता की आयु, ऐसी अवस्था में, लम्बी होगी (चन्द्रमा, वृहस्पति व शुक्र की शत्रुता न होगी । केवल चन्द्रमा और बुध का शत्रुतापूर्ण व्यवहार या प्रभाव शेष रह जायेगा । यह माता पर बुरा प्रभाव करेगा ।)

दूसरी अवस्था में जबकि :-

(1) मच्छ-रेखा अपना मुँह नीचे करके चन्द्रमा पर स्थित हो तो जितने वर्ष तक की आयु तक यह आकार स्थान घेरे हुये होवे, उन्नति होगी। फिर वही बर्बादी का समय आरम्भ हो जायेगा।

(2) मच्छ-रेखा यदि शुक्र और चन्द्रमा के मध्य स्थित हो और इसके मुँह में ऊर्ध रेखा गिर रही हो, तो ऊर्ध रेखा का पूर्ण शुभ और उत्तम फल होगा। न शुक्र कुछ बिगाड़ सकेगा और न चन्द्रमा कोई दुष्टता करेगा।

(3) यदि मछली के आकार के स्थान पर मगर-मच्छ (शनि) का आकार हो तो मच्छ वाला मुकाबला पर आने वाले व्यक्तियों को खा जाया करता है। चाहे वह मगर-मच्छ का आकार शुक्र के पर्वत पर हो या चन्द्रमा के पर्वत पर या दोनों पर्वतों के बीच मच्छ-रेखा को काटने वाली सीधी या लेटी हुई लकीरें (। ।; ==) हो; हर दो अवस्थाओं में मृत्यु के होने को प्रकट करती है। यह मृत्यु की घटनायें अत्यन्त समीप के भाईयों या बहनों से संबिन्धत होंगी।

(4) ऊर्ध रेखा जब मछली के मुँह में गिनती हो (मछली का आकार चाहे शुक्र पर, चाहे चन्द्रमा पर, चाहें दोनों पर्वतों के बीच हो) तो अपना पूर्ण शुभ प्रभाव देगी।

(5) साधारण भाग्य वाले की अवस्था में मच्छ-रेखा स्थिर होने से धनवान होने की निश्चित निशानी है। इसी प्रकार धनवान के हाथ में यह रेखा हो तो राज्याधिकारी (होने जैसा) की पक्की निशानी है।

****

फ़रमान नम्बर - 171

शनि के पर्वत पर रेखा और शनि की अपनी रेखा

1. **उमर (आयु) रेखा :-** शनि की यह रेखा लोक व परलोक दोनों लोकों में अन्तर जानने की दृष्टि की शक्ति या ऐसा सामर्थ्य है या फिर वह वस्तु है जिससे अस्तित्व व विनाश में अन्तर जाना जा सके । शनि मीन राशि का स्वामी है । मीन को मछली भी कहते है । जिस प्रकार मछली बिना पानी के नहीं रह सकती, वैसे ही इस आयु रेखा के जल के बिना मनुष्य शनि रूपी मगर-मच्छ की शक्ति को नहीं सह सकता । आयु रूपी नदी से यदि छोटी-छोटी शाखे नदी के बहाव की ओर निकल भागें तो इन शाखों में नदी का जल आ ही जायेगा चाहे उस जल का वेग नदी के जल के वेग से बहुत कम होगा । नदी में अधिक जल के होने के समय इनमें कुछ न कुछ जल तो आ ही जायेगा । जो शाखें नदी के पानी के बहाव के उल्ट पिछली ओर होंगी उन शाखों या नालियों में बार-बार पानी का आना नहीं माना जा सकता ।

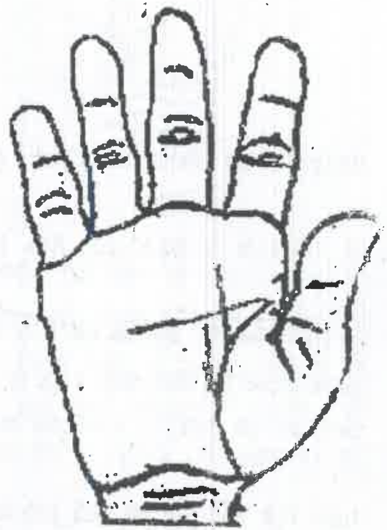

1. (अ ब) इसी प्रकार जब कोई शाख उमर रेखा से शनि के पर्वत की ओर चल निकले तो ऐसी शाख से तात्पर्य किसी आयु के साथी का पालन-पोषण होगा । अथवा इस शाख के निकलने वाली जगह की आयु रेखा पर की लम्बाई की आयु तक जीवन में धन उपार्जन किसी अन्य व्यक्ति के लिए होगा ।

1. (अ ज) शनि के पर्वत से यदि कोई रेखा आयु-रेखा को काट ही दे तो मृत्यु अति दु:खपूर्ण होगी।

1. (अ द) परन्तु यदि काटने के स्थान पर वह शनि से आई रेखा आयु-रेखा में ही मिलकर समाप्त हो जाये, तो भी जीवन और धनोपार्जन किसी अन्य के लिए ही होगा।

1. (अ र) यदि कोई रेखा आयु-रेखा से निकलकर सिर-रेखा को पार करके ऊपर के किसी पर्वत की ओर चले तो वह ऐसा व्यक्ति होगा जो उससे पोषण पायेगा और जिसका कारोबार उस पर्वत से संबंधित कार्यों का होगा। यदि दिशा शनि की है तो मकानों आदि का कारोबार यदि बुध की ओर है, तो बुद्धि सम्बन्धी कार्य इत्यादि।

1. (अ स) यदि ऐसी शाख सिर-रेखा को पार न करे नीचे ही रह जाये तो केवल खाने-पीने वाला ही होगा। खिलाये पिलायेगा बिल्कुल नहीं।

1. (अ क) उमर-रेखा यदि कोई रेखा किस्मत या भाग्य रेखा में मिल जाये ते वह कोई ऐसा किस्मत का साथी होगा जिसके मिलने से किस्मत या भाग्य जाग उठे या फिर वह

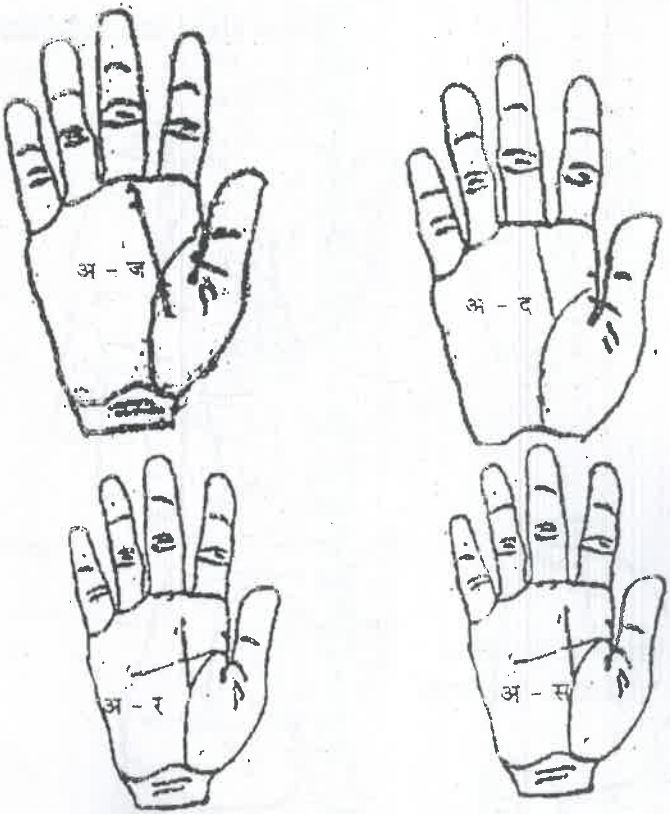

स्त्री होगी जो विवाह होते ही भाग्य को जाग उठे या फिर वह स्त्री होगी जो विवाह होते ही भाग्य को जगा देगी या फिर कोई ओर संबंधी होगा जिसके साथ मिलते ही भाग्य जाग उठेगा।

1. (अ ल)   उमर रेखा के आरम्भ में दो-शाखी हो तो उसका बुरा प्रभाव नहीं होता परन्तु आयु-रेखा के अन्त में दो-शाखी होने से वृद्धावस्था में दृष्टि-मन्दता की आशंका हो सकती है।

1. (अ न)उमर -रेखा जब शुक्र के पर्वत की गोलाई पर किस्मत-रेखा के आरम्भ होने वाले भाग से मिलकर दो-शाखी बना देवे और इस दो-शाखी की अँगूठे की ओर की लकीर बड़ी और लम्बी होवे तो मृत्यु मातृ-भूमि में होगी।

यदि चन्द्रमा की ओर की लकीर बड़ी और लम्बी हो तो मृत्यु प्रदेश में होगी।

1. (अ व)आयु-रेखा पर मंगल-नेक के स्थान पर केतु का निशान ⊓⊓ ⊔⊔ हो तो भाईयों से दु:खी देश-प्रदेश का जीवन व्यतीत करेगा।

1. (अ ह)आयु-रेखा पर शुक्र के पर्वत पर विसर्ग का निशान (:, ..) होवे तो दृष्टि-रोगों व दृष्टि-हीनता की निशानी है ।

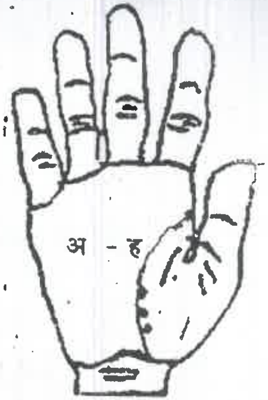

1. (अ प)आयु-रेखा का आरम्भ का स्थान वृहस्पति के पर्वत की जड़ है और अन्तिम स्थान शनि का हैड-क्वार्टर है जहाँ सेहत-रेखा आयु-रेखा को काटती है ।

क्रम सं०	(1) रेखा पर निशान	मृत्यु कैसे होगी
1	मंगल-बद पर सूर्य का सितारा हो या पेट पर केवल एक ही बल पड़े ।	युद्ध व संघर्ष ।
2	शनि के पर्वत से कोई रेखा आयु-रेखा को आ काटे ।	दर्द-भरी मृत्यु ।
3	सूर्य के पर्वत पर सूर्य का सितारा हो ।	अचानक मृत्यु ।
4	दिल व सिर रेखा का मिलकर एक ही रेखा प्रतीत होना; दिल रेखा व गृहस्थ-रेखा का कनिष्ठिका या मध्यमा के पास मिल जाना; सिर-रेखा का दिल-रेखा को काटकर शनि पर समाप्त हो जाना ।	हार्दिक वेदना या सदमे से मृत्यु ।
5	श्रेष्ठ रेखा का शनि को झुक जाना ।	पशुओं से मृत्यु का भय ।
6	अँगूठा छोटा और मध्यमा बहुत लम्बी; दिल रेखा, उमर-रेखा का मिल जाना; सूर्य रेखा का हाथ में बिल्कुल न होना; सिर रेखा का चन्द्रमा के पर्वत में समाप्त होना ।	आत्म-हत्या करे।
7	सिर-रेखा से ऊपर दिल-रेखा तक ही शाख होवे ।	खूनी होवे। हत्या से ।
8	पितृ-रेखा की शाख मातृ रेखा को काटकर अनामिका तक चली जावे ।	बंदी होकर मरे ।

क्रम सं०	(1) रेखा पर निशान	मृत्यु कैसे होगी
1	मंगल–बद पर सूर्य का सितारा हो या पेट पर केवल एक ही बल पड़े ।	युद्ध व संघर्ष ।
2	शनि के पर्वत से कोई रेखा आयु–रेखा को आ काटे । सूर्य के पर्वत पर सूर्य का सितारा हो ।	दर्द–भरी मृत्यु ।
3	दिल व सिर रेखा का मिलकर एक ही रेखा प्रतीत होना;	अचानक मृत्यु ।
4	दिल रेखा व गृहस्थ–रेखा का कनिष्ठिका या मध्यमा के पास मिल जाना; सिर–रेखा का दिल–रेखा को काटकर शनि पर समाप्त हो जाना ।	हार्दिक वेदना या सदमे से मृत्यु ।
5	श्रेष्ठ रेखा का शनि को झुक जाना ।	पशुओं से मृत्यु का भय ।
6	अँगूठा छोटा और मध्यमा बहुत लम्बी; दिल रेखा, उमर–रेखा का मिल जाना; सूर्य रेखा का हाथ में बिल्कुल न होना; सिर रेखा का चन्द्रमा के पर्वत में समाप्त होना । सिर–रेखा से ऊपर दिल–रेखा तक ही शाख होवे ।	आत्म–हत्या करे।
7	पितृ–रेखा की शाख मातृ रेखा को काटकर अनामिका तक चली जावे ।	खूनी होवे। कत्ल से ।
८	आयु–रेखा से निकली हुई किस्मत–रेखा सूर्य में या सूर्य तक जावे ।	बंदी होकर मरे ।
९	पितृ–रेखा के ऊपर + निशान होवे ।	तपैदिक आदि से मरे।

10	पितृ–रेखा के नीचे राहु का जाल :::: का निशान ।	घोड़े की सवारी से मरेगा ।
11	सिर रेखा पर + निशान हो ।	फाँसी पाकर मरे ।
12	पितृ–रेखा मातृ–रेखा से अलग होकर कटी हुई और टेढ़ी	सिर कटने से मृत्यु हो
13	हो । या कबज़ा (जोड़) से जुदा होकर टेढ़ी होवे ।	अधरंग होवे ।
14	चन्द्रमा के पर्वत के निचले भाग पर + निशान हो ।	सन्निपात हो ।
15	उमर रेखा के पास शुक्र पर सूर्य का सितारा होवे ।	पानी से मरे ।
16	उमर–रेखा एकाएक टूट जावे ।	नदी में डूबकर मरे ।
17	किस्मत–रेखा की आरम्भ की दो–शाखी की अँगूठे की ओर की शाख यदि लम्बी हो यानि शुक्र की ओर की बड़ी हो तो अपने गृहस्थियों में और यदि चन्द्रमा की ओर की बड़ी हो तो प्रदेश में मृत्यु ।	मृत्यु आने की निशानी है । मृत्यु मातृ–भूमि में होगी ।

क्रम सं०	(3) रेखा पर निशान	बाकी आयु कितनी है
1	स्वभाव बदल जाये यानि गर्म स्वभाव नर्म और नर्म स्वभाव गर्म हो जाये ।	एक साल ।
2	उत्तरी ध्रुव का तारा रात को दिखाई न पड़े ।	40 दिन ।
3	घी, तेल, पानी में अपनी छाया नज़र न आवे ।	7 दिन ।
4	दर्पण में अपनी छाया न दीखे ।	एक दिन ।
5	साँस लेते समय पेट न हिले या आँख पथराने लगे ।	कुछ घंटे ।
6	साँप का काटा हुआ	चार दिन
	विष से मरा हुआ	अनिश्चित
	रक्त मुँह के मार्ग से जारी ।	अनिश्चित
	गैस से मरा हुआ (शरीर वैसे का वैसा, नरम हो और न अकड़े ।	अनिश्चित
7	हथेली को प्रकाश की ओर करके देखने पर हाथ में रक्त न दिखाई दे या ल़ाली सी नज़र न आये या शरीर अकड़ जाये ।	निश्चित रूप से मृत ।
8	(क) कान बड़े, ठोड़ी व उभरी हुई, बाहर की ओर, गर्दन पर एक बल पड़ता होवे या लम्बा सा मुखड़ा, आंख बड़ी, मुँह चौड़ा और रान मौटी मोटी ।	आयु लम्बी होगी ।
	(ख) कलाई पर किस्मत रेखा की जड़ में 4 शाखा वाली रेखा हो ।	आयु लम्बी होगी ।

9	माथे पर कौए के पाँव का निशान या पुरुष के दायें पाँव की कनिष्ठिका व अनामिका अँगुली परस्पर बराबर हों।	कम आयु का होगा ।
10	एक ही समय में चन्द्रमा सिंह राशि (5) में और सूर्य मकर (10) या कुम्भ (11) राशि में हों ।	12 दिन, नहीं तो 12 वर्ष
11	चन्द्रमा और सूर्य इकट्ठे कुम्भ राशि पर ।	9 साल
12	सूर्य व राहु दोनों इकट्ठे हों मकर (10) या कुम्भ (11) पर ।	22 साल
13	बोलते समय दाँतों का मांस दिखाई दे या नाक और कांन ऊपर को चढ़े हुये हों या अँगुलियों के जोड़ बहुत ही छोटे–छोटे हों या पीठ बहु ही कम चौड़ी (तंग) हो । माथे पर बहुत बाल हों ।	25 साल

14	पीठ में ऊर्ध रेखा या आँख के नीचे चहरे पर दो या तीन	40 साल
15	रेखा हों तो आयु होगी ----- ।	70 साल
	माथे पर की रेखायें टूटी फूटी हों और इनका झुकाव भी	
16	नीचे नाक की ओर हो या माथे पर दोनों भौहों के ठीक बीच में मंगल–बद का त्रिकोण Δ का निशान; शुक्र, बुध तुला तराज़, मछली, त्रिशूल शनि, पदम, पंखा, तलवार या पक्षी के निशानों में से कोई भी एक निशान हो तो – —	8×8=64 साल; ——अल्प आयु

क्र० सं०	(5) दिल-रेखा की लम्बाई (चाहे पुरुष,चाहे स्त्री)	आयु के साल
1	कनिष्ठिका तक ही होवे ।	10–15 साल
2	कनिष्ठिका व अनामिका के मध्य तक हो ।	25 साल
3	अनामिका तक हो	50 साल
4	अनामिका व मध्यमा के बीच तक हो ।	75 साल
5	मध्यमा तक	90 साल
6	मध्यमा और तर्जनी के बीच तक हो ।	100 साल
7	तर्जनी तक हो	120 साल
क्रं० सं०	(6) कलाई की रेखा की संख्या	आयु के साल
1	केवल एक हो ।	30 साल
2	केवल दो हों ।	60 साल
3	केवल तीन हों ।	90 साल
4	केवल चार हों ।	120 साल

(7) माथे की रेखा					
स्पष्ट व पूरी			टूटी फूटी		
संख्या	साल पुरुष	साल स्त्री	संख्या	साल पुरुष	साल स्त्री
एक	20	40	एक	10	20
दो	30	60	दो	20	40
तीन	60	70	तीन	30	50
चार	80	80	चार	40	
पाँच	100	100	नोट – यदि माथे		
छह	120	80	पर लाल दंग की		
सात या अधिक	50		रगें भी साथ हों		
बगैर लकीर	100		तो 40 साल		
दोनों कानों तक			निश्चिय से ।		
सालम व स्पष्टः					
एक	100	100			
दो	70	70			

8. शरीर की लम्बाई (क़द) व आयु

स्वयं अपने शरीर की ऊंचाई (जिसकी मापक अपनी निजी अँगुलियाँ हों) और आयु का वर्णन नीचे दिया है। अपनी ही तीन अँगुल की एक गिरह, 4 अगँल की एक बालिशत, दो बालिशत का एक हाथ, दो हाथ का एक गज़ या 36 इन्च = 48 अँगुल ।

अपना क़द (अँगुल)	आयु के साल	अपना क़द (अँगुल)	आयु के साल
90	30	100	80
91	35	101	85
92	40	102	90
93	45	103	95
94	50	104	100
95	55	105	105
96	60	106	110
97	65	107	115
98	70	108	120
99	75		

आयु प्रति अँगुल पाँच साल गिनी है ।

9. चन्द्रमा स्थिति व आयु (चन्द्रमा स्थित हो :-)

ख़ाना नम्बर	राशि में	घर का स्वामी	आयु के साल	मृत्यु का दिन
1	मेष	मंगल	90	बुधवार
2	वृष	शुक्र	96	शुक्रवार
3	मिथुन	बुध	80	बुधवार
10	मकर	शनि	90	मंगलवार
11	कुम्भ	शनि	90	शनिवार
12	मीन	राहु, वृहस्पति	90	वृहस्पतिवार
4	कर्क	चन्द्रमा	85 अन्यथा 96	शुक्रवार
5	सिंह	सूर्य	100	मंगलवार
6	कन्या	केतु, बुध	80	रविवार
7	तुला	शुक्र	85	शुक्रवार
8	वृश्चिक	मंगल	90	शनिवार
9	धनु	वृहस्पति	75	वृहस्पतिवार

जब ख़ाना नम्बर 12 में कोई ग्रह न हो, तो चन्द्रमा जिस राशि में होगा, इसके हिसाब से मृत्यु का दिन होगा । मृत्यु का दिन ख़ाना नम्बर 12 व ख़ाना नम्बर 8 के ग्रहों की शक्ति की तुलना से गिना जाता है ।

चन्द्रमा व शुक्र दोनों स्त्री ग्रह है । इसलिये जब अकेले हों तो आयु 85 साल और जब नर ग्रह का साथ हो तो आयु 96 साल । जब नपुँसक ग्रह इनके साथ हों तो भी आयु 85 वर्ष होगी ।

अँगुलियों के ख़ाना नम्बर 1, 2, 3, ... 12 क्रमानुसार राशियों के पोरियों पर स्थान है । इन राशियों, अतः इन खानों के स्वामी भी निश्चित हो गये । इनकी आयु नर ग्रह के साथ होने, साथ न होने अथवा नपुँसक ग्रह के साथ होने पर निर्भर करती है । हथेली के ख़ाना नम्बर में चन्द्रमा के स्थान का निर्णय अँगुलियों की राशियों के हिसाब से और चन्द्रमा की दिल रेखा की लम्बाई से व्यक्ति की आयु की सीमा निर्धारित की जाती है ।

10. **सहायक आयु-रेखा :-** इसका वर्णन आगे दिया है ।

फ़रमान नम्बर - 172

सहायक आयु-रेखा (मंगल रेखा)

यह रेखा, जैसा कि नाम से प्रकट है, आयु-रेखा की सहायक रेखा है । यह रेखा केवल आयु लम्बी होने में ही सहायक नहीं है बल्कि व्यक्ति के सारे जीवन भर की सहायता को प्रकट करती है । यदि किसी को फाँसी पर लटकाया होवे तो यह रेखा उसके पाँव तले मरने से बचने के लिये तखता दे देगी तांकि गला न घुट जाये । दूसरे शब्दों में यदि कोई शत्रु मारने की तैयारी करके आ पहुँचे तो इस रेखा के प्रताप से बचाने वाला भी अपने आप सहायता के लिये आ पहुँचेगा । जिस प्रकार शत्रु को बुलाया न था, इसी तरह सहायता करने वाला भी बिना बुलाए आ जायेगा ।

जिस हाथ में यह रेखा विद्यमान हो, वह व्यक्ति (हाथ वाला) दूसरों से पूरी सहायता व आराम पाता रहेगा । शत्रुओं के मुकाबले में मित्र भी अपने-आप पैदा होंगे और सारा कष्ट निवारण कर जायेंगे । ऐसा व्यक्ति जीवन में रोगों से व दूसरी टूट-फूट से बचा रहता है । पूरी आयु भोगता है । मृत्यु के यमदूत के मुकाबले में भी इसे सहायता मिल जाती है और सहायता की सीमा यहाँ तक गिनते है कि ऐसा व्यक्ति क़बर से भी फिर वापिस आ जाता है । अपने पिता का सुख सागर इसके लिये विशाल व लम्बा

होगा। जितने साल तक सहायक आयु-रेखा का साथ आयु-रेखा के साथ रहता है इतनी अवधि या आयु तक ही या सहायता होगी। इस रेखा वाला सन्तान से भी सुख पाता है। दूसरे सहायकों से भी आराम पाता है।

नोट :- मृत्यु का साल व आयु का अन्तिम दिन :- चन्द्रमा का स्थान मौत का अन्तिम दिन व साल कुण्डली में चन्द्रमा के स्थान और ख़ाना नम्बर 8 व 12 के साँझे प्रभाव से प्रकट हो जाता है। अर्थात चन्द्रमा का स्थान तो कुण्डली में पता ही होगा और ख़ाना नम्बर 8 में जो कोई ग्रह होगा, वह नीच होगा। इन नीचों के प्रभाव से जो साल भी पहला साल होगा वह खराब, नेष्ट साल होगा। इस आठवें ख़ाने को बारहवें ख़ाने के ग्रह 25% अच्छा या बुरा करेंगे। यानि 12 वें घर वालों की यदि अच्छी नज़र हो तो जिस साल वह अच्छी नज़र समाप्त होगी, तभी मृत्यु होगी और यदि बुरी नज़र होवे तो जिस साल से बुरी नज़र आरम्भ होगी, वह आयु का अन्तिम साल होगा।

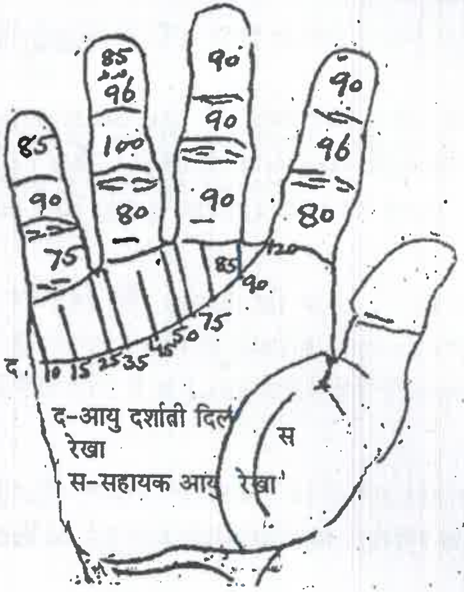

****

फ़रमान नम्बर - 173

शनि के पर्वत का प्रभाव ख़ाना नम्बर 10

(1)नीच स्थिति :- इस पर्वत के बिल्कुल न होने से काल्पनिक आशंकाओं व संकटों से सारा जीवन बर्बाद होगा । पर्वत की मध्यम ऊँचाई शुभ है । यह स्वास्थ्य के लिये शुभ है परन्तु इस अवस्था में धन की कमी रहेगी । मद्यपान पर्वत की नीच अवस्था का द्योतक है ।

(2)उच्च स्थिति :- उत्तम शनि वृहस्पति का शुभ फल देगा । धनी, कुबेर, बहुत सम्पत्ति सम्पन्न आँख की इंगित से धन उत्पन्न करने वाला दुष्ट भाग्यवान होगा ।

(3) शनि राशि नं० 10 (मकर) व राशि नं० 11 (कुम्भ) का स्वामी है । इसलिये आयु 90 वर्ष होगी । नीच शनि मेष राशि नं० 1 का है और उच्च शनि तुला राशि नं० 7 देता है । यानि मगर-मच्छ भी बन जाता है और मछली भी ।

फ़रमान नम्बर - 174, 175

शनि के निशान का प्रभाव (+ व विसर्ग . .)

ख़ाना नम्बर - 1

(1)सूर्य के पर्वत पर + **हों** :- दोनों बाप बेटा परस्पर शत्रु और एक समान बलवान । सूर्य पिता है और शनि पुत्र । ऊँट 40 तो 'बोता' (ऊँट का बच्चा) 45 अंश होगा । दोनों का अपना-अपना और बुरा परिणाम । हर काम अधूरा निर्धनता के कारण विद्या प्राप्ति तो अवश्य अधूरी रहे । पिता कमाए और बेटा उड़ाए । दुर्भाग्य उनके घर में शिखिर पर या ऐसा व्यक्ति-कंगाल निर्धन हो । मच्छ-रेखा व काग रेखा एक

ही समय पर साँझी हों । मछली हर वस्तु को मुँह में डाले चाहे बचारी गले में कुण्डी फँसने से मारी जाये और काग-रेखा का कौआ हर एक पर अपनी विष्ठा डाल या गिरा दे । स्त्री भी कुरुपा हो अर्थात शुक्र जो शनि का मित्र है, दोनों के मध्य बर्बाद हो.जावे । परन्तु वह [illegible] होगा । यदि त्रिशूल का निशान हो तो लज्जा रहित कुकर्मी (खोटे काम करने वाला) होवे ।

(2)कुण्डली में शनि का प्रभाव :- राशि मेष, घर का स्वामी मंगल है । वह शनि का शत्रु है । सूर्य, जिसका शनि शत्रु है, राशि को उच्च करता है । शनि स्वयं नीच करता है । कृतघ्न-50 वर्ष रोग से पीड़ित रहे । निर्धनता के कारण सब कार्य अपूर्ण ।

ख़ाना नम्बर - 2

(1)वृहस्पति के पर्वत पर :- दोनों का बराबर अलग-अलग प्रभाव । शनि की बुराई और वृहस्पति की भलाई । न्याय व दया का मिश्रित मध्य का व्यवहार है । कार्य कुशल मन्त्री हो । खेतों और सम्पत्ति का स्वामी हो । अच्छा स्वास्थ्य व जीवन में आराम हो । जितना चाहे उताना आवे । जितना दान करे उतना ही दूसरों से छीन लावे । यदि एक साँस में आये तो दूसरे में जाये । इस प्रकार दोनों ही अवस्थायें रहें । जिस भी पद पर होउसके अनुकूल धन से जीवन बिताये ।

(2)कुण्डली में प्रभाव :- राशि वृष । घर का स्वामी शुक्र जो शनि का मित्र है । चन्द्रमा, जो बराबर का है और शनि का शत्रु है, राशि को उच्च करता है नीच करने वाला कोई नहीं । प्रभाव के लिये यह वृहस्पति का घर है । वृहस्पति शनि से सम-बल है । स्त्री का सुख होवे नहीं तो सदा रोगी रहे ।

ख़ाना नम्बर - 3

(1)मंगल के पर्वतों पर :- मंगल शनि दोनों बराबर । मंगल शत्रुता करे और झगड़े की जड़ हो । झगड़े में मंगल पसन्न व झगड़े से लाभ उठावे । दूसरों के काम बिगाड़े परन्तु स्वयं सुख पावे । फिर भी मंगल-नेक का दिया धन साथ न देवे । धन अधिक न होगा । यदि शनि **मंगल-बद** पर हथेली के अन्दर की ओर हो तो झगड़े में ही मृत्यु को प्राप्त हो या मारा जाये ।

(2)कुण्डली में प्रभाव :- मिथुन राशि । बुध घर का स्वामी है । वह शनि का मित्र व सम है । राहु मित्र है और उच्च करता है । केतु जो सम है नीच करता है । वचन पर पूरा न उतरे - वचन न निभाये । कड़वी वाणी वाला हो और 10 वर्ष कष्ट पाने के पश्चात् सुखी होवे ।

ख़ाना नम्बर - 4

(1)चन्द्रमा के पर्वत पर :- दोनों सम परन्तु चन्द्रमा शत्रुता करता है । दोनों का अलग-अलग परन्तु चन्द्रमा का दुष्-परिणम । वह स्वयं ही शत्रुता करे । यदि परिवार के अन्य सदस्यों से सुख मिले तो माता दुःख का कारण बने । चन्द्रमा के निचले भाग पर शनि का + निशान हो तो जल से मृत्यु का भय बने । चन्द्रमा के पर्वत पर या चन्द्रमा की दिल-रेखा पर विसर्ग का . . /: निशान होवे तो मोतिया बिन्द आदि आँखों के रोगों से दृष्टिहीन होवे । अपनी मूर्खता से ही आँख के रोग हों । चोट लगकर आँख ख़राब न होगी ।

(2)कुण्डली में प्रभाव :- कर्क राशि । घर का स्वामी चन्द्रमा है । वह शनि शत्रु है । सम-बल वृहस्पति उच्च करता है । शत्रु मंगल नीच करता है । माता व अन्य परिवार जनों से मानसिक कष्ट पावे ।

ख़ाना नम्बर - 5

कुण्डली में प्रभाव :- सिंह राशि । घर का स्वामी सूर्य है जो शनि का शत्रु है, न कोई ऊँच करे और न नीच । विद्वान पुस्तकों का रचयिता व लेखक हो पर हो निर्धन । भोला राजा, चोर और धोखा देने वाला पर फिर भी फटे हाल हो ।

ख़ाना नम्बर - 6

कुण्डली में प्रभाव :- कन्या राशि । घर का स्वामी बुध जो शनि का मित्र है । सहस्वामी केतु है जो सम है । राहु भी मित्र है । दोनों मित्र राहु व बुध उच्च करतें है, केतु सम नीच करता है । खोटे काम करने वाला होगा, नहीं तो केतु के प्रभाव में (24 वर्ष) लड़के (पुत्र) पैदा हों । कहावत है ''माँ पर धी, पिता पर घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा-थोड़ा।'' अर्थात :-

ख़ाना नम्बर चार माता, कन्या (धी या लड़की) - राशि नम्बर 6 केतु - मतलब केतु जब चन्द्र के घर हो तो लड़कियाँ ही लड़कियाँ होंगी और जब वृहस्पति (पिता) राशि नम्बर चार (चन्द्र का घर-घोड़ा) पर हो तो पिता (वृहस्पति) का थौड़ा नहीं तो अधिक प्रभाव होता ही है ।

परन्तु शनि, जो सूर्य का ही पुत्र है - का अद्भुत व्यवहार है । जब शनि कन्या राशि (धी, लड़की) के घर हो तो माता की अवधि (24 वर्ष) तक लड़के ही देवे और जब पिता सूर्य के पर्वत पर हो या सूर्य की राशि सिंह में हो तो पिता सूर्य के शुभ प्रभाव का नाम तक भी मिटा दे । पिता तो सब संसार को प्रकाश देता है पर पुत्र निर्धन बनाता और चोरी करता फिरता है । वह धन बाँटता है या यह पुत्र धन चुराता है । पिता सूर्य 100 वर्ष की आयु देता है और पुत्र शनि मृत्यु के घर-ख़ाना नम्बर 8- में मंगल-बद से मिलकर सबके लिये मृत्यु का जाल लिये बैठा है । पिता सूर्य जैसा बाहर से देदीप्यमान है वैसा ही अन्तर में सच्चा है । पुत्र शनि, इसके उलट, बाहर और अन्दर दोनों स्थानों पर कालिमा में रंगा गया है । पर कहावत है ''**माड़ा पुत्र और खोटा पैसा कभी न कभी काम आ ही जाते है ।**'' सो शनि जब तारेगा तो संसार की सब कालिमा धो देगा और वृहस्पति का उत्तम प्रभाव उत्पन्न करेगा ।

ख़ाना नम्बर - 7

(1)शुक्र के पर्वत पर :- दोनों शुक्र शनि मित्र है । यदि शुक्र स्त्री है, तो शनि इस की चंचल आँख है । स्त्री की आँख संसार भर को नचाती है । शुक्र को स्त्री, मिट्टी या दुनियाँ कहा है और शनि को नटखट शरारत कहा है । इसलिये स्त्री की आँख में यदि शनि है, तो स्त्री चंचला, चपला व नटी है, बल्कि इन सब की मूर्त-रूपा है । लज्जा का भय दिखलाकर कोई उसे दबा नहीं सकता । क्योंकि शुक्र व शनि दोनों ग्रह मित्र है, तो दोनों का अलग-अलग और उत्तम फल होगा । राजदरबार से धन, सम्पन्नता व सम्मान की प्राप्ति होगी । परन्तु व्यक्ति अनैतिक सम्भोग और स्त्री-प्रेम से कलंकित होगा । यदि नेक भला हुआ तो सबकी आँख में मिट्टी डाली और यदि बद (बुरा) हुआ तो स्वयं अपनी आँख में मिट्टी डाली । अँगूठे की जड़ में स्त्री भाग में (+) निशान शुभ होगा । परन्तु फिर भी अशुभ प्रेमी होगा ।

यदि शनि की आयु-रेखा पर विसर्ग . . के निशान हों तो आँखों के रोग से पीड़ित हो ।

(2) बुध के पर्वत पर :- बुध शनि सम है । केवल बुध मित्रता करता है । दोनों का अपना-अपना फल होगा । बुध मित्रता का होगा पर शनि का कोई विश्वास नहीं । हाथ से काम करने वाला निपुण कारीगर होगा, परोपकारी होगा, नहीं तो, चोर, लुटेरा व कपटी होगा । यदि दो निशान (++) हों तो मन्द-भाग होगा । सिर रेखा (बुध की रेखा) पर विसर्ग . . के निशान हों तो आँखे ख़राब हों । यदि सिर रेखा पर त्रिशूल का निशान हो तो सिर कटने से मृत्यु हो ।

(3) कुण्डली में प्रभाव :- तुला राशि । घर का स्वामी शुक्र है जो शनि का मित्र है । शनि स्वयं उच्च करता है। शत्रु सूर्य नीच करता है । शुक्र से परोपकारी हो पर स्त्री सारी आयु रोग पीड़ित हो । बुध पर शनि से स्वयं **"अक्ल का अंधा व गाँठ का पूरा"** हो ।

****

राहु

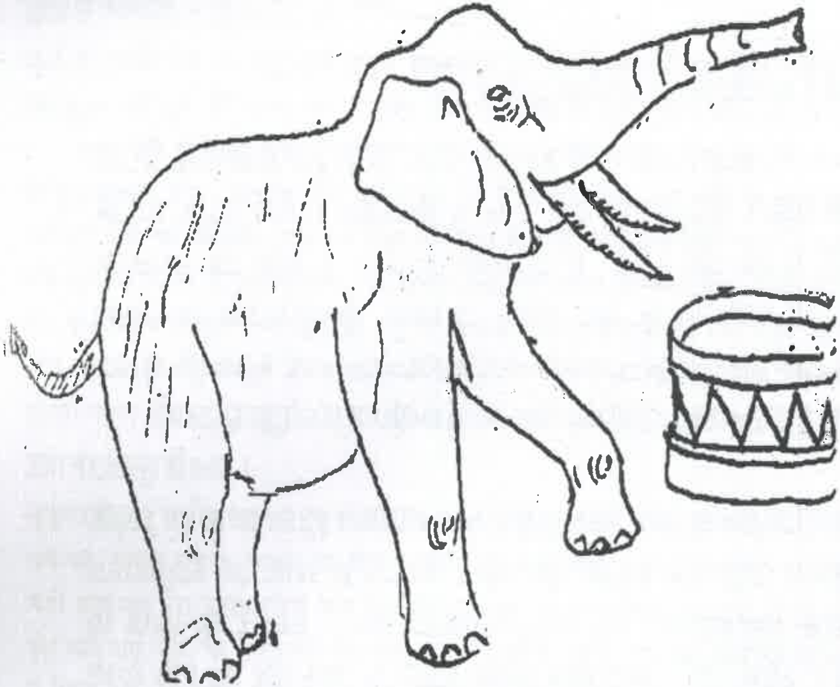

आकाश के शिखिर व समुद्र के तल – दोनों नीले रंग मिला देने वाला मस्त हाथी। जीवित (नीच) मूल्य एक लाख मृत (उच्च) मूल्य सवा लाख । राहु का अपना कोई रंग हीं । यह किसी भी रंग में बदल सकता है ।

फ़रमान नम्बर - 176 – 177

राहु का ग्रह

राहु–शनि की रात के आरम्भ से पहले और सायंकाल के पश्चात् का अंधेरा राहु की दैनिक समय अवधि है । इसे धरती के नीचे की अग्निमय परतों की झुलसाती लहर भी कह सकते है । बिना धड़ वाले सिर की छाया कहें या मस्तिष्क में उठने वाली गतिशीलता की लहर । तमोगुण के कार्य करवाने की शक्ति – काले रंग के हाथी के समान । महाबलवान–नीला रंग आकाश का और नीला ही समुद्र का । उनको एक करने वाली महाशक्ति जो हाथ में प्रत्येक पर्वत की शक्ति को क्षीण करने वाला ग्रह है । मध्यम करने वाला है । हथेली पर्वतों के साथ कहीं पक्का स्थान नहीं मिला । न ही राशियों के स्वामियों में यह किसी अलग अकेली राशि का स्वामी हुआ ।

वृहस्पति की राशि मीन में इसका निवास गिना गया है । मीन को मछली कहते है अर्थात नीले समुद्र की मछली जो शनि या मगरमच्छ की सन्यास की अँगुली पर अपना घर रखती है या जिसमें समस्त संसार का प्राण (हवा) या वृहस्पति भी रहता है । वहीं राहु भी जा बैठा है । इस प्रकार यह मछली, मगरमच्छ और हाथी की शक्तियों का जोड़ है । इसमें वृहस्पति तो अपने घर का है । केतु का फल उत्तम होता है, परन्तु बुध का फल ख़राब होगा अर्थात मस्तिष्क में गति तेज़ हो जायेगी । यदि मंगल–नेक हो तो राहु का फल शून्य हो जाता है, परन्तु राहु चन्द्र को नीच और सूर्य को सूर्य–ग्रहण देगा ।

राहु का प्रभाव

ख़ाना नम्बर - 1

सूर्य के पर्वत पर :- राहु सूर्य-ग्रहण के समान सूर्य के प्रभाव को कर देगा। सूर्य की सारी शक्ति पर स्याही का बादल कर देगा अर्थात सब कुछ होते हुये भी भाग्य साथ न देगा। दिन तो होगा पर सूर्य-ग्रहण का दृश्य होगा। बिल्कुल ऐसा ही भाग्य का हाल होगा।

अब यदि सूर्य की सेहत (स्वास्थ्य) रेखा या तरक्की (उन्नति) रेखा बुध से शुक्र तक चली गई हो तो सूर्य अपनी दूसरी ओर के भाग से पूरा प्रकाश देगा। अर्थात यदि सूर्य ग्रहण भी है तो पृथ्वी के एक भाग या एक ओर ही होगा। समस्त संसार में अँधेरा नहीं हो सकता। इसलिये सूर्य की तरक्की (उन्नति) रेखा के स्थित होने से धन आदि प्रचुर मात्रा में आएगा। व्यापार में लाभ होगा। आयु और हृदय रेखा पर होने वाले आघातों से रक्षा होगी। यदि ग्रहण होगा तो केवल चमक-दमक, बाहर का झूठा-सच्चा मान व हाथ से होने वाले कार्यों की आयु में। इस ग्रहण के समय या सूर्य पर राहु के ज़माना में जितनी सूर्य की रेखा शुक्र के पर्वत की ओर होगी उतनी ही अधिक सहायता मिलेगी और अपनी निजी आय में हानि आदि से रक्षा होगी। **दान करना कल्याणप्रद माना गया है। ग्रहण के उपरान्त सूर्य पहले वाला उत्तम फल देगा या राहु के समय के उपरान्त हानि आदि से हुई कमी की पूर्ति हो जायेगी।**

ख़ाना नम्बर - 2

वृहस्पति के पर्वत पर :- वृहस्पति के पर्वत के विवरण में पहले सविस्तार दे दिया है। युक्तिपूर्ण मन्त्री होगा। वृहस्पति अब शुक्र 25 वर्ष का समय धन व आराम का देगा। परन्तु राहु सदा कोई न कोई व्यय शुभ पारिवारिक कार्यों में ही होगा। धन की कोई बचत न होगी। यही अवस्था उस समय होगी जब राहु ▦ कलाई पर भाग्य रेखा की जड़ में हो और कलाई पर शुक्र व चन्द्र के पर्वतों को नष्ट न करता हो। यदि राहु शुक्र के पर्वत की ओर हो, तो हानि होगी। यदि चन्द्र की ओर हो तो उसके बराबर का है, न चन्द्र को नीच कर सकता है और न उच्च। दोनों अपना-अपना फल देंगे। मगर चन्द्र का फल मध्यम होगा।

ख़ाना नम्बर - 3

मंगल-नेक के पर्वत पर :- राहु का फल मंगल-नेक के समय बिल्कुल समाप्त । वैसे भी मंगल-नेक है ही तब, जब उसमें राहु न हो और सूर्य का पूरा प्रभाव हो । इसलिये धन व स्त्री का सुख पूर्ण हो । स्त्री की आयु लम्बी हो व धन एकत्रित हो ।

ख़ाना नम्बर - 4

चन्द्र के पर्वत पर :- मध्यम फल होगा । मनुष्य विद्वान तो होगा अवश्य पर चन्द्र का शेष फल मध्यम होगा । 45 वर्ष (केतु का 48 वर्ष, राहु का 42 वर्ष परन्तु अब 45 वर्ष) जल से भय । 45 वर्ष इसलिये कि मीन राशि में चन्द्र की आयु 90 वर्ष है । यदि किन्हीं कारणों से आयु कुछ और निकले तो उसका आधा लेगें । धन व सम्पत्ति का मध्यम फल होगा । राहु के बुरे समय के समाप्त होते ही सब न्यूनता व हानि पूर्ण हो जायेगी और चन्द्र पूरी शक्ति में आ जाएगा ।

ख़ाना नम्बर - 5

अब बृहस्पति व राहु का प्रभाव बराबर का होगा, जोकि शत्रुतापूर्ण व नेष्ट होगा ।

ख़ाना नम्बर 6 केतु का घर है जिसमें दोनों की मित्रता होगी । **राहु** इस घर में उच्च होगा । बाक़ी ख़ानों के लिये हर पर्वत में राहु का वही प्रभाव होगा जो ख़ाना नम्बर 12 में राहु का है ।

ख़ाना नम्बर - 6

केतु के साथ :- केतु का कोई घर नियत नहीं । पर्वत भी नियत नहीं । दोनों ग्रह खराब है । इनका काम ख़राबी की ओर ले जाना है । राहु मस्त हाथी, आँखों से अंधा । अंधा इसलिये कहा कि हाथी की आँखें छोटी-छोटी और हमेशा नीचे को ही देखती है । वह मनुष्य को आधा ही समझता है, पर धरती से दो आने का छोटा सिक्का भी उठा लेता है अर्थात राहु नीचे को ही ध्यान ले जायेगा या वह ध्यान या मस्तिष्क को नीचे की ओर ही ले जाएगा या फिर बुरे विचार उत्पन्न करेगा ।

अब यदि केतु भी साथ मिल गया अर्थात एक ऐसा व्यक्ति जिसमें राहु केतु दोनों इकट्ठे हों तो उससे कोई बुरी बात नहीं जो बाकी रह जायेगी। केतु धड़ की सारी कुचेष्टाओं का स्वामी है। कुत्ता व सूअर (शूकर) है और चितकबरा रंग बिरंग जिसमें लाल रंग न हो। अर्थात मंगल की नेकी व रक्तिम लालिमा न हो। बाकी रंग चाहे कोई हो। मतलब यह कि आदर सम्मान न होगा। काम का वेग व चेष्टायें सूअर, माता सूअरी के समान बहुत प्रबल हो और लज्जा-हीन भी। इस प्रकार राहु केतु का साँझा अथवा इकट्ठा प्रभाव खराब ही होगा।

ख़ाना नम्बर - 7

(1)शुक्र के पर्वत पर :- स्त्री का सुख तो अवश्य हल्का होगा। सूर्य अपना पूरा प्रभाव देगा। राजदरबार से उच्च पद की प्राप्ति। शत्रु अधीन रहें और प्रत्येक काम में आराम हो। मच्छ-रेखा शुक्र के पर्वत पर अत्यन्त शुभ चिन्ह है। जो मछली बारहवीं राशि या राहु का घर है। यानि शुक्र के पर्वत पर राहु का निशान ▦ तो अवश्य ही कुप्रभाव उत्पन्न करेगा, परन्तु मच्छ-रेखा, जिसमें आयु (शनि) रेखा व बुध रेखा (मस्तिष्क रेखा) भी शमिल हो जाती है, शुभ फल देगी क्योंकि शनि रेखा व तरक्की रेखा (मस्तिष्क रेखा) धन के लिये तो शुक्र का मित्र है। बुध व शुक्र का शनि से सम्बंध पहले विस्तार से दे चुके है अर्थात कामुकता, अनैतिक क्रियाएँ व बुद्धि का दुर्पयोग साधारण बात होगी। परन्तु राहु के प्रभाव से स्त्री सुख व स्त्री की प्रसन्नता में बाधायें उपस्थित होंगी।

(2)बुध के पर्वत पर :- राहु बुध का मित्र है और बुध के होते कभी बुराई की ओर न ले जायेगा। बुद्धि की हलचल तो करायेगा परन्तु बदी की ओर न ले जायेगा। धन का व्यय बहुत करवायेगा। धन व व्यापार का सुख न होगा। पराये धन का रक्षक ही होगा जो दूसरों के लिये जोड़ने वाला ही होगा। स्वयं धन का उपयोग करने वाला न होगा।

ख़ाना नम्बर - 8

मंगल-बद के पर्वत पर :- राहु व मंगल दोनों बद व बदी के स्वामी। बुद्धि पर नियन्त्रण न होने के कारण इनके सब काम "आ बैल मुझे मार" जैसे होंगे। स्त्री का सुख व धन की लालसा नष्ट करे और खर्चा होवे। 5 वर्ष हानि की आशंका रहे।

ख़ाना नम्बर - 9

ख़ाना नम्बर 9 और ख़ाना नम्बर 5 में राहु का प्रभाव बृहस्पति और राहु का बराबर का होगा जो शत्रुतापूर्ण और बुरा होगा।

ख़ाना नम्बर – 10

(1) शनि के पर्वत पर :- राहु शनि का मित्र । व्यापारी अति निपुण होगा । परन्तु 15 वर्ष झगड़े उत्पन्न हों और हानि व हार होवे । शनि जो राहु का मित्र है अपनी मित्रता का प्रभाव धन, माया पर करता है । राहु का काम बुरी ओर ले जाने का है और शनि दोनों ओर चला जाता है । इसलिये प्रभाव को अनिश्चित व संशयशील समझना चाहिये ।

ख़ाना नम्बर – 11

ख़ाना नम्बर 11 वृहस्पति का है और राशि शनि की । राहु शनि का मित्र है और वृहस्पति के विरुद्ध शनि व राहु दोनों ही वृहस्पति के विरुद्ध होंगे ।

प्रभाव राहु का इस ख़ाना में बुरा होगा, यानि धन सम्पत्ति उत्तम पर केवल वृहस्पति के समय । शेष समय गुज़ारा कठिनता से होगा ।

ख़ाना नम्बर – 12

शेष ख़ानों के लिये हर पर्वत पर ख़ाना नम्बर 12 में जो है, वही होगा ।

****

फ़रमान नम्बर – 178

केतु का ग्रह

शनि की रात समाप्त हुई मगर अभी रविवार का दिन नहीं चढ़ा । रात के अँधेरे के पश्चात् पर सूर्योदय से पहले का समय यहीं अवधि है केतु की । धरती के ऊपर या आकाश के नीचे तूफानी हवा की लहर । बिना सिर के धड़ की छाया–या सिर छोड़कर शेष शरीर में गति पैदा करने वाली बुरी लहर–बदी की ओर ले जाने वाली शक्ति । रंग बिरंगा कुत्ता मगर लाल रंग का इसमें निशान न हो । प्रत्येक पर्वत की शक्ति खराब करने वाला है । पर्वतों के साथ हाथ की हथेली में इसे कोई नियत स्थान नहीं मिला । केवल छाया व चिन्ह प्रकट होते है । राशियों में भी कोई निश्चित अकेली राशि नहीं मिली । जिस प्रकार धड़ का संबंध सिर से है और सिर का संबन्ध साँस और हवा से है, ठीक इसी प्रकार केतु का संबन्ध बुध से हुआ है अर्थात इसे बुध (सिर) की राशि–छटी राशि कन्या जिसमें अभी संसार की दुर्भावनाओं का समावेश नहीं हुआ – में स्थान दिया गया है । कन्या को बुध और राहु तो उच्च करते है परन्तु यह मूर्त कामदेव स्वयं इसे नीच करता हैं अर्थात

कन्या में जब धड़ की कुचेष्टाओं का – कामदेव का – आरम्भ हुआ, तो उसे ही केतु का प्रभाव जानना चाहिये ।

राहु ने सूर्य को ग्रहण लगाया और चन्द्र को मध्यम किया । केतु चन्द्र को चन्द्र–ग्रहण लगाता व सूर्य को मध्यम करता है । चन्द्र–ग्रहण में भी साँसारिक चमक–दमक व चन्द्र की शुभ शक्ति का वही हाल है जो सूर्य–ग्रहण के समय सूर्य का था । यानि सूर्य–ग्रहण में जब एक स्थान पर अँधेरा था तो संसार के अन्य प्रदेशों में प्रकाश था । बुध एक ऐसा ग्रह है, जो दो शत्रुओं के बीच मित्रता से काम निकाल लेता है या दो शत्रुओं के बीच आकर एक का दुष्प्रभाव दूसरे पर होने नहीं देता या दो के मध्य टकराव से बचाने वाला प्रदेश और दोनों को अपने–अपने कार्य में लगाये रखने वाला । सूर्य–ग्रहण राहु से हुआ तो सेहत या सूर्य रेखा बुध से चली और सूर्य की चमक का फल दिया । इसी प्रकार जब चन्द्र–ग्रहण हुआ तो बुध की दूसरी रेखा जिसे श्रेष्ठ रेखा कहते है । चन्द्र की शक्ति को पूर्व रूप प्रदान करती है । **ग्रहण का समय निकल जाने के पश्चात् । ऐसी अवस्था में भी दान कल्याण या नेकी के परिणाम की ओर ले जायेगा** । सूर्य–ग्रहण और चन्द्र–ग्रहण है तो हद दर्जा की मंदी अवस्था के पर ग्रहण का समय निकलते ही दोनों माता पिता की वही उत्तम अवस्था हो जाती है ।

****

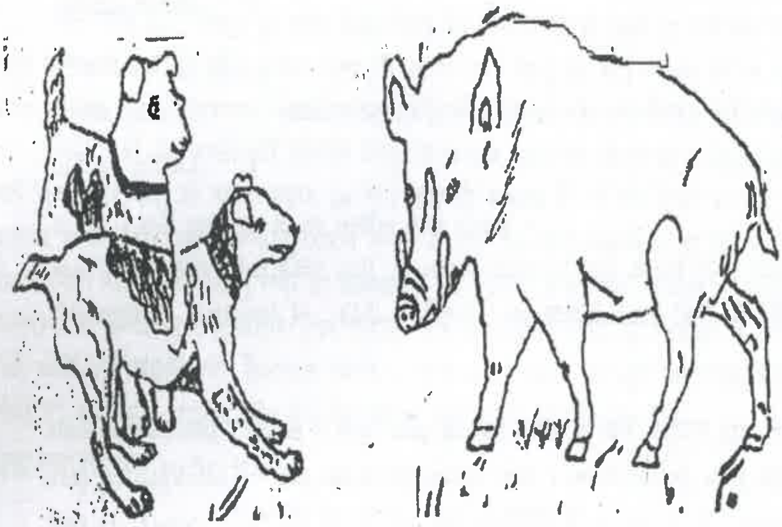

केतु

गोली के स्थान पर आ कर मरने वाला सूअर - संसार की आवाज़ को भगवान् के दरबार में पहुँचाने वाला साधु कुत्ता । मृत्यु के यमदूत के आने की पपले ही सूचना दे दे । हर रंग में रंग बिरंगा पर लाल रंग न होगा ।

****

फ़रमान नम्बर - 179

केतु का प्रभाव

ख़ाना नम्बर - 1

सूर्य के पर्वत पर :- सूर्य का प्रभाव मध्यम होगा । ज्यादा खराबी मामों की ओर करेगा । स्त्री सुख अल्प होगा । राजदरबार से लाभ होगा परन्तु अधिक नहीं । केवल 3 वर्ष । सूर्य के सारे समय में खूब आराम चैन का ज़माना होगा ।

ख़ाना नम्बर - 2

वृहस्पति के पर्वत पर :- दानी व शुभेच्छु, जो कमायेगा खा लेगा या खिला देगा । अपने पास धन एकत्रित करके न रखेगा, न जमा ही होगा । एक साँस आया दूसरा गया, तो पहला आया या आई चलाई होती रही । भाग्य रेखा की जड़ में शुक्र के पर्वत की ओर हो तो कल्याण कारक । चन्द्र की ओर हो तो अशुभ फल दायक ।

ख़ाना नम्बर - 3

मंगल-नेक पर :- स्वयं अपने लिये शुभ, परन्तु भाई-बन्धु की ओर से शत्रुता का व्यवहार । प्रदेश का जीवन और बे-आरामगी भाईयों के कारण होती रहे ।

ख़ाना नम्बर - 4

चन्द्र के पर्वत पर :- विस्तार से चन्द्र के पर्वत में लिखा है । स्थितप्रज्ञ व युक्ति सम्पन्न, परन्तु संतान में कन्यायें अधिक हों । 6 वर्ष कष्ट रहे । चन्द्र-ग्रहण हो पर सिर की श्रेष्ठ रेखा चन्द्र-ग्रहण व चन्द्र नीचे के बुरे प्रभाव से बचायेगी । जिस प्रकार सूर्य-ग्रहण के समय सूर्य की

तरक्की रेखा से फिर पहले जैसा सूर्य चमका था । इसी प्रकार सिर की श्रेष्ठ रेखा चन्द्र की चमक को फिर से पहले सा ही उजागर कर देगी। यह दोनों रेखायें बुध की है इसलिये 34 वर्ष से आरम्भ करके 34 वर्ष ही फल देती है ।

चन्द्र, सूर्य के साथ हो तो सूर्य के साथ मित्र है । इसलिये बुध चुप है और अपनी अवधि के आधे भाग तक कोई अलग प्रभाव नहीं करता अर्थात 17 वर्ष चुप-चाप; फिर अपना अलग प्रभाव देना आरम्भ करता है । चन्द्र के साथ बुध की शत्रुता है । मतलब यह कि चन्द्र के समय बुध शत्रुता पूर्ण ही रहेगा या बुध के बैठे हुये मंगल-नेक का कोई प्रभाव न होगा । चन्द्र-ग्रहण केतु से हुआ जो बुध के बिल्कुल बराबर का है । अब च न्द्र केतु से दब गया जो 48 वर्ष तक प्रभाव करेगा । दोनों ग्रह अपना-अपना पूरा समय और पूरा-पूरा प्रभाव देते है ।

अब यदि सूर्य-ग्रहण हो और सेहत रेखा भी क़ायम हो तो सूर्य 22 वर्ष अपने और 17 वर्ष बुध के, कुल 39 वर्ष, 39 वर्ष की आयु में खूब चमक देगा और इसी प्रकार चन्द्र के समय जब केतु से चन्द्र-ग्रहण हो तो बुध की श्रेष्ठ रेखा 24 वर्ष चन्द्र का समय चन्द्र-ग्रहण के बाद अन्तिम भाग में 34 वर्ष यानि 24 वर्ष की आयु से 58 वर्ष तक अलग उत्तम प्रभाव देगा ।

दोनों ग्रहों के समय की अवधि केतु के प्रभाव स्तर पर थोड़ा या अधिक या सारा ग्रहण अलग-अलग होगा । राहु से सूर्य-ग्रहण 22 वर्ष तक और केतु से चन्द्र-ग्रहण 24 वर्ष तक हो सकता है जो कि सूर्य व चन्द्र की अपनी 2 अवधि है, परन्तु राहु केतु दोनों यदि अपना ख़राब प्रभाव देना आरम्भ करें जिसमें चन्द्र या सूर्य का कोई संबंध न हो तो राहु 42 वर्ष तक और केतु 48 वर्ष तक मार कर सकता है । अर्थात इन सालों की आयु तक हो सकता है और इतने 2 ही वर्ष अधिक से अधिक सीमा तक रह सकता है अर्थात पूरी शांति 48 वर्ष के उपरान्त ही होगी । परन्तु सेहत-रेखा व सिर की श्रेष्ठ-रेखा दोनों अवस्थाओं में अपना पूरा-पूरा फल देकर सहायता करेंगी । सूर्य-ग्रहण वाले को चन्द्र का सितारा भी सहायता करेगा । चन्द्र-ग्रहण वाले को सूर्य का सितारा सहायक होता है । जिस प्रकार राहु-केतु परस्पर सहायक है वैसे ही चन्द्र सूर्य परस्पर मित्र होने के कारण एक दूसरे के सहायक है ।

ख़ाना नम्बर - 5; 9 :-

वृहस्पति के घर है । केतु वृहस्पति के बराबर का है । अतः केतु का प्रभाव शत्रुतापूर्ण होगा ।

ख़ाना नम्बर - 6

यह केतु का प्रभाव घर है । बाक़ी ख़ानों के लिये हर पर्वत का ख़ाना नम्बर 6 का जो प्रभाव लिखा है, वही केतु का प्रभाव होगा ।

ख़ाना नम्बर - 7

(1)**शुक्र के पर्वत पर :-** सविस्तार शुक्र के पर्वत में वर्णित है । बहुत धनवान नहीं तो 40 वर्ष शत्रु । तदुपरानत हर एक सहायक या जो शत्रुता करे वह स्वयं नष्ट हो ।

(2)**बुध के पर्वत पर :-** लेखक, ग्रन्थ-रचियता । परन्तु 34 वर्ष शत्रु अधिक हों ।

ख़ाना नम्बर - 8

मंगल-बद पर :- हर प्रकार की बुरी अवस्था और हानि गले लगी रहेगी ।

ख़ाना नम्बर - 9

ख़ाना नम्बर 9, 5 वृहस्पति के घर है । केतु वृहस्पति के बराबर का है । अत: केतु का फल शत्रुतापूर्ण होगा ।

ख़ाना नम्बर - 10

(1)**शनि के पर्वत पर :-** बुरे काम करने वाला । 24 साल लड़के पैदा हों । शनि का उत्तम फल मिले । हर प्रकार से वृहस्पति से भी उत्तम फल प्राप्त होगा । 48 वर्ष की आयु पर परिस्थिति का बदलाव निर्णय कर देगा कि शनि कैसा है । यदि उल्टा निकला तो हर प्रकार से हानि । शरीरिक कष्ट, मानसिक क्लेश । मकान सम्पत्ति और धन दौलत की हानि । हर स्थान पर तीन काने और यदि शनि सहायक हुआ तो पग बारह । 'मिट्टी को हाथ डाला तो सोना ही मिल गया' वाला फल प्राप्त होगा ।

ख़ाना नम्बर - 11

यह ख़ाना वृहस्पति का घर व शनि की राशि है । केतु शनि के बराबर का है । इसलिये धन की प्राप्ति तो उत्तम होगी पर शनि व केतु का फल खराब करेगा ।

ख़ाना नम्बर - 12

मीन राशि । घर का स्वामी शनि है जो केतु के बराबर का है । यह राशि राहु का भी घर है जो केतु का मित्र है । जिस प्रकार राहु ख़ाना नम्बर 6 में उच्च फल देता है और शत्रुओं का नाश करता है, वैसे ही केतु ख़ाना नम्बर 12 में उच्च होता है और संतान व परिवार एवं कुल की बढ़ौती में सहायक होता है ।

वैसे हर ग्रह के अपने हाल में ख़ाना नम्बर 12 का जो प्रभाव लिखा है, इन तमाम बातों में केतु प्रभावित करेगा । जबकि केतु ख़ाना नम्बर 12 में होवे । मगर भाईयों से बे-आरामी करायेगा ।

केतु व राहु को पूँछ और सिर भी माना है अर्थात यदि राहु समय की गिनती के हिसाब से पहले घर हो तो ज्योतिष विद्या के आधार पर केतु उस घर से सातवें पर होगा । दोनों के मध्य आठ घर होंगे या केतु को बिना गिने ही सातवें घर को साथ लेंगे । मगर सामुद्रिक में जिस स्थान पर केतु का चिन्ह होगा, वहाँ ही केतु को रखेंगे । सातवें होने की विद्या आवश्यक न होगी । यह ग्रह भी ऐसा ही आवश्यक है जैसे कि दूसरे ग्रह । सूर्य के साथ या लाल रंग के साथ केतु का नाश माना है । लेकिन यदि रंग-बिरंग वस्तु हो और लाल रंग का भी साथ हो तो उस समय केतु तो बेशक न होगा मगर रंग-बिरंगें होने के कारण प्रभावहीन ही हो जायेगा अर्थात् बुध का सा स्वभाव हो जाएगा और प्रभाव का समय भी 34 वर्ष से आरम्भ होगा । केतु का निशान न होने से केतु अपने घर का होगा जो ख़ाना नम्बर 6 है ।

****

.फरमान नम्बर - 180

विविध योग

यदि ग्रह सूर्य – चन्द्र चला जाये मेष में एवं मंगल नेक पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा – राजा के समाप (प्रतापी नीति) प्रवीण मन्त्री हो।

यदि ग्रह चन्द्र, वृहस्पति, शनि चला जाये मेष, कर्क एवं कुम्भ राशि पर एवं मंगल नेक, चन्द्र, शनि पर्वत पर हो तो

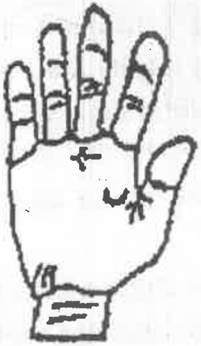

प्रभाव देगा – हर प्रकार की सवारी की सुविधा हो ।

यदि ग्रह शुक्र, शनि, चन्द्र, सूर्य, मंगल चला जाये मेष राशि पर एवं मंगल नेक, पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा– दलिदरी ।

यदि ग्रह सूर्य–वृहस्पति चला जाये मेष राशि पर एवं मंगल नेक, पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा– संसार के सब आराम हो ।

यदि ग्रह शुक्र–शनि चला जाये मेष राशि पर एवं मंगल पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा– कामी, पर स्त्रीगामी।

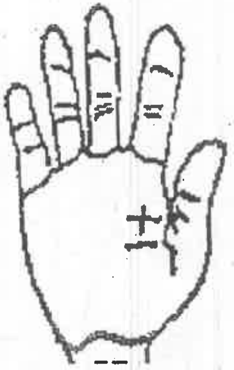

यदि ग्रह मंगल, शनि, चन्द्र चला जाये मेष राशि पर एवं मंगल पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा– बीमारी होवे ।

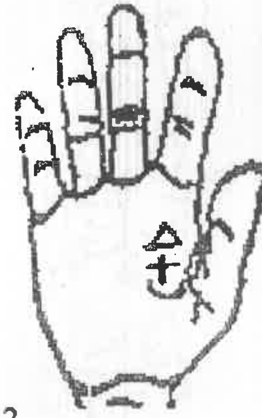

यदि ग्रह मंगल, शनि, चन्द्र चला जाये वृष राशि पर एवं शुक्र पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा– फुलवहरी होवे ।

यदि. सभी ग्रह चले जायें वृष राशि पर एवं शुक्र पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा– राजा या राज्यधिकारी होवे ।

यदि ग्रह चन्द्र, शुक्र चला जाये वृष राशि पर
एवं शुक्र पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा– औषधि के व्यापार से लाभ हो ।

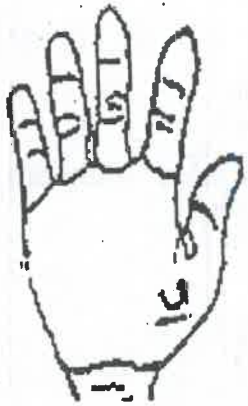

यदि ग्रह सूर्य चन्द्र चला जाये
वृष राशि पर एवं शुक्र पर्वत पर हो तो
प्रभाव देगा– स्त्रियों से झगड़ा हुआ करे ।

यदि ग्रह शुक्र बुध चला जाये वृष राशि पर
एवं शुक्र पर्वत पर हो तो

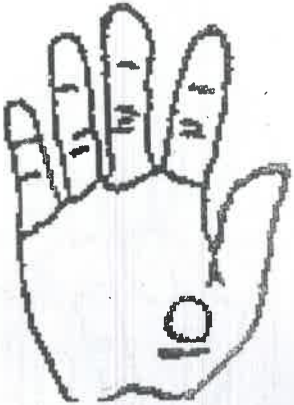

प्रभाव देगा– कामी, स्त्री कामनुरक्त ।

यदि ग्रह चन्द्र शनि चला जाये वृष राशि पर
एवं शुक्र पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा– हथियार (शास्त्र) ये मृत्यु हो ।

यदि सभी ग्रह चलें जायें मिथुन राशि पर
एवं बुध पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा– प्रतापी यशस्वी हो ।

यदि ग्रह सूर्य, चन्द्र चला जाये मिथुन राशि पर
एवं बुध पर्वत पर हो तो

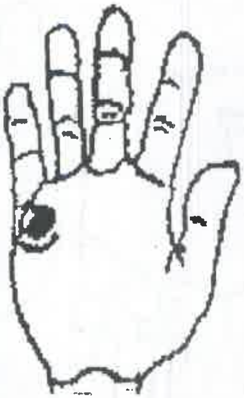

प्रभाव देगा– स्वार्थी ।

यदि ग्रह मंगल, शुक्र चला जाये मिथुन राशि पर
एवं बुध पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा– कामी, लम्पट, पर–स्त्री–गामी ।

यदि ग्रह शनि, वृहस्पति चला जाये मिथुन राशि
पर एवं बुध पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा– जीवन मध्यम स्तर का । अन्तिम भाग आयु का सुख–पूर्ण होगा ।

यदि ग्रह बुध वृहस्पति चला जाये मिथुन राशि पर
एवं बुध पर्वत पर हो तो

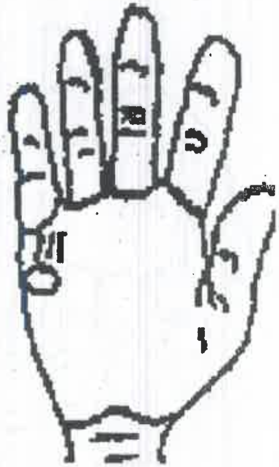

प्रभाव देगा– धैर्यवान व संतोषी होगा।

यदि ग्रह शुक्र , वृहस्पति चला जाये मिथुन राशि पर
एवं बुध पर्वत पर हो तो
प्रभाव देगा – भाग्यवान। सुखी व सम्पन्न होवे।

यदि ग्रह सूर्य मंगल, मकर राशि में
शनि, कुम्भ राशि में चन्द्र, कन्या राशि पर
एवं सूर्य मंगल शनि के पर्वत पर, शनि – शनि
के पर्वत पर तथा चन्द्र बुध के पर्वत पर तो

प्रभाव देगा – भाग्यवान ।

यदि ग्रह सूर्य मंगल चला जाये मकर राशि पर
एवं शनि पर्वत पर हो तो

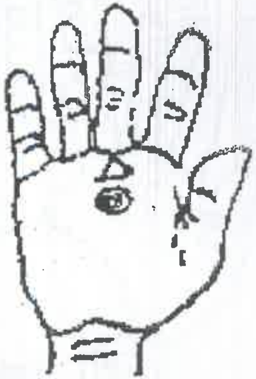

**प्रभाव देगा – प्रिय जनो से धन व सम्पत्ति
के कारण झगड़ा हो ।**

यदि ग्रह राहु, चन्द्र चला जाये मकर कायम राशि पर
एवं शनि पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा – सिर फट जावे ।

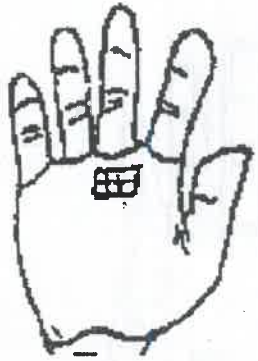

यदि ग्रह शनि, मंगल चला जाये मकर राशि पर
एवं शनि पर्वत पर हो तो

**प्रभाव देगा –राज्याधिकारी, शासक ,
सम्पत्ति सम्पन्न होगा ।**

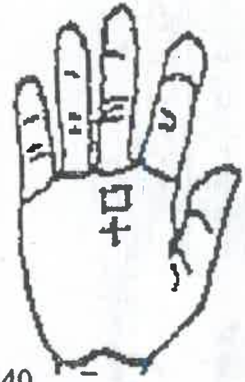

यदि ग्रह शुक्र, बुध चला जाये मकर राशि पर
एवं शनि पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा – बुद्धिमान ।

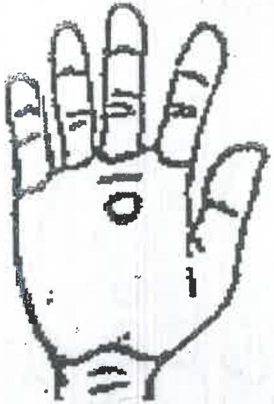

यदि ग्रह शुक्र, मंगल चला जाये मकर राशि पर
एवं शनि पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा – निर्धन व झगडालू ।

यदि **ग्रह** चन्द्र, मंगल चला जाये मकर राशि पर
एवं शनि पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा – लोभी। पैसा जिस का बाप ।

यदि ग्रह सूर्य राहु चला जाये मकर राशि पर
एवं शनि पर्वत पर हो तो

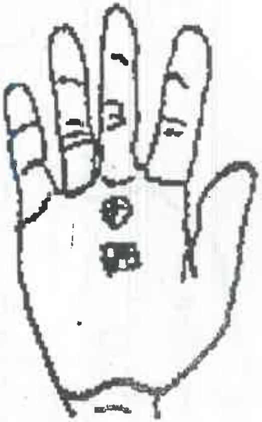

प्रभाव देगा – आयु केवल 22 वर्ष होगी ।

यदि ग्रह सूर्य राहु चला जाये कुम्भ राशि पर
एवं शनि पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा – आयु केवल 22 वर्ष होगी ।

यदि ग्रह शनि, सूर्य, चन्द्र चला जाये
कुम्भ, मेष, वृष राशि पर एवं शनि, मंगल, शुक्र
के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा – उच्च पदासीन, सम्पत्ति सम्पन्न ।

यदि ग्रह चन्द, सूर्य चला जाये कुम्भ, राशि पर
एवं शनि, के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा – आयु केवल ९ वर्ष की ।

यदि ग्रह मंगल, चन्द्र चला जाये कुम्भ, राशि पर
एवं शनि, के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा – वहमी हो ।

यदि ग्रह बुध, शुक्र चला जाये कुम्भ, राशि पर
एवं शनि, के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - प्रिय जनों से बिछड़ा रहे ।

यदि ग्रह राहु, चन्द्र चला जाये कुम्भ,
एवं कायम राशि पर एवं शनि, के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - सिर फट जाये ।

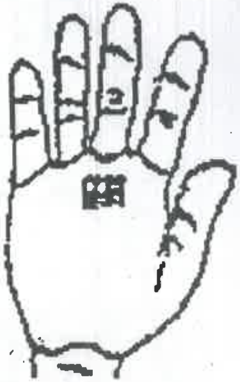

यदि ग्रह चन्द्र, वृहस्पति चला जाये मीन,
राशि पर एवं वृहस्पति, के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - राजा के समान होवे ।

यदि ग्रह सूर्य,चन्द्र,बुध, राहु ,केतु चला जाये मीन,
राशि पर एवं वृहस्पति, के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - पिता डूब मरे ।

यदि ग्रह शनि, चन्द्र चला जाये मीन, राशि पर
एवं वृहस्पति, के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - शस्त्र (हथियार) से मृत्यु हो ।

यदि ग्रह शनि, चन्द्र चला जाये कर्क, मकर
राशि पर एवं चन्द्र, शनि के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - पानी से मृत्यु हो ।

यदि ग्रह वृहस्पति , चन्द्र चला जाये कर्क,
राशि पर एवं चन्द्र के पर्वत पर हो तो

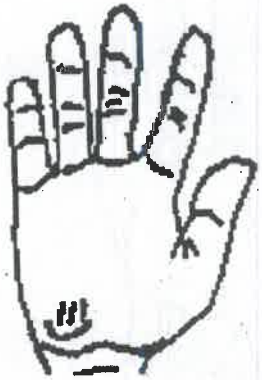

प्रभाव देगा - प्रतापी यशस्वी हो ।

यदि ग्रह बुध, वृहस्पति, सूर्य चला जाये कर्क,
धनु, कायम हो राशि पर एवं चन्द्र वृहस्पत के
पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - राजयोग ।

यदि ग्रह सूर्य, मंगल, मंगल, मंगल चला जाये
कर्क, मेष, वृष, तुला राशि पर एवं चन्द्र ,
मंगल, शुक्र, शुक्र के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - आयु 100 वर्ष हो ।

यदि ग्रह सूर्य, चन्द्र चला जाये कर्क,
राशि पर एवं चन्द्र के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - पूर्ण साँसारिक सुख हो ।

यदि ग्रह सूर्य, मंगल चला जाये कर्क, मकर,
राशि पर एवं चन्द्र , शनि के पर्वत पर **हो** तो

प्रभाव देगा - ऑख से काना होवे ।

यदि ग्रह शनि, मंगल चला जाये कर्क, मकर,
राशि पर एवं चन्द्र , शनि के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - चोरी के कारण सदा **दण्डित हो** ।

यदि ग्रह सूर्य राहु चला जाये सिंह राशि पर एवं सूर्य के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - धन की कमी हो ।

यदि ग्रह चन्द्र, सूर्य, वृहस्पति चला जाये कर्क सिंह, कायम राशि पर एवं चन्द्र, सूर्य के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - प्रतापी यशस्वी हो ।

यदि ग्रह सूर्य चन्द्र चला जाये सिंह
राशि पर एवं सूर्य के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - जीवन भर सुख पाये ।

यदि ग्रह मंगल, चन्द्र चला जाये मकर, सिंह
राशि पर एवं शनि, सूर्य के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - आँख से काना होवे ।

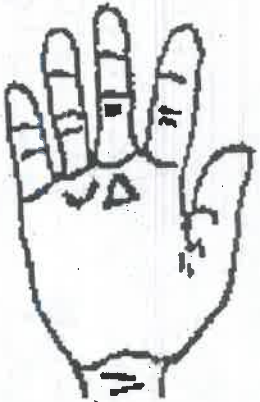

यदि ग्रह वृहस्पति, शुक्र चला जाये सिंह राशि पर एवं सूर्य के पर्वत पर हो तो

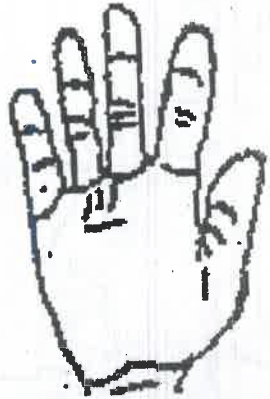

प्रभाव देगा - विद्या द्वारा धन प्राप्ति ।

यदि ग्रह सूर्य, चन्द्र चला जाये मकर या कुम्भ, सिंह राशि पर एवं शनि, सूर्य के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - आयु 12 दिन या 12 वर्ष होवे ।

यदि ग्रह सूर्य, चन्द्र, चन्द्र चला जाये, सिंह, कर्क, कायम राशि पर एवं सूर्य, चन्द्र के पर्वत पर हो तो

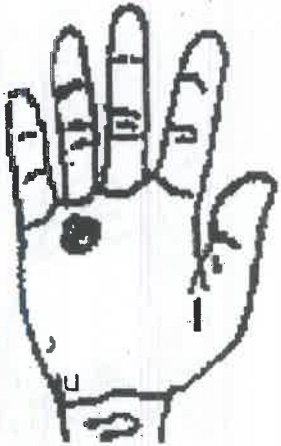

प्रभाव देगा - **राजा के समान हो ।**

यदि ग्रह सूर्य, चन्द्र, राहु , केतु चला जाये
कन्या राशि पर एवं बुध के
पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - प्रिय जन द्वारा हत्या से मारा जाए ।

यदि ग्रह बुध, चन्द्र चला जाये
कन्या राशि पर एवं बुध के
पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - राजा के समान हो ।

यदि ग्रह सूर्य, शनि चला जाये
कन्या, मीन राशि पर एवं बुध, शनि के
पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - स्त्री के बाद एक मरती जाए ।

यदि ग्रह सूर्य, मंगल चला जाये
कन्या, मकर राशि पर एवं बुध, शनि के
पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - पुत्र एक के बाद एक मरते जायें ।

यदि ग्रह बुध, वृहस्पति चला जाये
कन्या, राशि पर एवं बुध के
पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - ईश्वर भक्त हो ।

यदि ग्रह सूर्य, मंगल चला जाये
कन्या, राशि पर एवं बुध के
पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - कृतघ्न हो ।

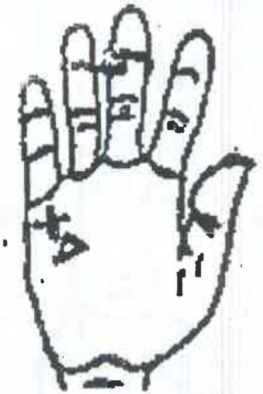

यदि ग्रह चन्द्र, सूर्य, शुक्र शनि चला जाये
मेष, कर्क, सिंह, तुला राशि पर एवं मंगल, चन्द्र
सूर्य, शुक्र के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - नसुंसक होवे या फिर अति डरपोक ।

यदि ग्रह मंगल, शुक्र चला जाय तुला
राशि पर एवं
शुक्र के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - यु[illegible] में निपुण हो ।

यदि ग्रह बुध, शनि [illegible] जाये
तुला, राशि पर एवं
शुक्र के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - कृतघ्न हो ।

यदि ग्रह वृहस्पति, शनि चला जाये
तुला, राशि पर एवं
शुक्र के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - भले काम करने वाला सुकर्मी हो।

यदि ग्रह शुक्र, सूर्य चला जाये
तुला, राशि पर एवं
शुक्र के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - दृष्टि - शक्ति में कमी। पत्नी से झगड़ा करे।

यदि ग्रह वृहस्पति, चन्द्र चला जाये
तुला, राशि पर एवं
शुक्र के पर्वत पर हो तो

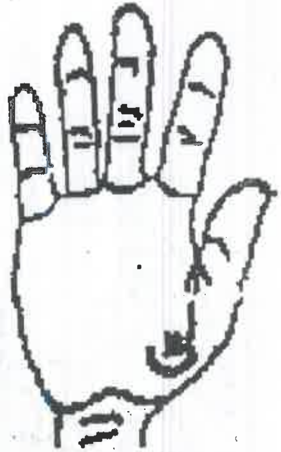

प्रभाव देगा - बचपन में कष्ट हो ।

यदि ग्रह सूर्य चला जाये
मेष या मकर राशि पर एवं
मंगल, शनि के पर्वत पर हो तो

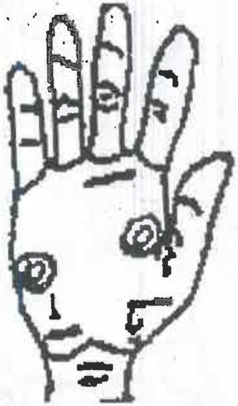

प्रभाव देगा - पिता की मृत्यु हो ।

यदि ग्रह शनि, चन्द्र चला जाये
तुला, राशि पर एवं
शुक्र के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - शस्त्र (हथियार) से मृत्यु हो ।

यदि ग्रह सूर्य,सूर्य,सूर्य, मंगल चला जाये
मीन, कर्क, वृश्चिक, कायम राशि पर एवं
वृहस्पति, चन्द्र, मंगल के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - धैर्य वाला हो ।

यदि ग्रह चन्द्र, शुक्र चला जाये
वृश्चिक राशि पर एवं
मंगल के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा – नसुंसक या कायर हो ।

यदि ग्रह शुक्र, मंगल चला जाये
वृश्चिक राशि पर एवं
मंगल के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा – हर एक की निन्दा करने वाला होवे ।

यदि ग्रह वृहस्पति, बुध, सूर्य चला जाये
धनु, कर्क, कायम राशि पर एवं
वृहस्पति, चन्द्र के पर्वत पर हो तो

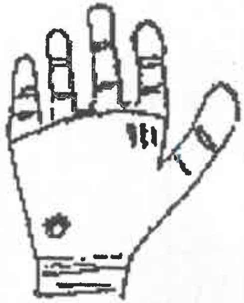

प्रभाव देगा - राजयोग हो ।

यदि ग्रह सूर्य, मंगल चला जाये
धनु राशि पर एवं
वृहस्पति के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - उच्च पद पर आसीन हो ।

यदि ग्रह शुक्र, मंगल चला जाये
धनु राशि पर एवं
वृहस्पति के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - धन प्रचुर से जीवन यात्रा सुखद ।

यदि ग्रह वृहस्पति, शुक्र चला जाये
धनु राशि पर एवं
वृहस्पति के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - सांसारिक सुख सुलभ ।

यदि ग्रह सूर्य, शनि चला जाये
धनु राशि पर एवं
वृहस्पति के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - धनवान परन्तु स्वार्थी ।

यदि सभी ग्रह चला जाये
वृष राशि पर एवं
शुक्र के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - शासक ।

यदि सभी ग्रह चला जाये
मिथुन राशि पर एवं
बुध के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - प्रतापी व यशस्वी होवे ।

यदि सभी **ग्रह** चला जाये
वृश्चिक राशि पर एवं
मंगल के पर्वत पर हो तो

प्रभाव देगा - उच्च पद पर लगा होवे ।

फ़रमान नम्बर - 181

उदाहरण

सामुद्रिक शास्त्र में ग्रहों को प्रकाश के घरों में जलते हुये लैम्प माना गया है और राशियों को उनके लिए जगने या चमकने की सीमा रेखायें या ग्रहों का घर माना है। अवधि (प्रभाव की) से तात्पर्य उस समय का हे कि जब तक वह जगे रह सकें। यह जगने का समय, हर ग्रह का, बिजली के लैम्प के समान इसकी कैंडल-पावर (बत्ती) गन्दमी है। इसके साथ ही यदि वृहस्पति का लैम्प जग पड़े, जिसका रंग पीला है, तो दोनों लैम्पों का प्रकाश जो रंग देगा, वही रंग जीवन में इन ग्रहों के प्रभाव का होगा। अर्थात पीला रंग अब कच्चा पीला न रहकर पक्का पीला होगा। इसी प्रकार से ही सब ग्रहों के लैम्पों के रंगों का आपस में इकट्ठे या अलग-अलग जगने पर होगा। अब एक राशि में जब कोई ग्रह या लैम्प प्रकृति की ओर से जगाया हुआ हो तो इस घर से प्रकाश दूसरे घर में कितने दरजे जायेगा, यह भी सामुद्रिक विद्या में विशिष्ट रूप से निश्चित किया गया है। अर्थात 100 प्रतिशत, 50 प्रतिशत या 25 प्रतिशत। 100 प्रतिश में सारे का सारा प्रकाश दूसरे घर में जायेगा। 50% में आधा व 25% में चौथाई प्रकाश एक घर से दूसरे में जायेगा। इन सब विकल्पों के लिए विद्या शस्त्र में निश्चित नियम है। हर एक घर का प्रभाव क्षेत्र, साँसारिक वस्तुओं के लिये, भी नियत है। उदाहरणतः पहले घर का क्षेत्र, साँसारिक का धन आदि नियत है। इसी प्रकार बारह घरों या ख़ानों का प्रभाव क्षेत्र निश्चित किया गया है।

इसी प्रकार से एक ग्रह का आरम्भ होना लैम्प का जग जाना समझा गया है और अपने समय पर समाप्त होने से आशय इस लैम्प के बुझ जाने से होगा। लैम्प बुझ गया या जलने लगा, मगर ग्रह का घर वही रहा। चाहे इस घर में कोई और भी ग्रह आवे, मकान का स्वामी तो असली स्वामी, घर वाला, ही रहेगा। इस ग्रह के स्वामीपन में कोई बदलाव न होगा। शत्रुता से कोई और इस घर पर अपना स्वामीपन न ठोंस सकेगा।

राशियाँ	खाने हथेली में
1. मेष	1. सूर्य
2. वृष	2. वृहस्पति
3. मिथुन	3. मंगल नेक, बद
4. कर्क	4. चन्द्र
5. सिंह	5. सूर्य (सेहत रेखा)
6. कन्या	6. केतु
7. तुला	7. शुक्र, बुध
8. वृश्चिक	8. मंगल नेक, बद
9. धनु	9. वृहस्पति
10. मकर	10. शनि
11. कुम्भ	11. वृहस्पति
12. मीन	12. राहु, वृहस्पति

****

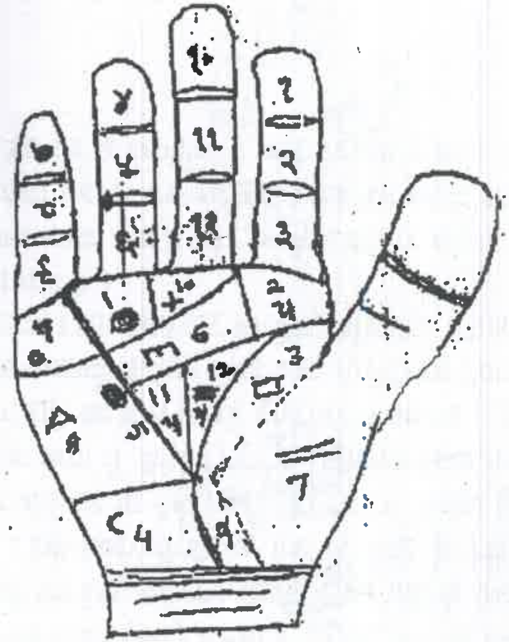

विशेष अन्तर

सामुद्रिक में यदि किसी व्यक्ति के दाँए व बाँए दोनों हाथों में अन्तर हो, दोनों हाथों का हाल बिल्कुल अलग–अलग, देखकर, फिर दोनों के प्रभावों को विचार और मिला करके पूर्ण परिणाम की प्राप्ति होगी ।

व्यक्ति के जीवन में साधारणतः दाँए हाथ का प्रभाव होगा परन्तु बाँए का प्रभाव भी अचानक होगा, जोकि चन्द्रमा की अवधि या दशा में तो अवश्य ही होगा । यही अवस्था शुक्र के ग्रह की भी होगी । नर ग्रह (सूर्य, वृहस्पति व मंगल) का प्रभाव दाँए हाथ का अधिक होगा । बाक़ी ग्रह नपुँसक है यानि वह दोनों ओर दाँए– व बाँए के हिसाब से अपना–अपना प्रभाव दोनों के समय में दे दिया करते है ।

ज्योतिष विद्या के अनुसार बनाई जन्म कुण्डली का प्रभाव देखने की आसान विधि

दी हुई जन्म कुण्डली के जिस ख़ाना में चन्द्र होवे वही राशि इस व्यक्ति की जन्म राशि होगी । इस ख़ाना नम्बर को 1 का अंक देकर बाकी सब ग्रह क्रमानुसार कुण्डली में पूरे कर लें । फिर इस पुस्तक के अनुसार फल देखें ।

हाथ पर देखने के लिये स्मृति–सहायक मुख्य प्रसंग

फरमान नम्बर	क्या करना है ?
119	जन्म तिथि व जन्म दिन प्राप्त करके ग्रह–कुण्डली व रेखा–कुण्डली बनाएँगे
67-70	स्वभाव का साधारण झुकाव हाथ व क़याफा (अंग विद्या) के अनुसार ।
58-97	बचपना, जवानी, बुढाव संक्षेप से ।
122 (110-119)	जन्म के समय माता–पिता की अवस्था ख़ाना नम्बर–9 कुण्डली ।
113	उच्च ग्रह, नीच ग्रह कौन–कौन से है ।
114	नीच (खराब) ग्रहों से बचाव का ढंग ।
57	भाग्य का हाल (विवरण) तिथि के क्रमानुसार । (यदि जन्म तिथि पता हो, नहीं तो सालों की मोटी–मोटी सीमाओं के हिसाब से वर्णन यः वर्ष फल)
108-109	9 ग्रहों व 12 राशियों के हिसाब से हर एक का पूरा व सविस्तार (मोटा–मोटा) हाल ।
118	आर्थिक अवस्था ।
100-क, 100-ख	व्यय, आय, बचंत, ऋण (कर्जा), पैतृक सम्पत्ति, बैंक–हिसाब इत्यादि ।
99	साधारण–जनों (लोगों) से व्यवहार ।
98	निर्धनता–आई चलाई, आराम या हराम की रोज़ी (जीविका) ।
96	खुशी–ग़मी (प्रसन्नता(शुभ)– शोक (अशुभ) घटनायें ।
131	कर्म, धर्म, तीर्थ–यात्रा, नेक व बुरे काम

149	विवाह, विवाह का समय, पत्नियों की सख्याँ, पति–पत्नी के जोड़े का वर्षो में समय व परस्पर सुख, दुःख आदि । पत्नी का रंग, स्वभाव व उनके (दोनों के) ससुराल पर प्रभाव ।
123	सन्तान–सविस्तार ।
163	माता की आयु व पारस्परिक सुख–दुख (हाथ वाले से
169	पिता संबन्धित)
165-167	पिता को माता व माता को पिता का सुख–दुःख ।
155-172	भाई–बन्धु, ताये–चाचे, माँमू, शत्रु, पत्नी–परिवार, ससुराल व मित्र ।
69	पेशा (वृत्ति), कारोबार, नौकरी आदि ।
169	धन सम्पत्ति का सुख, यश–मान आदि ।
146	पोते, पड़पोते ।
140	साधारण यात्रा व आवश्यक यात्रा से वापिसी ।
95	रहने के मकान (घर) का प्रभाव व संख्या ।
141	मकान की नीचे की तह–धरती, खेत, जंगल–पर्वत नदी आदि का संबंध ।
134	विद्या, अनुभव, स्वास्थ्य व रोग ।
181	अचानक होने वाली घटनायें (बाँया हाथ)
126-129	संक्षिप्त जीवन वर्णन (चक्र, शंख, सदफ या सिप्पी) मोटी–मोटी बातें ।
फ़रमान नम्बर	**क्या करना है ?**
113	जीवन में भविष्य में होने वाली घटनाओं की निशानियाँ क्या–क्या हुई । (प्रभाव के लिये)
108	कुल आयु, मृत्यु का बहाना, मृत्यु का दिन, मृत्यु का समय, स्वास्थ्य का हाल । मृत्यु घर में या प्रदेश मे ?

एक व्यक्ति का दाँया हाथ

विवरण :-

(1) हथेली की उत्तर (ऊपर) की चौड़ाई - 3.3 इंच

(2) हथेली की दक्षिण (नीचे) की चौड़ाई - 2 इंच

(3) मध्यमा (अँगुली) की लम्बाई - 2.9 इंच

(4) हथेली की मध्यमा तक लम्बाई - 4.1 इंच

(5) अँगुलियों की पोरियों पर लकीरें -

दाँय हाथ पर - 19

बाँए हाथ पर - 24

जोड़ - 43

(6) चक्र - 1

शंख - 1

सदफ (कान या सिप्पी का आकार) - 8

(7) हस्त-रेखा के अनुसार ग्रहों की स्थिति कुण्डली में :

ग्रह	ख़ाना नम्बर
मंगल	1
चन्द्र	2
केतु	3
राहु	7
वृहस्पति, शनि	10
सूर्य बुध शुक्र	12

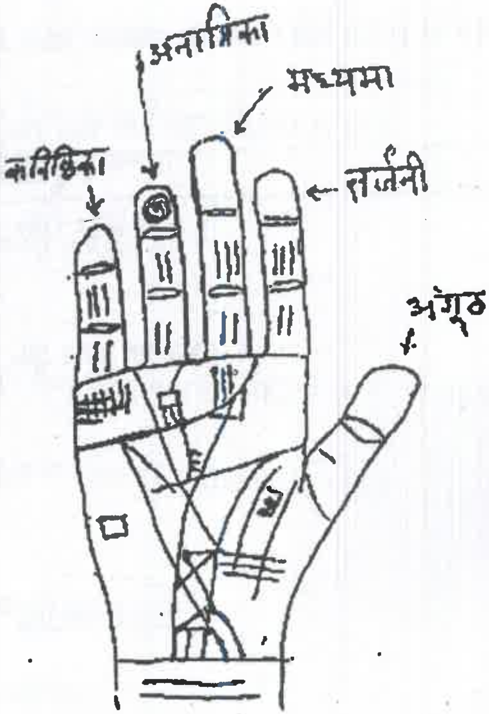

(8) जन्म तिथि - 19 पौष वि सं० 1959 तदुनुसार जनवरी ई० सं० 1902, दिन वीरवार

(9) हाथ देखने का दिन - 23 माघ वि० सं० 1995, अर्थात 37 वाँ वर्ष आरम्भ हुआ ।

(10क) एक पण्डित जी की बनाई (टिपड़े से) कुण्डली (व्यक्ति के पास थी) ।

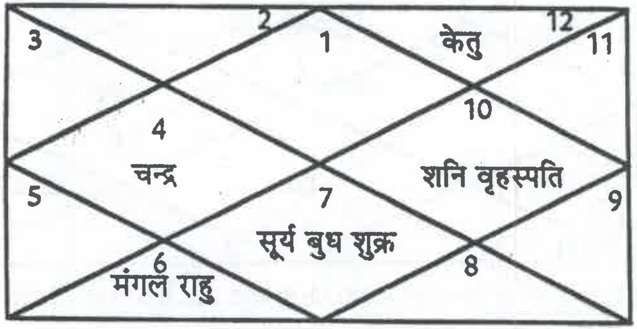

यदि चन्द्र वाले ख़ाने का ख़ाना नम्बर 1 माने और क्रमानुसार ख़ाना नम्बर व ग्रह लिखें तो नीचे वाली कुण्डली बनती है ।

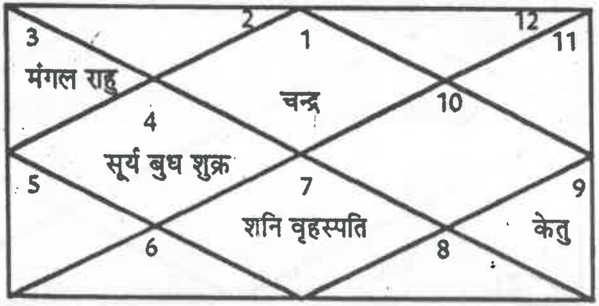

(ख) दूसरे पण्डित जी की बनाई (टिपड़े से प्राप्त) कुण्डली ।

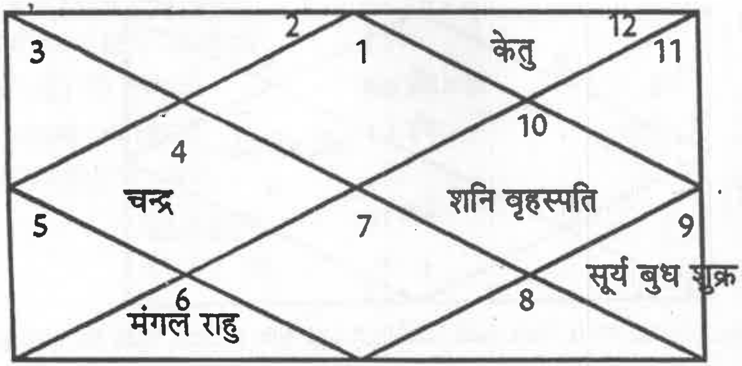

यदि चन्द्र वाले ख़ाने को ख़ाना नम्बर एक मानें और क्रमानुसार ख़ाना नम्बर व ग्रह लिखें तो निम्नलिखित कुण्डली बनती है ।

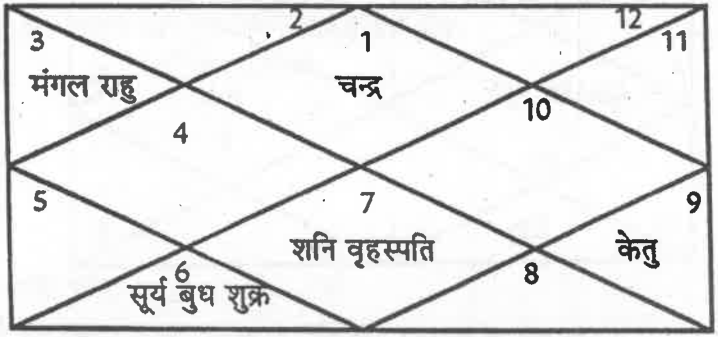

(11क) अब हस्त-रेखा (हथेली) से बनाई ग्रह कुण्डली नीचे देते है। लाल किताब के अनुसार।

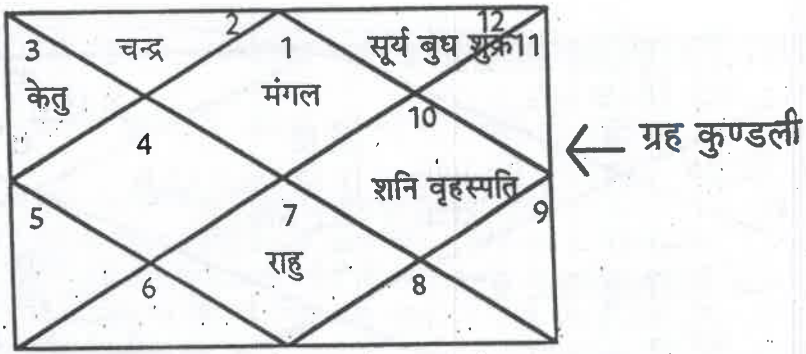

(11ख) अब हस्त–रेखा (हथेली) से बनाई रेखा–कुण्डली नीचे देते है।
लाल किताब के अनुसार।
अंगूठे का झुकाव बाहर को है

रेखा–कुण्डली

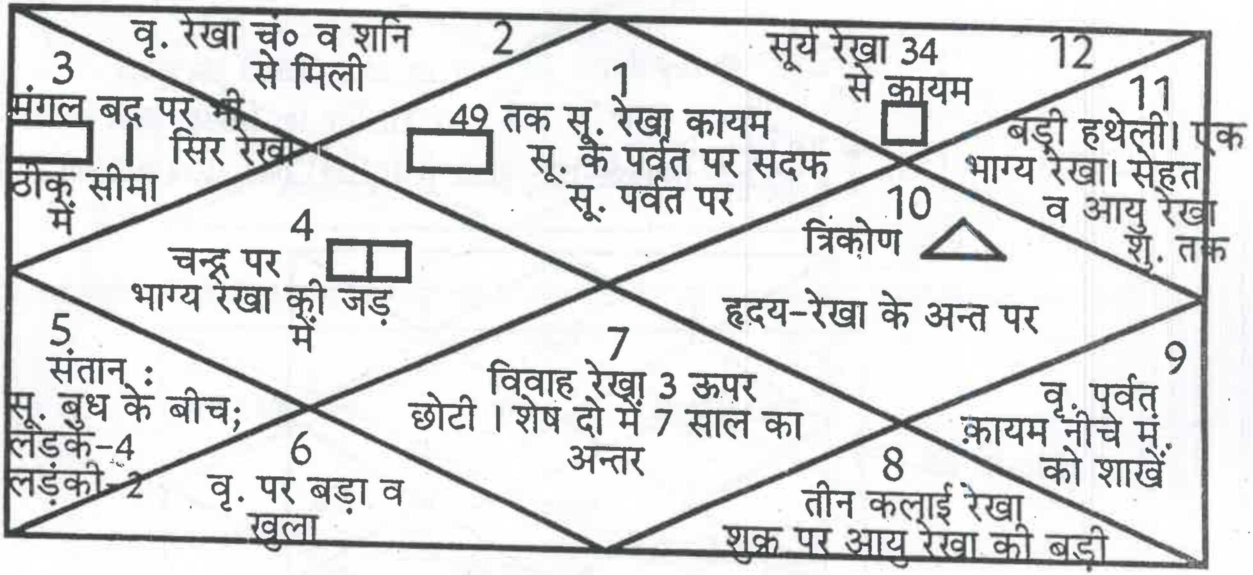
1
49 तक सू. रेखा कायम
सू. के पर्वत पर सदफ
सू. पर्वत पर
2
वृ. रेखा चं० व शनि
से मिली
3
मंगल बद पर भी
सिर रेखा
ठीक सीमा
में
4
चन्द्र पर
भाग्य रेखा की जड़
में
5
संतान :
सू. बुध के बीच;
लड़के–4
लड़की–2
6
वृ. पर बड़ा व
खुला
7
विवाह रेखा 3 ऊपर
छोटी । शेष दो में 7 साल का
अन्तर
8
तीन कलाई रेखा
शुक्र पर आयु रेखा की बड़ी
9
वृ. पर्वत
क़ायम नीचे मं.
को शाखें
10
त्रिकोण
हृदय–रेखा के अन्त पर
11
बड़ी हथेली। एक
भाग्य रेखा। सेहत
व आयु रेखा
शु. तक
12
सूर्य रेखा 34
से क़ायम

ग्रह-कुण्डली किस प्रकार बनाई गई

कुण्डली का ख़ाना नम्बर	ग्रह का नाम लिखने का कारण	फ़रमान नम्बर
1	सूर्य के पर्वत पर चौकोर □ है जो मंगल का चिन्ह है और सूर्य के पर्वत को ख़ाना नम्बर एक दिया गया है ।	119 (ई)
2	चन्द्र के पर्वत से रेखा सीधी वृहस्पति के पर्वत पर चली गई है। इस पर्वत को ख़ाना नम्बर 2 दिया गया है ।	119 (सी)
3	केतु का चिन्ह ⊔⊔ मंगल नेक पर स्थित है जिसे ख़ाना नम्बर 3 मिला हुआ है ।	119 (जे)
7	राहु का चिन्ह ⊞ शुक्र के पर्वत पर स्थित है जिसे ख़ाना नम्बर 7 दिया गया है । तर्जनी और	
10	मध्यमा अँगुली के नीचे शनि और वृहस्पति के पर्वतों को मिलाने वाली दो-शाखी विद्यमान है अर्थात वृहस्पति शनि के पर्वत पर स्थित है जिसे ख़ाना नम्बर 10 दिया गया है और शनि रेखा से शनि स्वयं अपने घर ख़ाना न० 10 पर हुआ ।	119 (जे) 119 (एच) 119 (ए)
12	सूर्य के पर्वत और बुध के पर्वत से सूर्य और बुध की अलग-अलग रेखायें खर्च के ख़ाना न० 12 में चली गई है ।	119 (जी)
	रेखा कुण्डली वर्षो के हिसाब से हालात जानने के लिये हाथ की रेखाओं से पूर्ण की है । अब इन ग्रहों के प्रभाव देखने के लिये सहायक बातें लिखते है	
1.7	इन घरों के ग्रह एक दूसरे को 100% दृष्टि से देखते है । मंगल के साथ बैठा हुआ राहु चुप रहता है और मंगल-बद के	108

ग्रह फल विवरण

पर्वत पर जिसे खाना नम्बर 8 दिया गया है, भी चौकोर □ स्थित है। इसलिये खाना नम्बर 1, 7, के प्रभाव के लिये मंगल शुभ प्रभाव कारी है। मंगल के बल के कारण राहु चाहे चुप रहेगा परन्तु मंगल से दूर बैठा होने के कारण अँदरुनी रुप से कुछ न कुछ अशुभ प्रभाव अवश्य करेगा।

मंगल के प्रभाव की सारी अवधि (28 साल) तक स्त्री की दृष्टि व स्त्री सुख पर अवश्य बुरा प्रभाव करेगा। मंगल के प्रभाव के समय के पश्चात् 14 वर्ष तक राहु व मंगल दोनो इकट्ठे प्रभाव करेंगे। राहु के प्रभाव की कुल अवधि 42 साल होती है और मंगल की कुल अवधि 28 साल है। अतः एक ही समय में आरम्भ होने पर राहु 14 साल बाद तक अकेला ही होगा। परन्तु शुक्र व बुध के साँझे घर खाना नं0 7 और सूर्य का घर खाना नम्बर 1 पर अकेले राहु का प्रभाव होगा। मगर वह तीनों ही इकट्ठे उठकर खाना नम्बर 12 में बैठे हुये हैं। यानि राहु जुदा एक और शुक्र के आतिथ्य स्वीकार किये है। और शुक्र अपने मित्र बुध को साथ ले कर सूर्य के साथ राहु के घर चला गया है। इसलिये न राहु शुक्र का कुछ बिगाड़ सकता है और न ही शुक्र राहु को हानि कर सकता है। केवल एक दूसरे के घरों के भवनों को खराब कर सकते है।

खाना नं. 2,12 (फरमान 108, 113,)

खाना नं. नम्बर 2,12 आपस में 25 प्रतिशत की दृष्टि से देखते हैं। चन्द्र खाना नं. 2 में उच्च होता है। सूर्य और बुध परस्पर मित्र हैं परन्तु सूर्य व शुक्र आपस में शत्रु हैं। और दूर बैठा हुआ चन्द्र, शुक्र और बुध, दोनों से शत्रुता करने वाला है। इस सूर्य व चन्द्र तो शुक्र का फल खराब कर लेंगे और बुध का फल चन्द्र से खराब होगा परन्तु चन्द्र और सूर्य का फल उत्तम होगा। सूर्य के साथ बैठे हुये बुध अपने प्रभाव की आधी अवधि तक अर्थात् 17 साल चुप रहता हैं और पश्चात् 17 साल अकेला नेक फल देता है।

खाना नं: 10 (फरमान नं. 110, 132 ए)

खाना नम्बर 10: शनि व वृहस्पति इकटठे हैं। इस अवस्था में दोनों का अपने अपने पर शनि का बुरा फल होगा। वृहस्पत भी शत्रु या पापी ग्रह के साथ अपना आधा समय यानि 8 साल अवश्य शुभ फल देता है। इन ग्रहों का सम्बंध पिता से है।

खाना नम्बर 10: शनि व वृहस्पति इकटठे हैं। इस अवस्था में दोनों का अपने अपने पर शनि का बुरा फल होगा। वृहस्पत भी शत्रु या पापी ग्रह के साथ अपना आधा समय यानि 8 साल अवश्य शुभ फल देता है। इन ग्रहों का सम्बंध पिता से है।

खाना : नं. 3 (फरमान नं. 118,109)

खाना नं: 3 केतु मंगल के घर पड़ा है जोमंगल का शत्रु है। लेकिन मंगल अपने घर से उठ कर सूर्य के घर खाना नम्बर 1 में चला गया है।

मंगल के साथ सूर्य हो तो मंगल का फल सदा ही मंगल – नेक का होगा और सूर्य भी मंगल के साथ उच्च होता है।

संक्षेपत. प्रत्येक ग्रह का फल निम्न –वर्णित होगा

वृहस्पति

इस ग्रह की पूरी अवधि 16 साल होती है। इस में से पहला 8 वर्ष का समय सदैव शुभ फल का होता है । अत: पहले 8 वर्ष के पश्चात् वृहस्पति का फल शनि द्वारा खराब किया जायेगा। कारण, वृहस्पति तो किसी से शत्रुता नहीं करता परन्तु पापी ग्रह बुरा प्रभाव कर दिया करते हैं। लेकिन वह भी उस समय जब वह वृहस्पति के घर या खाना नं. 2 पर आ जायें। लेकिन जब वृहस्पति पापी ग्रह के घर पर जावे तो वृहस्पति तो अपना शुभ फल ही रखेगा। पापी ग्रह वह ग्रह जिस के घर में जाकर वृहस्पति बैठता है चाहे जैसा अपना फल देवे। अब क्यूँकि शनि अपने घर (खाना नं0 10) में बैठा है और वृहस्पति उस के घर आया है इसलिये वृहस्पति तो अपनी सारी अवधि में शुभ फल देगा। और शनि बुरा फल देगा। यह बुरा फल शनि की अवधि के पश्चात् हो सकता है । अर्थात् शनि की अवधि के 36 वर्षो में से पहले 16 वर्ष (वृहस्पति का फ़ल) छोड़ कर बाकी 20 साल का समय अकेले शनि का होगा।

फरमान 113 ए.

प्रत्येक ग्रह अपनी अवधि के आधे और एक चौथाई समय में अपना प्रभाव प्रकट कर दिया करता है। इस प्रकार से शनि अपने 36 साल के आधे (18 साल) में अपना बुरा प्रभाव प्रकट कर देगा, जबकि वृहस्पति पहले ही समाप्त हो चुका है। शनि का वृहस्पति के साथ

बुरा फल तब ही हो सकता है जबकि वृहस्पति इस के साथ चल रहा हो। और वृहस्पति था 16 साल तक। इसलिये शनि का दुषप्रभाव वृहस्पति के पहले 8 साल के बाद 16 साल तक ही हो सकता है।

फरमान 108

सूर्य

इस ग्रह का अपना सारा समय सूर्य के स्वयं के लिये तो उत्तम फल वाला ही होगा लेकिन यह ग्रह अपने साथी शुक्र के फल का सारा समय नीच व खराब फल वाला करेगा। और चन्द्र भी 25 प्रतिशत अपनी बुरी दृष्टि शुक्र पर करता रहेगा परन्तु सूर्य को चन्द्र 25 प्रतिशत सहायता देगा।

फरमान 109

चन्द्र

इस ग्रह से कोई ग्रह शत्रुता नहीं करता। यह स्वयं ही दूसरे ग्रहों से शत्रुता करे तो बेशक करे। इसलिये इस ग्रह का अपना फल तो वृहस्पति के घर बैठे हुये उच्च होगा। मगर यह स्वयं शुक्र व बुध दोनों से ही शत्रुता करता जायेगा।

फरमान नं: 21

शुक्र

सूर्य का समय 23 साल होता है। चन्द्र का 24 साल। यह दोनों ही शुक्र के शत्रु हैं। शुक्र का समय 25 साल है। सूर्य और शुक्र इकट्ठे बैठे होने के कारण दोनों के प्रभाव की 25 प्रतिशत बुरी दृष्टि भी 24 साल में जा कर हटी। अब शुक्र का समय केवल एक साल बाकी रहा। उधर शुक्र के घर खाना नं0 7 को राहु भी खराब कर रहा है और शुक्र स्वयं उस के घर खाना नं0 12 में बैठा हुआ है। इस का मित्र बुध बेशक इस के साथ है पर वह अपने मित्र सूर्य के आधे समय (17 साल) तक चुप है। न बुध शुक्र से बिगाड़ता है न सूर्य से। 18 साल के पश्चात् शुक्र की सहायता आरम्भ कर सकता है। मगर बुध की अवधि 34 साल में आरम्भ होती है। इसलिये शुक्र का पहला

समय 25 साल सारे का सारा खराब हो गया। बुध की सहायता या बुध की उच्च अवस्था से शुक्र केवल कन्याओं का जन्म देता है। इसलिये शुक्र अपने पहले दौरे में सहायता न दे सकेगा।

चाहे चन्द्र और शुक्र की शत्रुता हुई तो भी दूसरे चक्कर में शुक्र जो मीन राशि खाना नं0 12 में उच्च होता है, अपने समय से उच्च अथवा शुभ फल देगा।

मंगल नेक

28 साल तक राहु की आन्तरिक पापी चाल के कारण संतान, भाई-बन्धु और आँख की दृष्टि पर अवश्य बुरा प्रभाव होगा। बाकी बातों में मंगल का प्रभाव शुभ ही होगा।

मंगल बद

इस पापी ग्रह का मुँह खाना नम्बर 8 (मंगल-बद का घर) में बैठी चौकोर ने पहले ही बँद कर दिया है। इस लिये यह ग्रह इस कुण्डली में किसी स्थान पर भी बुरा प्रभाव न करेगा। यह ग्रह सामुद्रिक विद्या में केवल सूर्य की खराब हालत देखने के लिये रखा गया है। जब सूर्य नीच होवे या जब सूर्य मंगल के साथ न होवे तो मंगल को मंगल बद कह देते हैं। एक समय में केवल एक ही नाम होगा। चाहे मंगल-नेक चाहे मंगल बद। यदि **हाथ** में त्रिकोण एक दम जुदा ही पाई जाये तो बेशक यह ग्रह एक जुदा ग्रह गिना जायेगा।

फरमान 11

बुध

इस ग्रह का समय 34 साल होता है। यह अपने साथी शुक्र जिस की अवधि 25 साल है और सूर्य जिस की अवधि 22 साल है, दोनों की सहायता करेगा परन्तु चन्द्र की 25 प्रतिशत बुरी दृष्टि चन्द्र की अवधि 24 साल तक इस ग्रह के निजी प्रभाव के लिये बुरी ही होगी। यह चन्द्र से शत्रुता न करेगा।

शनि

इस कुण्डली के हिसाब से यह वृहस्पति के प्रभाव को खराब करेगा। परन्तु अन्य कोई ग्रह इसके अपने प्रभाव को प्रभावित करने के लिये खाना नं0 4 में विद्यमान है।

राहु

(क) यह मस्त हाथी मंगल (क्षत्रिय ग्रह) की तलवार (अंकुश) के दवाब से प्रकटतः में तो चुप रहेगा परन्तु दूर खड़ा होने के कारण मंगल से शत्रुता करेगा। (मंगल व राहु इकट्ठे बैठे हों तो सिर पर तलवार या अंकुश होने से हाथी चुप रहेगा।) जब तलवार या अंकुश हाथी से दूर और उसकी 100 प्रतिशत दृष्टि सामने होवे तो मस्त हाथी तलवार को खराब करने का यत्न करेगा।

(ख) शुक्र के घर खड़ा होने के कारण शुक्र के भवन (इमारत) को खराब करेगा मगर शुक्र का कुछ बिगाड़ नहीं सकता जो राहु के घर खाना नम्बर 12 में है।

केतु

इस पापी ग्रह से बचने के लिए मंगल अपने घर से पहले ही उठ कर खाना नम्बर 1 में चला गया है। इसलिये केतु केवल मंगल के मकान को ही खराब कर सकता है। भाई बन्धु को खराब नहीं सकता। यह ग्रह खाना नम्बर 11 को 50 प्रतिशत दृष्टि से देखता है जो कि खाली है। इसलिये यह कभी वृहस्पति के खाना नम्बर 11 (भाग्य,लाभ, आयु) पर धब्बा मारता चला जायेगा।

खाना नं: 4

यह चन्द्र का घर है। इस घर को खाना नं: 10 के ग्रह 100 प्रतिशत दृष्टि से देखते हैं। खाना नम्बर 10 का वृहस्पति शुभ दृष्टि रखेगा परन्तु शनि चन्द्र के घर की दीवारों पर स्याही पोत कर चला जायेगा।

खाना नम्बर 11: इस घर में केतु ही अपनी टाँग फँसा सकता है।

खाना नम्बर 6 से खाना नम्बर 2 में बैठा चन्द्र 25 प्रतिशत दृष्टि से देखता है। केतु का घर चन्द्र के लिए चाँद-ग्रहण होता है। अब चन्द्र केतु पर 25 प्रतिशत दृष्टि करने के कारण (केतु के 48 वर्ष के समय का एक-चौथाई) 12 वर्ष के उपरान्त चाँद - ग्रहण में होगा। चन्द्र का संबंध धरती व माता से है।

खाना नं: 5 व खाना नं: 9 दोनों खाली हैं! इन का प्रभाव संतान, कर्म,धर्म दूसरे ग्रहों से लेंगे।

खाना नं: 8 : (मृत्यु का घर) इस घर को खाना नम्बर 12 के ग्रह 25 प्रतिशत दृष्टि से देखते हैं। यह घर शनि व मंगल-बद है। इस कुण्डली में मंगल-बद तो है ही नहीं। शेष रहा शनि और खाना नम्बर 12 के ग्रह जिन में से शनि शुक्र व बुध का मित्र है। बाकी रहा सूर्य जिस का शत्रु शनि है। अब दोनों की आपसी तुलना में सूर्य अधिक बलवान होगा। इसलिये मृत्यु का वर्ष चन्द्र की राशि और मृत्यु का दिन सूर्य का दिन या रविवार होगा, जबकि केतु का समय समाप्त हो चुका होगा।

कुण्डली से जीवन वृतान्त

फरमान नं: 122

14 व 122 अन्तिम भाग

ग्रह-कुण्डली और जन्म की रेखा कुण्डली को मिलाकर पढ़ने से प्रतीत होता है कि ऐसे हाथ वाला व्यक्ति क्षात्र, सैनिक स्वभाव का और शाही धन, जो क्षात्र-वृत्ति से अर्जित हुआ है, द्वारा पालित पोषित है। ऐसी वृत्ति ही अब भी इस का धन का स्त्रोत है जिस से यह व्यक्ति राजा वा राजाओं के से ठाठ-बाठ वाला होगा। इस व्यक्ति को शासन और धन एकत्रित करने का अवसर व समय बहुत मिलेगा। संसार में चमकते चाँद के सामन छवि वाला व जंगल में मंगल करने वाला होगा। इस में तनिक भी संदेह नहीं कि वह अकेला ही अपने भाग्य को चमकाने वाला होगा। शत्रु पीठ-पीछे शत्रुता कर सकते हैं परन्तु उच्च चन्द्र के सम्मुख आकर तत्काल ही चुप होंगे। गुप्त रुप से शत्रुता करने वाले लोग इस की तलवार के सामने आ कर, मस्त हाथी के समान अंकुश के भय से, धरती पर गिरे धन के सिक्के (पैसे) को उठा कर देने का काम करेंगे। शत्रु भी अपनी शत्रुता तो करते आयेंगे, परन्तु ऐसा व्यक्ति दैवी सहायता के कारण बचता चला जायेगा।

और दैवी सहायता सदा ही इस के साथ रहेगी। व्यक्ति का रंग गोरा होगा जिस में मंगल का लाल रंग चमकता होगा। अर्थात् शरीर का रंग ऐसा होगा मानों कि सफेद रंग का चाँदी का टुकड़ा लाल रंग के कागज पर धरा हो।

फरमान नं: 157 (*ll*)

निष्पक्ष स्वभाव वाला मानसिक शाँति वाला होगा। लेखक एवं तलवार का धनी, युद्ध की चालों में निपुण और बुद्धिमान होगा। वाणी व शरीर के रोग न होंगे परन्तु 13–14 वर्ष की आयु के लगभग आँखों या दृष्टि का रोग और 28 वर्ष की आयु के लगभग नजर में कमी होगी पर आँख खराब न होगी। अर्थात् ऐनक आदि की आवश्यकता राहु की गुप्त शत्रुता का चिन्ह होगी। पापी ग्रह शनि के प्रभाव से मदिरा का प्रयोग वृहस्पति के प्रभाव में बाधा डालने का कारण होगा और मंगल के उज्ज्वल लाल रंग में स्याही (कालिमा) की झलक देगा।

फरमान नं: 113

कुत्ता रखने, पालने का शौक होगा, परन्तु कुत्ता रंग–बिरंगा होगा और लाल रंग उस के शरीर पर होगा। भाईयों से कष्ट प्राप्त हो, तो उस का कारण उन का रोग, चाहे आर्थिक स्थिति की दुर्बलता या फिर कोई और कारण हो। रिशतेदारों, भाई–बन्धुओं, स्त्री, मित्रों आदि की सहायता, संतान आदि पर पाप भी कष्ट के कारण होंगे क्योंकि खाना नं: 3 की 50 प्रतिशत दृष्टि खाना नम्बर 11 पर भी है। पर इस ग्रह का निजी बुरा प्रभाव हाथ वाले पर न होगा। केवल संबंधित व्यक्तियों के दुख इस के धन, लाभ आदि को धूमिल करेंगे। ग्रह का प्रभाव 48 वर्ष तक होता रहेगा। इस पापी ग्रह के पास इस से संबंधित व्यक्तियों पर मान करेगा। परन्तु राहु की संबंधित वस्तुओं के (हाथी जैसे काले) व नीले रंग मंगल से उत्पन्न निष्पक्षता व न्याय प्रियता में विष के समान होंगे। शनि जो बिलकुल पास (वृहस्पति के) बैठा है अपनी काले रंग की वस्तुओं से पानी में काले रंग की मछली के दृश्य के समान होगा। अर्थात् बिलकुल साथ मिली हुई काले रंग की वस्तु, काले रंग का व्यक्ति जब बिलकुल साथ ही होगा या अपने घर ही आयेगा तो हानि का कारण होगा। संक्षेप्तः सफेद रंग (दही, शुक्र का रंग) केतु से बचने के लिये शुभ होगा। यह भाई –बन्धु के दुख हटाने में सहायक होगा। पानी या दूध के सफेद रंग की वस्तुयें अपनी निजी कमाई की शुभता को बढ़ाने वाली होगी। खाना नं: 11 शुभ होगा। दाएँ हाथ पर अँगूठी में नीलम राहु (42 वर्ष आयु तक) की गुप्त शत्रुता के प्रभाव से बचायेगा। मदिरा–पान व स्त्रियों आदि में रुचि से दूर रहने पर वृहस्पति का उत्तम प्रभाव होगा। मंगल नेक का उत्तम फल गंदमी रंग की चीजें जो सूर्य का रंग है, पैदा करेंगी। सूर्य की उपासना या मित्रता राज दरबार में उत्तम फल देगी। यानि खाना नम्बर 12 में उत्तम फल देगी। घर में दूध की विद्यमानता में चन्द्र भी शुक्र को क्षमा करता रहेगा। उच्च चन्द्र का चिन्ह मकान बनाने के लिए मीन खरीदने के दिन से

पता लगेगा। जिस से यह जाना जायेगा कि अब चन्द्र शुक्र से शत्रुता न करेगा। बुध से चन्द्र के शत्रुता छोड़ने का जमाना 34 वर्ष की आयु से पूरी तसल्ली का होगा। बुध वैसे तो 24 साल से अपने को चन्द्र से बचाएगा परन्तु 34 साल में वह अपना पूर्ण शुभ फल देगा। शनि 36 वर्ष के बादयानि 37 वें वर्ष से शुभ फल देगा। वैसे तो वह 16 वर्ष आयु के उपरान्त वृहस्पति को क्षमा कर चुका है। इस कुण्डली में शुक्र (दूसरी बार) चन्द्र, सूर्य व मंगल उत्तम हैं। बुध वाणिज्य व व्यापार का नाश करता है क्योंकि खाना नम्बर 12 में है।

इस ग्रह का उपाय दुर्गा–पाठ, तोते को चुरी, सफेद कबुतर को मुंगी बुध के दिन– शुभ फल देंगे। नष्ट होने वाला धन शुक्र (स्त्री) के काम आयेगा 34 वर्ष के बाद बुध सूर्य का उत्तम फल आरम्भ होगा। 36 वर्ष के बाद शनि भी सहायता करेगा। 42 वर्ष के बाद राहू मदद करेगा। 48 वर्ष के बाद केतु शुभ होगा।

फरमान नं: 114

बंदो, रिश्तेदारों, ताए, चाचे, और जात खानदान, यार–दोस्तो की मदद, औलाद, इत्यादि खाना नं: 2 के सब असरों में, जिस का असर खाना नं: 11 पर भी 50 प्रतिशत हो, खराबी का कारण हुआ करेगा। इस ग्रह का अपनी जात पर कभी बुरा असर न होगा। सिर्फ संबंधित दुनिया में दूसरों की तरफ का दुख उसके लाभ किस्मत एवं उमर पर धब्बा देगा। यह ग्रह 48 साल तक असर करता चला जाएगा। इस पापी ग्रह का पाप इसके संबंधित साथियों पर मार करेगा। मगर राहु (काले रंग के हाथी के रंग से मिलती हुई, या नीली चीजें) अन्दुरुनी तौर पर इसी मंगल के दूसरे असर, नजर और स्वाभाविक तौर पर जहर का चिन्ह होंगे। शनि, जो वृ0 के बिलकुल साथ बैठा है, अपनी काले रंग की चीजों से पानीमें काले रंग वाली मछली पर प्रभावशाली रहेगा। अथवा साथ मिली हुई काले रंग वाली चीज या काले रंग का आदमी जब बिलकुल साथ होगा या अपने घर में ही आएगा तो नुकसान का कारण होगा। और सोना मुंह काला करने का कारण बनेगा। संक्षेप में सफेद रंग (वही शुक्र का रंग, केतु से बचने के लिए भाई बन्धुओं के दुख को हटाएगा) दूध या पानी जैसी सफेद रंग की चीजे खुद अपनी कमाई में बरकत दें। चन्द्रमा और वृहस्पति के घर का असर, दौलत व इज्जत खाना नं0 2 एवं किस्मत उमर और दूसरे शब्दों के लिए खाना नं0 11 शुभ होगा। दायें हाथ पर अंगूठी में नीलम (42 साल उमर तक) राहु की गैंबी और छुपी हुई दुश्मनी से बचाएगा। शराब और आँख होशियारी से दूर रहने पर वृहस्पति का उत्तम फल होगा । मंगल ग्रह नेकी का उत्तम फल गंदम रंग की चीजें जो सूर्य का रंग है पैदा करेगा। सूर्य की उपासना दोस्ती से राजदरबार में उत्तम फल देगी और सूर्य जो शुक्र को नीच करता है तमाम गृहस्थी औरत, व धन–दौलत एवं आराम बुरी तरफ का खर्चा (खाना नं: 12) का उत्तम फल साबित होगा। घर में दूध की मौजूदगी में चन्द्र भी शुक्र हो माफ करता

रहेगा। चन्द्रमा की उँचाई की निशानी मकान के लिए अथवा जमीन खरीदने के दिन से होगी। जिससे मालूम होगा कि अब के बाद चन्द्र की दुश्मनी का छोड़ने का जमाना 34 साल की उमर तक पूरी तसल्ली का होगा। बुध ग्रह वैसे तो 24 साल से अपने आप को चन्द्रमा से बचा लेगा परन्तु 34 साल में वह अपना (बुध) पूरा नेक असर देगा। शनि 36 साल से बाद यानि 37वें वर्ष से लेकर असर देगा। वैसे तो 16 साल के बाद वृहस्पति को क्षमा कर चुका है इस कुण्डली में शुक्र, चन्द्र सूर्य, मंगल उत्तम हैं। (दौलत का सुख एवं खर्च) बुध व्यापार को नाश करता है क्योंकि वह खाना नं: 12 में हैं।

फरमान 114

इस ग्रह का उपाय दुर्गा पाठ, तोते को चुरी, सफेद कबूतर को बुध के दिन मूंगी की दाल देना शुभ होगा। और जाया होने वाली दौलत शुक्र के काम आएगी। 34 साल के बाद बुध, सूर्य का उत्तम फल शुरु होगा। 36 साल के बाद शनि भी मदद करेगा। 42 साल के बाद राहु मदद करेगा। 48 साल के बाद केतु शुभ होगा।

फरमान नं: 115

शुक्र जब उच्च का होगा, अपनी मियाद 25 साल की बजाय 34 साल तक के दिन से सूर्य रौशन होगा (दरअसल सूर्य का वक्त बच्चे के माता के पेट में और 22 साल तक रौशन रहेगा) मीन की खरीदारी की तारीख से चन्द्रमा उच्च का 24 साल तक रहेगा। मकान के बनने के दिन से 36 साल तक शनि काले रंग के कुत्ते की मौत से या कोई दिन से, 42 या 43 दिन से राहु उत्तम होगा। और इसी तरह से दो-रंगी चीज एवं रंग बिरंग कुत्ता (जो लाल रंग का ना हो) के चले जाने के वक्त से, केतु 48 या 49 से उतने साल ही उत्तम होगा। कमाई में हराम का पैसा प्राप्त ना होगा। सादा जीवन, साधु सेवा और न्यायप्रिय स्वाभाव से किए हुए काम, सफेदपोशी बुजुर्गो की सेवा, रविवार या सोमवार को शुरु किए हुए काम, खुद अपनी जात के लिए निहायत शुभ होंगे और सूर्य के रास्ते गंदम रंग से हर तरह की शांति प्राप्त होगी।

मोटी मोटी बातें

बचपन निहायत शानदार था। जवानी (34 साल में आराम देगी बुढ़ापा निहायत तसल्लीबख्श होगा।)

13-14 साल के करीब माता का सुख नाश होगा ।

15-16 साल के करीब पिता का सुख नाश होगा।

माता पिता उसकी इस्त्री का सुख ना देख सकेंगे।

18 साल के करीब नौकरी शुरु करें ।

21 साल के करीब शादी हो।

28 साल का इस्त्री का सुख और औलाद की प्राप्ति न हो। सब परिश्रम बेकार जाएँ।

फरमान 149

24 –26 साल के करीब पैदा हुई लड़की बुध के वक्त का प्रमाण दे।

34–35 साल की उमर में पैदा हुआ लड़का बुध, सूर्य का उत्तम फल देगा। (तरक्की)

30–31 के करीब औरत शुक्र उच्च का फल देगी (दूसरी शादी)

37–39 के करीब मकान, शनि उच्च का फल देगी (तरक्की होगी)

33 साल में बिल्कुल बनने के लिए तैयार, मगर बंद हुआ और उसी दिन से 49 साल तक सूर्य राजदरबार से संबंधित होगा। 51 साल की उमर के करीब लड़के को नौकरी मिलेगी। उसके पश्चात् सन्यास अथवा परोपकारी जीवन होगा।

कुल उमर 93 साल होगी।

विभिन्न घटनायें

34 साल से पहले की उमर तक सिर्फ माया का राख होगा। जो कमाया दूसरों पर लगाया या किसी दूसरी तरफ से लग लगा गया।

फरमान नं: 166 (2)

34 से 42 तक आये अच्छी हो परन्तु मकान शादी इत्यादि गृहस्थ के नेक कामों में लगेगी। 43 से 51 तक इतना ही पैसा फिर जमा हो जाएगा जितना पहले खर्च किया था, कर्जा कभी ना होगा ।

3 रुपये की जरुरत पढ़ने पर 2 रुपये मिल जाऐंगे परन्तु इससे आय का कोई संबंध नहीं ।

फरमान नं: 123 (2)

औलाद कुल चार लड़के और दो लड़कियाँ आखिरी दम तक कायम होंगे। औलाद नेक होगी और सुख देने वाली होगी। पहली औरत की लड़की और दूसरी औरत का पहला लड़का किस्मत में मदद देंगे।

सफर

चन्द्रमा, सूर्य के संबंध से सफर तो अवश्य होगा लेकिन दूसरे मृतक का ना होगा। सफर का परिणाम हमेशा नेक होगा

भाई बन्धु

भाई 42 साल की उमर से अच्छी हालत   में होगा। मगर इस हाथ वाले व्यक्ति को अपने भाई से कोई फायदा ना होगा। परन्तु भाई को इस व्यक्ति से जरुर फायदा होता रहेगा। मदद करने के लिए तो सब दिखावटी काम होंगे परन्तु वास्तव में मदद अपनी ही जान की होगी इस व्यक्ति को किसी से कोई फायदा ना हो न ताया, व चाचा, न मामा, न ससुराल केवल खुद ही अपने आप का मददगार या मालिक का भरोसा होगा।

खर्च -बचत

खर्च गिन नहीं सकता परन्तु रुपए में 1 1 वाँ हिस्सा खर्च एवं 5 वाँ हिस्सा बचत होगी। ख़र्च बहुत बड़ा हो परन्तु उसे घटा नहीं सकता। अगर खर्च को घटाए तो आए भी घट जाए।   लड़कियों की क़िस्मत के लिए   अगर ख़र्च बड़े तो आये अपने–आप बढ़ेगी। अपने लिए अपने पेट की सिर्फ परवाह करे। मगर दूसरों के लिए सेवाभाव के तौर पर खर्चा ज्यादा हो जाए और वो स्वयं करे। दूसरों को दिया हुआ पैसा अवश्य वापस आ जाए। ब्याज भी बढ़िया मिले। बिना ब्याज दिया हुआ पैसा कभी वापिस ना हो ।

****